बिहार प्रदेश में

भारतीय मजदूर संघ
का
उदय एवं विकास

लेखक

सियाराम शर्मा

पूर्णेन्दु प्रकाशन, गोला रोड, पटना

बिहार प्रदेश में
भारतीय मजदूर संघ का
उदय एवं विकास

डॉ0 सियाराम शर्मा
अध्यक्ष
श्रम एवं समाज कल्याण विभाग
एल0 पी0 शाही कॉलेज, पटना-20
एवं
एसोसिएट, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान,
राष्ट्रपति निवास, शिमला।

पूर्णेन्दु प्रकाशन, पटना

प्रकाशक :
पूर्णेन्दु प्रकाशन
गोला रोड-बेली रोड
पटना- 801503

मुद्रित प्रतियाँ :

मूल्य :
300/- (तीन सौ रुपये मात्र)

संस्करण :
प्रथम, 2004

शब्द संयोजक :
पूर्णेन्दु कम्प्यूटर्स, पटना

लेखक का जीवन – चक्र

अनुसंधाता का जन्म 06.01.1958 को पटना जिले के बेरर नामक ग्राम मे हुआ था। पिता श्री झलकदेव सिंह, बिहार अग्निशामक सेवा में सहायक राज्य अग्निशामक पदाधिकारी हैं। अनुसंधाता की आरंभिक शिक्षा गाँव के ही सरकारी विद्यालय में हुई। फिर भागलपुर जिला स्कूल में। राजा पृथ्वी चन्द उच्च विद्यालय पूर्णिया सीटी से मैट्रिक और महाविद्यालय जीवन का आरंभ बी0 एन0 कॉलेज, पटना से। मनोविज्ञान में स्नातक प्रतिष्ठा की डिग्री प्राप्त की पर रुचि भिन्नता ने श्रम और समाज कल्याण विभाग से स्नातकोत्तर करने के लिए प्रेरित किया। सन्1982 में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की।

विश्वविद्यालय परिसर के इस जीवन के भी अनेक पहलू हैं। अनुसंधाता प्रो0 शर्मा जब स्नातक के छात्र थे, बी0 एन0 कॉलेज में एन0 सी0 सी0 के सीनियर अंडर ऑफिसर बनाये गये थे। 1978 में कॉलेज छात्रावास में पुस्तकालय सचिव रुप में चुने गये। इन पदों पर इनकी कार्य–दक्षता से प्रभावित होकर तत्कालीन प्राचार्य प्रो0 एस0 के0 बोस ने बधाई दी थी। सन् 1980 में आपके नेतृत्व में मुख्यमंत्री के सक्षम छात्रों का एक प्रदर्शन हुआ जिसके परिणाम स्वरुप इण्टर स्तर से ही श्रम एवं समाज कल्याण को एक विषय के रुप में पढ़ने पढ़ाने की मान्यता मिली।

सन् 1982 में स्नातकोत्तर करने के पश्चात् कुछ दिनों तक तारा महाविद्यालय जहानाबाद में व्याख्याता के रुप में कार्य किया और फिर सन् 1984 में एल0 पी0 शाही कॉलेज, पटना में श्रम और समाज कल्याण विभाग के अध्यक्ष पद पर बहाल किये गये। तब तक राज्य के संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों की समस्याओ के खिलाफ हवा बनने लगी थी। शिक्षकों और शिक्षकेतर कर्मचारियों के संघ में पहले राज्यस्तरीय उपाध्यक्ष के रुप में मनोनीत किये गये और फिर राज्यस्तरीय अध्यक्ष बनें (1985)। आपके नेतृत्व में संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों के आन्दोलन को एक विशेष गति और दिशा प्राप्त हुई। 27 फरवरी 1986 को आपके नेतृत्व में लगभग 10 हजार शिक्षकों और कर्मचारियों का प्रदर्शन विधान सभा के समक्ष गया था जिस पर पुलिस ने जमकर लाठी चार्ज किया था। अनेक शिक्षक घायल और गिरफ्तार हुए थे । अगले दिनों जब विधान परिषद में इस विषय को लेकर हंगामा हुआ और गिरफ्तार

शिक्षक बाइज्जत जेल से रिहा किये गये।

1986 में ही अनुसंधाता प्रो0 शर्मा के नेतृत्व में संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों के शिक्षकों और कर्मचारियों का एक दल दिल्ली भी गया था जहाँ बोट क्लब पर 15 दिनों तक धारणा दिया गया था तथा एक दिन संसद के समक्ष प्रदर्शन भी किया था। सन् 1987 में आपको मगध विश्वविद्यालय शिक्षक संघ की कार्य समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। बिहार की वित्त रहित शिक्षा नीति के खिलाफ चलाये जा रहे संघर्ष के संदर्भ में आप की चर्चा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में अक्सर होती रहती है।

वर्त्तमान में आप श्रम और समाज कल्याण विभाग, एल0 पी0 शाही कॉलेज, पटना में विभागाध्यक्ष हैं। साथ ही, स्नातकोत्तर केन्द्र, ए0 एन0 कॉलेज पटना में भी अध्यापन करते है। एक योग्य व्याख्याता, एक निष्ठ अनुसंधाता और सक्रिय राजनीतिक– सामाजिक कार्यकर्त्ता के रुप में आप जाने जाते है।

2003 में लेखक भारतीय शिक्षा मंच के प्रदेश अध्यक्ष मनोनित हुऐ हैं। यह भारतीय जनता पार्टी का संगठ्न है। साथ ही भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास, शिमला का ऐसोसिएट बने 2001 में।

* * * * *

A Critique

(D. B. Thengadi)

// I have gone carefully through this thesis of Dr. Siya Ram Sharma.

// I found that the merit of this work is so self-evident that it requires no elaborate foreword to make it presentable to the reading public.

// Dr. Sharma has been extremely painstaking in collecting and scrutinising all relevant data, statistics and other information.

// He has adopted scientific approach in marshalling the facts thus scrutinised.

// In arriving at conclusions he has been cautious as well as objective.

// He has set a model for all thesis-writers on this subject.

// The work he has accomplished under the guidance of Dr. Krishna Chandra Sinha is highly commendable.

// I have a feeling that if the author continues his quest for the truth with perseverance, he can become S.D. Punekar of Bihar.

// "The author would be amply rewarded if his thesis inspires other scholars to undertake similar studies on labour movements at the state and the national levels.

// Critique, let me clarify, means critical appreciation — and not criticism, as someone would have us believe.

D.B. Thengadi

भारतीय मजदूर संघ के
संस्थापक महामंत्री

अनुक्रमणिका

अध्याय	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	**विषय प्रवेश एवं शोध विधि**	1 – 10
	1.1 शोध का विषय एवं महत्व	
	1.2 शोध विषय की व्यापकता	
	1.3 शोध के उद्देश्य	
	1.4 शोध विधि	
	1.5 शोध प्रबन्ध की रुपरेखा	
2.	**भामसः उद्भव, विकास एवं विचारधारा**	11–54
	2.1 भामस की स्थापना की पृष्ठभूमि	
	2.2 भामस का विकास	
	2.3 भामस की प्रगति–आँकड़ों के आईने में	
	2.4 भारतीय श्रम संघ आन्दोलन में भामस का स्थान	
	2.5 भामस की संरचना एवं प्रशासन	
	2.6 भामस की विचारधारा	
3.	**बिहार भामसःनिर्माण, विकास एवं उपलब्धियाँ**	55–81
	3.1 बिहार भामस का उद्भव एवं विकास	
	3.2 बिहार भामस : संघर्ष एवं उपलब्धियाँ	
	3.3 बिहार भामस : आँकड़ों के आईनें में	
4.	**अध्ययन में सम्मिलित संघ**	82–94
	4.1 खनन	
	4.2 विनिमार्ण	
	4.3 विद्युत	
	4.4 दुकान एवं प्रतिष्ठान	
	4.5 वित्तीय संस्थान	
	4.6 स्वास्थ्य	
5.	**सदस्यों की विवरणिका**	95–116
	5.1 आयु	
	5.2 लिंग	
	5.3 निवास स्थान	
	5.4 वैवाहिक स्थिति	
	5.5 धर्म	
	5.6 जाति	
	5.7 शैक्षणिक योग्यता	
	5.8 कार्यानुभव	

5.9 मासिक आय
5.10 परिवार का आकार
5.11 परिवार के सदस्यों की आर्थिक स्थिति
6. श्रमिक संघों की छवि 117–154
6.1 सदस्यता अवधि
6.2 सदस्यता-ग्रहण के कारण
6.3 बैठकों की नियमितता एवं संख्या
6.4 पदाधिकारियों के चुनाव की नियमितता एवं निष्पक्षता
6.5 वाह्य नेतृत्व की आवश्यकता
6.6 नीति निर्धारण में सदस्यों की भूमिका
6.7 सीधी कार्रवाइयों में सदस्यों की भागीदारी
6.8 संघ की प्रभावशीलता
7. श्रमिक संघ के नेताओं की छवि 155–205
7.1 नेताओं से जान पहचान की सीमा
7.2 नेतृत्व की विशेषतायें
7.3 नेतृत्व से सम्बन्धित परिकल्पनायें
8. नेतृत्व पार्श्विका 206–276
8.1 जनांकिकीय विशेषतायें
8.2 पारिवारिक विशेषतायें
8.3 नेताओं की जीवन-शैली
8.4 संगठनात्मक विशेषतायें
8.5 औद्योगिक सम्बन्ध की समस्यायें
8.6 भामस के आदर्श वाक्य एवं नारों से सहमति
9. सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव 277–311
10. परिशिष्ठ
1. सूचना अनुसूची
2. सदस्यों में भामस के प्रति आकर्षण के कारण तथा संघ एवं नेताओं की छवि
3. भामस के श्रम-संघों के नेताओं का परिचय तथा श्रम-संघ की समस्याओं पर उनके विचार
4. भामस के कार्य समिति के सदस्यों की सूची
5. बिहार भामस के कार्य समिति के सदस्यों की सूची
6. संविधान एवं नियमावली

अध्याय – एक

विषय प्रवेश एवं शोध–विधि

प्रस्तुत अध्याय में इस शोध–प्रबन्ध के विषय एवं उसके महत्त्व, शोध–विषय की व्यापकता एवं शोध के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया है तथा प्रयुक्त शोध–विधि का वर्णन किया गया है।

1.1 शोध का विषय तथा उसका महत्त्व

भारत में उद्योगीकरण का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हुआ। नये–नये कल–कारखाने स्थापित हुए तथा बड़े पैमाने पर उत्पादन शुरु हुआ। इसका बुरा असर लघु तथा कुटीर उद्योगों पर तथा उनमें कार्यरत शिल्पियों एवं कामगारों पर पड़ा। भारत गुलाम था। नये उद्योगों की स्थापना में अंग्रेज उद्योगपतियों ने मुख्य भूमिका अदा की। कुछ भारतीय भी उद्योगपति क रूप में उभर कर आये। नये कल–कारखानों में कार्य करने की पद्धति एवं कार्य संस्कृति परम्परागत भारतीय उद्योगों से सर्वथा भिन्न थी। नये कार्य–वातावरणं में कार्य करने के वे अभ्यस्त नहीं थे। भारतीय मजदूरों को लाभान्ध ा उद्योगपतियों तथा उनके प्रबन्धकों एवं पर्यवेक्षकों द्वारा भेद–भाव की नीति तथा दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ा। मजदूरी कम थी और काम के घंटे अधिक थे। मजदूरों के रहने के लिए आवास की व्यवस्था नहीं थी तथा दुर्घटना की दर काफी अधिक थी। मजदूरों ने अपने शोषण और अत्याचार के खिलाफ जब आवाज बुलन्द की तथा अपने आप को संगठित करने का प्रयास किया तो उद्योगपतियों तथा तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने उन्हें कचलने का भरसक प्रयत्न किया। सरकार का प्रयास सफल नहीं हो पाया तथा मजदूर संघ हमेशा के लिए आ गये।

वैसे तो मजदूर संघों का जन्म 19वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में ही प्रारम्भ हो गया था लेकिन ये संगठन मजदूर संघ की आधुनिक परिभाषा पर खरे नहीं उतरते । आधुनिक मजदूर संघों का प्रादुर्भाव

भारत में प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ही हुआ। मजदूर संघों का पहला महासंघ 1920 में बना जिसका नाम अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस है। इस महासंघ में अनेक बार फूटें पड़ी तथा नये महासंघों का जन्म हुआ। स्वतंत्रता के पूर्व भी भारतीय मजदूर संघ आन्दोलन को अनेक फूटों एवं विभाजनों का सामना करना पड़ा है। लेकिन वे फूट और विभाजन स्थायी नहीं रह सके। स्वतंत्रता के अवसर पर तथा उसके बाद के फूट एवं विभाजन स्थायी रूप से आन्दोलन को विभाजित करने में सफल हो सके। एटक में विभाजन के फलस्वरूप 1947 में इन्टक, 1948 में हिन्द मजदूर सभा, 1949 में यू0 टी0 यू0 सी0 तथा 1970 मे सीटू की स्थापना हुई। हिन्द मजदूर सभा में विभाजन के फलस्वरूप 1965 में हिन्द मजदूर पंचायत तथा इंटक में फूट के कारण 1970 में एन0 एल0 ओ0 की स्थापना हुई। यूनाइटेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस भी विभाजन की आँधी से सुरक्षित नहीं रह सका तथा इससे निकल कर कुछ नेताओं ने यू0 टी0 यू0 सी0 (लेनिन सारणी) की स्थापना की। ये सारे विभाजन राजनीति प्रेरित थे। भारतीय श्रमिक संघ आन्दोलन की मुख्यधारा से अब तक सक्रिय रूप से नहीं जुड़ा रहने वाला, भारतीय जनसंघ ने जिसकी स्थापना 1950 में हुई थी, 1955 में एक नया श्रम-संगठन श्रमिक वर्ग के सामने प्रस्तुत किया, जिसका नाम भारतीय मजदूर संघ था। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि इस महासंघ का उदय एटक तथा उससे निकले हुए अन्य महासंघों में फूट तथा विभाजन के कारण नहीं हुआ। इस महासंघ का उद्देश्य राष्ट्रहित, उद्योगहित एवं महदूर हित की रक्षा करना है। इसका मुख्य नारा है – "श्रम का राष्ट्रीयकरण, राष्ट्र का उद्योगीकरण तथा उद्योगों का श्रमिकीकरण।" जहाँ तक राजनीति का प्रश्न है इस संगठन की यह मान्यता है कि किसी भी विधिवत निर्वाचित सरकार के प्रति उसका दृष्टिकोण प्रत्युत्तरीय सहयोग का रहेगा, चाहे जो भी दल सत्तारूढ़ हो। इस संगठन का दृष्टिकोण रचनात्मक है न कि आन्दोलनात्मक। यह संगठन आकारण उत्पादन में व्यवधान डालने के विरूद्ध है। यह मजदूर क्षेत्र में हिंसा, तोड़-फोड़ और अन्य समाज विरोधी कार्यो का वह विरोध करेगा, लेकिन वह हड़ताल करने के मजदूरों के अधिकार, जो मजदूरों का मौलिक अधिकार है, पर अलोकतांत्रिक प्रतिबन्ध का विरोधी है।[1]

---

1. दत्तोपंत ठेंगड़ी, भारतीय मजदूर संघ के बढ़ते चरण, पृष्ट-4

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा भारतीय जनसंघ (अब भारतीय जनता पार्टी) के संरक्षण में संगठित इस मजदूर संघ के अस्तिव एवं विकास के प्रति अनेक विद्वानों ने अपनी शंका व्यक्त की । ऐसा माना जाने लगा कि भारतीय श्रमिक वर्ग जो प्रगतिशील एवं वामपंथी विचारधारा के समीप है, इस महासंघ को पनपने एवं पल्लवित पुष्पित होने नहीं देगा। एक वामपंथी लेखक के अनुसार, "भामस का प्रधान उद्देश्य मजदूरों को वर्ग-संघर्ष के रास्ते से हटा कर वर्ग सहयोग के रास्ते पर ले जाना और उनके अन्दर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की घोर प्रति क्रियावादी विचारधारा का घुसना है।"[2]

भारतीय मजदूर संघ की उत्पत्ति एवं विकास से सम्बन्धित तथ्यों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इसके विकास में एक नवीनता है। इस संगठन के संस्थापक श्री दत्तोपंत ठेंगड़ी के शब्दों में, "भारतीय मजदूर संघ का ढाँचा नीचे से ऊपर विकसित हुआ है, ऊपर से नहीं थोपा गया जैसा कि साधारणयता होता है। प्रारंभ में स्थानीय स्तर पर छोटी यूनियनें बनाई गयी । इनके गठन के बाद बड़ी यूनियनें तथा प्रान्तीय स्तर के औद्योगिक महासंघ, प्रान्तीय स्तर पर भामस की इकाइयाँ, भारतीय औद्योगिक महासंघों का गठन किया गया। पूरे 12 वर्ष बाद पहला अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ, जिसमें पहली बार भारतीय मजदूर संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी चुनी गई। इन समस्त वर्षों में भामस बिना किसी राष्ट्रीय कार्यकारिणी और अखिल भारतीय पदाधिकारियों के ही कार्य करता रहा।"[3] प्रथम सम्मेलन में प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार इस महासंघ से सम्बद्ध 541 संघ थे जिनकी सदस्य संख्या 2, 46, 902 थी।[4]

प्रथम वार्षिक सम्मेनल के बाद सें ही इस महासंघ की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ। राष्ट्रीय श्रम आयोग (1967-69) ने अपने प्रतिवेदन में लिखा -

> "इन चार महासंघों (एटक, इन्टक, हिन्द मजदूर सभा, यू० टी० यू० सी०) के अतिरिक्त कई नए संघ अस्तित्व में आये

---

2. अयोध्या सिंह, भारत का मजदूर आन्दोलन, 1983, पृ० 146
3. दत्तोपंत ठेंगड़ी, भारतीय मजदूर संघ के बढ़ते चरण, पृ० 5
4. भारतीय मजदूर संघ का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन, 1967, पृ० 1

हैं। ये नये संघ, विशेषकर भारतीय मजदूर संघ जिसकी स्थापना 1955 में की गई थी, तथा हिन्द मजदूर पंचायत . ... मान्यता दिए जाने का आग्रह कर रहें हैं ताकि केन्द्र और राज्यों के परामर्शी मंचों में इनको प्रतिनिधित्व मिल सके।''[5]

1969 में मान्यता के लिए आग्रह करने वाला तथा "नया" माना जाने वाला यह महासंघ 1984 में मजदूर संगठनों की वरीयता सूची में शीर्ष स्थान पर आ गया। भारत के स्तर पर इसका स्थान द्वितीय तथा अनेक राज्यों में इसने प्रथम स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त किया है। अखिल भारतीय स्तर पर प्राप्त आँकड़ों के अनुसार, इन्टक के 22,36,128 भामस के 12,11,345 एच0 एम0 एस0 के 7,62,882 यू0 टी0 यू0 सी0 के 6,21,359 एटक के 3,44,746 तथा सीटू के 3,31,031 सदस्य है।[6] भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश, दिल्ली, चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, बिहार, जम्मू-कश्मीर और पंजाब जैसे राज्यों में प्रथम स्थान पर है।[7] 25 नवम्बर 1985 को आयोजित 28वाँ राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में भामस को उसकी सदस्य संख्या के आधार पर उचित स्थान प्रदान किया गया है। श्रम संगठनों के 8 प्रतिनिधियों में इन्टक के 4 भामस के 2, एच0 एम0 एस0 तथा यू0 टी0 यू0 सी0 के एक - एक प्रतिनिधि को अधिकाधिक तौर पर सम्मिलित किया गया है।[8]

भामस की सदस्य-संख्या में इतनी अल्प अवधि में इतनी ज्यादा वृद्धि औद्योगिक सम्बन्ध के विद्यार्थी के लिए शोध का मशाला उपलब्ध कराती है। भामस की प्रगति इसके संस्थापकों की आशा के अनुरूप हो सकी है किन्तु वामपंथी विचारकों, विद्वानों एवं नेताओं की भविष्यवाणीं नितान्त असत्य एवं भ्रामक साबित हुई है।

भारतीय मजदूर संघ की इस स्थिति से अनेक प्रश्न उत्पन्न होते हैं। भामस की लोकप्रियता के कारण क्या है? इसके नेताआ में कौन से ऐसे गुण हैं जो श्रमिकों को अपनी ओर खींच रहे हैं?

---

5. भारत सरकार, राष्ट्रीय श्रम आयोग की रिपोर्ट, 1969, पृ0 270
6. जनसत्ता, 24 अगस्त 1985, पृ0 1
7. भारतीय मजदूर संघ, श्रमिक स्मारिका, 1985
8. भारतीय मजदूर संघ, श्रमिक स्मारिका, 1985

क्या भारतीय मजदूर वर्ग प्रगतिवाद तथा वामपंथी विचारधारा से विमुख हो रहा है और आर0 एस0 एस0 की विचारधारा के समीप होता जा रहा है? इन नये संघों में क्या खूबियाँ है जो श्रमिकों को अपने पुराने संघों से अलग कर रही है, क्या "वर्ग-संघर्ष" के नारे के ऊपर "वर्ग-सहयोग" हावी हो रहा है? ये ऐसे प्रश्न हैं जो भारतीय मजदूर संघवाद के छात्र के मस्तिक में अनायास उभरते हैं तथा इसके उत्तर के लिए वह शोध की ओर अग्रसर होता है। इस शोध-प्रबंध में सर्वेक्षण के आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर जानने के प्रयास किए गए हैं।

भारतीय स्तर पर भामस के उदय, विकास तथा नीतियों का अध्ययन आवश्यक जान पड़ता है। शोध कर्त्ता ने समय एवं संसाधन को ध्यान में रख का भामस का अध्ययन बिहार प्रदेश में करने का निश्चय किया है। बिहार प्रदेश में भी भामस ने अन्य महासंघों को पीछे छोड़ दिया है तथा सदस्यता-संख्या के आधार पर इसे प्रथम स्थान प्रदान किया गया है। बिहार प्रदेश स्तर पर इससे सम्बद्ध 151 यूनियनें तथा 4,22,848 सदस्यता है।[9] सरकार ने इसे मान्यता भी प्रदान की है। अतः बिहार प्रदेश में भामस की स्थिति के अध्ययन द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्रगति का रहस्य समझा जा सकता है।

भारतीय मजदूर आन्दोलन पर अनेक सार-गर्भित पुस्तकों की रचना हुई है तथा आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। लेकिन इन पुस्तकों में भामस का स्थान नगण्य रखा गया है। कारण इस् संघ का नया होना या लेखकों में इसके प्रति अनुकूल संवेदना का अभाव हो सकता है। आज जब भामस ने मजदूर संघ के नक्शे पर महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है, तब इसके विकास का सम्यक् अध्ययन तथा इसके विकास के कार्यो का विश्लेषण आवश्यक प्रतीत होता है। इस शोध के निष्कर्ष से मजदूर संघ आन्दोलन के अध्येता तथा नेता लाभान्वित होगे।

1.2 शोध-विषय की व्यापकता

इस शोध का विषय है बिहार प्रदेश में भामस के उदय एवं विकास का अध्ययन। अतः भामस से सम्बद्ध संघों का अध्ययन भी

---

9. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, सदस्यता विवरणवली, 1988

इसकी सीमा में आ जाता है। बिहार प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध संघों की संख्या 151 है। प्रस्तुत सर्वेक्षण के लिए 14 संघों का चुनाव किया गया तथा उनके सदस्यों एवं नेताओं का सम्यक् एवं सूक्ष्म अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

1.3 शोध का उद्देश्य

विषय वस्तु के महत्त्व की चर्चा करते समय इस शोध के उद्देश्य पर भी संक्षिप्त रूप में प्रकाश डाला गया है । यहाँ इस शोध के उद्देश्यों को क्रमबद्ध किया गया हैः-

(क) भामस के उदय एवं विकास का वर्णन तथा इसकी नीतियों का विश्लेषण प्रस्तुत करना।

(ख) बिहार राज्य के मजदूर संघों में भामस की स्थिति का मुल्यांकन करना।

(ग) भामस की प्रगति के कारणों का पता लगाना।

(घ) भामस से सम्बद्ध संघों की रचना, प्रगति नीतियों एवं उपलब्धियों का तथ्यों एवं आँकड़ों के आधार पर विश्लेषण करना।

(ड़) भामस की राजनीतिक गतिविधियों तथा राजनीतिक दलों के साथ इसके संबंध का अध्ययन करना।

(च) सदस्यों में भामस एवं इसके नेताओं की छवि का पता लगाना।

(छ) भामस के संघों के नेतृत्व- अन्तः एवं वाह्य का अध्ययन करना तथा ज्वलंत समस्याओं पर नेताओं के विचारों का संकलन एवं विश्लेषण करना।

1.4 शोध-विधि

(क) आँकड़ों की प्रकृति -

इस शोध प्रबन्ध के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक-दोनों ही प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है।

(ख) आँकड़ों के स्त्रोत –

जहाँ तक द्वितीयक आँकड़ों का प्रश्न है उनके संभावित स्त्रोतों पुस्तकें, समाचार-पत्र, मजदूर संघों का प्रकाशन, पत्र-पत्रिकाएँ, वार्षिक प्रतिवेदन, सरकारी दस्तावेज, यूनियनों की पुस्तिकाएँ आदि का भरपूर उपयोग भामस एवं बिहार भामस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने में किया गया है। भामस की प्रगति के कारणों तथा सदस्यों में इसकी छवि तथा नेताओं के बारे में इनके दृष्टिकोण की जानकारी हेतु प्राथमिक आँकड़ों का संकलन किया गया है। इन आँकड़ों के संकलन के लिए प्रश्नावली एवं अनुसूचियों का निमार्ण किया गया है जिन्हें इस शोध प्रबन्ध के परिशिष्ठ में स्थान दिया गया है।

(ग) संघों, सदस्यों एवं नेताओं की चयन प्रक्रिया

नवीनतम आँकड़ों के अनुसार बिहार भामस की सम्बन्धित इकाइयों की संख्या 151 है। इसके एक वर्गीकरण के अनुसार संघों को 23 उद्योग-वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए इन 23 उद्योग-वर्गों में से 6 उद्योग वर्गों का चयन किया गया है। इन उद्योग-वर्गों में बिहार भामस से संबद्ध 74 संघ हैं जिनमें से करीब 20 प्रतिशत का अर्थात् 14 संघों का चुनाव इस अध्ययन के लिए नमूने के तौर पर किया गया है। ये 14 संघ बिहार के विभिन्न शहरों में स्थित हैं। इन संघों में से तीन-तीन पटना, धनबाद तथा बिहारशरीफ में, चार राँची में तथा एक जमशेदपुर में स्थित है। इस प्रकार अध्ययन में बिहार प्रदेश के औद्योगिक क्षेत्रों का सभ्यक् प्रतिनिधित्व हुआ है । इस अध्ययन के लिए प्रयुक्त नमूना प्रक्रिया का अंकन सारणी 1.1 में किया गया है।

सारणी 1.1 के आँकड़ों से यह स्पस्ट होता है कि इस अध्ययन के लिए 6 प्रमुख उद्योग वर्गों से 14 सम्बद्ध संघों का चुनाव किया गया है। इन उद्योगों में बिहार भामस की सदस्य संख्या 2 लाख से भी ऊपर है। शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण

के लिए सदस्य–श्रमिकों के चयन के लिए किसी स्थापित प्रक्रिया का अनुसरण करने में असमर्थता महसूस की। फलस्वरुप उसने अपनी सुविधा के अनुरुप सदस्यों का चयन किया। किसी संघ–विशेष में शोधकर्त्ता के अध्ययन–काल के क्रम में उस संघ के जितने सदस्य उपस्थित हुए उनसे साक्षात्कार के लिए अनुरोध किया गया। अधिकांश सदस्यों ने अपनी सज्जनता का परिचय दिया तथा साक्षात्कार के अनुरोध को संहर्ष स्वीकार किया। इस प्रकार कुल 334 सदस्यों का सर्वेक्षण संभव हो सका। सदस्यों की यह संख्या कुल सदस्य संख्या का एक प्रतिशत से भी कम है लेकिन शोधकर्त्ता की आर्थिक वेवसी एवं वक्त की पांबन्दी को ध्यान में रखते हुए इतना ही सम्भव था।

जहाँ तक नेताओं की संख्या का सवाल है सभी सम्मलित संघों से तीन या चार नेताओं को इस अध्ययन में सम्मलित किया गया है। सारे नेता अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महामंत्री एवं मंत्री की श्रेणी से चुने गये है।

नमुने में सम्मिलित संघों से पर्याप्त जानकारी एक अनुसूची के आधार पर ली गयी है। सदस्यों के सम्बन्ध में आवश्यक सूचनायें तथा विभिन्न मुद्दों पर उनके विचार एक पृथक अनुसूची के आधार पर संकलित किए गये हैं। नेताओं के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी हासिल करने तथा उनके विचारों एवं मन्तव्यों के संकलन के लिए एक प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। सभी अनुसूचियाँ एवं प्रश्नावली इस शोध प्रबन्ध के परिशिष्ठ में दी गयी हैं।

(घ) आँकड़ों की प्रस्तुति

सूचना अनुसूची तथा प्रश्नावली के माध्यम से संग्रहीत जानकारियों को आँकड़ों के रुप में परिणत कर सारणीबद्ध किया गया है। आँकड़ों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने के लिए सरल सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया है। निर्मित सारणियों को विभिन्न अध्यायों में यथा स्थान रखा गया है, आँकड़ों का वर्णन, विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है तथा निष्कर्ष–निष्पादन के प्रयास किये गये हैं।

सारणी-1.1

संघों, नेताओं एवं सदस्यों की चयन प्रक्रिया

उद्योग	संघों की कुल संख्या	चयित संघों की संख्या	सदस्यों की कुल संख्या	चयित सदस्यों की संख्या	चयित नेताओं की संख्या
खनन	15	3	94736	30	8
विनिर्माण	40	5	85841	131	16
विद्युत	3	1	22700	45	4
दूकान एवं प्रतिष्ठान	4	1	5991	49	4
वित्तीय संस्थान	8	3	3763	74	6
स्वास्थ्य	4	1	356	5	4
सामान्य	--	--	--	--	8
कुल	74	14	213387	334	50

1.5 शोध-प्रबन्ध की रुप-रेखा

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध नौ अध्यायों में विभाजित है । अध्याय एक में शोध विषय के महत्त्व एवं प्रयुक्त शोध विधि की विवेचना की गयी है। अध्याय दो में राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय मजदूर संघ के निर्माण, विकास, संरचना एवं विचारधारा पर प्रकाश डाला गया है। अध्याय तीन में बिहार भामस की ऐतिहासिक पृष्ट भूमि प्रस्तुत की गयी है।

अध्याय चार में अध्ययन में सम्मिलित श्रमिक संघों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। अध्याय पाँच में सर्वेक्षित सदस्यों की एक विवरणिका तैयार की गयी है। अध्याय छः में सदस्यों की दृष्टि में भामस-संघों की छवि आँकी गयी है तथा भामस के प्रति उनके आकर्षण के कारणों का पता लगाया गया है। अध्याय सात में मजदूरों की दृष्टि में भामस के नेताओं की छवि के आधार पर उनका शब्द रुप तैयार किया गया है। अध्याय आठ में भामस के नेताओं का विवरण तथा ज्वलन्त समस्याओं पर उनके विचार प्रस्तुत किए गए हैं और भामस की विचारधारा से उनकी सहमति की सीमा का मूल्यांकन किया गया है। अन्तिम अध्याय में पूर्व अध्यायों में किये गये वर्णन, विश्लेषण एवं व्याख्याओं के सारांश तथा निष्पादित निष्कर्षों का संकलन एवं क्रमबद्ध प्रस्तुति की गई है।

अध्याय – दो

भामसः उद्भव, विकास एवं विचारधारा

प्रस्तुत अध्याय में राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय मजदूर संघ (भामस) की उत्पत्ति की पृष्ठभूमि, विकास एवं भारतीय श्रमिक संघ आन्दोलन में इसके स्थान की व्यवस्थ की गई है तथा भामस की संगठनात्मक एवं प्रशासकीय संरचना एवं विचारधारा के महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

2.1 भामस की स्थापन की पृष्ठभूमि

भारतीय श्रमिक संघ आन्दोलन अन्तरसंघीय द्वंद्व एवं आन्तरिक घटकवाद से पीड़ित है। विपूलता की समस्या इनसे जुड़ी हुई है। श्रमिक संघों की बीमारियों के कारणों की खोज अनेक विद्वानों ने की है तथा राजनीतिक कारण को ही सर्वा- धिक महत्त्वपूर्ण कारण की संज्ञा दी है। यह बात सर्वविदित है कि स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय श्रम संघ आन्दोलन की प्रवृति राजनीतिक श्रम संघवाद की हो गई है। राजनीतिक दलों में श्रम क्षेत्र पर अपना आधिपत्य स्थापित करने की होड़ लग गई। आन्दोलन में फूट की शुरुआत कॉंग्रेस (इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस) ने की। आजादी के अवसर पर इसने एक अलग राष्ट्रीय महासंघ इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कॉंग्रेस (इन्टक) की स्थापना की। स्थापित महासंघ आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कॉंग्रेस में दरार पड़ी। इसके बाद सभी महत्त्वपूर्ण राजनीतिक दलों ने अपने-अपने महासंघ बनाए। भारतीय जनसंघ (अब भारतीय जनता पार्टी) भी इस दौड़ में शरीक हुआ तथा उसने भी एक पृथक महासंघ का निर्माण किया। अतः यह स्पष्ट है कि अन्य महासंघों की तरह ही भामस की स्थापना की आवश्यकता भी राजनीति से प्रेरित है तथा राजनीतिक कारण की बुनियाद पर ही इसका भी निर्माण हुआ है। फिर भी, भामस के उपलब्ध साहित्य के अवलोकन से जो कारण निर्गत होते है। उनका विश्लेषण करने का प्रयास यहाँ किया गया है।

2.11 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका

भारतीय राजनीतिक-सांस्कृतिक-सामाजिक मंच पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ नामक संस्था का जन्म 1925 में हुआ। इस संस्था ने भारतीय जनमानस को अपनी विभिन्न अवधारणाओं, परिकल्पनाओं एवं सिद्धान्तों के द्वारा पक्ष या विपक्ष में उद्वेलित किया है। इस राष्ट्र में कोई भी संस्था ऐसी नहीं है जो इतनी विवादास्पद रही हो तथा जिसके आलोचकों और प्रशंसकों की संख्या इतनी बड़ी हो। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मुख्य उद्देश्य भारतवासियों में चरित्र निर्माण तथा राष्ट्रभक्ति का जागरण करके राष्ट्र-निर्माण करना है। इस संगठन ने हिन्दू राष्ट्र की अवधारणा प्रस्तुत की है। इस अवधारणा के कारण बहुत सारे विद्वानों, गैर हिन्दू सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों, वामपंथी राजनीतिक दलों एवं प्रगतिशील लोगों ने इसे एक साम्प्रदायिक संगठन की संज्ञा दी है। हलोंकि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस आरोप का खंडन करता है, इसके अनुसार हिन्दू राष्ट्र भारतीय राष्ट्र का समानार्थक है तथा हिन्दू भारतीयता का विकल्प है। उनके अनुसार "हर एक की उपासना पद्धति की पूरी स्वतंत्रता देते हुए राष्ट्रीय अर्थ में भारत हिन्दू राष्ट्र है और इस राष्ट्र का निर्माण और पुनर्निर्माण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का लक्ष्य है।" यह बात स्पष्ट है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत के प्राचीन दर्शन पर विश्वास करता है। वह पश्चिम से उधार ली गयी विचार पद्धतियों से बुनियादी मतभेद जाहिर करता है तथा भारत की मिट्टी पर उपजे दर्शनों के प्रति अपनी पूर्ण आस्था जाहिर करता है। संघ मार्क्सवादी, माओवादी एवं कम्युनिष्ट आन्दोलन की जोरदार शब्दों में आलोचना करता है। यह भी एक कारण है कि संघ को कुछ लोग दकियानूसी विचारों का समर्थक मानते हैं तथा उससे बचने का सुझाव देते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति अनेक विचार व्यक्त किये जाते रहे हैं। कुछ पक्ष में तो कुछ विपक्ष में। महात्मा गाँधी की हत्या के सिलसिले में भी राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का नाम लिया गया। उस पर प्रतिबन्ध लगाये गये, उसके कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार किया गया तथा उसे गैर कानूनी भी घोषित किया गया। लेकिन यह प्रतिबन्ध बहुत दिनों तक जारी नहीं रहा तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी विचार- धारा के प्रचार-प्रसार के लिए तथा अपने कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने के लिए अनेक संगठनों के निर्माण का प्रेरणा का स्त्रोत बना। उसके एक महान

विचारक का यह मत है कि "व्यक्तियों का संगठन ही समाज का शाश्वत शक्ति का आधार बन सकता है। वह होगा ऐसा संगठन, जो परिस्थितियों के प्रवाह के ऊपर उठ सके, जो क्षुद्र स्वार्थो की पूर्ति की भावना से अथवा राजनीतिक सत्ता को अधिकृत कर लेने की लालसा से स्फूर्त न हो तथा जो अपने अस्तित्व मात्र से सम्पूर्ण समाज के प्रासाद को सुस्थिति में बनाये रखकर उसके पूर्ण स्वविकास के लिए स्वयंस्फूर्त आवेग एवं शक्ति-प्रदान कर।"[1]

विभिन्न ग्रन्थों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय मजदूर संघ के निर्माण की प्रेरणा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से ही प्राप्त हुई।

डॉक्टर हेडगेवार जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक थे, का यह विचार था कि संघ का स्वयंसेवक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश करे।

> गोलवलकर ने संघ के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत प्रमुख स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि "किसी बड़े परिवार के कुछ युवक अनेक क्षेत्रों में यदि काम करने के लिए जायँ तो उनका कर्त्तव्य है कि अपने खर्च मात्र के लिए घर से पैसा मंगवाकर अपने पराक्रम से अधिकाधिक मात्रा में सम्पत्ति, समृद्धि व सम्मान प्राप्त करें। उनके द्वारा अपने कुल की प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य, श्रेष्ठत्व तथा प्रभाव को वे बढ़ायें। उसी प्रकार हर लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से चलने वाले इन कामों के विषय में सोचें कि अपना मूल-कुल "संघ" है। उसकी सभी प्रकार से उन्नति के लिए जिस-जिस क्षेत्र में जायेगे और काम करेगें, उस-उस क्षेत्र का उपयोग करते हुए अपने इस कार्य को समृद्ध करेगें। इस कार्य का ही सब प्रकार से विस्तार और प्रभाव बढ़ायेगें। इस संकल्प के साथ हमें भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में काम करना चाहिए। उसका वहाँ प्रभाव पड़ना ही चाहिए। हम स्वयंसेवक है। स्वयंसेवक का चरित्र भाव सब लोगों के साथ आत्मीयता से सराबोर आचरण, अपने काम में सच्चाई आदि के कारण, अपने स्वयंसेवकत्व की विशेषता और श्रेष्ठता का भाव लोगों के मन में उत्पन्न होकर, अपने चारों ओर संघ के लिए योग्य वायुमण्डल तथा

---

1. आर्गनाइजर, अग्रलेख, 11 अक्टूबर, 1949

अत्यन्त श्रद्धा का भाव उत्पन्न होना चाहिए।''[2]

> गोलवलकर ने अपने विचार को और आगे स्पष्ट किया है, ''यदि भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में जाकर उन्हीं क्षेत्रों के हो गए और सोचने लगे कि वहाँ के गुणावगुण को लेकर हम चले, अब संघ से अपना कोई संबंध नहीं, तब तो फिर एक स्वयंसेवक के नाते किसी अन्य कार्य में जाना कदापि उपयोगी नहीं होगा। उदाहरण ऐसे हैं – रामदास स्वामी के कथनानुसार जिस प्रकार तोप से निकला हुआ गोला शत्रु-सेना में गिरकर तितर-वितर कर देता है, उसी प्रकार एक-एक कार्यकर्त्ता को एक-एक क्षेत्र में तेजी से घुसकर अपने प्रभाव से सभी विपरीत शक्तियों को तितर-बितर कर देना चाहिए तथा सभी सन्मार्गगामी लोगों को एकत्रित कर अपनी शक्ति का संवर्धन करने के लिए दुर्तगति से जुट जाना चाहिए। इन बातों को ध्यान में रखते हुए, समाज के भिन्न-भिन्न कार्यों में भी हम लोग यदि यश प्राप्त करें, तो वर्त्तमान भारत के इस चिन्ताजनक चित्र को आने वाले कुछ ही दिनों में हम लोग कदल देने में सफल होंगे।[3]

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघ चालक गोलवलकर के दो महत्त्वपूर्ण सिद्धांत थे। (क) परम् वैभव – जिसके अर्न्तगत स्वयंसेवक प्रति दिन प्रार्थना करता है कि हमारे राष्ट्र को परम वैभव का स्थान प्राप्त हो तथा (ख) राष्ट्रवादी संगठन जिसके अन्तर्गत संगठन राष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत होता है तथा संगठन के हर कार्य के पीछे राष्ट्रहित एवं राष्ट्र सम्मान की भावना काम करती है।

स्पष्ट है कि भारतीय मजदूर संघ का निर्माण भी आर0 एस0 एस0 के इन लक्ष्यों को ध्यान में रखकर ही किया गया। भामस मजदूरों का एक ऐसा संगठन है जो परम् वैभव एवं राष्ट्रीयता की विचारधारा को मजदूरों में प्रसारित करना चाहता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक प्रकाशपुंज है जिससे संगठन के रुप में अनेक किरणें फूटी हैं तथा समाज के विभिन्न अंगों को आलोकित करने का कार्य किया है। राजनीति के

---

2. श्रीगुरुजी समग्र दर्शन, खण्ड-6, पृ0 42
3. श्रीगुरुजी समग्र दर्शन, खंड-6, पृ0 42

क्षेत्र में भारतीय जनसंघ (भारतीय जनता पार्टी), छात्रों के क्षेत्र में विद्यार्थी परिषद, किसानों के क्षेत्र में भारतीय किसान संघ, मजदूरों के क्षेत्र में भारतीय मजदूर संघ, आदिवासियों के क्षेत्र में बनवासी संघ आदि अनेक संगठनों को जन्म दिया है। इन संगठनों की संख्या एक सौ के करीब है। ये संगठन मूलतः संघ की विचारधारा को प्रचारित-प्रसारित करते हैं तथा इस विचारधारा के आलोक में अपने अपने क्षेत्रों की समस्याओं के समाधान के लिए कार्यक्रम तैयार करते हैं तथा उन्हें कार्यान्वित करते हैं।

2.12 भामस की निर्माण प्रक्रिया

भामस की कल्पना सर्वप्रथम भारतीय जनसंघ के राजनीतिक विचारक, चिंतक एवं प्रधान दीन दयाल उपाध्याय ने की। जनवरी 1955 में उन्होंने मजदूर नेता दत्तोपंत ठेंगड़ी के साथ इस विषय पर विचार विमर्श किया। इस विचार विनिमय से कुछ निष्कर्ष निकाले गये।

> पहला निष्कर्ष यह था कि राजनीतिक दल को लांघकर जाने वाला, श्रमिकों के सच्चे हितों का बोध रखने वाला और भारत की राष्ट्रीय व सांस्कृतिक परम्परा से जुड़ा एक श्रमिक संगठन बनाना चाहिए, तभी पूंजीवादी और साम्यवादी प्रणालियों को निर्णायक ढ्ग से हराया जा सकता है।[4] दीन दयाल का विचार था कि श्रमिक संगठन को राजनीतिक प्रभाव एवं अवसरवादिता से मुक्त करने की आवश्यकता है। साथ ही साथ उनका मत था कि राष्ट्रीय स्तर पर एक श्रमिक-संगठन तुरंत स्थापित किया जाय। दीनदयाल और ठेंगड़ी ने चर्चा में जो विचार निश्चित किये, वे थे -
>
> 1. प्रास्तावित श्रमिक संगठन को वर्ग अवधारणा से ऊपर उठकर राष्ट्रीय विचार करना चाहिए।
> 2. श्रमिक आन्दोलन को पूंजीवादी एवं तानाशाही अभारतीय तत्वों से मुक्त करते हुए व्यक्ति एवं समाज में पारस्परिक एकात्म भावना की प्रतिष्ठापना करनी चाहिए।

---

4. भालचन्द्र कृष्णाजी केलकर, पं0 दीन दयाल उपाध्याय विचार दर्शन, खंड-3, राजनीतिक चिन्तन, पृ0 72-73

3. श्रमिक आंदोलन के कार्यकर्त्ताओं को भावात्मक नेतृत्व प्रदान करना और साथ ही श्रमिक आंदोलन के मूलभूत अधिकारों की रक्षा करने की सावधानी बरतना। उदाहरण के लिए संगठन बनाने का अधिकार हो, जीने के लिए आवश्यक न्यूनतम वेतन मिले तथा बढ़ती मँहगाई के अनुपात में वह बढ़ता जाये, नौकरी में सुरक्षा हो, काम का अधिकार एवं व्यवस्थापन तथा लाभ में श्रमिकों का सहभाग हो और इन सभी उपायों के निष्फल हो जाने के बाद अंतिम शस्त्र के रुप में हड़ताल करने का अधिकार हो।

4. श्रमिकों के मन में सेवा-भाव और एकता तथा त्याग की भावना का निर्माण किया जाय।

5. किसी भी राजनीतिक प्रभाव से मुक्त रहकर सभी श्रमिक-संगठनों को अपने साथ लेकर एक राष्ट्रीय महासंघ बनाया जाय।[5]

उपर्युक्त निष्कर्षो को कार्य रुप देने के लिए तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं जनसंघ की विचारधारा से साम्य रखने वाले मजदूर संगठनों एवं नेताओं को एक सूत्र में बाँधने के लिए लोकमान्य तिलक के जन्म दिवस 23 जुलाई,1955 को भोपाल में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें देश के विभिन्न भागों से करीब तीन दर्जन प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सर्वसम्मति से यह तय किया गया कि एक नये संगठन का निर्माण किया जाय।

2.13 नामकरण

तदुपरान्त संस्था के नामकरण की समस्या उठी। ठेंगड़ी ने एक नाम प्रास्तावित किया- भारतीय श्रमिक संघ। पंजाब के प्रतिनिधियों ने इस नाम पर आपत्ति व्यक्त की क्योंकि श्रमिक शब्द का उच्चारण पंजाबी में ठीक ढ़ग से नहीं हो पाता है। अतः उन्होनें श्रमिक शब्द के स्थान पर मजदूर शब्द रखने का सिफारिश की। इस समस्या का

---

5. भालचन्द्र कृष्णाजी केलकर, पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन,खण्ड-3,पृ0-73

अन्तिम हल निकालने का भार वयोवृद्ध नेता कानाईलाल बनर्जी को सौंपा गया। कानाई लाल का निर्णय था– "हमारे बंगाल में श्रमिक शब्द ही अधिक बोला जाता है, परन्तु हमें अखिल भारतीय रुप में काम खड़ा करना है तो अपने पंजाब के भाईयों की सुविधा की दृष्टि से मैं कहूँगा कि "मजदूर शब्द ही चले।"[6] इस निर्णय के साथ ही "भारतीय मजदूर संघ" नामक एक राष्ट्रीय महासंघ भारतीय श्रम संघ आन्दोलन के क्षितिज पर उदित हुआ।

2.14 राजनीतिक पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के उपरान्त राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हिन्दू राष्ट्र की धारणा को देश की राजनीतिक विचार धारा में लाना चाहा। फलस्वरुप 1951 में भारतीय जनसंघ की स्थापना हुई। इसके

प्रथम अध्यक्ष डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के अनुसार, "राष्ट्र जीवनकी ओर देखने के लिए भारतीय दृष्टिकोण तथा राष्ट्रवादी परम्परा को लेकर भारतीय जनसंघ ने देश की राजनीति में प्रवेश किया। किसी भी प्रजातांत्रिक देश में राजनीतिक दल के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह नागरिकों के विभिन्न वर्ग में अपना स्थायित्व कायम करे तथा उनकी आस्था प्राप्त करे। श्रमिक वर्ग में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचार धारा को पल्लवित और पुष्पित करने के लिए एक पृथक श्रमिक संघ की कल्पना सर्वप्रथम जनसंघ के राजनीतिक विचारक एवं नेता दीनदयाल उपाध्याय ने की। इस कल्पना को साकार रुप देने के लिए उन्होंने मजदूर नेता दत्तोपंत ठेंगड़ी से बातचीत की जिससे मुख्य रुप से निम्नलिखित निष्कर्ष निकले–

(क) राजनीतिक दल को लांघकर जाने वाला, श्रमिकों के सच्चे हितों का बोध रखने वाला और भारत की राष्ट्रीय व सांस्कृतिक परम्परा से जुड़ा श्रमिक संगठन बनना चाहिए, तभी पूंजीवादी और साम्यवादी प्रणालियों को निर्णायक ढ्ग से हराया जा सकता है। और

---

6. दत्तोपंत ठेंगड़ी, सप्तक्रम, पृ0 159

(ख) श्रमिक संगठन को राजनीतिक प्रभाव एवं अवसरवादिता से मुक्त करने की आवश्यकता है।[7]

उपर्युक्त निष्कर्षो के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय जनसंघ एक ऐसा राष्ट्रीय मजदूर संगठन को जन्म देना चाहता था जो राजनीतिक दल की परिधि से बाहर हो श्रमिकों के सच्चे हितों का बोध रखता हो तथा भारत की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक परम्परा से जुड़ा हो। ऐसा होने से वह संगठन पूंजीवादी तथा साम्यवादी प्रणालियों को निर्णायक ढ़ग से हरा सकता है। क्या राजनीति के गर्भ से जन्म लेने वाला तथा राजनीतिक शक्तियों एवं प्रणालियों से संघर्ष करने वाला संगठन राजनीति से अपने को पृथक् रख सकता है ? क्या जिस कुल से आया है उस कुल को भूल सकता है तथा कुल के साथ वादा खिलाफी कर सकता है ? इनके उत्तर नकारात्मक होगें। भामस अन्य महासंघों की तरह राजनीति से पूर्णतः जुड़ा हुआ है। वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा का पोषक है। वह भाजपा के लिए मनोनुकूल राजनीतिक पृष्टभूमि तैयार करता है तथा राजनीतिक चुनाव में उसकी मदद करता है। वह वामपंथी दलों का खुलकर विरोध करता है तथा उनके दर्शनों के प्रचार–प्रसार में बाधा उपस्थित करता है। प्रजातांत्रिक प्रणाली में राजनीतिक तटस्थता के सिद्धान्त का अनुकरण असंभव–सा प्रतीत होता है। कई नेताओं के साक्षात्कार से यह बात भी स्पष्ट हुई है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भाजपा, भामस आदि संगठनों के बीच विचार–विमर्श होते रहते हैं तथा ये एक दूसरे की सहायता एवं दिशा–निर्देश करते रहते हैं। विभिन्न राजनीतिक दल वाले तथा उनसे अनौपचारिक रुप से जुड़े मजदूर संगठन अपने संबंध को छुपाने का प्रयास करते है। लेकिन यह संबंध छिपाने से छिपने वाला नहीं और न बताने पर भी जग–जाहिर है। ऐसा लगता है कि भाजपा और भामस के नेताओं में भी भारतीय परम्परा और संस्कृति की अवहेलना करते हुए मन, कर्म एवं वचन में अनेकता का परिचय दिया है। क्या यह माना जाय कि मजदूर वर्ग भामस के प्रति उसकी राजनीति–विहीन चरित्र के कारण आकर्षित है ? या, क्या इसमें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं भाजपा की विचारधारा के प्रति आकर्षण गौण है ? अगर

---

7. भालचन्द्र कृष्णाजी केलकर, पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, खण्ड–3, राजनीतिक चिन्तन, पृ0 72–73

राजनीति–विहीन चरित्र के कारण भामस की प्रगति हुई है तो स्पष्ट है कि विचारधारा का प्रभाव नगण्य है। लेकिन कोई भी भाजपा या भामस का नेता इस निष्कर्ष को नहीं मानेगा। और अगर इसे मानने में कठिनाई हो रही हो तो जाहिर है कि राजनीतिक विचारधारा की इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका है तथा भामस का जन्म भी अन्य महासंघों की तरह राजनीतिक कारणों से प्रेरित है।

2.2 भामस का विकास

2.21 शून्य से प्रारम्भ

23 जुलाई 1955 को "भारतीय मजदूर संघ" नामक अखिल भारतीय श्रमिक संगठन की घोषणा हुई। उस समय भारतीय मजदूर संघ नामक संस्था की कोई अखिल भारतीय समिति नहीं बनी थी। बिना निर्वाचन के ही दत्तोपंत ठेंगड़ी ने महामंत्री के रुप में कार्य शुरु कर दिया। उस दिन भोपाल में ठेंगड़ी जी ने पत्रकारों को बुलाया। एक पत्रकार ने पूछा– आपके साथ कितने महासंघ हैं? एक भी नहीं। तो कितने श्रमसंघ है? एक भी नहीं। एक पत्रकार ने कहा तो ये बतायें कि कितने मजदूर हैं? ठेगड़ी ने कहा एक भी नहीं। इस पर एक पत्रकार ने कटाक्ष करते हुए कहा– कि बिना मजदूर के अखिल भारतीय मजदूर संघ की घोषणा करते हैं।[8]

भारतीय मजदूर संघ के एक मात्र नेता विभिन्न स्थानों पर अपने समान विचारधारा वाले श्रमिकों से मिलते रहे तथा उन्हें संगठन बनाने के लिए प्रेरित करते रहे। इसी क्रम में बम्बई में एक बैठक हुई जिसमें भामस के विधान का प्रारूप तैयार किया गया। लेकिन इस बीच ने तो कोई अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ और न राष्ट्रीय स्तर पर किसी कार्य समिति का गठन। दत्तोपंत ठेंगड़ी, जिन्होंने विभिन्न श्रम–संगठनों में कार्य किये थे तथा श्रमिक संघवाद के ज्ञाता, तजुर्बेकार एवं व्याख्याता थे, भारतीय मजदूर संघ को सशक्त एवं सबल बनाने के लिए प्रयत्नशील रहे।

धीरे–धीरे भारतीय मजदूर संघ की ताकत बढ़ने लगी। इसके

---

8. रामदेव प्रसाद, अध्यक्ष, बिहार प्रदेश ने साक्षात्कार में ये बातें बतायीं।

पूर्व भारत में अखिल भारतीय श्रमिक संगठन इन्टक, एटक, हिन्द मजदूर सभा तथा युटक चल रहे थे। 1955 से इस पाँचवें श्रमिक संगठन ने शुन्य से निर्माण करने का प्रयत्न प्रारम्भ किया। इसकी प्रगति क्रमशः मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र तथा दिल्ली से बढ़ती हुई आज देश के सभी राज्यों में फैल चुकी है। असम के चाय बगान से लेकर सौराष्ट्र के तेल और प्राकृतिक गैस कारपोरेशन के मजदूरों तक तथा कश्मीर की केसर कियारियों के मजदूर से लेकर केरल के मछुआरे मजदूरों की यूनियनों तक, भारतीय मजदूर संघ ने प्रवेश किया है। वहीं आज रेलवे, प्रतिरक्षा, बैंक, बीमा, विद्युत, टेक्सटाईल, सूगर, इंजीनियरिंग, इस्पात, परिवहन, खदान, तेल व प्राकृतिक गैस, फर्टलाइजर और केमिकल्स, स्वायत शिक्षण संस्थान, न्यूज पेपर तथा सरकारी प्रेस के मजदूरों में प्रभावी रुप से कार्य बढ़ाते हुए इन सभी उद्योगों के मजदूरों के अखिल भारतीय महासंघों को बनाने में भी सफल हुआ है। और, आज भारतीय मजदूर संघ उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू कश्मीर, पंजाब और बिहार में नम्बर एक है।[9]

2.22 प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन

1967 में 12 व 13 अगस्त को दिल्ली में भारतीय मजदूर संघ को पहला अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ। उस समय देश के 15 राज्यों में भारतीय मजदूर संघ का कार्य था तथा सदस्य संख्या 2 लाख 46 हजार थी । इस अधिवेशन में 2000 प्रतिनिधि आए थे । तथा सम्बद्ध यूनियनों की संख्या 541 थी। इस अधिवेशन तक 9 राज्यों में प्रान्तीय इकाइयाँ गठित की जा चुकी थी तथा 4 अखिल भारतीय औद्योगिक महासंघों (सूगर, इंजीनियरिंग, टेक्सटाईल तथा रेलवे) इससे संबंद्ध थी। इस प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन डा0 बाबा साहेब अम्बेदकर के साथी और रिपब्लिक पार्टी के प्रधान दादा साहेब गायकवाड़ ने किया था। दादा साहेब ने अपने भाषण में कहा कि ट्रेड यूनियन सही ट्रेड यूनियनिज्म के आधार पर चलाई जाय। अवसरवादी, व्यक्तिवादी, राजनैतिक तत्त्वों के प्रभाव से उसको मुक्त रखा जाए। लोकतंत्र के ढ़ाँचे के अन्तर्गत तथा लोकतंत्रात्मक प्रणाली से उसको

---

9. जनसत्ता, नयी दिल्ली, 24 अगस्त 1985, पृ0- 1

चलाया जाए। लोकतंत्र तथा राष्ट्रीयता के विरोधी तत्वों से उसको बचाया जाए तथा देशभक्ति की भावना के कारण समाज के अन्य विभागों के साथ राष्ट्रोद्धार के कार्य में पूरा सहयोग देने के लिए आगे बढ़ा जाए।[10]

इस अधिवेशन के बाद ही भारतीय मजदूर संघ लोगों की दृष्टि में आया और इसी अधिवेशन में पहली बार अखिल भारतीय कार्य समिति का गठन किया गया। कार्य समिति के सदस्यों नाम, पद एवं स्थान का विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका-2.1

अखिल भारतीय कार्य समिति (प्रथम)

अध्यक्ष	दादा साहेब काम्बले	नागपुर
उपाध्यक्ष	गजानन राव गोखले	बम्बई
	बी० पी० जोशी	दिल्ली
	रमा शंकर सिंह	बिहार
महामंत्री	दत्तोपंत ठेंगड़ी	
मंत्री	राम नरेश सिंह	कानपुर
	ओम पुकार आग्गी	लुधियाना
	प्रभाकर घाटे	मंगलोर
कोषाध्यक्ष	मनहर मेहता	बम्बई
सदस्य	अरूमुगल	मद्रास
	श्री हरि राव	आन्ध्र
	गोविन्द राव आठवले	नागपुर
	रमन शाह	बम्बई
	रामभाऊ जोशी	इन्दौर
	चांदरतन आचार्य	जयपुर
	डॉ० कृष्ण गोपाल	हरियाणा
	रामकृष्ण भास्कर	दिल्ली

---

10. भारतीय मजदूर संघ का प्रथम अधिवेशन, दिल्ली, 1967, पृ० 10

रामदेव प्रसाद	पटना
नरेशचन्द्र गांगुली	कलकत्ता
राम प्रकाश मिश्र	कानपुर
अमलदार सिंह	बम्बई
किशोर देशपाण्डेय	बम्बई
सुधीर सिंह	गोरखपुर
रघुनाथ तिवारी	गौहाटी
सत्येन्द्र नारायण सिंह	उत्कल
आर० वेणु गोपाल	केरल
केशव भाई ठक्कर	गुजरात

प्रथम अध्यक्ष – दादा साहेब काम्बले

काम्बले का जन्म 1904 में महाराष्ट्र में हुआ। शिक्षा ग्रेजुएशन तक। अध्ययन के बाद डाक व तार विभाग में नौकरी तथा मजदूर क्षेत्र में प्रवेश। 1931 में वे डाक व तार कर्मचारियों के संगठन की कार्यकारिणी में लिये गये तथा 44 में ऑल इण्डिया पोस्ट ऐण्ड आर० एम० एस० कर्मचारी एसोसियेशन की कार्यकारिणी में चुने गये। 46 में उस संगठन के महा मंत्री। उनके नेतृत्व में भूख-हड़ताल चली जो आगे चल कर कलम बन्द हड़ताल में बदल गया। 47 से 57 की अवधि में वे विदर्भ पोस्ट ऐण्ड टेलीग्राफ एसोसियेशन के अध्यक्ष रहे। उसके बाद 1967 में भारतीय मजदूर संघ के प्रथम अध्यक्ष चुने गये। सन् 68-69 में केन्द्रीय सरकार के दण्डित कर्मचारियों के लिए बनाई गई केन्द्रीय श्रम संगठनों की राष्ट्रीय समन्वय समिति में वह बराबरी का सदस्य बना और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन को दिये गये भारजीय मजदूरों के मांग पत्र का हस्ताक्षर कर्ता भी बने जो भामस के आग्रह पर तैयार किया गया था।

1968 में भामस ने अखिल भारतीय मान्यता की मांग की। सरकार ने यह बताया कि राष्ट्रीय श्रम आयोग अखिल भारतीय मान्यता के सम्बन्ध में जो सिफारिशें देगा, वह मान्य होगा। भामस ने राष्ट्रीय श्रम आयोग को प्रतिवेदन दिया। दूसरी ओर 22 सितम्बर 1969 को भारतीय मजदूर संघ की ओर से राष्ट्रपति वी० वी० गिरी को मांग पत्रों की एक पुस्तक समर्पित की गयी। भारतीय मजदूर

संघ द्वारा प्रस्तुत यह मांग पत्र अपने तरह का अनोखा था। इसमें सिर्फ अधिकार ही नहीं मजदूरों के कर्त्तव्यों और आचरणों को भी एक व्यवस्था क्रम के रूप में रखा गया था। एक पक्ष की मांग, यदि सही है, तो वह दूसरे पक्ष को कर्त्तव्य बन जानी चाहिए। इसी मांग पत्र पर जोर डालने के लिए 17 नवम्बर 1969 को भामस के 50 हजार मजदूरों का एक विशाल प्रदर्शन दिल्ली में किया गया । देश की राजधानी में किसी भी एक ही केन्द्रीय श्रम संस्था द्वारा प्रदर्शन होने का यह पहला अवसर था।

2.23 द्वितीय अखिल भारतीय अधिवेशन

प्रथम अधिवेशन के समय केवल दिल्ली में ही भामस की राजस्तरीय मान्यता थी। जब दूसरा अधिवेशन 12 व 13 अप्रैल 1970 को कानपुर में हुआ तो उस समय 7 नये राज्यों में भामस को मान्यता प्राप्त हो गयी थी – ये राज्य थे पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा मैसूर। कानपुर अधिवेशन के समय संबद्ध यूनियनों की संख्या 899 और सदस्यता 4 लाख56 हजार हो गयी और महासंघों की संख्या 11 तक हो गयी।[11] इसके बाद एक महत्वपूर्ण घटना 1974 में घटी जो रेल हड़ताल में सरकारी आतंक के नाम से जानी जाती है। "भारतीय रेलवे मजदूर संघ" जो भामस की संबद्ध इकाई है वह भी "नेशनल को–ऑर्डिनेशन कमिटि फॉर रेलवेमेन्स स्ट्रगल" (एन0 सी0 सी0 आर0 एस0) के प्रमुख घटकों में एक था। 8 मई के पहले ही हड़ताल कलकत्ता और मद्रास में शुरु हो गयी थी। सरकार हड़ताली कर्मचारियों को जबर्दस्ती काम पर ले जा रही थी। हड़ताल को तोड़ने के लिए सरकार ने ताण्डव नृत्य किया। उस समय दिल्ली में भारतीय मजदूर संघ की कार्यकारिणी की बैठक हुई। उसमें कहा गया कि एकता के व्यापक हित में उन्हें संयुक्त भूमिका निभानी चाहिए और एकता की उपलब्धि इस संघर्ष की एक विशेषता रही।

भारतीय मजदूर संघ का पटसन कर्मचारी फेडरेशन, फरवरी 1975 में, पटसन हड़ताल के लिए पश्चिम बंगाल संयुक्त मोर्चे का

---

11. भारतीय मजदूर संघ का द्वितीय अधिवेशन, कानपुर पृ0- 1

एक सदस्य बन गया और राज्य तथा केन्द्रीय दोनों स्तरों पर इसे मान्यता मिल गयी। भामस ने 28 अगस्त, 1974 को दिल्ली में श्रम संगठन के सी० डी० एस० विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन में हिस्सा लिया और बाद में सम्मेलन द्वारा गठित राष्ट्रीय अभियान समिति का सदस्य बन गया।

भामस ने दिल्ली में घरेलू नौकरों को, कोचीन में निर्माण ठेकेदारों के मजदूरों को, दिल्ली में दूतावासों के कर्मचारियों को, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में फार्मेसिस्टों और कम्पाउन्डरों को, कालीकट में जहाजी कर्मचारियों को और साथ ही साथ बम्बई में पुलिस अस्पताल के कर्मचारियों को भी संगठित किया है।

2.24 चतुर्थ अखिल भारतीय सम्मेलन

19-20 अप्रैल 1975 को चतुर्थ सम्मेलन अमृतसर में हुआ जिसमें महामंत्री के प्रतिवेदन के अनुसार 1.1.75 तक कुल सम्बद्ध संघों की संख्या 1313 और सदस्यों की संख्या 8 लाख 40 हजार हो गयी और महासंघों की संख्या 14 हो गयी।[12]

25 जून 1975 को कांग्रेस सरकार ने आपात स्थिति लागू कर दी। आपात स्थिति में विरूद्ध भामस ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। आपातस्थिति में भामस के 1 लाख से भी ऊपर कार्यकर्त्ताओं ने कानून को तोड़ा तथा 5 हजार जेलों में बन्द हुए इसमें 250 मीसा के अन्तर्गत गिरफ्तार थे। भारतीय मजदूर संघ इमरजेन्सी के विरूद्ध मजदूरों में जागृति लाने के लिए अनेक प्रकार के पत्रक व पुस्तिकायें, जैसे "आपातस्थिति में पिसता हुआ 'मजदूर" प्रकाशित करता रहा। दूसरी ओर भामस के महामंत्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने महामंत्री पद से त्याग पत्र दे दिया और उन्हें राष्ट्रीय श्रम संघर्ष समिति का संयोजक 1975 में बनाया गया और इस पद पर राम नरेश सिंह आ गये। भारतीय मजदूर संघ ने आपात स्थिति के विरोधी अन्य श्रमिक संगठनों को भी एक मंच पर जुटाने का सफल प्रयास किया तथा इन्दिरा जुल्म के अन्तर्गत चल रही श्रमिक विरोधी नीतियों के खिलाफ संयुक्त रूप से विरोध आयोजित किया। तानाशाही के ध्वस्त होने के बाद भामस पुनः अपनी सही ट्रेड यूनियन आन्दोलन में लौट गया।

---

12. भारतीय मजदूर संघ का चतुर्थ अधिवेशन, अमृतसर, पृ0-2

2.25 पंचम अखिल भारतीय अधिवेशन

21, 22, 23 अप्रैल 1978 को जयपुर में भारतीय मजदूर संघ का पाँचवा अधिवेशन हुआ। 1974 के अन्त में भामस से सम्बन्धित यूनियनें 1313 थी, 1977 के अन्त में 1555 और सदस्य संख्या 10,83,488 हो गयी।[13]

इस बीच 8 अक्तुबर, 1977 को "कान्फेडरेशन ऑफ सेन्ट्रल ऐण्ड स्टेट गवर्नमेंट एम्पलाइज" नामक सहयोगी संस्था की स्थापना हुई जिसकी सदस्य संख्या 11 लाख तक पहुँच चुकी है।

भामस से सम्बद्ध 17 औद्योगिक महासंघ सक्रिय रूप से कार्यरत हैं। इस अधिवेशन में निम्नलिखित उद्योगों के महासंघ बनने जा रहे हैं-

1. बीड़ी उद्योग
2. बुनकर
3. भारतीय हैवी इलेक्ट्रिकल्स लि0
4. फर्टिलाइजर कारपोरेशन ऑफ इण्डिया
5. डेरी
6. ओ0 एन0 जी0 सी0, और
7. इ0 डी0 स्फाफ (पोस्टल)

2.26 छठा अखिल भारतीय अधिवेशन

7, 8 मार्च 1981 को कलकत्ते में यह घोषणा की गयी कि भामस से सम्बद्ध संघों की संख्या 1776 और सदस्य संख्या 18,05,910 हो गयी।[14]

अब तक भामस के 25 वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। भामस ने अपनी रजत जयन्ती मनाया।

---

13. भारतीय मजदूर संघ का पंचम अधिवेशन, जयपुर, पृ0-3
14. भारतीय मजदूर संघ छठा अधिवेशन, कलकत्ता, पृ0-16

इस अवधि में नागालैण्ड में ट्रान्सपोर्ट मजदूरों की तथा त्रिपुरा में चाय मजदूरों की एक-एक प्रभावी यूनियनों ने भामस से सम्बद्धता ली है। इस प्रकार से औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े राज्यों में भी भामस के काम का श्रीगणेश हुआ।

2.27 सतवाँ अखिल भारतीय अधिवेशन

9,11 जनवरी 1984 को हैदराबाद में सम्मेलन हुआ। उस समय तक यूनियनों की कुल संख्या 2,007 और सदस्यों की संख्या करीब 20 लाख 54 हजार हो गयी।[15]

2.28 आठवाँ अखिल भारतीय अधिवेशन

भामस का आठ्वाँ अखिल भारतीय अधिवेशन 26-28 दिसम्बर 1987 को बेंगलूर (कर्नाटक) में हुआ, उस अधिवेशन में महामंत्री के रिपोर्ट में बताया गया कि यूनियनों की कुल संख्या 2,353 तथा सदस्य संख्या 32,86,559 लाख पहुँच गयी है।[16]

भामस के इशारे पर जो कार्यक्रम हुए, उनके अलावा संबद्ध महासंघों ने भी अकेले में या दूसरे संगठनों के साथ मिलकर आन्दोलनात्मक कार्यक्रम संपन्न किये, इनमें डाक-तार, रेल, प्रतिरक्षा और सरकारी कर्मचारियों ने मिलकर 1984 की सितम्बर 26 को एक दिन की सांकेतिक हड़ताल का आह्वान किया, इसे आखिरी क्षण में वापस लेना पड़ा क्योंकि सरकार ने कई मांगे मान लीं। 1986 की फरवरी 11 को दिल्ली में परिवहन की दरों को एकाएक बढ़ाने के खिलाफ मजदूर संगठनों ने और राजनैतिक दलों ने दिल्ली बन्द का आयोजन किया। साथ ही भारत बन्द में भी भाग लिया। इसी तरह दूरसंचार विभाग के टेक्नीशियनों ने अपने वेतन-परिष्करण और विभागीय स्थान मान के ढाँचे को सुधारने के लिए 1986 से 87 तक आन्दोलन किया। अक्तुबर1986 में 15 दिन के वेतन का तदर्थ बोनस घोषित किये जाने के खिलाफ प्रतिरक्षा और डाक-तार के कर्मियों ने एक दिन की हड़ताल की।

---

15. भारतीय मजदूर संघ सतवाँ अधिवेशन, हैदराबाद, पृ0-60
16. भारतीय मजदूर संघ आठ्वाँ अधिवेशन, बेंगलूर, पृ0-60

महिला विभाग

भामस की महिला विभाग इकाई जिसकी स्थापना 1981 में कलकत्ता में सम्पन्न छठे अधिवेशन के समय हुई थी, इस अवधि में कुछ सक्रिय हुई परन्तु फिर भी इसकी प्रगति अधिक नहीं है। 1987 अप्रैल के अन्त में त्रिद्विसीय गोष्ठी का आई0 एल0 ओ0 के सहयोग से बम्बई में सम्पन्न होना एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। उसका परिणाम हुआ कि उसमें भाग लेने वाले सदस्यों ने महिला विभाग की नयी शाखा खोलने की जिम्मेदारी वहन करने में दिलचस्पी दिखायी।

राज्य स्तर पर दो दिन का अभ्यास वर्ग नासिक में केवल महाराष्ट्र बिजली बोर्ड की महिला कर्मचारियों के लिए लगाया गया।

उड़िसा में आँगनबाड़ी की महिला कर्मचारियों ने महिला विभाग की शाखा चालू करने का काम किया।

भामस का अन्तर्राष्ट्रीय संबंध

भामस किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक महासंघ से सम्बद्ध नहीं है। भामस के प्रतिनिधियों कई देशों के श्रमिक संघों के आमंत्रण पर उनके अधिवेशों एवं विचारगोठियों में भाग लिया है तथा विभिन्न देशों में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में भी अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और भामस

सदस्यता सत्यापन में भारतीय मजदूर संघ द्वितीय सर्वाधिक सदस्यों वाला संगठन बनने के पश्चात् अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलनों के भारतीय प्रतिनिधि मंडल में मजदूरों के नुमाइंदों को चुनने की पद्धति में भारत सरकार को पहल करनी पड़ी। 1984 के बाद हर साल भामस को प्रतिनिधि मंडल में शामिल किया जाने लगा। इसके अलावा निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भामस के प्रतिनिधियों ने भाग लिया–

1. एशियायी क्षेत्रीय सम्मेलन, जकार्ता दिसम्बर, 86
2. वेतनभोगी कर्मचारियों की समिति, 84

3. आंतरिक परिवहन समिति, जनवरी, 85
4, लकड़ी और जंगलीय उद्योग, सितम्बर, 85
5. इस्पात समिति, दिसम्बर, 86
6. निर्माण कार्य और सिविल इंजिनियरिंग समिति, मार्च-अप्रैल,87

राष्ट्रीय अभियान समिति और भामस

1. आठ श्रम संगठनों की संयुक्त राष्ट्रीय अभियान समिति काफी क्रियाशील रही। महँगाई भत्ते की दर को बढ़ाने के लिए 84 के अप्रैल 18 को संसद के सामने एक प्रदर्शन आयोजित किया गया। इसमें भामस की अच्छी संख्या थी।

2. विश्व बाजार में तेल की कीमत जब काफी गिरी थी, भारत ने तेल पदार्थों की कीमत बढ़ाई। आम जनता ने रोष प्रगट किया। रा० अ० स० ने इस अवसर पर 26 फरवरी, 86 को सारा औद्योगिक भारत बन्द करवाया।

3. मजदूरों के सामने जो समान मुद्दे हैं उनके बारे में श्रम संगठनों में पूर्ण एकता होनी चाहिए। यह भामस का विचार रहा और उसने सतर्कता रखी।

   (क) मजदूरों के मुछ्दे राजनीतिकरण के कारण कमजोर न हो।
   (ख) सभी संगठन एक जैसा महत्व पायें।
   (ग) सकारात्मक पहलुओं को उजागर किया जाय।
   (घ) नीचे के स्तर पर भी मजदूर एकता कायम हो।

4. इसी तरह सीमेंट उद्योग में पंचायत मंडल के गठन के खिलाफ जो एक दिन की सांकेतिक हड़ताल का निर्णय लिया गया था उसे केवल भामस-यूनियनों ने ही लागू किया।

असंगठित शहरी मजदूर

ग्रामीण किसानों के अलावा शहरी मजदूरों का बड़ा भाग असंगठित है। बम्बई में भामस ने घरेलू कामगारों को संगठित किया है, जिन पर कोई नियम नहीं लागू हैं। उन्हें बोनस और ग्रेच्यूटी दिलवायी। राज्य के श्रम मंत्री ने इन मजदूरों के लिए नियम बनाने की बात कही।

ग्रामीण मजदूर

ग्रामीण एवं कृषि मजदूर यूनियनें कई प्रदेशों में बनी है परन्तु उनकी अब तक की उपलब्धियाँ ठीक नहीं है। कुछ राज्यों में संगठित कृषि फार्मर्स या कृषि विश्वविद्यालय के फॉर्म पर कार्य करने वाले मजदूरों को इस दायरे में लिया गया है। भूमिहीन मजदूर तथा छोटे गरीब किसानों को इस परिधि में रखा है। भामस का यह विचार हो रहा है कि कृषि मजदूरों को बड़े पैमाने पर संगठित किया जाय।

कल्याणकारी कार्य

भारतीय मजदूर संघ ने समाज सेवा जैसे कल्याणकारी कार्य भी शुरु किये हैं। कोयला खदान क्षेत्र में इसने कुछ प्राथमिक स्कूल शुरु किये हैं, इसी तरह खेतड़ी कॉपर प्रोजेक्ट में भी यूनियन प्राइमरी स्कूल चला रही है। बिजली कर्मचारी यूनियन ने महाराष्ट्र में कल्याणकारी योजना, एक कल्याणकारी कोष, आकस्मिक मृत्यु एवं सेवा निवृत्त कर्मचारियों के हेतु स्थापित किया है। कर्नाटक के हरिहर में किर्लोस्कर मजदूर संघ ने एक कल्याण कारी कोष की स्थापना की है। पुणे में भामस ने सामाजिक कार्य किये हैं। यहाँ नेत्र शिविर का आयोजन किया। हैदराबाद में भामस की आन्ध्र बैंक का यूनियन ने नेत्रदान शिविर का आयोजन किया गया था। कई स्थानों पर रक्त दान शिविर लगाये गये। झाँसी में मध्य रेलवे कर्मचारी संघ ने आवास सेवा कार्यक्रम की शुरुआत की है। बम्बई के नजदीक मुलुण्ड में भामस ने एक आवासीय कम्प्लेक्स, जिसका नाम "दीनदयाल नगर" रखा, बनाया है। इसी तरह हैदराबाद में राम नरेश सिंह आवासीय कॉलोनी बनकर तैयार है। कई यूनियनें उपभोक्ता सोसाइटियाँ चला रही हैं। भामस वहाँ ऋण बैंक सोसाइटी भी चला रहा है।

बुलढाणा जिले में खेतिहर मजदूर संघ ने पीने के पानी की व्यवस्था, दवाओं की व्यवस्था और स्कूल-भवन बनाने की व्यवस्था भी भामस ने की है।

ग्रामीण मजदूरों की तरक्की कराने की दृष्टि से राम नरेश स्मारक न्यास का गठन भी किया गया है।[17]

2.3 भामस की प्रगति- आँकड़ा के आईने में

ऊपर के वर्णन से भामस की प्रगति का पता चलता है। इस संदर्भ में प्राप्त आँकड़ों को सारणी 2.1 और 2.2 में दर्शाया गया है। सारणी 2.1 में सम्बद्ध यूनियनों की संख्ख तथा सारणी2.2 में सदस्थ संख्या के आधार पर भामस की प्रगति अंकित है।

सारणी 2.1 के आँकड़ों के अवलोकन से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि सभी राज्यों में भामस की सम्बद्ध यूनियनों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। यूनियनों की संख्या सबसे अधिक (416) उत्तर प्रदेश में है तथा सबसे कम गोवा नागालैण्ड और त्रिपुरा में है।

सारणी 2.2 में भामस की सदस्य संख्या अंकित है। भामस के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन (1967) के समय यह करीब 2 लाख 47 हजार थी जो द्वितीय अधिवेशन (1970) में 4 लाख 56 हजार, चतुर्थ अधिवेशन (1975) में 8 लाख 40 हजार, पाँचवे अधिवेशन (1978) में 10 लाख 83 हजार, छठे अधिवेशन (1981) में 18 लाख 6 हजार, साँतवे अधिवेशन (1984) में 20 लाख 54 हजार तथा आठवें अधिवेशन (1987) में 32 लाख 87 हजार हो गयी। ये आँकड़े इस बात के सबूत हैं कि भामस ने द्रुत गति से प्रगति की है। सभी राज्यों में इसकी सदस्यता-संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी है। सदस्यता संख्या के आधार पर दिल्ली का स्थान प्रथम, उत्तर प्रदेश का द्वितीय तथा बिहार का तृतीय है। गोवा तथा नागालैण्ड में इसकी सदस्य संख्या सौ में है।

---

17. भारतीय मजदूर संघ आठवाँ अधिवेशन, बेंगलुर, पृ0 24

सारणी 2.1

भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध यूनियनों की प्रदेशवार संख्या

क्र0	प्रान्त	1 1967	2 1970	3 1975	4 1978	5 1981	6 1984	7 1987
1.	तमिलनाडू	5	5	6	2	8	7	16
2.	केरल	1	10	34	50	36	45	123
3.	पांडिचेरी	—	—	—	--	--	--	2
4.	कर्नाटक	—	—	77	63	81	92	108
5.	आन्ध्र	10	31	57	75	74	150	235
6.	गोवा	—	—	1	--	--	1	1
7.	महाराष्ट्र	68	111	124	123	154	160	175
8.	विदर्भ	54	54	52	45	47	68	82
9.	गुजरात	13	14	22	28	37	38	66
10.	मध्यप्रदेश	32	105	137	144	177	155	164
11.	राजस्थान	43	66	52	205	150	224	155
12.	हरियाणा	25	30	52	62	73	86	108
13.	दिल्ली	40	55	90	76	115	101	91

क्र0	प्रान्त	1 1967	2 1970	3 1975	4 1978	5 1981	6 1984	7 1987
14.	चण्डीगढ़	6	8	23	10	17	17	21
15.	हिमाचल	—	6	12	18	19	26	46
16.	पंजाब	40	120	135	142	168	167	184
17.	जम्मू कश्मीर	—	1	7	7	17	18	23
18.	उत्तर प्रदेश	149	174	258	292	352	384	416
19.	बिहार	21	32	60	66	81	101	152
20.	उड़ीसा	1	4	8	11	17	14	15
21.	बंगाल	14	36	92	116	138	135	148
22.	असम	1	6	14	10	12	16	20
23.	नागालैण्ड	—	—	—	—	—	1	1
24.	त्रिपुरा	—	—	—	—	—	1	1
	योग	541	899	1313	1555	1775	2067	2353

सारणी 2.2

भारतीय मजदूर संघ से संबद्ध संघों की प्रदेशवार सदस्य संख्या

क्र0	प्रान्त	1967	1970	1975	1978	1981	1984	1987
1.	तमिलनाडू	500	2000	6000	26500	31325	12600	31335
2.	केरल	50	1000	3600	5525	7500	8734	29616
3.	पांडिचेरी	--	--	--	--	--	--	104
4.	कर्नाटक	--	--	25630	26000	42128	50000	90030
5.	आन्ध्र	12000	30000	38000	47000	53212	110500	249294
6.	गोवा	--	--	600	--	--	168	300
7.	महाराष्ट्र	51143	91000	121000	113074	135685	149300	215564
8.	विदर्भ	9500	1500	39000	13043	76450	82786	105758
9.	गुजरात	1000	5000	10751	15500	18000	20000	24762
10.	मध्यप्रदेश	8757	35000	42381	75000	98440	122000	167790
11.	राजस्थान	23100	40000	85287	190000	121229	136160	230956
12.	हरियाणा	6000	11500	15000	42000	36310	43508	69103
13.	दिल्ली	45143	60000	105051	107230	419206	412983	655215

क्रमशः...

क्र0	प्रान्त	1967	1970	1975	1978	1981	1984	1987
14.	चण्डीगढ़	850	1500	2850	4430	3887	3900	4000
15.	हिमाचल	--	1000	6000	10000	18186	20000	30159
16.	पंजाब	10759	30000	74373	90000	95000	110000	130204
17.	जम्मू कश्मीर	--	100	2750	1500	5775	6142	16064
18.	उत्तर प्रदेश	43000	63000	114251	140000	272665	345000	542984
19.	बिहार	25000	42000	75000	90325	188284	221241	422848
20.	उड़ीसा	800	3500	2274	3000	8271	11549	5987
21.	बंगाल	1300	10000	60125	38109	102130	113781	158751
22.	असम	2000	5000	9500	45252	70112	71254	104585
23.	नागालैण्ड	--	--	--	--	--	115	350
24.	त्रिपुरा	--	--	--	--	--	2000	800
	योग	246902	456100	839423	1083488	1805910	2053721	3286559

2.4 भारतीय श्रम संघ आन्दोलन में भामस का स्थान

भामस एक राष्ट्रीय महासंघ है जिसका नाम महासंघों की सूची में विधिवत 1967 में दर्ज हुआ। इस 20 वर्षों की अवधि में भामस ने आशातीत प्रगति की है तथा महासंघों की सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। सरकार द्वारा विभिन्न महासंघों द्वारा प्रस्तुत यूनियनों तथा सदस्यों की संख्या के दावे की 1980 में जाँच पड़ताल हुई तथा यूनियनों को सदस्य संख्या की प्रमाणित एवं सत्यापित प्रति प्रकाशित की गई। केन्द्रीय श्रमिक संगठनों के दावे तथा प्रमाणित सदस्य संख्या का विवरण सारणी 2.3 में प्रस्तुत है।

सारणी 2.3 में आँकड़ों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि केन्द्रीय महासंघों में सदस्य संख्या के आधार पर इंटक का स्थान प्रथम है। इससे सम्बद्ध यूनियनों की संख्या 1604 तथा उनकी सदस्य संख्या 22 लाख 36 हजार है। इस संदर्भ में भामस का स्थान द्वितीय है जिसके यूनियनों की संख्या 1333 है तथा सदस्यों की संख्या 12 लाख 11 हजार है। अन्य महासंघों की स्थिति भी सारणी में दर्शाई गई है। सबसे प्राचीन महासंघ एटक का नौवें स्थान पर तथा एक प्रभावशाली वामपंथी महासंघ सीटू का दसवें स्थान पर होना कतिपय प्रश्न खड़ा करते है। सत्यापन की इस प्रति से इस प्रश्न का जबाब हासिल होता है। इन महासंघों ने सत्यापन प्रक्रिया का बहिष्कार किया तथा अपने दावे प्रस्तुत नहीं किये। सम्मिलित संख्या श्रमिक संघों के रजिस्टार से प्राप्त की गयी। विभिन्न विद्वानों तथा श्रमसंघ के नेताओं ने सरकार द्वारा प्रकाशित महासंघों की सदस्य शक्ति पर अलग-अलग टिप्पणी की।

जनसत्ता के एक विषेश संवाददाता ने "मजदूर संगठनों में कम्युनिष्ट पार्टियों की पैठ घटी" नामक शीर्षक के अन्तर्गत सत्यापित सदस्य संख्या के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाला।

> "देश के औद्योगिक मजदूरों पर से कम्युनिस्ट मजदूर संगठनों का असर तेजी से घट रहा है। इनकी जगह कांग्रेस-ई से जुड़ी इंटक, भारतीय जनता पार्टी से जुड़ा भारतीय मजदूर संघ और दूसरे निर्दलीय संगठन लेते जा रहे है।

सारणी 2.3

क्रेन्द्रीय श्रमिक संगठनों की सत्यापित सदस्य संख्या

STATEMENT SHOWING CLAIMED AND VERIFIED MEMBERSHIPS FIGURES OF CENTRAL TRADE UNION ORGANISATIONS FOR THE YEAR ENDING 31-12-80

Sl. No.	Name of Central Organisation	Claimed		Provisional		Final verified	
		No. of Unions	Membership	No. of Unions	Membership	No. of Unions	Membership
1.	INTUC	3,457	35,09,326	1,604@	22,36,128@	1,604@	22,36,128@
2.	BMS	1,725	18,79,728	1,333@	12,11,345@	1,333@	12,11,345@
3.	HMS	1,122	18,48,147	409	7,35,027	426	7,62,882
4.	UTUC (LS)	154	12,38,891	134	6,21,359	134	6,21,359
5.	NLO	249	4,05,189	172	2,46,540	172	2,46,540
6.	UTUC	618	6,08,052	158	35,384	175	1,65,614
7.	TUCC	188	2,72,229	63	14,570	65	1,23,048
8.	NFITU	166	5,27,375	80	84,123	80	84,123
9.	AITUC	1,366*	10,64,330*	1,080	3,44,746	1,080	3,44,746
10.	CITU	1,737*	10,33,432*	1,474	3,31,031	1,474	3,31,031
	TOTAL	10,776	1,23,86,699	6,507	58,60,253	6,543	61,26,816

@ The above figures do not include the membership figures of 13 unions of the BMS and one of the INTU in the Posts & Telegraphs Department as on objection has been raised in this regard. A final decision in this regard will be taken after further examination of the issue.

The figures shown as claimed membership of AITUC and CITU have been obtained from the records of respective Registers of Trade Unions as these unions have failed to submit them.

केन्द्रीय श्रम आयुक्त के सर्वेक्षण के आँकड़ों से यह नतीजा निकलता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि "सीटू और एटक ने सर्वेक्षण के दौरान अपने सदस्यों की पूरी सूचियाँ पेश नहीं की, जबकि ये संगठन अपने सदस्यों की संख्या बहुत ज्यादा होने का दावा करते है।"[18]

2.5 भामस की संरचना एवं प्रशासन

प्रस्तुत खण्ड में भामस की संगठनात्मक रुप रेखा तथा प्रशासकीय ढाँचा पर प्रकाश डाला गया है।

2.51 संगठनात्मक ढाँचा

केन्द्रीय संगठन के नाते भारतीय मजदूर संघ सभी सम्बद्ध यूनियनों और महासंघों से सर्वोपरि है। यह सभी सम्बन्धित महासंघों व यूनियनों के अनुसरण के लिए नीतियों का निर्धारण करता है। संगठनात्मक एवं नीति-निर्धारण सम्बन्धी मामलों में भामस का दृष्टिकोण मार्गदर्शक का कार्य करता है। भामस की संरचना को निम्नांकित रेखा-चित्र में प्रस्तुत किया जा रहा है।

रेखा-चित्र 2.1

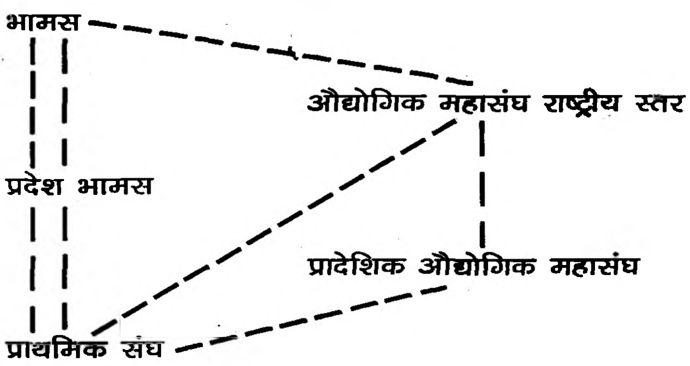

---

18. जनसत्ता, पृष्ट - 1, 24 अगस्त 1985

रेखा–चित्र 2.1 से यह स्पष्ट होता है कि भामस महासंघ होने के नाते शीर्ष स्थान पर है। सभी संघ एवं महासंघ इससे सम्बद्ध हैं तथा इसके द्वारा आदेश और निर्देश ग्रहण करते है। सम्बद्ध इकाइयों में सबसे निम्न स्थान पर प्राथमिक संघ है। ये संघ किसी खास कारखाना या औद्योगिक इकाई में कार्य करते है। प्राथमिक संघ प्रदेश भामस या प्रादेशिक औद्योगिक महासंघ या दोनों ही से सम्बद्ध होते है। कुछ प्राथमिक संघ ऐसे भी हैं जो सीधे भामस से ही सम्बद्ध हैं। प्रदेश भामस, भामस की प्रदेश शाखा के रुप में काम करता है। कुछ प्रदेशों में औद्योगिक महासंघों की भी स्थापना हुई है जो राष्ट्रीय औद्योगिक महासंघों से सम्बद्ध है। राष्ट्रीय औद्योगिक महासंघ भामस से सम्बद्ध है। स्पष्ट है कि भामस की संरचना में प्राथमिक संघों का स्थान महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण संगठनात्मक ढाँचा की वे आधारशिलाएँ हैं।

भामस की कार्यसमिति को प्रादेशिक इकाइयों तथा राष्ट्रीय औद्योगिक संघों के गठन का अधिकार प्राप्त है। प्रदेश भामस तथा राष्ट्रीय औद्योगिक संघ के विधान तो अपने होते हैं लेकिन किसी भी हालत में भामस के विधान के प्रतिकूल नहीं होते। प्रदेश भामस तथा राष्ट्रीय औद्योगिक संघों पर भामस को नियंत्रण होता है तथा इनका अपने घटकों पर। प्रदेश भामस और राष्ट्रीय औद्योगिक संघों को अपने परीक्षित लेखा सहित अपने गतिविधियों का वार्षिक प्रतिवेदन भामस की कार्य समिति को भेजना पड़ता है। भामस की कार्य समिति को यह अधिकार प्राप्त है कि वह किसी भी सम्बद्ध इकाई को जो सूचारु रुप से काम न कर रही हो, निलम्बित कर सकता है। वह निलम्बित इकाई के कार्य–संचालन के लिए तदर्थ समिति का गठन कर सकती है। निलम्बन सम्बन्धी कार्यवाई का अनुमोदन प्रतिनिधि सभा द्वारा होना आवयश्क है।

(क) सम्बद्धता की पात्रता : भामस की सम्बद्धता प्राप्त करने की निम्नलिखित शर्ते हैं–

(1) सम्बद्धता प्राप्त करने की इच्छुक यूनियन को भामस के लक्ष्यों, उद्देश्यों, साधनों और विधान को स्वीकार करना होगा।

(2) उसे श्रमिक संघवाद (Trade unionism) को राष्ट्रीय सेवा के एक प्रभावी साधन के रुप में स्वीकार करना होगा।

(3) यूनियन या संघों से सम्बद्ध यूनियनों की सदस्यता शुल्क की दरें एक रुपया प्रतिमास से कम न होगी। लेकिन संघ की कार्य समिति, सम्बद्धता के लिए कम चन्दा दर रखने वाले संघों - यूनियनों के सम्बद्धता संबंधी प्रार्थना-पत्रों पर विचार कर सकती है।

(4) यूनियनों संघों को भामस द्वारा निर्धारित प्रपत्र पर दस रुपये शुल्क के साथ प्रार्थना पत्र अपने प्रदेश की भामस की कार्य समिति अथवा जहाँ यह न हो वहाँ सम्बन्धित क्षेत्रीय मंत्री के माध्यम से देना होगा। उपबन्ध है कि अखिल भारतीय औद्योगिक महासंघ अपना या अपने अखिल भारतीय घटक का प्रार्थना पत्र सीधे भामस को प्रेषित कर सकता है।[19]

(5) अपने विधान की एक प्रति, अपने पदाधिकारियों की एक सूची और अन्य जानकारी प्रदान करेगा, जो कार्य समिति निर्धारित करेगी।

(ख) यूनियन/संघ के प्रार्थना पत्र को संगत पत्रों के साथ प्रदेश भारतीय मजदूर संघ या सम्बन्धित क्षेत्रीय संगठन या अखिल भारतीय औद्योगिक संघ, अपनी सिफारिशों के साथ आवश्यक कागज पत्रों सहित भेजेगा। प्रार्थना पत्र की शर्तो के बारे में संतुष्ट होने के बाद संघ का केन्द्रीय कार्यालय, इस शर्त पर संघ को अस्थाई रुप से सम्बद्ध कर लेगा कि कार्य समिति अपनी अगली बैठक में इसे स्वीकार कर ले। तब केन्द्रीय कार्यालय सम्बद्धता प्रमाण पत्र जारी करेगा।[20]

(ग) संघ की कार्य समिति को, सम्बद्धता के किसी भी प्रार्थना पत्र को लिखित कारण देकर ही अस्वीकार करने का अधिकार होगा। प्रभावित संघ को इस निर्णय के विरुद्ध प्रतिनिधि सभा के समक्ष अपील करने का अधिकार होगा।[21]

---

19. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 4
20. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 5
21. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 5

(घ) संघ की कार्य समिति को, किसी यूनियन को सम्बद्धता शुल्क न दे सकने की स्थिति में, निश्चित समय के भीतर केन्द्रांश अथवा विशेष संग्रह न दे पाने की दशा में अथवा कोई अनियमितता होने, विधान का अतिक्रमण किये जाने अथवा समिति के मत में भामस के हितों के लिए हानिकर होने की दशा में यथोचित सूचना देकर असम्बद्ध करने का अधिकार होगा।

असम्बन्धित की गई यूनियन को भामस की प्रतिनिधि सभा के समक्ष अपील करने का अधिकार होगा और उसका निर्णय अंतिम होगा।

(ड़) केवल सम्बद्धता शुल्क, अनुदान या विशेष लेवी न दे सकने के कारण सम्बद्ध यूनियन को पुनः सम्बद्धता प्राप्त करने का अधिकार होगा, बशर्ते कि वह अपनी उस समस्त बकाया राशि का भुगतान कर दें, जो यूनियन को सम्बद्धता समाप्त न होने की दशा में देनी होती है। कार्य समिति को अधिकार होगा कि वह पुनः सम्बद्धता प्राप्त करने के पूर्व किसी भी यूनियन को पिछले बकाया के पूर्ण या आंशिक भुगतान से मुक्त कर दे।

(च) जो यूनियन सम्बद्धता खो देगी उसके वे समस्त अधिकार खत्म हो जायेगें जो सम्बद्ध यूनियनों के होते हैं।[22]

(छ) किसी भी यूनियन को असम्बद्ध करने से पहले कार्य समिति उसके विरुद्ध आरोपी को नोटिस देगी और उसे अपना पक्ष प्रस्तुत करने का अवसर देगी।

(ज) भामस को तीन मास की नोटिस दिये बिना किसी भी यूनियन को अपनी सम्बद्धता वापस लेने का अधिकार नहीं होगा।

2.52 प्रशासकीय ढाँचा

भामस के प्रशासकीय ढाँचे की रेखा-चित्र 2.2 में प्रस्तुत किया गया है। स्पष्ट है कि भामस के प्रशासन के तीन मुख्य अंग हैं - प्रतिनिधि सभा, कार्य समिति एवं स्थाई समिति।

---

22. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 6

रेखा–चित्र 2.2

प्रशासकीय संरचना

प्रतिनिधि सभा

|

कार्य समिति

|

स्थाई समिति

|

अन्य समितियाँ

(वित्त, प्रत्ययपत्र, वैदेशिक संबंध, शिक्षा, अनुसंधान, औद्योगिक संबंध)

प्रशासकीय अंगों के अधिकारों एवं जिम्मेवारियों पर यहाँ प्रकाश डाला गया है।

प्रतिनिधि सभा

यह भामस का सर्वोच्च नीति निर्मात्री निर्णायक और अनुशासनिक निकाय है। संघ की प्रतिनिधि सभा की सामान्य बैठक आमतौर पर दो वर्षो के पश्चात होती है। प्रतिनिधि सभा का विशेष अधिवेशन भी बुलाया जा सकता है।[23]

(1) प्रत्येक यूनियन के 50 सदस्यों पर 1 प्रतिनिधि और इसके बाद 500.सदस्यों तक की संख्या पर प्रत्यके 100 पर व बचे हुए बड़े भाग (50 या अधिक) पर एक–एक प्रतिनिधि और चुने जाते हैं। यदि सदस्य संख्या 2000 तक है तो 250 पर एक–एक चुने जाते हैं। सदस्य संख्या 5000 तक हो तो प्रत्येक 500 पर एक–एक प्रतिनिधि। यदि 15000 हो तो प्रत्येक एक हजार पर व बचे हुए भाग पर एक प्रतिनिधि चुने जाते हैं। 15000 से ऊपर सदस्य हो तो 2500 पर एक का चुनाव होता है।[24]

---

23. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 8
24. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 9

(2) प्रतिनिधि सभा की द्विवार्षिक साधारण बैठक महामंत्री की रिपोर्ट तथा पिछले दो वर्षो के लेखा परीक्षित लेखा के विवरण को प्राप्त और पारित करती है और आगामी दो वर्षो के लिए अनुमानित बजट को पास करती है।

(3) प्रतिनिधि सभा अपनी द्विवार्षिक साधारण सभा में कार्य समिति के निम्न पदाधिकारियों का चुनाव करती है।

1. अध्यक्ष – एक
2. चार से अनधिक उपाध्यक्ष
3. महामंत्री – एक
4. चार से अनधिक मंत्री
5. वित्त मंत्री – एक
6. उप-वित्त मंत्री – एक

कार्य समिति

(क) प्रतिनिधि सभा द्वारा निर्वाचित पदाधिकारी तथा निम्नलिखित सदस्य कार्य समिति में होते हैं–

(1) महामंत्री द्वारा नामजद अखिल भारतीय तथा क्षेत्रीय संगठन मंत्री एवं कार्यालय मंत्री।

(2) प्रदेश भारतीय मजदूर संघ इकाइयों के महामंत्री।

(3) भामस से सम्बन्धित राष्ट्रीय औद्योगिक संघों के महामंत्री।

(4) कार्य समिति द्वारा सहयोजित अधिक से अधिक ग्यारह अन्य सदस्य।

(ख) (1) कार्य समिति प्रतिनिधि सभा के प्रस्तावों एवं निर्देशों के अनुसार भामस के सामान्य प्रशासन तथा कार्य को चलाने के लिए सभी आवश्यक और उचित कदम उठाती है।

(2) अन्य समितियों के साथ-साथ निम्नलिखित समितियों की भी नियुक्ति करती है।

(क) वित्त समिति

(ख) प्रत्ययपत्र समिति

(ग) वैदेशिक सम्बन्ध समिति

(घ) शिक्षा समिति

(ङ) अनुसंधान समिति

(च) औद्योगिक सम्बन्ध समिति

(3) प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों के निर्वाचन हेतु तिथियों की घोषणा और प्रक्रिया का निर्धारण करती है।

(4) यूनियनों की सम्बद्धता के और प्रदेश व अन्य क्षेत्रीय निकायों, औद्योगिक संघों तथा स्थायी समिति के संघटन व कार्यो के लिए नियम निर्धारित करती है।

(5) प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन की तिथियाँ, स्थान, विषय-सूची निश्चित व घोषित करती है।[25]

(6) संघ के समस्त संघटन इकाइयों के कार्य तथा व्यवहार को निर्देशित तथा विनियमित करती है।

(7) उचित निर्णय तथा कार्य करके किसी भी आकस्मिक बात का सामना करती है।

(8) सामान्यतः ऐसे सभी कार्य करती है जिनका उद्देश्य सामान्य रुप में मजदूरों के तथा विशिष्ट रुप में "संघ" के हितों की रक्षा एवं संवर्धन करना है।

(9) कार्य समिति की बैठक कम से कम 6 मास में एक बार अवश्य होती है। कार्य समिति का कोरम कार्य समिति की सदस्य संख्या का एक तिहाई होता है।[26]

भामस की स्थाई समिति में निम्नलिखित सदस्य होते है।

कार्य समिति के पदाधिकारी और क्षेत्रीय संगठन मंत्री। यह समिति कार्य समिति के निर्णयों को लागू करने व उचित क्रियान्वयन-हेतु समय समय पर आवश्यकतानुसार मिला करती है।[27]

---

25. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 10
26. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 11
27. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 11

2.6 भामस की विचारधारा

भामस का उद्गम स्थान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है अतः यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा को मजदूर वर्ग में पल्लवित एवं पुष्पित करने में संलग्न है।

2.61 चिन्तन प्रक्रिया

भामस के संस्थापक महामंत्री दत्तोपंत ठेंगड़ी ने भामस की चिन्तन प्रक्रिया पर प्रकाश डाला है। उनके द्वारा प्रतिपादित चिंतन प्रक्रिया की रुप-रेखा यहाँ प्रस्तुत है-

रेखा-चित्र 2.3

चिन्तन प्रक्रिया[28]

विचारधारा

उसके प्रकाश में

अन्तिम लक्ष्य

उसके प्रकाश में

तात्कालिक उद्देश्य

उसके प्रकाश में

नीति

उसके प्रकाश में

रणनीति

उसके प्रकाश में

रण युक्ति

उसके प्रकाश में

तात्कालिक कार्यक्रम

---

28. दत्तोपंत ठेंगड़ी, सप्तक्रम, प्रारंभिक पृष्ट

भामस की चिन्तन–प्रक्रिया में शीर्ष स्थान पर विचारधारा है। विचारधारा के बाद आता है अन्तिम लक्ष्य। इस राष्ट्र को परम वैभव तक ले जाना भामस का चरम् लक्ष्य है। आज की परिस्थिति के अनुकूल तात्कालिक लक्ष्य निर्धारित होगे। तात्कालिक लक्ष्य के प्रकाश में भामस अपनी नीति का निर्धारण करता है। भामस ने यह नीति निर्धारित की है कि स्वतंत्र और लोकतांत्रिक देश में हिंसा और तोड़फोड़ का कोई स्थान नहीं है। भामस ने वर्ग संघर्ष को अस्वीकार कर दिया। कहा कि उसका अन्तिम परिणाम राष्ट्र का विघटन है। जहाँ तक भारतीय मजदूर संघ की नीति का प्रश्न है वह न तो कोरा संघर्षवादी है और न कोरा समन्चयवादी। उसकी नीति रिस्पॉन्सिभ कॉपरेशन की है अर्थात "जितना तुम करोगे उतना हम करेगें"[29] इसका अर्थ यह है कि जितनी मात्रा में सरकार श्रमिकों के साथ सहयोग करेगी उतनी मात्रा में श्रमिक सरकार के साथ सहयोग करेगें।

नीति के बाद समर नीति का स्थान आता है। भामस यह महसूस करता है कि सम्पूर्ण शासन एवं स्वामी वर्ग से वह अभी अकेला नहीं लड़ सकता।[30] अतः यह संयुक्त मोर्चा के निर्माण के प्रति सहमति व्यक्त करता है। संयुक्त मोर्चे में सम्मिलित होना या न होना परिस्थिति–विशेष पर निर्भर करता है।

समर नीति की अनुगामिनी के रुप में रणयुक्ति भी साथ–साथ प्रकट होती है। रणयुक्ति यह बतलाती है कि किस परिस्थिति में भामस का व्यवहार कैसा होगा। रणयुक्ति के आलोक में भामस तात्कालिक कार्यक्रम निर्धारित करता है।

भामस की इस चिन्तन प्रक्रिया को उर्ध्वगामी तथा अधोगामी दोनों ही रुपों में देखा जा सकता है। इसके उर्ध्वगामी स्वरुप की व्याख्या दत्तोपंत ठेंगड़ी ने निम्नलिखित ढंग से की है–

> "हम जो कार्यक्रम निश्चित करें, वे रणयुक्ति के प्रतिकूल न हों, जो रणयुक्ति निश्चित करें वह समर–नीति के अनुकूल

---

29. दत्तोपंत ठेंगड़ी, सप्तक्रम, पृष्ट 163
30. दत्तोपंत ठेंगड़ी, सप्तक्रम, पृष्ट 164

हो, इसके विपरीत न हो, जो समरनीति निर्धारित करें वह सामान्य नीति के अनुरुप और पोषक हो, सामान्य नीति तात्कालिक लक्ष्यों की पूर्ति की ओर ले जाने वाली हो, किसी भी प्रकार उसके मार्ग में बाधक न हो। ये तात्कालिक लक्ष्य अन्तिम लक्ष्य की ओर हमें अग्रसर करने वाले हों और अन्तिम लक्ष्य अपने अधिष्ठान अथवा विचारधारा की ओर उन्मुख हो।''[31]

2.62 भामस के लक्ष्य एवं उद्देश्य

भामस की विचारधारा की झलक उसके संविधान में अंकित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों में भी मिलती है। अतः यहाँ, भामस के लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्रस्तुत करना अनुचित न होगा। ये लक्ष्य और उद्देश्य निम्नलिखित हैः-

(1) लक्ष्य और उद्देश्य इस प्रकार होगें

अंततोगत्वा भारतीय समाज रचना की स्थापना करना जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ निम्न बातों की भी सुरक्षा होगी :

(क) पूर्ण रोजगार तथा अधिकतम उत्पादन हेतु जनशक्ति तथा साधनों का पूर्ण उपयोग।

(ख) लाभ की वृत्ति को हटाकर सेवावृत्ति को स्थान देना तथा आर्थिक जनतंत्र की स्थापना जिसके परिणाम स्वरुप समस्त सम्पदा का एक ऐसा समान वितरण हो जो व्यक्ति और समग्र राष्ट्र के हित में हो।

(ग) राष्ट्र के अविछिन्न अंग के रुप में स्वायत्तशासी औद्योगिक समुदायों का विकास करना, जिसकी परिणति उद्योगों के श्रमिकीकरण में हो।

(घ) राष्ट्र के अधिकतम औद्योगीकरण द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को जीवन-निर्वाह योग्य काम देने का व्यवस्था करना।

---

31. दत्तोपंत ठेंगड़ी, सप्तक्रम, पृष्ट 165

(2) अंततः उपर्युक्त उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने का सामर्थ्य पैदा करना और साथ-साथ श्रमिकों को सामाजिक हितों से संगति रखते हुये अपने हितों की सुरक्षा तथा समुन्नति के लिए योगदान योग्य सशक्त बनाना :

(क) धार्मिक विश्वासों और राजनीतिक सम्बन्धों को परे रख कर मातृभूमि की सेवा के माध्यम के रुप में श्रमिकों को ट्रेड यूनियनों (मजदूर संघों) में संगठित होने हेतु सहायता करना।

(ख) सम्बद्ध यूनियनों के कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन, निर्देशन तथा निरीक्षण और समन्यवय करना।

(ग) सम्बद्ध यूनियनों को भारतीय मजदूर संघ की प्रादेशिक समितियों तथा औद्योगिक संघों के रुप में संगठित होने व फैडरेशन को इकाई के रुप में सम्बद्ध होने में सहायता देना।

(घ) ट्रेड यूनियन आन्दोलन में एकता स्थापित करना।

(3) श्रमिकों के लिए निम्न बातों की उपलब्धि तथा संरक्षण करना :

(क) काम तथा जीवन निर्वाह के अधिकार-रोजगार की सुरक्षा का तथा सामाजिक सुरक्षा के अधिकार, ट्रेड यूनियन के कार्य करने के अधिकार तथा शिकायतें दूर करने के लिए ट्रेड यूनियन के सभी वैधानिक उपायों के निःशेष हो जाने पर अन्तिम शस्त्र के रुप में हड़ताल करने का अधिकार।

(ख) काम और जीवन तथा सामाजिक और काम की हैसियत में सुधार।

(ग) न्यूनतम राष्ट्रीय आय से संगति रखते हुए जीवन निर्वाह योग्य वेतन तथा अपने अपने उद्योग के साझीदार के रुप में उद्योग के लाभ में से समुचित अंश की प्राप्ति।

(घ) अन्य समुचित सुविधायें।

(ङ) श्रमिकों के हित में वर्तमान श्रम कानूनों को तेजी से लागू करवाना तथा उनमें उचित संशोधन करवाना।

(च) समय समय पर मजदूर प्रतिनिधियों के परामर्श से नवीन श्रम कानूनों का निर्माण।

(4) श्रमिकों के मन में सेवा, सहयोग तथा कर्त्तव्यपालन की भावना उत्पन्न करना तथा उनमें सामान्यः समूचे राष्ट्र के प्रति व विशेषतः उद्योग के प्रति उत्तरदायित्व की वृति का निर्माण करना।

(5) श्रमिकों प्रशिक्षण कक्षायें, स्वाध्याय मंडल, अतिथि भाषण, संगोष्ठियाँ परिभ्रमण आदि आयोजित करके और केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा मंडल, श्रम अन्वेषण केन्द्र तथा विश्वविद्यालयों आदि संस्थाओं, संगठनों के सहयोग से, जिनके लक्ष्य और उद्देश्य "संघ" के जैसे ही हो, श्रमिकों को शिक्षित करना और पुस्तकालय आदि चलाना।

(6) मुख्यतः श्रमिकों और उनके हितों से सम्बन्ध रखने वाले पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तिकाएँ, चित्र, पुस्तकें और अन्य प्रकार का साहित्य स्वयं प्रकाशित करना या दूसरों से कराना तथा मजदूर साहित्य की बिक्री, खरीद और प्रचार करना।

(7) श्रम अन्वेषण केन्द्र व इसी प्रकार की अन्य गतिविधियाँ को संगठित करना, प्रोत्साहित करना और स्थापित करना।

(8) सामान्यतः श्रमिकों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नागरिक और सामान्य स्थितियों के सुधार के लिए आवश्यक कदम उठाना।

(9) सामान्य रुप से आम लोगों तथा विशेष रुप से श्रमिकों वे उनके परिवारों के सम्पूर्ण कल्याण के लिए सहकारी समितियों, कल्याण संस्थाओं, क्लबों इत्यादि की स्थापना करना या उनको सहायता देना।

(10) कर्मचारियों के और उन स्वनियोजित (Self-employed) व्यक्तियों के संगठनों समितियों या यूनियनों की

गतिविधियों का निरीक्षण, मार्गदर्शन समन्वय व संगठन करना जो ट्रेड यूनियन ऐक्ट 1926 की परिधि में नहीं आते है।

(11) ऐसे सब प्रकार के कार्य करना जो उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक या पूरक हों।[32]

भारतीय मजदूर संघ के ध्येय की व्यख्या करते हुए संस्थापक एवं विचारक ठेंगड़ी ने निम्ननिखित टिप्पणी की –

"भारतीय मजदूर संघ का लक्ष्य केवल एक यूनियन चलाने का नहीं है, संगठन के माध्यम से दलित–पीड़ित जनों की सेवा कर सकें, आर्थिक शोषण रोक सकें, उनके जीवन में सुनहरे दिन ला सकें और उसके लिए जो कुछ भी करने की आवश्यकता पड़े, वह भामस करेगा। अगर कानून उसकी रक्षा नहीं कर सकता, उसको बढ़ावा नहीं दे सकता तो उस कानून को बदलवाने की कोशिश करना। जिस अर्थव्यवस्था में आज देश फँसा हुआ है, वह अर्थव्यवस्था अगर यह गारण्टी नहीं देती जिससे दलित–पीड़ित ऊपर उठ सकें तो इस अर्थव्यवस्था को बदल डालना।"[33]

2.63 कुछ मुख्य धारणायें

भारतीय मजदूर संघ ने श्रम आन्दोलन में कुछ नये एवं आकर्षक सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं, कुछ नए नारे दिए हैं तथा कुछ नये दृष्टिकोण रखे है। इस प्रभाग में इन सिद्धांतों, नारों एवं दृष्टिकोणों को संक्षिप्त रुप में रखने का प्रयास किया गया है।

(क) श्रम का राष्ट्रीयकरण
राष्ट्र का औद्योगीकरण
उद्योग का श्रमिकीकरण
— की धारणा

---

32. भारतीय मजदूर संघ, विधान, पृ0 1-4
33. दत्तोपंत ठेंगड़ी, लक्ष्य और कार्य, पृ0 39

भामस द्वारा प्रतिपादित इस धारणा में राष्ट्रीयकरण, उद्योगीकरण तथा श्रमिकीकरण की व्याख्या की गई है। श्रम के राष्ट्रीयकरण से तात्पर्य है कि श्रमिकों के कार्य करने का मूल प्रेरणा देश भक्ति की भावना हो। दूसरे शब्दों में श्रमिक राष्ट्रनिर्माता हैं तथा उनमें राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूट कर भरी होनी चाहिए। यह भावना उनके संगठनों में भी इसी प्रकार भरी रहनी चाहिए। श्रमिक संगठनों का मूल उद्देश्य राष्ट्र उत्थान होना चाहिए।

भामस राष्ट्र के औद्योगीकरण का स्वागत करता है। औद्योगीकरण की रफ्तार तेज होनी चाहिए। औद्योगीकरण राष्ट्र की प्रगति के लिए तथा इसकी अन्यान्य समस्याओं के निदान के लिए अनिवार्य है। बिना औद्योगीकरण के देश दुनिया के मान चित्र पर सम्मान जनक स्थान नहीं प्राप्त कर सकता।

इस अवधारणा की तीसरी कड़ी है- उद्योग का श्रमिकीकरण। भामस उद्योगों के राष्ट्रीयकरण पर जोर न देकर उनके श्रमिकीकरण पर जोर देता है। राष्ट्रीयकरण में उद्योगों का स्वामित्व जहाँ राज्य के हाथ में चला जाता है वहाँ श्रमिकीकरण में इसका स्वामित्व श्रमिकों के हाथ में होता है। भामस के संस्थापक एवं विचारक श्री ठेंगड़ी ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है-

> "भारतीय संस्कृति के उद्घोषक के नाते भारतीय मजदूर संघ ने घोषित किया कि पूंजीवादी व्यवस्था में श्रम से अर्जित लाभ का व्यय और विनिमय (केवल अपने प्रति उत्तरदायी) नियोजक द्वारा, साम्यवादी व्यवस्था में (पार्टी के प्रति उत्तरदायी) राज्य द्वारा और भारतीय व्यवस्था में (राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी) मजदूरों द्वारा किया जाता है। अर्थात् उत्पादन में वृद्धि के फलस्वरुप होने वाले लाभ का मुख्य भाग मजदूरों को मिलना चाहिए।"

इस संदर्भ में भामस ने सम्भावित कदमों का क्रम निम्नलिखित रुप में निर्धारित किया है।

मालिक – नौकर सम्बन्ध से प्रारम्भ होकर

अच्छा व्यवहार

संयुक्त परामर्श

संयुक्त व्यवस्थापन
स्वप्रबन्ध
स्वामित्व में साझेदारी
के माध्यम से
मजदूरों के स्वामित्व तक।[34]

(ख) औद्योगिक स्वामित्व का ढाँचा

भारतीय मजदूर संघ का विश्वास है कि सभी प्रकार की सम्पत्ति का एक मात्र स्वामी ईश्वर है। व्यावहारिक स्तर पर भामस का यह मत है कि व्यक्तिगत पूंजीवाद का एक मात्र विकल्प "राष्ट्रीयकरण नहीं है, और न यह सभी औद्योगिक बीमारियों की एक *मात्र रामबाण दवा है।"* इस प्रकार इसने *"पूर्ण, राष्ट्रीयकरण" तथा* "राष्ट्रीयकरण नहीं" के दोनों छोरों को ठुकरा दिया है तथा औद्योगिक स्वामित्व के प्रकार पर एक राष्ट्रीय आयोग की स्थापना का आग्रह किया है।

भामस का औद्योगिक स्वामित्व के बारे में दृष्टिकोण उलझा हुआ है। भामस ने राष्ट्रीयकरण की आलोचना की है तथा न राष्ट्रीयकरण की भी आलोचना की है। लेकिन औद्योगिक स्वामित्व के ढाँचे का कोई भी सुलझी हुई एवं स्पष्ट रुप-रेखा प्रस्तुत करने में विफल रहा है। ऐसा लगता है कि भामस जानबुझ कर मजदूरों को अपनी स्थिति का ज्ञान नहीं कराना चाहता। वह जानता है कि राष्ट्रीयकरण के विपरीत होने से तथा निजीकरण के अनुकूल होने से उसके प्रति मजदूरों के आकर्षण पर बुरा असर होगा। शायद इसीलिए शब्दों का महाजाल तैयार किया गया है ताकि सभी तरह के मजदूरों को फंसाने की बराबर संभावना हो।

(ग) भामस के सैद्धान्तिक कथन एवं आर्दश वाक्य

मजदूर क्षेत्र में भामस ने अनेक सैद्धान्तिक कथनों एवं आदर्श वाक्यों को प्रचारित एवं प्रसारित किया है। इन आदर्श वाक्यों से

---

34. दत्तोपंत ठेंगड़ी, भामस के बढ़ते चरण, पृ0 12

भामस की विचारधारा अभिव्यक्त होती है। ये आर्दश एवं कथन निम्नलिखित हैं–

> "राष्ट्रवादी दृष्टिकोण, रचनात्मक प्रवेश, अवसरवादिता नहीं–आर्दशवाद, लोकतांत्रिक उपायों में आस्था, जाति, लिंग, पथ और समाज का विचार न कर प्रत्येक भारतीय को प्रवेश, संस्था का अराजनैतिक स्वरुप, वर्गवाद की कल्पना भ्रममूलक, पूंजीवाद एवं साम्यवाद दोनों से अलग मजदूर वर्ग को ले जाने का निश्चय, संस्था में पैसे और पसीने के शेयर का आग्रह तथा अधिकार और कर्त्तव्य का समन्वय, अधिकतम उत्पादन और बराबर लाभ, श्रमिक हित और राष्ट्रीय हितों में साम्य की मान्यता, हड़ताल का अन्तिम शस्त्र के रुप में उपयोग, परमेश्वर ही समस्त पूंजी का स्वामी है, पश्चिम की मान्यताएँ, परिभाषाएँ एवं आदर्शवाद की बौद्धिक दासता से छुटकारा, भारतीय समाज व्यवस्था एवं दार्शनिक सिद्धान्त के विकास की योग्यता पर विश्वास आदि।"[35]

उपर्युक्त आर्दश वाक्य पर समन्वित दृष्टि डालने से भामस का समाग्र दर्शन प्रकट होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भामस एक गैर–साम्यवादी संगठन है। इसने साम्यवादी दर्शन के आर्दश वाक्यों को भारतीयता और राष्ट्रीयता का सहारा लेकर विस्थापित करने का प्रयास किया है। इसने पूंजीवादी दृष्टिकोण की भी भर्त्सना की है लेकिन साम्यवाद और पूंजीवाद से हट कर भारतीय दर्शन एवं परम्परा के आलोक में भावी समाज का कोई नया चित्र नहीं प्रस्तुत किया है। इस संदर्भ में भामस की दार्शनिक दरिद्रता स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है।

भामस के ये आर्दश वाक्य चाहे जितने भ्रामक एवं विरोधाभासी हों, भारतीय श्रमिक समाज में वंशीकरण मंत्र के समान कारगर सिद्ध हुए हैं। इन कथनों की सम्मोहन शक्ति ने श्रमिकों पर जादू–सा असर डाला है तथा वे भामस के आगोश में शनैः शनैः ही सही, लेकिन खिंचते चले आये। भामस की उत्तरोत्तर प्रगति एवं विशाल सदस्य संख्या का राज इन्हीं वंशीकरण मंत्रों में खोजा जा सकता है। इन कथनों एवं वाक्यों के श्रमिकों एवं नेताओं पर असर की व्यवहारिक

---

35. भारतीय मजदूर संघ बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1986

जाँच भी की गयी है तथा इसके परिणामों की अध्याय छः एवं आठ में प्रस्तुत किया गया है।

(घ) प्रचलित नारे

किसी भी संस्था द्वारा प्रतिपादित, उद्घोषित एवं प्रचारित नारे उस संस्था की विचारधारा को अभिव्यक्ति प्रदान करते है। नारे संगठन के सदस्यों में एकजुटता एवं भावात्मक एकता कायम करती है। नारों के द्वारा किसी भी संस्था की पहचान होती है। नारे गैर सदस्य श्रमिकों को अपनी सदस्यता की छत्रछाया में आने का खुला निमंत्रण देते है। भामस ने भी अनेक नये नारों का इजाद किया है तथा अपने विरोधी संगठनों के नारों पर तीखा प्रहार किया है।

भामस ने साम्यवादी नारों को रद्द कर के उनके स्थान पर नये नारे स्थापित किये हैं। इसका एक मात्र कारण यही है कि भामस एक गैर साम्यवादी संगठन के रुप में अपनी पृथक पहचान स्थापित करना चाहता है। इस संदर्भ में भामस ने साम्यवादियों, के पवित्र एवं आकर्षक नारा "दुनिया के मजदूरों एक हो" पर कीचड़ उछाला है तथा इसके स्थान पर एक नवीन नारा "मजदूरों दुनिया को एक करो" को स्थापित किया है।[36] "कमाने वाला खायगा" नामक नारा भामस के अनुसार जितना आकर्षक है, उतना ही तथ्यहीन। इन नारे के स्थान पर भामस ने "कमाने वाला खिलायेगा" नामक नारा दिया। "इंकलाब जिन्दाबाद" की भामस अप्रासांगिक समझता है तथा "हमारी माँगे पूरी हो चाहे जो मजबूरी हो" को अराष्ट्रीय। भामस ने मजदूर क्षेत्र में कुछ अन्य नारे भी उछाले हैं उनमें कुछ प्रमुख को यहाँ स्थान देना आवश्यक समझा गया है।

भारत माता की	जय हो।
भारतीय मजदूर संघ	अमर रहे, अमर रहे।
देश के हि में करेगें काम	काम का लेगें पूरा दाम।
देश की रक्षा पहला काम	सबको काम, बाँधो दाम।
आय विषमता समाप्त हो	एक-दस अनुपात हो।

---

36. श्रमिक स्मारिका, भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 1984

पूँजीवाद, सरकारीवाद	शोषण करते दोनों साथ।
गलत आँकड़ा तोड़ दो	महंगाई वेतन जोड़ दो।
असली वेतन सबको दो	मूल्यों का नियंत्रण हो।
नई जवानी केशरिया रंग	मजदूरों को मजदूर संघ।
हमारा राष्ट्रीय श्रम दिवस	विश्वकर्मा जयन्ती।
आटोमेशन नहीं चाहिए	नहीं चाहिए।
देशभक्त मजदूरों	एक हो, एक हो।
धन की पूँजी श्रम का मान	कीमत दोनों एक समान।
श्रम की नीति श्रम का मान	माँग रहा मजदूर–किसान।
देश के कोने–कोने से श्रमिकों ने ललकारा है	उद्योगों में साझेदारी यही हमारा नारा है।
मेहनत को पैसा समझो	मील पूंजी में हिस्सा दो।
मजदूर–फैक्ट्री–देश–ध्यान	तीनों का हित एक समान
काम का अधिकार	मौलिक अधिकार
लाल गुलामी छोड़ के बोलो	बोलो बन्दे मातरम्।[37]

इन नारों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय मजदूर संघ राष्ट्रीयता एवं भारतीयता की भावना से ओतप्रोत है। राष्ट्रहित अन्य सभी हितों से ऊपर है। इन नारों से भामस का साम्यवादी दर्शन से विरोध प्रकट होता है। भामस पूंजीवाद का भी आँख मूंद कर समर्थन नही करता तथा उसे शोषण का स्त्रोत मानता है। यह अटोमेशन को नहीं स्वीकारता। उद्योगों में श्रमिकों की साझेदारी तथा काम के अधिकार को मौलिक अधिकार में रखने की सिफारिश करता है। मजदूरों एवं मजदूर नेताओं पर इन नारों के असर की जाँच आगे के अध्यायों में की गयी है।

---

37. श्रमिक स्मारिका, भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 1984

अध्याय - तीन

बिहार भामस : निर्माण, विकास एवं उपलब्धियाँ

पूर्व अध्याय में भारतीय मजदूर संघ के उद्‌भव, विकास, विचारधारा, संरचना एवं नीतियों पर यथेष्ट प्रकाश डाला गया है। भामस एक सतत् बर्द्धनशील संस्था है जिसका विकास भारत के हर राज्य में तथा अनेक उद्योगों एवं उनकी इकाइयों में हुआ है। प्रस्तुत अध्याय में बिहार प्रदेश में भामस के उदय एवं विकास से संबंधित तथ्यों एवं आँकड़ों को क्रमबद्ध रुप में दिखया गया है ताकि बिहार भामस की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का स्पष्टीकरण हो सके। इस अध्याय में बिहार भामस की विचारधारा नेतृत्व एवं संरचना का भी अध्ययन किया गया है।

3.1 बिहार भामस का उद्‌भव एवं विकास

3.11 उद्‌भव

भारतीय मजदूर संघ का गठन राष्ट्रीय स्तर पर 1955 में हुआ। लेकिन इसका विधिवत कार्य सम्पादन 1967 से प्रारम्भ हुआ जबकि इससे सम्बद्ध संघों एवं महासंघों का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन हुआ। बिहार भामस का जन्म अखिल भारतीय अधिवेशन के पूर्व ही हो गया था। इसका प्रारम्भ 1 अगस्त 1963 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दो प्रमुख प्रचारक रामप्यारे लाल तथा रामदेव प्रसाद ने किया।[1]

---

1. श्रमिक स्मारिका, भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 1985

का प्रथम प्रादेशिक अधिवेशन पटना सिटी के अनन्तराम धर्मशाला में हुआ। इस अधिवेशन का उद्घाटन स्व0 रामनरेश सिंह (बड़े भाई) ने किया था। इसी अधिवेशन में सर्व सम्मति से अध्यक्ष युगल किशोर प्रसाद, महामंत्री राम प्यारे लाल तथा कार्यालय मंत्री के रुप में रामदेव प्रसाद का चुनाव हुआ। इसके पूर्व राज्य में आठ यूनियनें लकी बिस्कुट कर्मचारी संघ, प्रदीप लैम्प वर्क्स कर्मचारी संघ, जमशेदपुर दूकान कर्मचारी संघ, बन्दूक कारखाना कर्मचारी संघ, मुंगेर, न्यू सिवान चीनी मिल कर्मचारी संघ, कोलियरी कर्मचारी संघ, छापाखाना मजदूर संघ एवं पटना नगर कर्मचारी संघ का गठन हो चुका था। इस अवधि तक कुल सदस्य संख्या 2000 पहुँच गयी थी।[4] शैशवावस्था के ये दो वर्ष 1963-64 निर्माण की पहली कड़ी के वर्ष थे। 1965 के आगे के वर्षों में संघ का क्रमागत विकास तीव्र गति से हुआ। दत्तोपंत ठेंगड़ी के कुशल और दक्ष नेतृत्व और समर्पण की भावना नें प्रगति में रचनात्मक गति लायी और रामनरेश सिंह के निदेशन में बिहार में संगठन ने काफी तरक्की की। 1965 में ही रोहतास कर्मचारी संघ, पूर्वी रेलवे कर्मचारी संघ, कोल्ड स्टोरेज कर्मचारी संघ, दूकान कर्मचारी संघ, झरिया, वाणिज्य कर्मचारी प्रतिष्ठान, मुजफ्फरपुर आदि का गठन हुआ । 17 अक्टूबर , 1965 के द्वितीय वार्षिक अधिवेशन तक सदस्यता 10,049 तक हो गयी।[5] द्वितीय वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन राज्य की सूचना मंत्री सुमित्रा देवी तथा अध्यक्षता श्रम मंत्री स्व0 दारोगा प्रसाद राय ने की।

भामस बिहार प्रदेश की संगठन शक्ति से जहाँ एटक और इंटक की यूनियनों में चिन्ता की लहर फैल गयी वहीं बिहार सरकार ने कर्मचारी परियोज़ना परामर्शी समिति में भामस को प्रतिनिधित्व प्रदान किया। प्रदेश महामंत्री राम प्यारे लाल इसके सदस्य मनोनीत हुए।

वर्ष 1966 भामस के इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण वर्ष रहा। इस वर्ष तक 19 निबंधित तथा 5 अनिबंधित यूनियनें गठित हो चुकी थी। संघ का तृतीय वार्षिक अधिवेशन 29 एवं 30 अक्टूबर, 1966 को शहीद नगर, सिन्दरी में सम्पन्न हुआ।[6] इस समय तक टेल्को,

---

4. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985
5. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985
6. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

3.13 गुणात्मक प्रगति

अब वह समय आ गया था जब संघ गुणात्मक और संख्यात्मक दोनों दृष्टि से निरंतर बढ़ता गया। 1966 से 1968 तक के वर्ष में संगठनात्मक कार्य बड़ी तेजी से हुए। 16-17 सितम्बर, 66 को जमालपुर में पूर्वी रेलवे कर्मचारी संघ का प्रथम अधिवेशन बालेश्वर प्रसाद शर्मा के निदेशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री ठेंगड़ी को 5 हजार रुपये की थैली भी भेंट की गयी। 1967 के अन्त तक बोकारो स्टील लि0, भारी अभियंत्रण निगम, राँची, ऑटोमोबाइल आदि में यूनियनें गठित हुयीं। इसके अतिरिक्त अन्य छोटी यूनियनों का भी गठन हुआ। फलतः चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर यूनियनों की संख्या 24 तथा सदस्यता 30 हजार हो गयी। इस कालखण्ड तक बशिष्ठ नाथ त्रिपाठी - पतरातू थरमल, लालचंद महतो, कोयला, रामराज राम, डालमियानगर, रामाधार तुलस्यायन, मुजफ्फरपुर, आर0 पी0 सिन्हा, पटना सिटी, पृथ्वीलाल चौधरी, राँची, सी0 बी0 शर्मा, हटिया, कुमार अर्जुन सिंह, धनबाद, लल्लू सिंह, पटना - जैसे कार्यकर्त्ताओं का सक्रिय योगदान भामस को मिला।[8] इसी का प्रतिफल है कि बिजली, रेलवे, बीमा, नगर कर्मचारी, परिवहन, अबरख आदि क्षेत्रों में काम खड़ा हो पाया। 17 मई 1969 को सम्पन्न चतुर्थ अधिवेशन तक यूनियनें 31 तथा सदस्यता 44,000 तक पहुच गयी। इसी कालखण्ड में पटना डिवीजन इन्सयोरेन्श वर्कर्स ऑर्गेनाइजेशन, बिहार प्रदेश विद्युत श्रमिक संघ, पथ-परिवहन श्रमिक संघ जैसी यूनियनें गठित हो पायीं।

पाँचवाँ अधिवेशन 17-18 मई, 1969 में हटिया (राँची) तिरीक सेवाश्रम में सम्पन्न हुआ।

1971 के जनवरी माह में सम्पन्न छठे वार्षिक अधिवेशन, पतरातू थर्मल के अवसर तक भारतीय मजदूर संघ पूर्णतः स्थापित श्रम संगठन का स्वरुप ले चुका था। प्रत्येक इकाई में यूनियनें न केवल गठित हो चुकीं थीं अपितु रचनात्मक एवं जुझारु चरित्र के कारण प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही थीं। पतरातू अधिवेशन में दत्तोपंत

---

8. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

दिसम्बर में झरिया में अ० भा० खदान मजदूर संघ का अधिवेशन हुआ जिसमें बिहार के 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 1 अगस्त, 1973 को बेरमों में कोलियरी कर्मचारी संघ का प्रथम अधिवेशन हुआ। 7,8 अप्रैल, 1974 को भामस का आठवाँ प्रादेशिक अधिवेशन जमालपुर में सम्पन्न हुआ। यह भामस के लिए आंतरिक तूफान का वर्ष था, जिसमें ख्याति प्राप्त मजदूर नेता रमाशंकर सिंह के स्थान पर तत्कालीन विधायक (बाद में सांसद), श्रमिक क्षेत्र के गैर श्रमिक नेता, रुद्र प्रताप सारंगी अध्यक्ष तथा नित्यगोपाल चक्रवर्ती महासचिव निर्वाचित हुए। रामदेव प्रसाद को संगठन मंत्री का पदभार दिया गया। राज्य भर में समर्पित कार्यकर्त्ताओं की जमात इकट्ठी हो गयी थी जिसके बल पर वर्षान्त तक 60 यूनियने तथा 70 हजार सदस्य हो गये।

राँची जिला के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक सुरेश प्रसाद सिन्हा का पर्दापण एक पूर्णकालिक संगठनकर्त्ता के रुप में इसी कालावधि में हुआ।[10] इस अवधि तक राम प्रकाश मिश्र, क्षेत्रीय मंत्री के नाते बिहार का मार्गदर्शन हाथों में ले चुके थे।

एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु जो विचारणीय है, का उल्लेख यहाँ प्रासंगिक लगता है। कतिपय वैचारिक मतभिन्नता के कारण रमाशंकर सिंह और भामस के बीच संगठनात्मक दृष्टिकोण में मतभेद उपस्थित हो गया था। केन्द्रीय कार्य समिति ने तीन सदस्यीय जाँच समिति गठित कर इसकी छानबीन करायी थी और रमाशंकर सिंह ने पदभार छोड़ दिया था।

3.14 सम्पूर्ण क्रान्ति

इसी बीच बिहार रात्य में परिवर्तन की आंधी 18 मार्च, 1974 से जे०पी० के नेतृत्व मे प्रारम्भ हुई। छात्र आन्दोलन जन आन्दोलन बन गया। फ्लतः जनता और मजदूर संगठनों से जुड़े सामाजिक कार्यकर्त्ता भी इससे अछूते न रहे। भामस के कार्यकर्त्ताओं ने जन आन्दोलन में भाग लिया और उन्हें भी भारतीय सुरक्षा और

---

10. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

फलतः सारे कागजात समाप्त हो गये। इसी अवधि में संघ का वार्षिक अधिवेशन राजगीर में 1976 में सम्पन्न हुआ। इन सबके बाद भी आपात्काल में ट्रेड यूनियन अधिकारों एवं बोनस अदायगी के लिए संघर्ष जगह-जगह किये गये। जेल से रिहा होकर रामनरेश सिंह के इस अधिवेशन में भाग लिया था। इस अधिवेशन में सदस्य संख्या 72,500 थी। सुरेश प्रसाद सिन्हा संगठन मंत्री बनाये गये।

1977 में भामस का काम बढ़ा तथा और नये कार्यकर्त्ताओं का आगमन हुआ। समरेश सिंह, दीनानाथ पांडेय, जनार्दन तिवारी (विधायकगण) जैसे नेताओं का सहयोग भी इसे प्राप्त हुआ। 1978 में 74 यूनियनें तथा सदस्यता 1,57,732 हो गयी। इसी वर्ष दशम अधिवेशन हटिया में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन केन्द्रीय श्रम एवं संसदीय कार्य मंत्री डा0 राम कृपाल सिंह ने किया। उपस्थिति 700 के ऊपर रही। साथ में केन्द्रीय मंत्री करिया मुंडा भी उपस्थित थे। इस अवधि तक ट्यूब, टायो, ऊषा, एल्वाय, प्रदीप लैम्प, बिस्कुट, विद्युत, ग्लास, चीनी, दूकान प्रतिष्ठान, कोल्ड स्टोरेज, सीमेंट, रेशम, परिवहन, बीड़ी, तेलशोध, कॉपर, रेल, बैंक, बीमा, जूट आदि सभी उद्योगों में काम सुचारू रुप से चल रहा था।[12] वर्ष की महानतम उपलब्धि डाकतार में केन्द्र सरकार द्वारा मान्यता तथा केन्द्रराज्य कर्मचारियों के फेडरेशन की स्थापना रही। इसी वर्ष अनेक महासंघों का काम शुरु हुआ। सम्मेलन में सभी आर्थिक औद्योगिक और प्रजातांत्रिक मूल्यों से सम्बन्धित व्यापक प्रस्ताव पारित किये गये।

"जनता" शासन काल

1977-80 के कालखण्ड में देश में "जनता" सरकार थी। भामस के अनेक कार्यकर्त्ता भी इस अवधि में विभिन्न पदों पर आसीन थे। लेकिन भामस सरकार का पिछलग्गू नहीं बना। भूतलिंगम समिति और औद्योगिक सम्बन्ध विधेयक के विरूद्ध संघ ने जनता सरकार के विरूद्ध प्रदर्शन और आन्दोलन किया।

---

12. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 10वाँ प्रादेशिक अधिवेशन।

अभी तक बिहार प्रदेश में कृषि मजदूरों के क्षेत्र में काम नहीं था लेकिन अब इस क्षेत्र में भी प्रदेश भामस का बढ़ा और 8 जिलों में "खेतिहार मजदूर संघ" के नाम से काम कर रहा है।[14]

रजत जयन्ती

भारतीय मजदूर संघ की रजत जयन्ती पूरे देश की तरह प्रदेश भामस के सभी औद्योगिक एवं प्रमुख जिलों केन्द्रों में भी बैज, प्रदर्शन, आम सभा के द्वारा मनायी गयी।

23 जुलाई, 1981 को आयोजित एक महती सभा में दत्तोपंत ठेंगड़ी, बड़े भैया, बिहार इंटक के वयोवृद्ध नेता स्व0 सत्यपाल मिश्र, प्रदेश भामस के संस्थापक रामप्यारे लाल एवं कृष्णा ठाकुर को सम्मानित किया गया।[15] 23 दिसम्बर, 1981 को बोकारो में समरेश सिंह द्वारा ठेंगड़ी को एक लाख ग्यारह हजार की थैली उनकी 61वीं वर्ष गांठ पर दी गयी। साथ ही 24 दिसम्बर को जमशेदपुर तथा 26 को गिद्दी में भी क्रमशः 61 हजार और 31 हजार की थैली ठेंगड़ी को दी गयी।

वर्ष 1982-83 में केन्द्र सरकार द्वारा केन्द्रीय श्रम संगठनों की सदस्यता का सत्यापन करने से भामस का मनोबल बढ़ गया। संघ को विभिन्न केन्द्रीय राज्य श्रम समितियों में प्रतिनिधित्व भी मिला। महामंत्री रामदेव प्रसाद क्षेत्रीय श्रमिक शिक्षा पर्षद, मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष मनोनीत किये गये। भामस के संगठन मंत्री जी0 प्रभाकर को अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलनों में प्रतिनिधित्व मिला। जहाँ एक ओर मान्यताएँ और सफलतायें मिल रही थी वहीं दूसरी ओर प्रदेश भामस और भाजपा के बीच शीतयुद्ध भी चल रहा था। भाजपा के विधायकों में समरेश सिंह और दीनानाथ पाण्डेय ज्यादा हावी थे। दूसरी ओर 1983 की सदस्यता के आधार पर श्रम विभाग के आँकड़ों के अनुसार प्रदेश भामस ने प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया।[16]

---

14. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 12वाँ प्रादेशिक अधिवेशन, पृ0 2
15. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 12वाँ प्रादेशिक अधिवेशन, पृ0 2
16. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 13वाँ प्रादेशिक अधिवेशन, पृ0 2

संघर्ष हुए। 1963 में डालमियानगर में एक दिन की सम्पूर्ण हड़ताल हुई। हड़ताल का नेतृत्व सुवंश पाठक, रामदेव प्रसाद और रामप्यारे लाल ने की। पटना छापाखाना मजदूरों द्वारा भी 1966 में एक सप्ताह की हड़ताल, प्रदर्शन किया गया। मागें भी मिल गयीं।

1967 में सुपर फास्फेट फैक्ट्री, सिन्दरी के 51 निलंबित कामगारों का 50 प्रतिशत वेतन उच्चतम न्यायालय के निर्णय के बाद दिया गया। कालान्तर में सभी का सेवायोजन पूर्ण वेतनसहित हुआ। सरायकेला ग्लास वर्क्स कर्मचारी संघ द्वारा प्रबंधक के साथ 1970 और 1971 में क्रमशः दो समझौते हुए जिसमें 54 मजदूरों का स्थायीकरण मंहगाई भत्ता वृद्धि और 20 प्रतिशत बोनस दिया गया। झरिया के झोरा कोलियरी में बोनस की मांग के लिए विराट प्रदर्शन किया गया। 21 सूत्री मांग - पत्र कोयला विकास निगम के महाप्रबंधक को दिया गया। आंदोलन-क्रम में 50 मजदूर सेवा मुक्त हुए जिसमें सभी को पुनः काम दिया गया। विद्युत श्रमिक संघ द्वारा पतरातू के मुख्य अभियंता के समक्ष 40 सूत्री मांगों को लेकर 1971 में जत्थेवार धरना एवं हड़ताल की गयी। फलतः अनेक मागें मान ली गयी। प्रोजेक्ट भत्ता दिलाने के लिए पंजाब नेशनल बैंक, राँची में सफल आंदोलन चला। परिणाम हुआ कि प्रबंधन को भत्ता देना पड़ा।

इस अवधि में अनेक यूनियनों द्वारा मांगों को लेकर संघर्ष किया गया। न्यू सिवान चीनी मिल कर्मचारी संघ को मान्यता मिली। रोहतास कर्मचारी संघ के 55 मामलों में श्रम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय से सफलता मिली। हटिया के कार्यकर्त्ताओं ने कारखाने को क्षति से बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। टिस्को कर्मचारी संघ, बोकारो स्टील श्रमिक संघ, एल्वाय स्टील, पतरातू और अबरक श्रमिक संघ ने महत्त्वपूर्ण विवादों का समाधान निकाला। इसी बीच 1972 में टेल्को कर्मचारी संघ के उपाध्यक्ष और जमशेदपुर भामस के स्तंभ चन्देश्वर सिंह को प्रबंधन ने सेवामुक्त कर दिया। फलतः टेल्को के फ्रेम शाप में 32 दिनों तक औजार बन्द हड़ताल रही। इसके साथ 8 श्रमिकों को निलंबित किया गया। जब रामाशीष शर्मा को सेवामुक्त कर दिया गया तो विवाद ने और उग्र रुप धारण कर लिया। मांगे भी मिलीं। लेकिन यह विवाद उच्चतम न्यायालय तक चला।

एस0 एस0 मिश्रा के द्वारा आमरण अनशन, मजदूरों द्वारा

ठेकामजदूरों को स्थायी सेवा में लिया गया जो मजदूर आन्दोलनों के इतिहास में एक अध्याय के रुप में जुड़ा। (दीनानाथ पांडे ने सभी ठेका मजदूरों को पीपल के वृक्ष के नीचे शपथ दिलाई थी तब वे लोग आन्दोलन में जुटे थे)

10 नवम्बर, 1978 में औद्योगिक संबंध विधेयक के विरोध में संसद के समक्ष नयी दिल्ली में 5 हजार मजदूरों ने प्रदर्शन किया, जिसमें अच्छी भागदारी बिहार भामस की थी। रोहतास कर्मचारी संघ ने सीमेंट में पाई स्वार्ड लागु करने के लिए संघर्ष किया।

धनबाद के भागा बांध क्षेत्र एवं चिरकुंडा में अक्टूबर, 1979 में 1500 मजदूरों को 75 से ही काम से निवृत कर दिया गया था। एक माह के जत्थेवार अनशन के कारण 60 को काम पर लिया गया।

इसी प्रकार सी0 सी0 एल0 में भी छँटनीग्रस्त मजदूरों को काम पर लिया गया। के0 एफ0 एस0 कुमार धुबी में दो माह की हड़ताल के फलस्वरुप 40 से 50 रुपये तक की वेतन-वृद्धि मिली।

भारी अभियंत्रण निगम, राँची में भी 27 दिसम्बर, 1978 से 2 फरवरी, 1979 तक क्रमिक भूख हड़ताल चली। 1979 में कोयलाखान प्रबंधक की तानाशाही के कारण गैर-कानूनी ढ्ग से अनेक कर्मचारियों को विभिन्न स्थानों पर स्थानान्तरित किया गया, प्रोन्नति एवं अन्य सेवा सुविधायें रोक दी गयीं। फलतः स्थानीय स्तर पर आन्दोलन एवं हड़ताल करनी पड़ी। नवल किशोर मंदिलवार ने 5 दिनों तक आमरण अनशन किया तब समस्याओं का समाधान निकला।[18]

इस क्रम में केन्द्रीय श्रम मंत्री के आवास पर भी धरना दिया गया। डुमरांव स्थित टेक्सटाइल कारखाने में भी अनेक आन्दोलनात्मक कार्य हुए जिसमें कई मजदूर सेवा निवृत हुए जिसका विवाद श्रम न्यायालय में निदेशित किया गया। टिस्को कर्मचारी संघ की हड़ताल से सफलता तो मिली पर संघ के महामंत्री जयनारायण शर्मा जैसे

---

18. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

3.21 आन्दोलनात्मक विवरण

1982 से 1985 की अवधि में विभिन्न उद्योगों में भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व में आंदोलनात्मक कारवाइयाँ हुई जिनसे वहाँ कार्यरत श्रमिकों को लाभ पहुँचा है तथा संगठन की मर्यादा भी बढ़ी है। उनका एक संक्षिप्त विवरण नीचे प्रस्तुत है।

रोहतास उद्योग डालमियानगर

सन् 1983 ई0 में चतुर्थ सिमेंट वेजबोर्ड को लागू करने एवं ठीकेदारी में लगे कैजुअल कर्मचारियों का विभागीयकरण करने के लिये तथा बकाये बोनस की चुक्ति इत्यादि मुख्य मांगों पर रोहतास कर्मचारी संघ डालमियानगर में जबरदस्त आंदोलन कर बसावन सिंह के नेतृत्व वाली एच0 एम0 एस0 को पीछे कर दिया। तीन महीने की लम्बी हड़ताल के बाद प्रबंधन को झूकना पड़ा और कारखाने की बन्दी जो आंदोलन के दौरान किया गया था उसे वापस लेना पड़ा। छः महीने के बाद बिजली की कमी का बहाना ढूढ़कर कम्पनी ने कारखाने में तालाबन्दी की घोषणा कर दी। उग्र आंदोलन के पश्चात् कम्पनी ने बन्दी की घोषणा कर दिया। डालमियानगर परिसर से उसके सभी अधिकारी भाग गये।[19] जुलाई 84 से बन्द यह उद्योग पूंज आज तक नहीं खोला जा सका है। सरकार ने हर स्तर पर अर्थात् विधान सभा, विधान परिषद, वार्ता के टेबुल पर तथा उद्योग मंत्री, श्रम मंत्री और मुख्य मंत्री ने बार-बार कारखाने के अधिग्रहण का आश्वासन दिया है परन्तु अभी तक इस दिशा में ठोस प्रगति नहीं हो सकी है। जीवन मौत से जूझते मजदूर "बुभुक्षितः किं न करोति पापम्" की स्थिति में है।

एच0 ई0 सी0, राँची में आन्दोलन

भारी अभियंत्रण निगम हटिया में भारतीय मजदूर संघ ने ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की। निगम के स्थापन-काल से ही प्रोन्नति नीति आदि महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर प्रबन्धन का रुख पूर्णतः

---

19. 13वें प्रादेशिक अधिवेशन के अवसर महासचिव का प्रतिवेदन, पृ0 4

किया। 13 मई 1985 को प्रबन्धक तथा यूनियन के बीच द्विपक्षीय समझौता हुआ। समझौते की विशेष उल्लेखनीय बात यह रही कि चार सेवा मुक्त एवं 17 निलम्बित मजदूरों को हड़ताल समाप्त होते ही कार्य पर वापस ले लिया गया। किसी भी कर्मचारी को दंडित नहीं किया गया। 39 दिनों की हड़ताल पूर्णतः अहिंसक रही। ऐटक एवं इंटक ने खुलकर हड़ताल का विरोध किया। सीटू ने प्रत्यक्ष रुप से तो साथ दिया परन्तु परोक्ष रुप से विरोध किया। इस आंदोलन से भारतीय मजदूर संघ को प्रदेश में तथा अखिल भारतीय स्तर पर भी काफी लोकप्रियता मिली है।

टेल्को का आन्दोलन

टेल्को निजी क्षेत्र का देश का सबसे बड़ा इंजीनियरिंग कारखाना जमशेदपुर में स्थित है। यहाँ इंटक की यूनियन मान्यता प्राप्त है। जिसके अध्यक्ष बिन्देश्वरी दूबे हैं तथा भामस यूनियन टेल्को कर्मचारी संघ के अध्यक्ष राम प्रकाश मिश्र तथा महामंत्री शम्भूशरण हैं। यों तो टेल्को कर्मचारी संघ अपने गठन काल से ही संघर्ष की भूमिका निभाता चला आ रहा है। फिर भी विगत अक्टूबर 1985 में बहुत बड़े संघर्ष की स्थिति आई। वेतन पुनरीक्षण, 20 प्रतिशत बोनस, कैंटीन का विभागीयकरण, प्रोन्नति नीति इत्यादि मांगों के लिये प्रथम चरण में 3 से 10 अक्टूबर 1985 तक कैंटीन का शतप्रतिशत बहिष्कार किया गया। दूसरे चरण में 28 अक्टूबर को समेकित रुप से सांकेतिक हड़ताल की सूचना दी गयी। इसी बीच प्रबन्धन ने 12 प्रतिशत की जगह 17 प्रतिशत बोनस अदायगी का आदेश दिया। जगह-जगह मजदूरों को रोक लिया गया। 7000 सुपर वाईजर अन्य कम्पनी के 5000 हजार ठीकेदार मजदूरों को पहले ही कारखाने में घुसा दिया गया और भामस के सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। दो दिनों के बाद दीनानाथ पांडेय, टेल्को कर्मचारी संघ के महामंत्री शम्भूशरण सहित पाँच लोगों को निलम्बित कर दिया गया।[22] इस आंदोलन में स्थानीय विधायक मृगेन्द्र प्रताप सिंह का योगदान है।

---

22. मजदूर उद्घोष, दिसम्बर, 1985, पृ0 6

उर्वरक

उर्वरक में विकास की गति अनुकूल रही। जुलाई 1985 में संघर्ष के दौरान अनेक मांगे मान ली गयी। 1984 में निलम्बित हुए तीन कर्मचारियों को काम पर लाया गया।

जपला सिमेन्ट

29 सितम्बर 1985 को प्रबन्धक ने तालाबन्दी घोषित कर मजदूरों को डालमियानगर की तरह मौत के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। कारखाने के जिम्मे तालाबन्दी के पूर्व का दो माह का वेतन और तीन साल का बोनस भुगतान लम्बित है।

रिजर्व बैंक

ऑल इंडिया रिजर्व बैंक वर्क्स आर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष एवं अन्य दो कार्यकर्त्ताओं के निलम्बन के विरोध में 7 फरवरी 1985 को पटना में रिजर्व बैंक में भामस यूनियन के द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया जिसके कारण यूनियन के महासचिव अरुण कुमार ओझा को निलम्बित किया गया। 8 फरवरी 1985 बैकिंग श्रमांदोलन में एक नया अध्याय जोड़ गया जब मात्र दो घंटे में कर्मचारियों की शतप्रतिशत हड़ताल के बाद प्रबन्धन ने ओझा का निलम्बन वापस ले लिया। बिहार प्रदेश बैंक वर्क्स आर्गेनाइजेशन के तत्वावधान में बिहार में अनेक स्थानों पर बैंकों में केम्प्युटरीकरण के विरोध में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

डाक-तार

भारतीय डाक तार कर्मचारी महासंघ का इतिहास आन्दोलन एवं सफलता का इतिहास रहा है। 14 सितम्बर 1984 को पटना में विराट जुलूस तथा 26 सितम्बर को राज्य व्यापी सांकेतिक हड़ताल आयोजित किया गया। इसी प्रकार पटना में आयोजित केन्द्रीय कर्मचारियों के कन्वेंशन में महासंघ ने काफी संख्या में भाग लिया। संघ ने जून 1984 में दैनिक मजदूरों के सेवायोजन के सम्बन्ध में पटना उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल किया जिसका फैसला

टीस्को

टीस्को कर्मचारी संघ के प्रयास से दो दिन का बीमारी अवकाश दिया गया तथा इससे सम्बन्धित मामले श्रम न्यायालय में भी उठाया गया है।

हार्ड कोक

के० एम० हार्ड कोक के मजदूरों को सुविधा दिलाने हेतु आन्दोलन किया गया जिसमें इसके साथ-साथ बजरंग वली हार्ड कोक के मजदूरों की मजदूरी में वृद्धि हुई।

ठाकुर पेपर मिल

बिहार के बन्द मिलों में ठाकुर पेपर मिल समस्तीपुर की दुरवस्था उल्लेखनीय है। 9 अप्रैल 1982 से ही कारखाने में तालाबन्दी है और सरकार आश्वासन देते जा रही है। ठाकुर पेपर मिल श्रमिक संघ द्वारा समाहरणालय के समक्ष धरना, प्रदर्शन अनशन तथा 1 जून 1983 से सुरेश कुमार त्रिवेदी के द्वारा आमरण अनशन किया गया। इसी क्रम में त्रिवेदी को जेल भेज दिया गया। मुख्य मंत्री को घेराव किया गया तथा विधान सभा में दीनानाथ पांडेय के कार्य स्थगन पर सरकार ने कारखाना चालू करने का आश्वासन दिया। परन्तु अब तक कारखाना चालू नहीं होने की स्थिति में विभिन्न मंत्रियों का घेराव किया गया। पुनः समरेश सिंह द्वारा उठाये गये ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर सरकार ने आश्वसन दिया। आश्वासनों के पुलिन्दा में मजदूरों का भविष्य लटका हुआ है। संघर्ष जारी है।

रामकृष्ण मिशन टी० बी० सेनिटोरियम, राँची में वेतन बढ़ोत्तरी एवं स्थायीकरण को लेकर आन्दोलन चल रहा है। श्री राम बॉल वियरिंग, राँची में बोनस, साप्ताहिक छुट्टी आदि मांगों के लिये अप्रैल से जून तक हड़ताल हुई। विवाद न्यायालय में विचाराधीन है। गैमन इंडिया में भामस यूनियन के द्वारा आन्दोलनात्मक कार्यक्रम किया गया है जिसके कारण वेतन बढ़ोत्तरी तथा स्थायीकरण सम्भव हुआ है।

संघ के तीन निलम्बित कर्मचारियों का निलम्बन वापस हुआ है। बालाजी अनुपम मिल राँची के मजदूरों का 60/- रुपये वेतन वृद्धि विद्युत श्रमिक संघ मुजफ्फरपुर को यूनियन के लिये कार्यालय आवंटन विशेष उल्लेखनीय है।[24]

3.31 बिहार भामस : आँकड़ों के आइने में बिहार भामस की प्रगति

बिहार भामस की स्थापना 1 जुलाई 1963 को हुई। तब से आज तक के काल खंड में भामस की प्रगति अनवरत होती रही है। तथा 1980 की सदस्यता सत्यापन में बिहार में इसे सदस्य संख्या के आधार पर दूसरा स्थान प्रदान किया गया है। बिहार भामस के अनुसार अब वे प्रथम स्थान पर पहुँच गये है। भामस की प्रगति से सम्बन्धित आँकड़े सारणी 3.1 में प्रस्तुत किये गये हैं।

सारणी 3.1 के आँकड़ों के अवलोकन एवं विश्लेषण से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि बिहार भामस ने बिहार श्रम संघ आन्दोलन में अपना प्रारम्भ शून्य से किया। बिहार भामस की यह विशेषता है कि पहले भामस का निर्माण हुआ तथा उसके बाद नेताओं की प्रेरणा से सम्बद्ध संघों का प्रथम अधिवेशन जो 1964 में आयोजित किया गया बिहार भामस के साथ मात्र 4 संघ थे जिनकी सदस्य संख्या करीब 2000 थी। संघों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी जो 1965 में 10, 1967 में 25, 1971 में 45, 1977 में 66 1982 में 110 तथा 1985 में 144 तक पहुँच गयी। सदस्यों की संख्या जो 1964 में 2000 थी, 1982 में 2 लाख पार कर गयी। 1985 में जमशेदपुर अधिवेशन में सदस्यों की संख्या 3 लाख 44 हजार बतलाई गयी। बिहार भामस की यह प्रगति निश्चित रूपेणः सराहनीय है तथा श्रम संघ के विद्यार्थियों के लिए शोध का विषय बन जाता है।

---

24. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, स्मारिका, 1985

की सदस्य संख्या 3 लाख 40 हजार थी। द्वितीय स्थान पर इंटक था जिससे 122 संघ सम्बद्ध थे तथा जिनकी सदस्य संख्या करीब 2 लाख 67 हजार थी। एटक का स्थान इस क्रम में तीसरा, यू0सी0यू0सी0 का चौथा, यू0टी0यू0सी0(लेलिन सारणी) का पाँचवा तथा एच0एम0एस0 का छठा था। ये आँकड़े बिहार भामस की प्रगति के सूचक है। इसने 25 वर्षो के जीवन काल में जा प्रगति की है वह अन्य महासंघों के लिए निश्चय ही एक चुनौती है।

<u>सारणी - 3.2</u>

बिहार में श्रमिक संघों की तुलनात्मक स्थिति

महासंघ (भारत सरकार द्वारा सत्यापित संघ)	1980		1982		1983	
	संघ	सदस्यता	संघ	सदस्यता	संघ	सदस्यता
इन्टक	85	223363	99	215905	122	267511
भामस	95	159843	101	230065	122	339117
एच0एम0एस0	27	29960	40	151817	42	111964
यू0टी0यू0सी0 (ले0सा0)	11	89585	7	77696	8	115896

3.4 बिहार भामस की विचारधारा

जैसा कि कहा जा चुका है, बिहार भामस भारतीय मजदूर संघ की प्रान्तीय इकाई है। फलस्वरूप यह भारतीय मजदूर संघ की विचारधारा से पूर्णरुपेण सहमति व्यक्त करता है। भामस की विचारध ारा, चिन्तन प्रक्रिया, लक्ष्य एवं उद्देश्य, नीतियाँ एवं कार्यक्रम, नारे एवं मजदूर गीत को ही इसने सत प्रतिशत स्वीकार किया है। इसके विधान में अंकित लक्ष्य एवं उद्देश्य भामस के विधान में अंकित लक्ष्य एवं उद्देश्य की सत्य प्रतिलिपि है।

4.11 पुटकी कोलियरी कर्मचारी संघ

यह धनबाद में स्थित है और धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ की एक शाखा है। पुटकी कोलियरी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष शिवनाथ दुबे , सचिव रामचन्द्र पासवान तथा कोषाध्यक्ष रामचन्द्र ठाकुर हैं । धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ का संविधान, नियमावली इस पर पूर्णतः लागू होता है। इस शाखा में भी दो रुपया प्रति माह सदस्यता शुल्क है। पुटकी कोलियरी की समस्याओं पर यह संघ प्रबंध से वार्ता करता है। सर्वेक्षण के समय यह देखा गया कि पुटकी कोलियरी कर्मचारी संघ "साप्ताहिक अवकाश के दिन में परिवर्तन" के विषय पर प्रबन्ध से वार्त्ता करने गया था। पुटकी के नेताओं ने अपनी सदस्य संख्या नहीं बतलायी।

4.12 कतरास चैतुडीह कोलियरी

कर्मचारी संघ – यह भी धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ की एक शाखा है । इस संगठन के अध्यक्ष ज्ञानधारी साव , सचिव शिवधार शर्मा तथा कोषाध्यक्ष मुन्शी दास हैं। धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ का संविधान, नियमावली इस पर भी लागू होती है। इस शाखा में सदस्यता शुल्क दो रुपया प्रति माह है जो हर माह के प्रथम सप्ताह में कोषाध्यक्ष द्वारा संग्रह किया जाता है। यह संघ भी कोलियरी स्तर की समस्याओं पर प्रबंध से वार्त्ता करता है तथा मजदूरों के जीवन स्तर में उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहता है।

4.13 मराईडीह कोलियरी कर्मचारी संघ

यह भी धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ की एक शाखा है। इस शाखा संगठन के अध्यक्ष शिवपुजन सिंह, सचिव वलीराम पाण्डेय तथा कोषाध्यक्ष प्राणेश चन्द्र विष्णु हैं। धनबाद कोलियरी संघ की नियमावली इस संगठन पर भी लागू होती है। प्रति सदस्य प्रति माह दो रुपया सदस्यता शुल्क संघ के कोषाध्यक्ष द्वारा संग्रह किया जाता है। कोलियरी की समस्याओं पर वार्त्ता के लिए संघ को प्रबन्ध द्वारा आमंत्रित किया जाता है। इसने भी अपनी सदस्य संख्या नहीं बताई।

लिए एक संघ की आवश्यकता हुई। इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है, जिसमें प्रमुख हैं- रामदेव प्रसाद, कनक प्रसाद, राम श्रृंगार ठाकुर, कामेश्वर प्रसाद सिंह। इनमें से प्रथम दानों बिहार भामस के शीर्षस्थ नेता हैं लेकिन बाद के दो व्यक्ति शीतगृह के कर्मचारी।

यह संघ विनिर्माण की श्रेणी में आता है। सर्वेक्षण के समय इस संघ की सदस्य संख्या 1120 हो गयी थी। इसकी सदस्यता शुल्क दो रुपये प्रति माह है। जो व्यक्तिगत आधार पर संग्रह किया जाता है।

इस संघ का भी अपना संविधान है। संघ का बिहारशरीफ में अपना संघ-कार्यालय है। साथ ही बैंक खाते में भी 3,100 रुपये जमा हैं। संघ का निर्माण होते ही शीतगृह कर्मचारियों का स्थायीकरण, मजदूरी, बोनस, भविष्य निधि आदि मांगों का एक लम्बा मांग-पत्र तैयार हुआ और प्रबन्ध को दिया गया। उसके बाद संघर्ष का लम्बा सिलसिला शुरु हो गया। उसके बाद प्रबंधक के रुख में परिवर्तन आया। यह एक शक्तिशाली संघ है। साथ ही प्रबंध के द्वारा मान्यता प्राप्त है।

4.22 बिहार प्रदेश बीड़ी मजदूर संघ

इसका प्रधान कार्यालय बिहारशरीफ है। इस संघ की स्थापना 1974 में हुई है। इसका श्रम संघ अधिनियम, 1926 के अन्तर्गत पंजीयन 1974 में हुआ। इसकी पंजीयन संख्या 1804 है। इसकी स्थापना में बिहार भामस के नेताओं ने योगदान किया है। अतः स्थापना के साथ ही यह बिहार भामस से संबद्ध हो गया। स्थापना के समय इस संगठन की सदस्य संख्या मात्र 25 थी। इस संगठन को प्रारम्भ करने की आवश्यकता अन्य श्रमसंघ की स्वार्थपरता और शोषण के कारण की गयी। इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है। जिनमें प्रमुख हैं- झूनी प्रसाद तॉती, भरत कुमार मेहता, विंजय चौरसिया और विशुन साव। ये सभी बीड़ी उद्योग में कार्य करने वाले श्रमिक रहे हैं।

सर्वेक्षण के समय (1986) इस संघ की सदस्य संख्या

4.24 हटिया श्रमिक संघ

इसका कार्यालय राँची में है। इस संघ की स्थापना 1966 में हुई है। इसका श्रम संघ अधिनियम 1926 के अन्तर्गत पंजीयन 1966 में हुआ। इसकी पंजीयन संख्या 1300 है। इसकी स्थापना में बिहार भामस के नेताओं ने योगदान किया है। अतः स्थापना के साथ ही यह बिहार भामस से संबद्ध हो गया। स्थापना के समय इस संगठन की सदस्य संख्या मात्र 10 थी। इस संगठन को प्रारम्भ करने की आवश्यकता इसलिए महसूस की गई क्योंकि वहाँ कोई राष्ट्रवादी संगठन नहीं था। इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है जिनमें प्रमुख हैं- देवराज, अम्बिका प्रसाद सिंह और विश्वनाथ सिंह। इनमें देवराज राँची भामस के अध्यक्ष हैं और बाद के दोनों उसी कारखाने के श्रमिक हैं।

इस संघ की सदस्य संख्या 7001 हो गयी है। सदस्यता शुल्क एक रुपया प्रतिमास है। शुल्क संग्रह की अवधि वार्षिक है। शुल्क संग्रह कार्यकर्ताओं के द्वारा होता है। पदाधिकारियों का निर्वाचन कार्य के आधार पर किया जाता है। मुख्य पदाधिकारियों में अध्यक्ष विश्वनाथ सिंह, महामंत्री निर्मल कुमार और कोषाध्यक्ष शशि शेखर द्विवेदी हैं। ये सभी पदाधिकारी अपने पद पर 1984 से आसीन हैं। संघ का एक संविधान भी है। 1986 में 26000 रुपये की आय हुई और खर्च 24000 रुपये का हुआ। संघ का अपना कारखाने से दिया हुआ कार्यालय है। बैंक में 2000 से अधिक जमा रकम है। एक मोटर साईकिल भी है। यह संघर्षशील श्रम संघ है यह धरना, प्रदर्शन, अनशन, आमरण अनशन भी चलाते रहता है। संघ का मांग-पत्र कार्यकारिणी द्वारा तैयार किया जाता है। संघ का लक्ष्य है मजदूरों की सेवा करना। लेकिन यह मान्यता प्राप्त श्रम संघ नहीं है। लेकिन मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्ष कर रहा है।

4.25 टेल्को कर्मचारी संघ

इसका कार्यालय टाटा नगर में स्थित है। इस संघ की स्थापना 1966 में हुई है। इसका श्रम संघ अधिनियम 1926 के अन्तर्गत पंजीयन 1966 में हुआ। इसकी पंजीयन संख्या 1160 है। इसकी स्थापना में टाटा भामस के नेताओं का योगदान रहा है। अतः

(1477) तथा 1971 में भामस द्वारा संबद्धता प्राप्त कर ली। विद्युत का कार्य पूरे बिहार में हैं। इसलिए बिहारशरीफ में विद्युत श्रमिक संघ की शाखा गठित की गयी। इस संघ की स्थापना की आवश्यकता यह बतलायी गयी कि विद्युत के क्षेत्र में अन्य श्रम संघ राष्ट्रहित, उद्योगहित और मजदूर हित पर ध्यान नहीं देते हैं। बिहारशरीफ में विद्युत श्रमिक संघ की स्थापना में उपेन्द्र कुमार पाण्डे, शिव बालक प्रसाद, महेश लाल और प्रदीप कुमार का प्रयास रहा। स्थापना के समय यानी 1974 में मात्र 11 कर्मचारी ही इसके सदस्य थे जो 1986 में बढ़कर 20 हो गये। विद्युत में भारतीय मजदूर संघ का विकास बहुत धीमी गति से हुआ है। सदस्यता शुल्क प्रतिमास दो रुपये और संग्रह वार्षिक । बिहारशरीफ विद्युत श्रमिक संघ का संविधान वही है जो " बिहार विद्युत श्रमिक संघ " का है । पदाधिकारियों का निर्वाचन तीन साल पर मतदान द्वारा किया जाता है। अध्यक्ष नवल किशोर प्रसाद तथा महामंत्री जोगिन्द्र प्रसाद हैं। इस पद पर ये दो वर्षों से हैं।

बिहारशरीफ विद्युत श्रमिक संघ का अपना निजी मकान है। संघ का मांग-पत्र महासंघ द्वारा तैयार किया जाता है उसमें स्थानीय मुद्दे भी जोड़े जाते हैं। 1984 में वेतन-वृद्धि के प्रश्न पर संघ संघर्षरत रहा और इसके सभी सदस्यों ने पूर्ण रूपेण भाग लिया। संघ अपनी लक्ष्य प्राप्ति के तरीके में कहता है कि अधिक से अधिक सदस्य बनाना तथा समझौतावार्त्ता द्वारा मांग की प्राप्ति करना।

बिहारशरीफ विद्युत श्रमिक संघ को प्रबन्ध द्वारा मान्यता प्राप्त है।

4.4 दूकान एवं प्रतिष्ठान

दूकान एवं प्रतिष्ठान की औद्योगिक इकाइयाँ औद्योगिक एवं अर्द्ध औद्योगिक, शहरी एवं अर्द्ध शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में फैली हुई है। इन इकाइयों में श्रमिकों की संख्या कम होती है। बहुत बड़े क्षेत्र में इनके बिखराव के कारण तथा मालिकों की संख्या अनगिनत होने के कारण इनका संघीकरण आसान नहीं है। शोषण की अधिकता होने के बावजूद इन श्रमिकों में संघ चेतना का विकास विलम्ब से हुआ। इनकी समस्याओं के प्रति राष्ट्रीय श्रमिक महासंघों की आँखे

में कोई दूकान मालिक अपने यहाँ कार्यरत मजदूरों को सेवा मुक्त नहीं कर सकता है। राँची में इस संगठन की मजदूरों के बीच अपनी प्रतिष्टा और यह मान्यता प्राप्त संगठन है।

4.5 वित्तीय संस्थान

श्रम संगठन बनाने के दृष्टिकोण से वित्तीय संस्थान भी आज एक महत्वपूर्ण संस्थान के रुप में उभरा है। बिहार भामस से संबद्ध इस उद्योग में 8 संघ हैं जिनमें से 3 को इस अध्ययन के लिए चुना गया है।

4.51 रिजर्व बैंक वर्क्स आर्गेनाइजेशन, पटना

इसका प्रधान कार्यालय पटना में स्थित है। इस संघ की स्थापना 1980 में हुई है। इसका श्रम संघ अधिनियम 1926 के अन्तर्गत पंजीयन 1980 में हुआ। इसकी पंजीयन संख्या 2411 है। इसकी स्थापना में भामस के नेताओं ने योगदान किया है। अतः स्थापना के साथ ही यह बिहार भामस से संबद्ध हो गया। स्थापना के समय इसकी सदस्य संख्या मात्र 13 थी। इस संघ की स्थापना श्रमिकों की समस्याओं को सही ढ़ंग से अभिव्यक्ति देने हेतु की गयी। इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है जिनमें प्रमुख हैं राम किशोर पाठक, ए0 डी0 नाथ, चरण जीत सिंह, शिवजी सिंह। इनमें से चारों इस इकाई में कार्यरत हैं। राम किशोर पाठक वित्तीय संस्थान के बड़े नेताओं में से एक हैं।

सर्वेक्षण के समय इस संघ की सदस्य संख्या 390 थी। इसका सदस्यता शुल्क प्रति माह दो रुपये है। शुल्क संग्रह की विधि व्यक्तिगत सम्पर्क है। संघ का संविधान या प्रशासन का तरीका सभी का एक जैसा ही है । पदाधिकारियों के निर्वाचन की विधि एवं अवधि वार्षिक आम सभा के द्वारा तय होती है । इस संगठन के अध्यक्ष के रूप में अरुण कुमार ओझा, महामंत्री शिवजी सिंह और कोषाध्यक्ष अरशद अजीज हैं। अध्यक्ष और महामंत्री दो वर्षो से इस पद पर आसीन हैं। संघ की आय 1986 में 9000 रुपये और व्यय 7000 रुपये है। संघ का कार्यालय किराया पर है और बैंक में जमा रकम 3000 रुपये है।

नियुक्ति पर पाबंदी के विरोध में इसने संघर्ष किया। संघ का मांग-पत्र आम सभा और कार्यकारिणी दोनों के द्वारा बनाया जाता है। संघ का कोई राजनीति कोष नहीं है। संघ का लक्ष्य है शांतिपूर्ण वार्ता के द्वारा समस्याओं का समाधान। इस संघ को प्रबंध द्वारा मान्यता नहीं मिली है।

4.53 बिहार राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक वर्क्स आर्गेनाइजेशन, पटना

इसका प्रधान कार्यालय पटना में स्थित है। इस संघ की स्थापना 1982 में हुई है। इसका श्रम संघ अधिनियम, 1926 के अन्तर्गत और पंजीयन 8.4.1983 कें हुआ। इसकी पंजीयन संख्या 2648 है। इसकी स्थापना में बिहार भामस के नेताओं ने योगदान किया है। अतः स्थापना के साथ ही यह बिहार भामस से संबद्ध हो गया। स्थापना के समय इस संगठन की सदस्य संख्या मात्र 29 थी। इस संगठन कों प्रारंभ करने का मुख्य कारण अन्य संघों में राष्ट्रीयता भावना की कमी बताया गया। इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है, जिनमें प्रमुख हैं रामदेव प्रसाद, सुखदेव ताँती, कौशल किशोर सिंह, चन्द्रधर झा और रामेश्वर प्रसाद। इनमें से प्रथम एक बिहार भामस के अध्यक्ष है और शेष चारों कर्मचारी।

सर्वेक्षण के समय इस संघ की सदस्य-संख्या 139 थी। सदस्यता शुल्क दो रुपये प्रति माह है। शुल्क संग्रह की विधि प्रति माह के प्रथम सप्ताह में है। बिहार भामस के अन्य इकाई की तरह इनका भी संविधान आदि है। पदाधिकारियों के निर्वाचन की विधि एवं अवधि प्रति वर्ष एवं सामान्य बैठक में होना है। इस संगठन के मुख्य पदाधिकारी हैं अध्यक्ष रामदेव प्रसाद, महामंत्री शिवकुमार सिंह और कोषाध्यक्ष सतीश प्रसाद श्रीवास्तव। ये सभी पदाधिकारी अपने पद पर 5 वर्षो से आसीन हैं। इस संगठन का कोई राजनीति कोष नहीं है। इसको प्रबन्ध द्वारा मान्यता नहीं मिली है क्योंकि संघ अल्पमत में है।

4.6 स्वास्थ्य

स्वास्थ्य भी अब उद्योग का रुप लेता जा रहा है। दूसरों के दुख दूर करने वाले भी अपने कष्टों के निवारण हेतु श्रम संघवाद को अपनाने लगे है। बिहार भारतीय मजदूर संघ से स्वास्थ्य सेवा के चार श्रम संघ संबद्ध है जिनमें से एक को अध्ययन के लिए चुना गया है,

अध्याय – पाँच

सदस्यों की विवरणिका

प्रस्तुत अध्याय में सर्वेक्षित सदस्यों की एक विवरणिका तैयारी करने का प्रयास किया गया है। दस अध्ययन के लिए छः मुख्य अद्योगों कार्यरत भामस के 15 संवद्ध इकाइयों को सम्मिलित किया गया है तथा इनके 334 सदस्यों का सर्वेक्षण किया गया है। सर्वेक्षण के क्रम में इनसे यक्तिगबत एवं पारिवारिक सूचनाओं एवं जानकारियो को क्रमबद्ध रूप से प्रदर्शित किया गया है ताकि सदस्यों की एक विवरणिका तैयार हो सके। व्यक्तिगत सूचनाओं में आयु, लिंग निवास स्थान, वैवाहिक स्थिति, धर्म, जाति, शैक्षणिक योग्यता, कार्यानुभव, मासिक आय तथा पारिवारिक सूचनाओं में से परिवार का आकार सदस्यों का लिंग, आर्थिक स्थिति तथा साक्षारता को विवरणिका के सृजन में आधार माना गया।

5.1 आयु

आयु एक महत्वपूर्ण कारक है जों व्यक्ति की मनोवृत्ति एवं विचारों को प्रभावित करता है। आयु के इस विशेष महत्व को ध्यान में रखते हुए विवरणिका के सृजन में इसे प्रथम स्थान पर रखा गया है। सर्वेक्षित सदस्यों का वर्गीकरण आयु के आधार पर सारणी 5.1 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 5.1 के अध्ययन से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि सर्वेक्षित 334 सदस्यों में करीब दो तिहाई 25 वर्ष से ऊपर की आयु के है। एक तिहाई से ज्यादा सदस्य अध्ययन के समय 25 वर्ष तक की उम्र के थे। सभी उद्योगों मे 25 वर्ष से ऊपर की उम्र वाले सदस्यों की बहुलता है। विद्युत उद्योग के सभी सदस्य 25 वर्ष से ऊपर के हैं। दुकान एवं प्रतिष्ठान में भी ऐसी ही स्थिति दृष्टिगत होती है। यहाँ करीब 92 प्रतिशत सदस्यों की आयु 25 वर्ष से ऊपर है। विनिर्माण

विनिर्माण में 12.3 तथा दुकान प्रतिष्ठान में 2 हैं।

सारणी – 5.2

लिंग के आधार पर सदस्यों का वर्गीकरण

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	लिंग वर्ग			
		स्त्री		पुरुष	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	00	00.0	30	100.0
विनिर्माण	131	16	12.3	115	87.7
विद्युत	45	00	00.0	45	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	01	2.0	48	98.0
वित्तीय संस्थान	74	00	00.0	74	100.0
स्वास्थ्य	5	5	100.0	00	00.0
योग	334	22	6.5	312	93.5

सदस्यों की लिंग–संरचना इस संदर्भ में व्याप्त स्थिति को प्रतिबिंबित करती है। इन उद्योगों में महिला कार्मिकों की अल्पता पुनः स्थापित होती है।

5.3 निवास स्थान

समाज शास्त्रीय विवेचन में निवास स्थान तथा उसकी ग्रामीण–शहरी पृष्टभूमि महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। सर्वेक्षि सदस्यों से उनके निवास स्थान की स्थिति के बारे में भी जानकारी हासिल की गयी है। इस जानकारी का सारणीकरण किया गया है जिसे सारणी 5.3 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी 5.3 सदस्यो की ग्रामीण, शहरी एवं अर्द्धशहरी पृष्ठभूमि को प्रकाशित करती है। सर्वेक्षित सदस्यों का करीब आधा भाग अर्द्धशहरी क्षेत्र का वासी है, शहरी क्षेत्र के वासिन्दों का प्रतिशत करीब 27 तथा ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले सदस्यों का प्रतिशत 22 है। शहरी एवं अर्द्धशहरी सदस्यों की बहुलता का एक कारण यह भी है कि सर्वेक्षण में सम्मिलित इकाईयाँ शहरी एव अर्द्धशहरी क्षेत्र में स्थित है।

उद्योगों के अनुसार सदस्यों का वितरण इस बात की पुष्टि करता

सारणी 5.3

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	निवास स्थान					
		ग्रामीण		शहरी		अर्द्धशहरी	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	8	26.6	0	00.0	22	73.4
विनिर्माण	131	30	22.9	11	8.4	90	68.7
विद्युत	45	8	17.8	13	28.9	24	53.3
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	12	24.5	14	28.6	23	46.9
वित्तीय संस्थान	74	16	21.6	49	66.2	9	12.2
स्वास्थ्य	5	0	00.0	3	60.0	2	40.0
योग	**334**	**74**	**22.3**	**90**	**26.9**	**170**	**50.0**

का वर्गीकरण उनके धर्म के अनुसार सारणी 5.5 में किया गया है।

सारणी 5.5 में सदस्यों का वर्गीकरण धर्मानुसार दर्शाया गया है। सारणी के आँकड़ों के विश्लेषण से यह बात प्रकाश में आती है कि भामस ने सभी धर्मों के अनुयायियों को अपनी विचारधारा एवं अपने नेताओं की कर्मठता द्वारा अपनी ओर आकर्षित किया गया है। सदस्यों का धर्मानुसार वर्गीकरण यह स्पष्ट करता है कि भामस संघों में हिन्दू, मुसलमान एवं ईसाई सभी सदस्य के रुप में क्रियाशील हैं। यह बात भी स्पष्ट है कि भामस की सदस्यता में हिन्दुओं की प्रचुरता है। इस क्रम में मुस्लिम सदस्यों का स्थान दूसरा तथा ईसाई सदस्यों का स्थान तीसरा है। हिन्दू धर्मावलंबियों का अधिक होना इस बात का प्रतिबिम्ब है कि बिहार की जनसंख्या में तथा श्रमिक संख्या में हिन्दुओं का बहुलता है। जिस क्रम में बिहार की जनसंख्या में तथा बिहार की श्रमशक्ति में विभिन्न धर्मावलंबियों की संख्या है, तकरीबन, उसी क्रम में इनका प्रतिनिधित्व भी बिहार भामस की सदस्यता में है। इस तरह स्पष्ट होता है कि भामस के ऊपर आरोपित यह आलोचना कि हिन्दू धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म वाले इससे दूर भागते हैं, मिथ्या, निराधार एवं बेबुनियाद है। इस सारणी के आँकड़ों के विश्लेषण से यह प्रमाणित होता है कि भामस ने बिहार प्रदेश में सभी धर्मों के अनुयायियों को अपनी सदस्य संख्या में समुचित स्थान दिया है तथा जैसे-जैसे भामस की धर्माधता का प्रचार कम होगा तथा श्रमिकों को इसके सर्वधर्म समभाव के दर्शन की जानकारी होगी। वैसे-वैसे इसकी सदस्य संख्या में अन्य धर्मावलंबियों की संख्या बढ़ती जायेगी।

उद्योगों के अनुसार सदस्यों का वितरण यह स्पष्ट करता है कि दुकान एवं प्रतिष्ठान तथा स्वास्थ्य संस्थान को छोड़कर अन्य सभी उद्योगों में हिन्दू सदस्यों की बहुलता है। दुकान एवं प्रतिष्ठान के संघ में मुस्लिम सदस्यों की बहुलता है तथा सर्वेक्षण में सम्मिलित स्वास्थ्य संस्थान के संघ में ईसाई सदस्यों की प्रचुरता है।

5.6 जाति

बिहार जैसे राज्य में किसी भी राजनैतिक दल, संगठन या संस्था को प्रभावित करने वाला एक महत्त्वपूर्ण कारक जाति है। भामस में भी विभिन्न जातियों की स्थिति का पता लगाने का प्रयास किया गया है।

सारणी - 5.6

जाति के आधार पर सदस्यों का वर्गीकरण

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	जाति वर्ग							
		ऊँची		पिछड़ी		अनुसूचित जाति		जनजाति	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	10	33.4	14	46.6	6	20.0	0	--
विनिर्माण	131	24	18.3	60	45.8	35	26.7	12	9.2
विद्युत	45	25	55.6	20	44.4	0	---	0	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	15	30.6	24	49.0	0	---	10	20.4
वित्तीय संस्थान	74	61	82.5	8	10.8	5	6.7	0	--
स्वास्थ्य	5	0	---	0	---	2	40.0	3	60.0
योग	**334**	**135**	**40.4**	**126**	**37.8**	**48**	**14.4**	**25**	**7.4**

सारणी - 5.7

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर सदस्यों का वर्गीकरण

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	योग्यता					
		अनपढ़		साक्षर		मैट्रिक	
		सं0	प्र0	सं0	प्र0	सं0	प्र0
खनन	30	0	—	20	66.6	6	20.2
विनिर्माण	131	15	11.4	19	14.5	32	24.4
विद्युत	45	0	—	0	—	18	40.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	12	24.5	18	36.7	15	30.6
वित्तीय संस्थान	74	0	—	0	—	12	16.3
स्वास्थ्य	5	2	40.0	3	60.0	0	—
योग	**334**	**29**	**8.7**	**60**	**17.9**	**83**	**24.9**

क्रमशः

आधार पर वर्गीकरण सारणी 5.7 में किया गया है।

सारणी 5.7 में अंकित आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न उद्योगों के संघों में सदस्यों की शैक्षणिक योग्यता में भिन्नता है। वित्तीय संस्थान के क्षेत्र में कार्यरत संघों के सदस्यों की शैक्षणिक योग्यता अन्य उद्योगों की तुलना में अच्छी है। इस उद्योग के संघों के सदस्यों का दो तिहाई से अधिक भाग स्नातक एवं स्नात्तकोत्तर उपाधियों से विभूषित है। अनपढ़ एवं साक्षर वर्ग में कोई भी सदस्य नहीं आता। विनिर्माण उद्योग के संघों में अनपढ़ से लेकर स्नातकोत्तर उपाधिधारी तक सदस्य मौजूद हैं। यहाँ करीब 35 प्रतिशत सदस्य स्नातक या स्नातकोत्तर उपाधियों से लैस है। करीब एक चौथाई सदस्य अनपढ़ एवं साक्षर श्रेणी में आते है और करीब 38 प्रतिशत सदस्यों में मैट्रिक एवं इण्टर उत्तीर्ण होने का दावा किया है। विद्युत संघों के सदस्यों की शैक्षणिक योग्यता मैट्रिक और इण्टर में ही सीमित है। दुकान एवं प्रतिष्यन के संघों के सदस्यों में से करीब 60 प्रतिशत या तो अनपढ़ हैं या मात्र साक्षर। शेष सदस्य मैट्रिक तथा इन्टर की योग्यता रखते हैं। स्वास्थ्य सेवा के संगठनों में शिक्षा का नितान्त अभाव है। यहाँ 40 प्रतिशत सदस्यों ने अपने को अनपढ़ तथा 60 प्रतिशत ने अपने को साक्षर होने का जिक्र किया है। खनन उद्योग के संघों में भी सदस्यों की शिक्षा की स्थिति अच्छी नहीं है करीब 67 प्रतिशत सदस्यों में अपने को साक्षर होने का दावा किया है, करीब 27 प्रतिशत सदस्य मैट्रिक एवं इंटर के योग्यता–वर्ग में आते हैं तथा मात्र दो सदस्यों ने अपने को स्नातक उपाधिधारी बतलाया है।

विभिन्न उद्योगों के संघों के सदस्यों की शैक्षणिक योग्यता के अवलोकन से इस क्रम में भामस सदस्यों की योग्यता का एक चित्र उभरता है। इस चित्र के अनुसार भामस की सदस्यता में करीब 27 प्रतिशत अनपढ़ एवं साक्षर श्रेणी के सदस्य है। करीब 41 प्रतिशत सदस्यों ने मैट्रिक एवं इण्टर की परीक्षायें पास की है तथा करीब 32 प्रतिशत सदस्यों की योग्यता स्नातक तथा इससे अधिक है। इस विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भामस संघों की सदस्यता में शैक्षणिक योग्यता का स्तर ऊँचा है। भारत जैसे देश में जहाँ जनसंख्या का मात्र 33 प्रतिशत साक्षर है भामस के सदस्यों का दो तिहाई भाग मैट्रिक से लेकर स्नातकोत्तर उपाधियों से अलंकृत है। करीब चौथाई भाग ही अनपढ़ एवं मात्र साक्षर की श्रेणी

सारणी - 5.8

कार्यानुभव के आधार पर सदस्यों का वर्गीकरण

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	कार्य अनुभव की अवधि					
		5 से कम		5 से 10 वर्ष		10 से 15	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	20	66.6	4	13.4	6	20.0
विनिर्माण	131	23	17.6	39	29.7	57	43.5
विद्युत	45	0	—	0	--	45	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	12	24.4	24	48.9	6	12.4
वित्तीय संस्थान	74	35	47.3	8	10.8	4	5.4 2
स्वास्थ्य	5	0	—	4	80.0	1	20.0
योग	**334**	**90**	**26.9**	**79**	**23.7**	**119**	**36.7**

क्रमशः

सारणी - 5.9
मासिक आय के आधार पर सदस्यों का

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	मासिक					
		0 से 500		501 से 1000		1001 से 2000	
		स0	प्रतिशत	स0	प्रतिशत	स0	प्रतिशत
खनन	30	0	----	10	33.3	10	33.3
विनिर्माण	131	89	67.9	32	24.5	10	7.6
विद्युत	45	0	----	0	----	45	100.0 0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	20	40.8	29	59.2	0	----
वित्तीय संस्थान	74	0	----	0	----	50	67.5
स्वास्थय	5	5	100.0	0	----	0	----
योग	**334**	**114**	**34.1**	**71**	**21.2**	**115**	**34.6**

क्रमशः

सारणी 5.9 पर सरसरी नजर डालने से यह साफ जाहिर होता है कि विभिन्न उद्योगों के सदस्यों की माकि आय में स्पष्ट भिन्नता है। सर्वेक्षण में सम्मिलित सवास्थ्य संसीान के सभी महिला कर्मचारियों की मासिक आय 500 रु0 या इसके कम है। विनिर्माण के सदस्यों के करीब 68 प्रतिशत तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान के सदस्यों के 41 प्रतिशत की मासिक आय 500 रूपये तक है। इस संदर्भ में सवसे अच्छी स्थिति वित्तीय संसीानों एवं विद्युत की है जिसे किसी भी कर्मचारी की आय 1000 रूपयें जो कम नहीं है। वित्तीय संस्थान के 5 कर्मचारी ऐसे हैं जिनकी मासिक आय 3000 रूपये से भी अधिक है।

कुल सदस्यों की माकि आय पर समन्वित दृष्टि डालने से ऐसा आभास मिलता है कि भमस संघों में वैसे सदस्यों की बहुलता है जिनकी मासिक आय अपेक्षा कृत कम है। करीब 55 प्रतिशत सदस्य दो हजार रूपके से ऊपर की मासिक तनख्याह उठातें हैं।

5.10 परिवार का आकार

प्रत्येक व्यक्ति परिवार का सदस्य होता है उसके क्रिया- कलापों, आचार-विचार, व्यवहार एवं मनोवृति पर परिवार के आकार एवं अन्य विशेषताओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रीाव पड़ता है। सारणी 5.10 में नमुने में लिए गये भमस सदस्यों के परिवारों का आकार तथा सदस्यों का लिंगानुसार विभजन दर्शाया गया है।

सारणी 5.10 के अवलोकन से यह पता चलता है कि विभिन्न उद्योगों के सदस्यों कि परिवारों के आकार में भिन्नता है। खनन एवं स्वास्थ्य संघों के सरस्यों के परिवारों का आकार अन्य उद्योगों की तुलना में बड़ा है यहाँ प्रति परिवार औसत सदस्य-संख्या 6.2 है, दुकान एवं प्रतिष्ठान में यह संख्या 5.9 वित्तीय संस्थान में 5.5 तथा विनिर्माण में 5.1 है। विद्युतकर्मियोंके परिवार का आकार सबसे छोटा है जहाँ प्रति परिवार औसतन 4.2 सदस्य हैं । सभी सदस्यों को समन्वित रूप से नजर डालने पर प्रति परिवार औसतन सदस्य-संख्या 5.3 आती है। इन परिवारों के सदस्यों में 54.7 प्रतिशत पुरुष 45.3 प्रतिशत महिलाएँ हैं। स्वास्थ्य सेवा को छोड़ कर सभी उद्योगों में पुरुष सदस्यों का प्रतिशत 50 से अधिक है। स्वास्थ्य सेवा में महिला सदस्यों का प्रतिशत पुरुष सदस्यों से अधिक है।

5.11 परिवार के सदस्यों की आर्थिक स्थिति

सर्वेक्षित सदस्यों के परिवार के सदस्यों की आर्थिक गतिविधियों मे शरीक होने की स्थिति को सारणी 5.11 में अंकित किया गया है। आर्थिक गतिवधियों में भागीदारी के आधार पर सदस्यों को दो वर्ग मे विभाजित किया गया है। प्रथम वर्ग में वैसे सदस्यों को शामिल किया गया है जो उपार्जक के रुप कार्यरत हैं, जो स्वावलंबी है। तथा परविार के अन्य सदस्यों के भरण-पोषण में योगदान करते है। दूसरे वर्ग मे वैसे सदस्यों को रखा गया है जो अपने परिवार पर आश्रित हैं। ऐसे वर्ग में आमतौर पर वैसे लोग हैं जो या तो बहुत छोटे हैं या किसी शैक्षणिक संस्थान में अध्ययनरत हैं या वैसे वयोवृद्ध सदस्य हैं जिनकी कार्य करने की क्षमता बुढ़ापे ने छीन ली है तथा कुछ ऐसे सदस्य भी हैं जो कार्य करने की क्षमता तो रखते है। पर उनके लिए कार्य ही उपलब्ध नहीं है। वित्तीय स्थिति के इस विभाजन के आधार पर श्रमिकों का वर्गीकरण सारणी 5.11 में द्रष्टव्य है।

सारणी 5.11 के आँकड़ों पर गौर करने से यह तथ्य प्रकाश मे आता है कि सभी उद्योग वर्गों के परिवारों में परावलंबी सदस्यों की संख्या उपार्जक की संख्या से अधिक है। खनन में 84.1 प्रतिशत सदस्य परावलंबी तथ 15.9 प्रतिशत उर्पाजक है। परावलंबी और उपार्जक सदस्यों का प्रतिशत विनिर्माण में क्रमशः 75.5 तथा 22.5, विद्युत में 76.2 तथा 23.8, दुकान एवं प्रतिष्ठान में 82.5 तथा 17.5 वित्तीय संस्थान में 72.1 तथा 27.9 और स्वास्थ्य में 70.9 तथा 29.1 है। कुल सदस्यों में 77.4 प्रतिशत परावलंबी तथा 22.6 प्रतिशत उपार्जक है।

विभिन्न उद्योगों में उपार्जक आश्रित अनुपात पर दृष्टिपात करने से यह जाहिर होता है कि खनन में एक उपार्जक पर 5.3 आश्रित है। इसी प्रकार एक उपार्जक पर दूकान एवं प्रतिष्यान में 4.7 आश्रित, विनिर्माण में 3.4 आश्रित, विद्युत में 3.2 वित्तीय संस्थान में 2.6 तथा स्वास्थ्य सेवा में 2.4 आश्रित हैं। कुल सर्वेक्षित सदस्यों के परिवारों में एक उपार्जक पर 3.5 आश्रित हैं।

अध्याय – छः

श्रमिक संघों की छवि

राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर पर भारतीय मजदूर संघ की आशातीत एवं अनवरत सफलता ने श्रम संघ के जिज्ञासु छात्रों को इसके कारणों की खोज करने के लिए उत्प्रेरित किया है। इस उत्प्रेरणा के प्रभाव में आकर इस शोध कार्य के लिए निर्मित एवं प्रयुक्त सूचना अनुसूची में कुल ऐसे प्रश्न भी रखे गये जिससे भामस संघों के प्रति आकर्षक के कारणों को प्रकाश में लाया जा सके तथा उनकी प्रभावशीलता की सीमा को दर्शाया जा सके। भारतीय मजदूर संघ की छवि का आकलन करने के लिए यह आवश्यक है कि उन कारणों का पता लगाया जाये जिनके प्रभाव में आकर श्रमिकों ने भामस की सदस्यता ग्रहण की है। उनकी गतिविधियों के प्रति किस हद तक वे संतुष्ट हैं तथा विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति मे वे अपने संघों को कितना सक्षम समझते है। दूसरें शब्दों में इस अध्याय में यह प्रयास किया गया है कि भामस के सदस्यों की अनुभूति के अनुरुप भामस की एक प्रतिमा स्थापित की जाय। प्रस्तुत अध्याय में भामस सदस्यों की सदस्यता अवधि, सदस्यता ग्रहण के कारण, संघ की बैठकों की संख्या एवं नियमितता, पदाधिकारियों के चुनाव की नियमितता एवं निष्पक्षता, वाह्य नेतृत्व की आवश्यकता तथा विभिन्न क्षेत्रों में संघ की प्रभावशीलता की सीमा पर प्रकाश डालने का यथेष्ठ प्रयास किया गया है।

6.1 सदस्यता अवधि

भामस के संघों का उद्भव एवं विकास 1960 एवं 1970 के दर्शकों में हुआ है। बिहार प्रदेश भामस की स्थापना 1963 में हुई तथा संबंद्ध संघों का गठन इसके बाद ही हुआ। इस तरह भामस का कार्य काल बिहार प्रदेश में सिर्फ 25 वर्षो का है। भामस के सर्वेक्षित

संघों के सदस्यों की सदस्यता अवधि की जानकारी प्राप्त करना इस संदर्भ में आवश्यक प्रतीत होता है। सारणी 6.1 में सर्वेक्षित सदस्यों का वितरण सदस्यता -अवधि के आधार पर किया गया है।

सारणी 6.1 में अंकित आँकड़े इस तथ्य की ओर संकेत करते है कि आधा से अधिक सदस्यों की सदस्यता अवधि 5 वर्ष तक की है। 5 से 10 वर्ष की सदस्यता अवधि में करीब 30 प्रतिशत सदस्य आते है तथा करीब 16 प्रतिशत सदस्यों की सदस्यता 10 वर्ष से अधिक पुरानी है। इससे यह स्पष्ट होंता है कि अधिकांश सदस्यों ने 10 वर्ष के भीतर ही भामस की सदस्यता ग्रहण की है। इसका एक मात्र कारण भामस संघों की अवस्था का कम होना प्रतीत होता है। सभी उद्योगों में कमावेश यही स्थिति वर्तमान है।

6.2 सदस्यता-ग्रहण के कारण

भामस के प्रति आकर्षण के कारणों की जानकारी इसकी सदस्यता ग्रहण करने के कारणों से भली भाँति हो सकती है। सूचना अनूसूची में ऐसे 14 उत्प्रेरक कारक रखे गये जिनके प्रभाव में आकर अक्सर लोग किसी संगठन की सदस्यता ग्रहण करते है। सर्वेक्षित सदस्यों से यह कहा गया कि इनमें से जो कारक उनके संदर्भ में उचित या सही जान पड़ते हैं उन्हें अंकित करें या बतायें। उत्तरदाताओं में से अनेक ने एकाधिक कारण बतलाये, फलस्वरुप उत्तरों की संख्या उत्तरदाताओं की संख्या से ज्यादा हो गयी है। विभिन्न उद्योगों के श्रमिक संगठनों के सर्वेक्षित सदस्यों से प्राप्त उत्तरों को क्रमबद्ध रुप से सारणी 6.2 में सजाया गया है।

सारणी 6.2 के विश्लेषण से कई तथ्य प्रकाश में आते है। सदस्यों के विचार में कोई भी उत्प्रेरक तत्व सभी उद्योगों के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण नहीं है। दूसरें शब्दों में उद्योग में परिवर्तन के साथ उत्प्रेरक तत्व के महत्व में भी परिवर्तन हुआ है। सभी उद्योगों के संगठनों के सदस्यों के समन्वित उत्तरों पर दृष्टि डालने से विभिन्न उत्प्रेरक तत्वों का स्थान वरीयता क्रम से अर्थात् प्राप्त उत्तरों की संख्या के आधार पर निम्नलिखित ढ़ग से निर्धारित किया जा सकता है।

सारणी - 6.2

सदस्यता ग्रहण के कारण

सदस्यता ग्रहण के कारण	विद्युत (45)		दुकान एवं प्रतिष्ठान(49)	
	संख्या	प्र0	संख्या	प्र0
(क) भामस की विचारधारा	30	66.6	26	51.0
(ख) संघ के नेताओं के आचरण एवं व्यवहार	37	82.2	35	71.4
(ग) भारतीयता एवं भारतीय परंपराओं मे विश्वास	40	88.8	40	81.6
(घ) अन्य संघो से असंतोष	20	44.4	14	28.5
(ड़) सिर्फ इसी संघ की जानकारी	15	33.3	10	20.4
(च) अधिक लाभ की आशा	5	11.1	3	6.1
(छ) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ/भाजपा की विचारधारा में आस्था	3	6.6	5	10.2
(ज) संघ के नेत्त्व में अपनी जाति के लोगों का बोलबाला	8	17.7	7	14.2
(झ) संघ के नेतृत्व में अपने क्षेत्र के लोगों का बोलबाला	0	—	4	8.1
(ञ) देश एवं प्रदेश की सत्ता में जनता पार्टी का आना	4	8.8	3	6.1
(ट) व्यक्तित्व में निखार की संभावना	35	77.7	23	46.9
(ठ) नेतृत्व में आने की संभावना	28	62.2	33	67.3
(ड) राजनीति में प्रवेश करने की इच्छा	17	37.7	15	30.6
(ढ) आर्थिक लाख एवं राजनीतिक/ सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि	10	22.9	5	10.6

क्रमशः

ऊपर अंकित वरीयता क्रम के अनुसार उत्प्रेरक तत्वों का वर्णन एवं विश्लेषण नीचे अंकित किया गया है।

6.21 भामस की विचारधारा

सदस्यता ग्रहण करने के लिए उत्प्रेरणा प्रदान करने वाले तत्वों में भामस की विचारधारा का स्थान प्रथम है। करीब 63 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस कारक को ग्रहण करने का कारण माना है। उत्तरों का विश्लेषण उद्योगानुसार करने से यह स्पष्ट होता है कि सभी उद्योग के अधिकांश सदस्यों ने इस कारक को एक उत्प्रेरक कारक माना है। उत्तरों की संख्या एवं प्रतिशत के हिसाब से खनन, विनिमार्ण, वित्तीय संस्थान में इसे प्रथम स्थान, स्वास्थ्य संस्थान में द्वितीय स्थान तथा विद्युत एवं दुकान एवं प्रतिष्ठान में चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ है।

विचारधारा की जानकारी किस सदस्य को कितनी है इसका उत्तर प्रदान करने में यह शोध प्रबन्ध सक्षम नहीं है। विचारधारा को किस उत्तरदाता ने किस संदर्भ में लिया है तथा विचारधारा का कौन सा पहलू उसके मस्तिष्क पर कितना हावी है इसका उत्तर प्राप्त नहीं किया गया है। फिर भी अधिकांश सदस्यों का विचार से प्रभावित होकर संगठन की सदस्यता ग्रहण करना संगठन के लिए निश्चितरुपेण एक गौरव की बात है। विचारधारा से प्रभावित होकर सदस्यता ग्रहण करने वालों में एक वैचारिक एकता का तत्व वर्तमान होता है जो तत्व किसी भी संगठन को एकताबद्ध रखने, उसके क्रिया-कलापों को सूचारु रुप से चलाने, उसके कार्यक्रमों को सफलता पूर्वक क्रियान्वित करने तथा उस संगठन को प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर करने में सहायक सिद्ध होता है। भामस की प्रगति का राज शायद सदस्यों की इसी वैचारिक एकता में छुपा हुआ है।

इस अध्ययन के द्वितीय अध्याय में भामस की विचारधारा पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। भामस की विचारधारा की बुनियाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दर्शन है जिसमें राष्ट्रीयता, भारतीयता, अखण्डता, परम वैभव एकात्म मानववाद, हिन्दू राष्ट्र पर जोर डाला गया है। जहाँ तक भामस का सवाल है, श्रमिक क्षेत्र में इसने "राष्ट्र का उद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण तथा श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण" की धारणा प्रस्तुत की है। भामस न तो राष्ट्रीयकरण को मान्यता प्रदान करता है और न राष्ट्रीयकरण को। यह बात तो स्पष्ट है कि भामस

एक गैर-साम्यवादी संगठन है लेकिन पूंजीवाद पर भी इसने प्रहार किया है। इसकी विचारधारा में सभी लोगों को आकर्षित करने की गुंजाईश है। गैर-साम्यवादी श्रमिकों को तो इसकी विचारधारा स्पष्ट रुप से आकर्षित करती है। पुँजीवादी दर्शन से मेल रखने वाले श्रमिकों पर इसका जादुई असर होता है।

6.22 नेताओं के आचरण एवं व्यवहार

किसी भी संगठन की छवि उसके नेताओं के व्यवहार एवं आचरण से अभिव्यक्त होती है। नेताओं के आचारण एवं व्यवहार से किसी भी संगठन के प्रति लोगों में आकर्षण या विकर्षण पैदा होता है। सर्वेक्षित उत्तरदाताओं में नेताओं के आचरण एवं व्यवहार को इस संदर्भ में जो अहमियत दी गयी है, वह स्वाभाविक है। उत्तरदाताओं के समन्वित मतों के अनुसार इस उत्प्रेरक तत्व को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है। कुल उत्तरदाताओं में से 56.5 प्रतिशत ने इस तत्व को अपने संदर्भ में उपयुक्त माना है। उद्योगों के अनुसार मतों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य संस्थान के सभी उत्तरदाताओं के लिए विद्युत सेवा के 82.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए, दुकान एवं प्रतिष्ठान के 71.4 प्रतिशत उत्तरदाताओ के लिए तथा विनिर्माण के 53 प्रतिशत उत्तरदाताओं के लिए नेताओं के आचरण एवं व्यवहार एक महत्वपूर्ण कारक है। इस कारक को वित्तीय संस्थान में करीब 46 प्रतिशत तथा खनन में करीब 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं का समर्थन प्राप्त हुआ है। वरीयताक्रमानुसार इस कारक को स्वास्थ्य संस्थान में प्रथम, वित्तीय संस्थान, दुकान एवं प्रतिष्यन, विद्युत एवं विनिर्माण में द्वितीय और खनन में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

6.23 भारतीयता एवं भारतीय परम्पराओं में विश्वास

यह एक ऐसा कारक है जिसने आम लोगों, खास कर श्रमिकों के मानस को उद्वेलित किया है। भारतीय परम्पराओं में विश्वास के कारण भारतीय मजदूर संघ को कई आलोचाये भी सहनी पड़ी हैं। बहुत सारे प्रगतिशील विचारकों को ऐसा महसुस हुआ था कि भारतीय परम्पराओं की गाथा गाने वाला संगठन आधुनिक उद्योगों में आधुनिकता से आपादमस्तक सराबोर श्रमिकों के बीच बहुत दिनों तक टिक नहीं पायेगा तथा अल्पायु में ही मौत को प्यारा हो जायेगा।

समय उन्होनें भामस की सदस्यता ग्रहण की, उन्हें सिर्फ इसी संगठन की जानकारी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि भामस के नेतागण तथा सक्रिय सदस्य सदस्यता-अभियान निरन्तर जारी रखते हैं। नये श्रमिकों से वे अविलम्ब संपर्क स्थापित करते है। अपने संघ की विशेषताओं से उन्हें अवगत कराते हैं तथा उन्हें अपने संगठन की छत्रछाया में आने का निमंत्रण देते है।

6.27 अन्य संघों से असंतोष

इस सर्वेक्षण से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि कुछ ऐसे भी श्रमिक हैं जिन्होंने एक संगठन से संबंध विच्छेद कर के इस संगठन में पदार्पण किया है। करीब 20 प्रतिशत सदस्यों ने यह जानकारी दी है कि वे अन्य संगठनों से उनके कार्यक्रमों तथा नेताओं से अंसतुष्ट हो जाने के कारण इस संगठन के आश्रय में आये।

6.28 राजनीत मे प्रवेश की इच्छा

एक प्रजातंत्र -राष्ट्र में राजनीत में रुचि का होना स्वाभाविक है। श्रमसंघ एक ऐसा संगठन है जिसके माध्यम से राजनीतिक दल में एवं राजनीतिक चुनाव में भाग लेने में आसानी होती है। करीब 17 प्रतिशत सदस्यों ने भामस की सदस्यता इसलिए भी ग्रहण की है कि देश की राजनीत तक पहुँचने में वे सक्षम होगें।

6.29 अन्य कारक

सदस्यता-ग्रहण के कुछ अन्य कारण भी है। सूचना अनुसूची में अंकित इन कारणों का यथेष्ठ नहीं मिलने के कारण इन्हें कारणों की सूची में अंकित करना अनावश्यक सा प्रतीत होता है। इन कारणों का नामांकन तथा इन्हें प्राप्त समर्थन की सीमा को सारणी 6.2 में दर्शाया गया है।

6.3 बैठकों की नियमितता एवं संख्या

किसी भी प्रजातांत्रिक संगठन के लिए पर्याप्त बैठकों का नियमित रुप से तथा निर्धारित अन्तराल पर आयोजन उसके प्रजातांत्रिक चरित्र को बनाये रखने में सहायक होता है। बैठकों के माध्यम से सदस्यों को अभिव्यक्ति का मौका मिलता है, निर्णय में उनकी

भागीदारी होती है जिसके फलस्वरुप संगठन एवं उसके कार्यक्रम के प्रति उनकी निष्ठा बनी रहती है या उत्तरोतर बढ़ती जाती है। भामस संघों में बैठकों की नियमितता पर सदस्यों के मंतव्य सारणी 6.3 में तथा बैठकों की संख्या 6.4 में अंकित है।

सारणी 6.3 के आँकड़ों के अध्ययनोपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि भामस संघों की बैठकें नियमित रुप से तथा निर्धारित अन्तराल पर आयोजित होती है। करीब 84 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस मत से सहमति व्यक्त की है, मात्र 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी अहसमति दर्ज करायी है। सभी उद्योगों के अधिकांश सदस्य इस मत के पोषक हैं कि भामस संघों की बैठकें नियमित रुप से आयोजित होती है।

सारणी - 6.4

आयोजित बैठकों की संख्या

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	आयोजित बैठकों की संख्या	
		कुल (वर्ष 1987-88)	औसत प्रति माह
खनन	30	48	4
विनिर्माण	131	94	7.8
विद्युत	45	48	4
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	24	2
वित्तीय संस्थान	74	47	3.9
स्वास्थ्य	5	12	1
योग	334	273	22.7

सारणी 6.4 के आँकड़े इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं कि सर्वेक्षित संघों की बैठकें प्रति मास एकाधिक बार होती है। स्वास्थ्य संस्थान के संघ में प्रति मास एक बैठक होती है। विनिमार्ण में मासिक बैठकों की औसत संख्या 7.8, खनन, विद्युत एवं वित्तीय संस्थान में 4 तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान में 2 बैठकें आयोजित होती है।

सारणी 6.5 के अध्ययन से इस संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचारों की स्पष्ट झाँकी मिलती है करीब 88 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में उनके संघों के पदाधिकारियों के चुनाव नियमित अन्तराल पर होते हैं। सारणी 6.6 के आँकड़ों के अध्ययन से यह पता चलता है कि से चुनाव बहुद हद तक उचित एवं निष्पक्ष होते है । सभी उद्योगों के अधिकतर सदस्य यह मानते है कि उनके संघों के चुनाव नियमित रुप से निर्धारित अन्तराल पर समुचित रुप से तथा निष्पक्ष होते है।

6.5 बाह्य नेतृत्व की आवश्यकता

श्रम संघों में बाह्य नेतृत्व की समस्या एक गंभीर समस्या मानी जाती है। यह सत्य है कि श्रमसंघों की स्थापना एवं विकास में बाह्य व्यक्तियों का अमूल्य योगदान रहा है। भारत में श्रमसंघों की स्थापना की प्रेरणा बाह्य नेतृत्व से ही आयी तथा उन्होंने ही स्थापित संघों को फलने फूलने में पर्याप्त सहायता प्रदान की। एक मत यह भी है कि भारतीय श्रमसंघों में व्याप्त भ्रष्टाचार, तानाशाही प्रवृति एवं अप्रजातांत्रिक तौर-तरीकों के लिए बाह्य नेतृत्व ही जिम्मेवार है। श्रमसंघ अधिनियम, 1926 ने भी श्रमसंघों में बाहरी व्यक्ति की संख्या को सीमित करने का प्रावधान रखा। इस अधिनियम के नियामकों का अभिप्राय श्रमसंघों को स्वस्थ बनाना था या भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को कमजोर करना यह विवादास्पद है। अभी भी ऐसे विचारक हैं जो श्रमसंघों में बाहरी व्यक्तियों को अवांछनीय तत्व मानते हैं। एक दूसरी धारणा के अनुसार श्रमसंघ को पूरी आजादी होनी चाहिए कि वह अपने नेतृत्व में जिसे चाहे रखे, श्रमसंघ एक स्वैक्षिक, प्रजातांत्रिक संस्था है। अगर उसके सदस्य चाहते हैं कि उनका नेतृत्व कोई बाहरी व्यक्ति करे तो इसमें किसी को भी दखल देने का अधिकार नहीं होना चाहिए। संगठन के सदस्य समझते हैं कि उनका हित किस में है बाहरी व्यक्ति को रखने में या न रखनें में।

इस संदर्भ में सर्वेक्षित सदस्यों से यह प्रश्न पूछा गया कि श्रमसंघों के नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति का होना आवश्यक है अथवा नहीं। प्राप्त उत्तरों को सारणी 6.7 में दर्शाया गया है।

सारणी 6.7 के आँकड़े इस बात की ओर इशारा करते है कि भामस के अधिकतर सदस्य श्रमसंघों के नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति को

अवांछनीय तत्व नहीं मानते तथा वे वाह्य नेतृत्व की आवश्यकता को महसूस करते है।

सारणी – 6.7

बाह्य नेतृत्व की आवश्यकता

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	बाह्य नेतृत्व की आवश्यकता			
		हाँ		नहीं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्र0
खनन	30	26	86.6	4	13.4
विनिर्माण	131	115	87.7	16	12.3
विद्युत	45	25	55.6	20	44.4
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	42	85.7	7	14.3
वित्तीय संस्थान	74	69	93.3	5	6.7
स्वास्थ्य	5	5	100.0	0	--
योग	**334**	**282**	**84.4**	**52**	**15.6**

6.6 नीति निर्धारण में सदस्यों की भूमिका

संघ की नीतियों के निर्धारण में तथा निर्णय प्रक्रिया में सदस्यों का जितना ही अंशदान होगा संघ उसी मात्रा में प्रजातांत्रिक माना जाएगा। सर्वेक्षण में सम्मिलित सदस्यों ने इस संदर्भ में पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में यह जानकारी दी है कि उनके संघों की नीतियों का निर्धारण सदस्यों से समुचित विचार-विनिमय द्वारा होता है। सभी सदस्यों ने यह स्वीकार किया है कि संघ द्वारा लिए जानेवाले निर्णयों में सदस्यों को अंशदान करने का पर्याप्त अवसर मिलता है। यह ऐसा महसूस करते हैं कि संघ की बैठकों में प्रत्येक सदस्य को अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता रहती है।

6.7 सीधी कारवाईयों में सदस्यों की भागीदारी

सभी सदस्यों ने यह स्वीकार किया है कि अपनी उचित मांगों

6.8 से सारणी 6.22 में प्रस्तुत किया गया है। मुद्दों के क्रमानुसार सदस्यों द्वारा संघों की सफलता के मूल्यांकन को आगे वर्णित एवं विश्लेषित किया गया है।

6.81 सदस्यों का हितवर्द्धन एवं हित रक्षा

श्रमिक संघ अपने सदस्यों के हित वर्द्धन के लिए नयी नयी माँगें प्रस्तुत करते हैं। इस संदर्भ में जो माँगें मान ली जाती है वे श्रमिकों के अधिकार का रुप ग्रहण करती है। फिर उन अधिकारों को कायम रखने के लिए श्रमिक संघ उनके रक्षार्थ कार्य करते हैं इस आधार पर औद्योगिक विवादों के दो भेद किए जाते है। हित वर्द्धन से संबंधित विवाद तथा हित रक्षा या अधिकार रक्षा से संबंधित विवाद। सदस्यों ने हित वर्द्धन तथा हित रक्षा के क्षेत्र में अपने संघों के प्रभाव की सीमा का अंकन किया है जिसे क्रमशः सारणी 6.8 और 6.9 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 6.8 और 6.9 के संभावित अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ज्यादातर सदस्यों ने हितवर्द्धन तथा हित रक्षा दोनों की क्षेत्र में अपने संघों को अधिक प्रभावशील समझा है। यह भी स्पष्ट है कि भामस के संघ हितवर्द्धन की तुलना में अधिकार रक्षा या हित-रक्षा करने में ज्यादा कारगर है। हितवर्द्धन के क्षेत्र में संघ की प्रभावशीलता को अधिकतम बतलाने वाले 61 प्रतिशत सदस्य हैं जबकि सदस्यों की हितों की रक्षा में संघ की प्रभावशीलता को अधिकतम मानने वाले 92 प्रतिशत से भी अधिक सदस्य है। जाहिर है कि भामस अपने सदस्यों की दृष्टि में सदस्यों के हितवर्द्धन एवं हित रक्षण में कारगर है। लेकिन यह कारगरता हितवर्द्धन से कहीं ज्यादा हित रक्षण के क्षेत्र में है। प्रभावशीलता की मात्रा के सदस्यों की दृष्टि में विभिन्न उद्योगें में भिन्नतायुक्त है। लेकिन सभी उद्योगों के अधिकांश सदस्य इसकी प्रभावशीलता को विभिन्न अंशों में स्वीकारते है।

6.82 सदस्यों के विचारों का प्रतिनिधित्व

आम सदस्यों की राय में उनके संघ प्रबंध के समक्ष सदस्यों के विचारों को प्रस्तुत करने में समक्ष है। इस संदर्भ में सदस्यों के विचारों में प्रभाव की सीमा में तो अन्तर है लेकिन उनकी प्रभावशीलता पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाये जा सकते। इस संदर्भ में 73 प्रतिशत सदस्यों

सारणी - 6.8

संघ की प्रभावशीलता : सदस्यों के हित वर्द्धन में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	14	46.6	16	53.4	0	—
विनिर्माण	131	100	76.3	27	20.6	3	3.1
विद्युत	45	39	86.7	6	13.3	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	25	51.1	13	26.5	11	22.4
वित्तीय संस्थान	74	47	63.5	23	31.1	4	5.4
स्वास्थ्य	5	3	60.0	2	40.0	0	—
योग	334	228	68.2	87	26.0	19	5.8

सारणी- 6.10
संघ की प्रभावशीलता : प्रबंध के समक्ष सदस्यों के विचारों के प्रतिनिधित्व में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	22	73.4	8	26.6	0	—
विनिर्माण	131	89	67.9	34	25.9	8	6.2
विद्युत	45	35	77.8	5	11.1	5	11.1
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	32	65.3	12	24.5	5	10.2
वित्तीय संस्थान	74	62	83.7	10	13.6	2	2.7
स्वास्थ्य	5	4	80.0	1	20.0	0	--
योग	**334**	**244**	**73.0**	**70**	**20.9**	**20**	**5.1**

भामस इसका अपवाद नहीं है।

6.88 राजनीतिक विचारधारा का प्रचार- प्रसार तथा राजनीतिक मतदान

ऐसी आम धारणा है कि भारतीय मजदूर संघ भारतीय जनता पार्टी का श्रम शाखा के रुप में कार्य करता है तथा मजदूरों के बीच भाजपा की विचारधारा का प्रचार करता है तथा चुनाव में इसके उम्मीदवारों की विभिन्न रुपों में मदद करता हैं। सारणी 6.16 और 6.17 के आँकड़ें इस धारणा के साफ प्रतिकूल हैं। इन दोनों ही क्षेत्रों में आम सदस्यों की दृष्टि में भामस की ईकाईयाँ प्रभावकारी है।

6.89 कल्याण कार्य

अपनी वित्तीय स्थिति के सुदृढ़ न होने के कारण भारत में अधिकांश श्रमिक संघ अपने सदस्यों के लिए संघस्तर पर बहुत ही कम कल्याणकारी कार्य करते है। भामस से संबद्ध श्रमिक संघ को इसका अपवाद नहीं होना है। लेकिन आँकड़े एक दूसरी ही तस्वीर उपस्थित कर रहे हैं। करीब 42 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में कल्याणकारिता में संघ की प्रभावशीलता ज्यादा, करीब 55 की दृष्टि में साधारण, करीब 3 प्रतिशत की दृष्टि में कम है। ऐसा लगता है उत्तरदाताओं ने कल्याण कार्य का विस्तृत अर्थ ले लिया है। संघों की गतिविधियों के अवलोकन से तथा उनके नेताओं के साथ हुई वार्ता से भी यह स्पष्ट होता है कि बिहार में भामस की अधिकतर ईकाईयाँ कल्याणकारी सेवायें यथा विद्यालय, अस्पताल, पुस्तकालय, मनोरंजन कक्ष, कला एवं शिल्प- केन्द्र आदि प्रदान करने में समक्ष नहीं हो पायी है।

6.8.10 न्यायालय द्वारा विवादों का समाधान

श्रमिक संघों की शक्तिहीनता ने न्यायालय द्वारा औद्योगिक विवादों के सामाधान की परंपरा को कायम रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। आन्तरिक कलह घटकवाद एवं अन्तर-संगीय प्रतिद्वंद्विता के कारण भारत में श्रम-संघ आन्दोलन की शक्तिक्षीण हुई है। वैसे संघ जो अल्पमत में है तथा जिनकी सीधी कारवाई का असर उद्योग के उत्पादन पर नहीं पड़ता वे विवादों के समाधान के लिए अक्सर न्यायालय की शरण में जाते हैं। अपनी अनेक त्रुटियों के बावजूद इसी

सारणी- 6.11

संघ की प्रभावशीलता : सदस्यों के रोजमर्रे की शिकायतों के समाधान में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	22	73.4	8	26.6	0	—
विनिर्माण	131	102	77.8	27	20.6	2	1.6
विद्युत	45	32	71.1	8	17.8	5	11.1
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	38	77.6	7	14.3	4	8.2
वित्तीय संस्थान	74	59	79.7	14	18.9	1	1.4
स्वास्थ्य	5	4	80.0	1	20.0	0	--
योग	**334**	**257**	**76.9**	**65**	**19.4**	**12**	**3.7**

सारणी- 6.13

संघ की प्रभावशीलता : सदस्यों में आपसी सहयोग की भावना कायम करने में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	18	60.0	12	40.0	0	—
विनिर्माण	131	71	54.2	60	45.8	0	—
विद्युत	45	39	86.7	6	13.3	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	41	83.7	8	16.3	0	—
वित्तीय संस्थान	74	58	78.4	16	21.6	0	—
स्वास्थ्य	5	5	100.0	0	—	0	—
योग	**334**	**232**	**69.4**	**102**	**30.6**	**0**	**--**

सारणी- 6.15

संघ की प्रभावशीलता : सदस्यों में शिक्षा के प्रचार - प्रसार में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	0	—	12	40.0	18	60.0
विनिर्माण	131	9	6.8	79	60.4	43	32.8
विद्युत	45	8	17.8	25	55.6	12	26.7
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	10	24.4	25	51.0	14	28.6
वित्तीय संस्थान	74	8	10.8	38	51.4	28	37.8
स्वास्थ्य	5	0	--	0	--	5	100.0
योग	**334**	**35**	**10.4**	**179**	**53.5**	**120**	**35.1**

सारणी- 6.17

संघ की प्रभावशीलता : राजनीतिक चुनावों में अपने उम्मीदवार के पक्ष में मतदान करने को प्रेरित करने मे।

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	0	—	0	—	30	100.0
विनिर्माण	131	0	—	39	29.7	92	70.3
विद्युत	45	0	—	0	--	45	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	0	—	0	--	49	100.0
वित्तीय संस्थान	74	0	—	0	--	74	100.0
स्वास्थ्य	5	0	—	0	--	5	100.0
योग	**334**	**0**	**--**	**39**	**11.6**	**295**	**88.4**

सारणी- 6.19

संघ की प्रभावशीलता : औद्योगिक विवादों को न्यायालय द्वारा अनुकूल सामाधान में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	0	—	16	53.4	14	49.6
विनिर्माण	131	0	—	57	43.5	74	56.5
विद्युत	45	0	—	10	22.2	35	77.8
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	0	—	22	44.9	27	55.1
वित्तीय संस्थान	74	3	4.1	32	43.2	39	52.7
स्वास्थ्य	5	0	—	2	40.0	3	60.0
योग	**334**	**3**	**0.8**	**139**	**41.6**	**192**	**57.6**

सारणी- 6.21

संघ की प्रभावशीलता : सामूहिक उत्सव तथा रचनात्मक कार्यक्रम आयोजित करने में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	0	—	0	—	30	100.0
विनिर्माण	131	0	—	67	51.2	64	48.8
विद्युत	45	0	—	6	13.3	39	86.7
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	0	—	0	--	49	100.0
वित्तीय संस्थान	74	0	—	0	--	74	100.0
स्वास्थ्य	5	0	—	0	--	5	100.0
योग	**334**	**0**	**--**	**73**	**21.8**	**261**	**78.9**

14 गुण–दोषों का समावेश किया गया तथा सर्वेक्षित सदस्यों से उनके नेताओं के बारे में इस संबंध में इनकी प्रतिक्रिया अंकित की गयी। प्रत्येक विशेषता के आधार पर पृथक्–पृथक् सारणी का निर्माण किया गया है। इस प्रकार सदस्यों की प्रतिक्रियाओं को सारणी 7.2 से 7.15 तक में प्रदर्शित किया गया है।

7.21 मित्रवत–व्यवहार

नेताओं से यह अपेक्षा की जाती है कि इस प्रजातंत्र के युग में अपने अनुयायियों के साथ मित्रवत व्यवहार करेगें। नेताओं और अनुयायियों में मित्रवत व्यवहार का होना संगठन की प्रगति के लिए पोषक तत्व का काम करता है। दूसरे शब्दों में स्वैक्षिक संगठनों का आधार ही भाईचारा एवं मित्रता है। इस आधार के कमजोर होने पर संगठन की बुनियाद ही कमजोर हो जायेगी।

सारणी 7.2 के आँकड़े यह स्पष्ट करते है कि करीब 80 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में सम्पूर्ण नेतृत्व मित्रवत व्यवहार के आभूषण से अलंकृत है। नेतृत्व की यह विशेषता सभी उद्योगों में एक समान नहीं है। स्वास्थ्य सेवा के सदस्यों की दृष्टि में उनके सभी नेता मित्रवत व्यवहार रखने में कुशल हैं। वित्तीय संस्थान, दुकान एवं प्रतिष्ठान, विद्युत तथा विनिर्माण के अधिकतर सदस्यों की राय में उनके संघों के सारे नेता उनके साथ मित्रवत व्यवहार करते हैं। खनन की स्थिति में स्पष्ट भिन्नता है। खनन के करीब 27 प्रतिशत सदस्यों की राय में नेताओं का सम्पूर्ण भाग 40 प्रतिशत की राय में उनका तीन चौथाई भाग तथा 33 प्रतिशत की राय में उनका आधा भाग सदस्यों के साथ मित्रवत व्यवहार करते है। यह सर्वेक्षण खनन श्रमिक नेताओं के लिए यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि वे अपने सदस्यों के साथ और अधिक घुलें–मिलें एवं इस संदर्भ में अपनी छवि सुधारने का प्रयास करें।

सदस्यों के समन्वित दृष्टिकोण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भामस के अधिकांश नेतागण अपने सदस्यों के साथ मित्रवत व्यवहार करते है।

7.22 ईमानदार

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, यह कथन श्रम-संघ के नेताओं के लिए भी पूर्णतः प्रासंगिक है। नेताओं में ईमानदारी का होना नेतृत्व का सफलता के लिए एक आवश्यक शर्त्त है। भामस के 63.4 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि मे सारे नेतागण, 32.6 प्रतिशत के दृष्टि में नेताओं का तीन चौथाई भाग तथा 3.8 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में नेताओं का आधा भाग ईमानदारी के गुण से विभूषित हैं। भामस के नेताओं में ईमानदारी की सीमा अधिक होनी चाहिए क्योंकि यहाँ नैतिक मूल्यों को कायम रखने पर अधिक बल दिया जाता है। आज के युग मे ईमानदारी के पथ पर चलना सरल एवं सहज नहीं है। यही कारण है कि भामस के सदस्यों की दृष्टि में सारे नेताओं में ईमानदारी का गुण एक-सा वर्तमान नहीं है। नेताओं को चाहिए कि वे इस संदर्भ में अपनी छवि सुधारने का प्रयास करें।

7.23 स्वार्थपरता

ऐसा माना जाता है कि नेताओं के लिए सदस्यों का स्वार्थ ही उनका अपना स्वार्थ होना चाहिए। दूसरे शब्दों में अपने निजी स्वार्थ के लिए पद एवं संघ का उपयोग नहीं करना चाहिए। आमतौर से श्रमिक-संघ के नेताओं की यह कह कर आलोचना की जाती है कि वे अपने स्वार्थ की पूर्ति में मशगूल रहते हैं। दुहाई देते हैं मजदूरों की बेबसी, लाचारी, पीड़ा एवं उत्पीड़न की लेकिन काम साधते हैं अपने हित का।

सदस्यों की दृष्टि में इस संदर्भ में भामस-नेतृत्व का चित्र सारणी 7.4 में अंकित है। इस सारणी के विश्लेषण से यह घोषित होता है कि अधिकांश सदस्यों की नजर में उनके नेतागण स्वार्थपरता के शिकार नहीं है। ऐसी मान्यता रखने वाले करीब 79 प्रतिशत सदस्य है। करीब 19 प्रतिशत सदस्यों की राय में नेतृत्व का चौथाई भाग तथा दो प्रतिशत की राय मे नेतृत्व का आधा भाग स्वार्थलोलुप है। खनन श्रमिकों के नेताओं का यहाँ विशेष उल्लेख अनावश्यक है। करीब 87 प्रतिशत सदस्यों के दृष्टिकोण में नेताओं का एक चौथाई भाग निजी स्वार्थ में मशगूल है। इस उद्योग के नेताओं का चाहिए कि वे अपनी छवि सुधारने का प्रयास करें।

सारणी - 7.3

नेतृत्व की विशेषता : ईमानदारी

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	10	33.4	20	66.6	--	--	--	--	--	--
विनिर्माण	131	61	46.5	68	51.9	2	1.6	--	--	--	--
विद्युत	45	41	91.1	2	4.4	2	4.4	--	--	--	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	39	76.6	6	12.2	4	8.2	--	--	--	--
वित्तीय संस्थान	74	56	75.6	13	17.7	5	6.7	--	--	--	--
स्वास्थय	5	5	100.0	--	--	--	--	--	--	--	--
योग	**334**	**212**	**63.4**	**109**	**32.6**	**13**	**3.8**	--	--	--	--

7.24 पक्षपातपूर्ण व्यवहार

मजदूर संघ के नेताओं को आन्तिरिक समस्याओं से भी जूझना पड़ता है। यहाँ भी कुछ सदस्य नेताओं के कृपा-पात्र बन जाते है तथा कुछ के साथ में दूरी कायम रखते हैं। जब कभी उन्हें निर्णय लेने का मौका मिलता है उनके व्यवहार से निष्पक्षता एवं पक्षपातपूर्ण रवैया का आभास मिलता है।

भामस-सदस्यों की दृष्टि में इनका नेतृत्व किस अंश तक निष्पक्ष तथा किस अंश तक पक्षपातपूर्ण है, इसका चित्रण सारणी 7.5 में किया गया है। इस सारणी पर विहंगम दृष्टि डालने से यह स्पष्ट होता है कि इस संदर्भ में नेताओं की छवि बहुत अच्छी नहीं है। हॉलाकि करीब 51 प्रतिशत सदस्य यह मानते हैं कि उनके नेता स्वार्थपूर्ण रवैये के शिकार नहीं है, फिर भी 49 प्रतिशत सदस्य किसी न किसी मात्रा में अपने नेताओं के व्यवहार में पक्षपातपूर्ण रुख दृष्टिगोचर करते है। करीब आधे सदस्यों की राय में भामस के नेताओं में पक्षपात के तत्त्व होने का संकेत किया है। खनन एवं विनिर्माण के अधिकांश सदस्य यह मानते हैं कि उनके संघों के नेताओं के व्यवहार में पक्षपात की बू आती है। इस संदर्भ में स्वास्थ्य संस्थान के नेताओं की छवि उज्जवल है। इनके सदस्य यह मानते हैं कि उनके नेतागण पक्षपातपूर्ण रवैया से दूर है। इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि नेतागण अपने सदस्यों के इस मूल्यांकन से अपने व्यवहार में पक्ष पात की गंध न आने देगें।

7.25 खुशामद पसंद

भामस के करीब 70 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में इनके नेतागण खुशामद पसंद नहीं है। फिर भी करीब 25 प्रतिशत की यह मान्यता है कि इनके एक चौथाई नेता तथा 8 प्रतिशत की दृष्टि में आधे नेतागण तथा एक प्रतिशत की दृष्टि में तीन चौथाई नेतागण खुशामद पसंद करते है। खनन एवं स्वास्थ्य के सभी सदस्यों ने अपने नेताओं में इस विशेषता का लोप पाया है। वित्तीय संस्थान के करीब 70 प्रतिशत सदस्यों ने यह व्यक्त किया है कि उनके उक चौथाई नेता खुशामद पसंद हैं। नेतृत्व में खुशामद पसंदगी का वर्तमान होना एक असाध्य व्याधि का सूचक है। यह व्याधि किसी भी क्षण संघ की एकताबद्धता में दरार पैदा कर सकती है।

सारणी - 7.7

नेतृत्व की विशेषता : संघ संचालन में सक्षम

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	14	46.6	--	--	10	33.4	--	--	6	20.0
विनिर्माण	131	100	76.4	31	23.6	--	--	--	--	--	--
विद्युत	45	32	71.1	8	17.8	5	11.1	--	--	--	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	41	83.7	6	12.2	2	4.1	--	--	--	--
वित्तीय संस्थान	74	72	97.3	2	2.7	--	--	--	--	--	--
स्वास्थय	5	5	100.0	--	--	--	--	--	--	--	--
योग	**334**	**264**	**79.0**	**47**	**14.0**	**17**	**5.0**	**--**	**--**	**6**	**1.0**

भामस के नेताओं में प्रतिनिधित्व का गुण किस हद तक वर्तमान है, इसका मूल्यांकन सारणी 7.10 में किया गया है। करीब 51 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में सम्पूर्ण नेतृत्व, 34 प्रतिशत की दृष्टि में तीन चौथाई नेतृत्व, 19 प्रतिशत की दृष्टि में आधा नेतृत्व तथा एक प्रतिशत की दृष्टि में चौथाई नेतृत्व समस्याओं को प्रबंध तक ले जाने में कोई हिचक महसूस नहीं करते। खनन के 40 प्रतिशत सदस्यों ने सम्पूर्ण नेतृत्व को, 30.4 प्रतिशत तीन चौथाई नेतृत्व को 26.6 प्रतिशत ने आधे नेतृत्व को इस संदर्भ में सक्षम माना है। विनिर्माण के 30.5 प्रतिशत सदस्यों ने सम्पूर्ण नेतृत्व को, 5.4 प्रतिशत ने तीन चौथाई नेतृत्व को, 18.4 प्रतिशत ने आधे नेतृत्व को तथा 0.7 प्रतिशत ने चौथाई नेतृत्व को इस गुण से आभूषित पाया है। दुकान एवं प्रतिष्ठान के 30.6 प्रतिशत सदस्यों ने सम्पूर्ण नेतृत्व को 61.2 प्रतिशत ने तीन चौथाई को तथा 8.2 प्रतिशत ने आधे नेतृत्व को इस कला में कुशल पाया है। वित्तीय संस्थान के सभी सदस्यों ने अपने सम्पूर्ण नेतृत्व में इस कला को वर्त्तमान पाया है। विद्युत के भी करीब 69 प्रतिशत सदस्यों ने यह माना है कि उनके नेताओं में उनकी भावनाओं के प्रतिनिधित्व की पूरी क्षमता है। स्वास्थ्य संस्थान के 60 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में नेतृत्व का तीन चौथाई भाग तथा 40 प्रतिशत की दृष्टि में नेतृत्व का आधा भाग सदस्यों की समस्याओं के प्रतिनिधित्व में सक्षम है।

7.2.10 प्रबंधकों के उचित निर्णय की सराहना

भामस के नेतागण प्रबंधकों के उचित निर्णय एवं कारवाईयों पर उनकी प्रशंसा करते हैं। करीब 77 प्रतिशत सदस्य मानते हैं कि यह गण सम्पूर्ण नेतृत्व में वर्त्तमान है। 20 प्रतिशत सदस्यों को इस गुण की झलक तीन चौथाई नेताओं में तथा 2 प्रतिशत को आधे नेताओं में दिखाई देती है। खनन को छोड़कर सभी उद्योगों के अधिकतर सदस्यों की यह मान्यता है कि उनका सम्पूर्ण नेतृत्व उचित निर्णय लेने पर प्रबंधकों की प्रशंसा करता है। खनन उद्योग के करीब 73 प्रतिशत सदस्य अपनें नेताओं के तीन चौथाई भाग में इस गुण का समावेश पाते है।

सारणी - 7.10

नेतृत्व की विशेषता : सदस्यों की समस्याओं को प्रबन्ध तक पहुँचाने में कोई हिचक नहीं

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	12	40.0	10	33.4	8	26.6	—	—	—	—
विनिर्माण	131	40	30.5	66	50.4	24	18.4	1	0.7	—	—
विद्युत	45	31	68.9	4	8.9	5	11.1	5	11.1	—	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	15	30.6	30	61.2	4	8.2	—	—	—	—
वित्तीय संस्थान	74	74	100.0	—	—	—	—	—	—	—	—
स्वास्थय	5	—	—	3	60.0	2	40.0	—	—	—	—
योग	**334**	**172**	**51.4**	**113**	**33.8**	**43**	**18.8**	**6**	**1.0**	--	--

सारणी - 7.12

नेतृत्व की विशेषता : राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में तल्लीन

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	—	—	10	33.4	12	40.0	4	13.3	4	13.3
विनिर्माण	131	—	—	—	—	—	—	31	23.6	100	76.4
विद्युत	45	—	—	—	—	—	—	5	11.1	40	88.9
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	—	—	—	—	7	14.3	15	30.6	27	55.1
वित्तीय संस्थान	74	—	—	—	—	—	—	—	—	74	100.0
स्वास्थय	5	—	—	—	—	—	—	—	—	5	100.0
योग	**334**	--	--	**10**	**2.9**	**19**	**5.6**	**55**	**16.4**	**250**	**74.0**

सारणी - 7.13

नेतृत्व की विशेषता : जातीयता की भावना से ओत-प्रोत

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	—	—	—	—	—	—	—	—	30	100.0
विनिर्माण	131	—	—	—	—	—	—	20	15.3	111	84.7
विद्युत	45	—	—	—	—	5	11.1	8	17.8	32	71.1
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	—	—	—	—	—	—	15	30.6	34	69.4
वित्तीय संस्थान	74	—	—	—	—	—	—	—	—	74	100.0
स्वास्थय	5	—	—	—	—	—	—	—	—	5	100.0
योग	**334**	--	--	--	--	**5**	**1.4**	**43**	**12.8**	**286**	**85.8**

इस उद्योग के करीब 87 प्रतिशत सदस्यों ने अपने एक चौथाई नेताओं पर यह आरोप लगाया है कि वे साम्प्रदायिकता की भावना को बढ़ाते हैं। साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित करना एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में राष्ट्र विरोधी कार्य है। खनन उद्योग के नेताओं को चाहिए कि अपने मन कर्म एवं वचन द्वारा सदस्यों में व्याप्त इस भावना को समाप्त करें।

7.3 नेतृत्व से संबंधित परिकल्पनायें

इस अध्याय के प्रस्तुत खण्ड में नेतृत्व से सम्बन्धित कुछ परिकल्पनाओं की जाँच सर्वेक्षित सदस्यों के अभिमत एवं प्रतिक्रियाओं के आधार पर की गयी है। परिकल्पनाओं का आधार श्रमसंघों के नेतृत्व के संदर्भ में व्याप्त धारणायें जनश्रुतियाँ तथा विद्वानों के कथन हैं। यहाँ परखनें की कोशिश की गयी है कि ये परिकल्पनायें भारतीय मजदूर संघ की इकाईयों के संदर्भ में सही हैं या गलत । इन्हें सही या गलत करार दिया गया है– उत्तरदाताओं द्वारा प्राप्त मतों – अभिमतों एवं प्रतिक्रियाओं के आधार पर।

7.31 परिकल्पना–1 : <u>सामान्यतः एक नेता संघ में सदस्यों के कल्याण–हेतु आता है।</u>

इस परिकल्पना पर सर्वेक्षित सदस्यों के अभिमत सारणी 7.15 में संकलित है। अधिकांश सदस्यों ने भारतीय मजदूर संघ के संबंध में इस परिकल्पना की पुष्टि की है। करीब 64 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना के पक्ष में तथा 6.8 प्रतिशत ने विपक्ष में अपना मत व्यक्त किया है। करीब 30 प्रतिशत सदस्यों ने इस बिन्दु पर अपना मत व्यक्त नहीं किया। निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि भारतीय मजदूर संघ के नेता श्रमसंघ आंदोलन में सदस्यों के हितों की रक्षा करने की नियत से प्रवेश करते है। सभी उद्योगों के अधिकांश उत्तरदाता इस मत के पोषक हैं।

परिकल्पना–2 : <u>हॉलाकि एक नेता अपने सदस्यों की सेवा करना चाहता है, लेकिन अपनी सुस्ती एवं अकर्मण्यता के कारण वह ऐसा नहीं कर पाता।</u>

इस परिकल्पना पर सदस्यों के मतों का जो सारणी 7.16 में संकलित है, विश्लेषण करने पर यह जाहिर होता है कि अधिकांश

परिकल्पना–6 : <u>हमारे नेता श्रमिक के रुप में कर्तव्य–परायण होने की सलाह देते है।</u>

आज के समय मे कर्तव्य के संबंध में अपने अनुयायियों को सही राह दिखाना भी एक कठिन कार्य होता जा रहा है। ऐसी मान्यता है कि भारतीय मजदूर संघ के नेता अपने संघ के सदस्यों को राष्ट्रहित में जागरुक रखते हैं। इस परिकल्पना को 75 प्रतिशत श्रमिकों ने सही माना है और कहा है कि उनके नेता उन्हें कर्तव्य से संबंध में भी नेक सलाह देते हैं। करीब 11 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को गलत बताया है और 13.9 प्रतिशत ने उत्तर देने में उदासीनता बरती। चूँकि इस परिकल्पना को 75 प्रतिशत से अधिक सदस्यों का समर्थन प्राप्त है, अतः यह कहा जा सकता है कि भामस के नेता अपने श्रमिक सदस्यों को कर्तव्य पराणय होने की राय देते हैं।

परिकल्पना–7 : <u>संघ के नेता हमेशा राजनीति से ग्रसित रहते हैं।</u>

ऐसी आम धारणा है कि श्रम–राजनीति में नेताओं का प्रवेश राजनीति की भावना से होता है। आधुनिक युग में श्रम संघवाद राजनीति का एक विशिष्ट क्षेत्र बन गया है। राष्ट्र की राजनीति के लिए श्रमसंघवाद प्रवेश द्वारा हो गया है । अर्थात् ऐसे नेताओं के लिए अन्तिम लक्ष्य देश की राजनीति में स्थान पाना है, श्रम संघवाद मात्र एक माध्यम है। श्रमसंघवाद को इस नजरिया से देखने वाले नेता श्रमिकों के प्रति प्रतिबंध नहीं होते। श्रमिक कल्याण का उद्देश्य गौण हो जाता है। श्रमसंघवाद का उपयोग भी व्यक्तिगत राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए होने लगता है।

भामस के नेताओं में इस प्रवृति की जानकारी सारणी 7.21 के आँकड़ों के अध्ययन से होती है। भामस के अधिकांश सदस्यों ने इस परिकल्पना से असहमति व्यक्त की है। अतः यह जाहिर होता है कि भामस के नेता इस प्रवृति से बहुत अंशों तक अछुते हैं। हॉलाकि 10 प्रतिशत श्रमिकों ने इस परिकल्पना को अपने नेताओं के संदर्भ में प्रासंगिक बतलाया है।

सारणी 7.24 से इस संदर्भ में भामस की स्थिति स्पष्ट होती है। करीब 75 प्रतिशत सदस्यों की जानकारी में भामस के माँग-पत्रों में सही और न्यायोचित माँगे ही शामिल की जाती हैं। करीब 14 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को अमान्य करार दिया है।

परिकल्पना-11 : नेतागण वैसे मामले नहीं उठाते जिसमें भारी दुराचरण हुआ है।

भारतीय मजदूर संघ का अपने नेताओं को यह निर्देश है कि "व्यक्तिगत विद्वेष या पूर्वाग्रह कभी न रखे।"[2] सर्वेक्षण के द्वारा इस परिकल्पना की सत्यता की जाँच की गई है। कुल सदस्यों में 73.6 प्रतिशत सदस्य मानते हैं कि उनके नेता इस तरह के मामले नहीं उठाते है। जिसमें उनके किसी सदस्य द्वारा भारी दुराचरण किया हो। करीब 13.1 प्रतिशत सदस्य असहमति व्यक्त करते हैं अर्थात् उनकी जानकारी में उनके नेताओं ने वैसे भी मामले उठाए हैं जिनमें किसी सदस्य पर भारी दुराचरण का आरोप है तथा उसे संरक्षण प्रदान करने की चेष्टा की है।

परिकल्पना-12 : वार्त्तालाप में हमारे नेता किसी भी विषय को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर नहीं लड़ते।

किसी भी संगठन के नेता को किसी विषय को प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाना चाहिए। पर आज उद्योगों में अधिकांश मुद्दा या प्रश्न को श्रमिक नेता अपना सम्मान का प्रश्न बना लेते हैं। जिससे औद्योगिक अशांति का वातावरण कायम हो जाता है। सर्वेक्षण के दौरान 72.4 प्रतिशत सदस्यों ने कहा कि उनके नेता वार्त्ता के समय किसी भी विषय को प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाते। करीब 5 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना से असहमति प्रकट की है।

परिकल्पना-13 : नेतागण जन-सभा में गाली-गलौज अथवा आवेशयुक्त भाषा का प्रयोग नहीं करते

श्रमिक संगठनों के नेताओं के भाषण का अर्थ है प्रबन्धकों को गाली देना। पर भामस में गाली-गलौज या गलत भाषा को प्रयोग

---

2. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1984, पृ0 17

परिकल्पना–16 : नेतागण संघ के कोष का व्यक्तिगत लाभ के लिए दुरुपयोग करते है।

भामस एक राष्ट्र भक्त श्रमिकों का संगठन है, जहाँ नैतिकता पर अधिक बल दिया जाता है। इस परिकल्पना को सही बताने वाले मात्र 9.5 प्रतिशत सदस्य है और 73.6 प्रतिशत सदस्य ने इस परिकल्पना को गलत माना है। अधिकांश सदस्यों द्वारा इस परिकल्पना को भामस के संदर्भ में गलत करार दिया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सदस्यों में नेतृत्व के प्रति आस्था है तथा वे उन पर कोष के दुरुपयोग का अभियोग नहीं लगाते।

भामस के नेताओं को यह निर्देश होता है कि वे अपना रहन–सहन सामान्य रखें। सर्वेक्षण में 71.5 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को सही माना है और 11.6 प्रतिशत ने गलत माना हैं इससे इस बात की पुष्टि होती है कि भामस के नेता का रहन–सहन प्रशंसीय है।

परिकल्पना–18 : संघ द्वारा कार्यकर्त्ताओं के समुचित प्रशिक्षण के लिए अभ्यासवर्गो का आयोजन होता रहता हैं

इस परिकल्पना को 64.6 प्रतिशत सदस्यों ने सही, तथा 23.6 प्रतिशत ने गलत माना है तथा 11.8 प्रतिशत ने अपने मतों का प्रयोग नहीं किया।

परिकल्पना–19 : नेतागण सदस्यों के गलत व्यवहार को भसी समर्थन देते है।

आज के राजनीतिक परिवेश में प्रायः यह देखा जाता है कि नेतागण अपने अनुयायियों के गलत व्यवहार का भी समर्थन करते हें कुल सदस्यों में मात्र 3.5 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को सही करार दिया जबकि 76.9 प्रतिशत सदस्यों ने कहा कि भामस के नेताओं पर यह परिकल्पना लागू नहीं होती है। बहुमत के आधार पर यह कहा जायेगा कि भामस के नेता सदस्यों क गलत व्यवहारों को न तो समर्थन प्रदान करते हैं और न संरक्षण।

सारणी - 7.15

परिकल्पना - 1 : सामान्यतः एक नेता संघ में सदस्यों के कल्याण हेतु आता है।

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	—	—	7	23.4
विनिर्माण	131	83	63.3	6	4.5	42	32.2
विद्युत	45	35	77.8	—	—	10	22.2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	27	55.1	10	20.4	12	24.5
वित्तीय संस्थान	74	40	54.2	7	9.4	27	36.4
स्वास्थ्य	5	5	100.0	—	—	—	—
योग	**334**	**213**	**63.7**	**23**	**6.8**	**98**	**29.5**

सारणी - 7.17

परिकल्पना - 3 : संघ के नेता मजदूरों की समस्याओं से पूरी तरह वाकिफ है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.1	7	23.9	--	--
विनिर्माण	131	83	63.3	37	28.2	11	8.5
विद्युत	45	21	46.7	11	24.4	13	28.9
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	18	36.7	22	44.9	9	18.4
वित्तीय संस्थान	74	48	64.8	5	6.7	21	28.5
स्वास्थ्य	5	--	--	5	100.0	--	--
योग	**334**	**193**	**57.7**	**87**	**26.0**	**54**	**16.3**

सारणी - 7.19

परिकल्पना - 5 : नेता संघ के कार्य निष्ठापूर्वक करते है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	--	--	7	23.4
विनिर्माण	131	94	71.7	28	21.3	9	6.0
विद्युत	45	40	88.9	--	--	5	11.1
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	42	85.7	--	--	7	14.3
वित्तीय संस्थान	74	30	40.5	25	33.7	19	25.8
स्वास्थ्य	5	5	100.0	--	--	--	--
योग	**334**	**234**	**70.0**	**53**	**15.8**	**47**	**14.2**

सारणी - 7.21

परिकल्पना - 7 : संघ के नेता हमेशा राजनीति से ग्रसित रहते है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	--	--	23	76.6	7	23.4
विनिर्माण	131	25	19.0	79	60.3	27	20.7
विद्युत	45	5	11.1	32	71.1	8	17.8
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	5	10.2	35	71.4	9	18.4
वित्तीय संस्थान	74	--	--	59	79.7	15	20.3
स्वास्थ्य	5	--	--	5	100.0	--	--
योग	334	35	10.4	233	69.7	66	19.9

सारणी - 7.23

परिकल्पना - 9 : भामस के नेता वार्तालाप या पत्राचार में शिष्ट भाषा का प्रयोग करते है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	--	--	7	23.4
विनिर्माण	131	90	68.7	38	29.0	3	2.3
विद्युत	45	35	77.8	2	4.4	8	17.8
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	37	75.5	5	10.2	7	14.3
वित्तीय संस्थान	74	56	75.6	15	20.2	3	4.2
स्वास्थ्य	5	5	100.0	--	--	--	--
योग	334	246	73.6	60	17.9	28	8.5

सारणी - 7.25

परिकल्पना - 11 : नेतागण वैसे मामले नहीं उठाते जिनमें भारी दुराचरण हुआ हो

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	7	23.4	--	--
विनिर्माण	131	93	70.9	26	19.8	12	9.3
विद्युत	45	37	82.2	--	--	8	17.8
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	32	65.3	5	10.2	12	24.5
वित्तीय संस्थान	74	56	75.6	6	8.1	12	16.3
स्वास्थ्य	5	5	100.0	--	--	--	--
योग	334	246	73.6	44	13.1	44	13.3

सारणी - 7.27

परिकल्पना - 13 : नेतागण जनसभा में गाली-गलौज अथवा आवेशयुक्त भाषा का प्रयोग नहीं करते

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	7	23.4	--	--
विनिर्माण	131	102	77.8	6	4.5	23	17.7
विद्युत	45	40	88.9	--	--	5	11.1
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	29	59.2	8	16.3	12	24.5
वित्तीय संस्थान	74	50	67.5	20	27.0	4	5.6
स्वास्थ्य	5	5	100.0	--	--	--	--
योग	334	249	74.5	41	12.2	44	13.3

सारणी - 7.29

परिकल्पना - 15 : नेतागण हिंसा-तोड़-फोड़. हिंसक घेराव को प्रोत्साहित नहीं करते

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	--	--	7	23.4
विनिर्माण	131	98	74.8	5	3.8	28	21.4
विद्युत	45	45	100.0	--	--	--	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	35	71.4	6	12.2	8	16.4
वित्तीय संस्थान	74	53	71.6	4	5.5	17	22.9
स्वास्थ्य	5	3	60.0	2	40.0	--	--
योग	**334**	**257**	**76.9**	**17**	**5.0**	**60**	**17.1**

सारणी - 7.31

परिकल्पना - 17 : नेताओं के रहन-सहन का ढग ऐसा है जिसकी प्रशंसा हम सब करते है।

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	--	--	7	23.4
विनिर्माण	131	85	64.8	14	10.8	32	24.4
विद्युत	45	32	71.1	4	8.9	9	20.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	36	73.5	8	16.3	5	10.2
वित्तीय संस्थान	74	58	78.3	13	17.5	3	4.2
स्वास्थ्य	5	5	100.0	--	--	--	--
योग	334	239	71.5	39	11.6	56	16.9

सारणी - 7.33

परिकल्पना - 19 : नेतागण सदस्यों के गलत व्यवहार को भी समर्थन देते हैं

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	--	--	23	76.6	7	23.4
विनिर्माण	131	--	--	100	76.3	31	23.7
विद्युत	45	5	11.1	36	80.0	4	8.9
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	4	8.2	39	70.6	6	12.2
वित्तीय संस्थान	74	3	4.0	54	72.9	17	22.1
स्वास्थ्य	5	--	--	5	100.0	--	--
योग	334	12	3.5	257	76.9	65	19.6

सारणी - 7.35

परिकल्पना - 21 : संघ के नेता श्रमिक के रुप में कर्त्तव्य परायण हैं

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	7	23.4	--	--
विनिर्माण	131	107	81.6	4	3.0	20	15.4
विद्युत	45	36	80.0	--	--	9	20.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	43	87.8	--	--	6	12.2
वित्तीय संस्थान	74	42	56.7	15	20.2	17	22.1
स्वास्थ्य	5	5	100.0	--	--	--	--
योग	334	256	76.6	26	7.7	52	15.7

इन कारकों के आधार पर सर्वेक्षित नेताओं का विवरण सारणी 8.1 से 8.3 में दर्शाया गया है तथा उनका वर्णन एवं विश्लेषण नीचे किया गया है।

8.11 आयु

बिहार–भामस के नेतृत्व में सभी आयु वर्ग के नेताओं का समावेश है। 20 वर्ष से कम उम्र का तथा 60 वर्ष से अधिक उम्र का नेता नेतृत्व में सर्वेक्षण के समय नहीं था। भामस–नेतृत्व में वर्चस्व 30 से 50 वर्ष की उम्रवाले नेताओं का है। सम्पुर्ण नेतृत्व में जिनका प्रतिशत 62 है20 सक 30 वर्ष के नेताओं का प्रतिशत 16 तथा 51 से 60 का 22 है। एक आकर्षक विन्दु यह है कि साज्यस्तरीय नेतृत्व में बहुलता अधिक उम्र नेताओं की हैं। राज्यस्तरीय नेतृत्व का 75 प्रतिशत 51 से 60 के आयु–वर्ग में तथा 25 प्रतिशत 30 से 50 के आयु–वर्ग में आता है।

8.12 लिंग

भामस नेतृत्व में महिला नेताओं का सर्वथा अभाव है। सम्पूर्ण नेतृत्व में 98 प्रतिशत पुरूष तथा 2 प्रतिशत महिला हैं। महिला श्रमिकों का नेंतृत्व में स्थान लेने के लिए प्रोंत्साहन प्रदान करना चाहिए।

8.13 निवास स्थान

भामस नेतृत्व में 36 प्रतिशत सदस्य क्रमशः ग्रामीण और अर्द्धशहरी क्षेत्र से तथा 28 प्रतिशत शहरी पृष्ठभूमि से आये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भामस नेतृत्व ने ग्रामीण एवं अर्द्धशहरी क्षेत्रों को शहरी क्षेत्रों की तुलना में ज्यादा आकर्षित किया है। खनन उद्योग तथा स्वास्थ्य संस्थान के सभी नेता तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान के 50 प्रतिशल नेता, मुलतः ग्रामीण क्षेत्र के वासी हैं। विद्युत के सभी नेंता, विनिर्माण के 62.5 प्रतिशत नेता, दुकान एवं प्रतिष्ठान के 50 प्रतिशत नेता अर्द्धशहरी क्षेत्र से आतें हैं। वित्तीय संस्थान में पृष्टभुमि के नेताओं का वर्चस्व है। राज्यस्तरीय भामस में शहरी क्षेत्र के निवासियों की प्रचुरता है।

सारणी - 8.1

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण

उद्योग	नेताओं की सं0	लिंग				वैवाहिक स्थिति			
		पुरुष		स्त्री		विवाहित		अविवाहित	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	8	100.0	0	—	8	100.0	0	—
विनिर्माण	16	15	93.8	1	6.2	14	87.5	2	12.5
विद्युत	4	4	100.0	0	—	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	100.0	0	—	4	100.0	0	—
वित्तीय संस्थान	6	6	100.0	0	—	6	100.0	0	—
स्वास्थ्य	4	4	100.0	0	—	4	100.0	0	—
सामान्य	8	8	100.0	0	—	8	100.0	0	—
योग	**50**	**49**	**98.0**	**1**	**2.0**	**48**	**96.0**	**2**	**4.0**

क्रमशः

8.14 वैवाहिक स्थिति

सर्वेक्षण में सम्मिलित मात्र दों नेताओं कों छोड़कर सारें नेता शादीशुदा हैं। अविवाहित नेता विनिर्माण उद्योग के संघों में कार्यरत हैं।

8.15 धर्म एवं जाति

भामस–नेतृत्व में बहुलता हिन्दू धर्मावलंबियों की है। सर्वेक्षित नेताओं में मात्र एक को छोड़कर सभी हिन्दु हैं।

8.16 शिक्षा स्तर एवं नेतृत्व– प्रशिक्षण

भामस–नेतृत्व शिक्षा–स्तर के दृष्यिकोण से एक सूखद चित्र प्रस्तुत करता है। सम्पुर्ण नेतृत्व का 48 प्रतिशत मैट्रिक, 36 प्रतिशत स्नातक एवं 4 प्रतिशत तकनीकी योग्यता से विभुषित हैं। नेतृतव में कम शिक्षा– प्राप्त सदस्यों का प्रतिशत मात्र 16 है।

भामस नेताओं में से अधिकांश ने नेतृतव का प्रशिक्षण विभिन्न एजेंसियों द्वारा प्राप्त किया है।

8.17 मातृभाषा एवं अन्य भषाएँ

मात्र एक नेता कों छोड़कर सभी नेता की मातृभषा हिन्दी है। भामस– नेतृत्व का करीब 80 प्रतिशत भाग अंग्रेजी समझने की क्षमता रखता है। भमस नेतृत्व में संस्कृत, उर्दु, बांगला तथा अन्य भाषाओं की जानकारी रखने वालें लोग हैं।

8.18 पेशा एवं जीवन– निर्वाह के साधन

भामस के नेताओं का मुख्य पेशा एवं जीवन–निर्वाह का साधन नौकरी पेश श्रमसंघवाद है। करीब 12 प्रतिशत नेताओं ने क्रमशः कृषि एवं व्यापार को जीवन निर्वाह के अन्य साधन के रूप में स्वीकार किया है।

8.2 पारिवारिक विशेषताएँ

सर्वेक्षित नेताओं का पारिवारक विशेष्ताओं के आधार पर वितरण सारणी 8.4 में किया गया है तथा व्याक्ष्या नीचें प्रस्तुत है।

सारणी – 8.2

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण– धर्म, जाति, शिक्षा स्तर

उद्योग	नेताओं की संख्या	जाति					
		ऊँची		पिछड़ी		अनु0	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	2	25.0	6	75.0	0	—
विनिर्माण	16	5	31.3	8	50.0	3	18.7
विद्युत	4	0	—	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	2	50.0	0	—
वित्तीय संस्थान	6	4	66.7	2	33.3	0	—
स्वास्थ्य	4	2	50.0	2	50.0	0	—
सामान्य	8	6	75.0	0	—	2	25.0
योग	**50**	**21**	**42.0**	**24**	**48.0**	**5**	**10.0**

क्रमशः

सारणी - 8.2

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण- धर्म, जाति, शिक्षा स्तर

उद्योग	नेताओ की सं0	शिक्षा स्तर				नेतृत्व प्रशिक्षण			
		स्नात्तकोतर		तकनीकी		हाँ		नहीं	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	0	—	0	—	8	100.0	0	—
विनिर्माण	16	0	—	2	12.5	10	62.5	6	37.5
विद्युत	4	0	—	0	—	0	—	4	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	—	0	—	2	50.0	2	50.0
वित्तीय संस्थान	6	0	—	0	—	2	33.3	4	66.7
स्वास्थय	4	0	—	0	—	4	100.0	0	—
सामान्य	8	0	—	0	—	8	100.0	0	—
योग	**50**	**0**	**--**	**2**	**4.0**	**34**	**68.0**	**16**	**32.0**

सारणी - 8.3

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण- भाषा एवं पेशा

उद्योग	नेताओं की संख्या	मातृभाषा				अन्य भाषाएँ				
		हिन्दी		अन्य		अंग्रेजी	संस्कृत	उर्दू	बंगला	अन्य
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्र0					
खनन	8	8	100.0	0	—	4	2	—	—	—
विनिर्माण	16	15	93.8	1	6.2	13	4	—	4	—
विद्युत	4	4	100.0	0	—	4	—	—	—	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	100.0	0	—	2	—	—	—	—
वित्तीय संस्थान	6	6	100.0	0	—	6	2	—	2	—
स्वास्थ्य	4	4	100.0	0	—	4	—	—	—	2
सामान्य	8	8	100.0	0	—	6	2	2	6	2
योग	50	49	98.0	1	2.0	39	10	2	12	4

क्रमशः

8.31 पोशाक

भामस नेताओं के पहिरावे में पैंट और शर्ट की प्रधानता है। आधें से अधिक सदस्य धोती कुर्त्ता कय पैजामा कुर्त्ता का भी उपयोग करतें हैं ।

8.32 भोजन की प्रकृति तथा मादक द्रव्यों का सेवन

जहाँ तक भाजन की प्रकृति का सवाल है करीब 72 प्रतिशत सदस्य मांसाहारी हैं। करीब 28 प्रतिशत नेताओं ने यह जानकारी दी कि वे विशुद्ध शाकाहारी हैं। जहाँ तक नश सेवन का सवाल है भामस-नेताओं में पान बहुत ही प्रचलित है। करीब 72प्रतिशत सदस्य पान का शौक रखते हैं। 10 सदस्यों में बीड़ी-सिगरेट तथा 18 ने खैनी-सेवन की बातकी स्वीकारोक्ति की है। करीब 7-8 सदस्यों ने यह बतलाया है कि वे दारू-ताड़ का सेवन भी करतें हैं।

8.33 मकान, सवारी एवं संचान-माध्यम

शहर में मकान से संवंधित एक सवाल के जवाब में करीब 46 प्रतिशत नेताओं ने यह बतलाया कि जिस शहर में वे रहते हैं उसमें उनका अपना मकान है। याता-यात के विभिन्न साधनो पर इन नेताओं का स्वामित्व है, करीब 58 प्रतिशत के पास साइकिल और 28 प्रतिशत के पास स्कुटर या मोटर साइकिल है। किसी भी नेता के पास अपनी जीप या कार नहीं है। संचार साधानों में रेडियो का स्थान प्रमुख है। करीब 72 प्रतिशत नेताओं के पास अपना रेडियों सेट है तथा 46 प्रतिशत कें पास अपनी टी0 वी0 है 12 प्रतिशत सदस्यों ने यह सुचना दी है कि उनके घर में टेलीफोन है। फ्रीज करीब 12 प्रतिशत सदस्यों के घरों की शोभा बढ़ा रहा है।

अधिकतर नेता पत्र-पत्रिकाओं में रूचि रखतें हैं। वे दैनिक समाचार पत्र, विभिन्न पत्रिकाएँ ताया श्रमिक पत्रिकाओं के नियमित ग्राहक हैं।

8.34 पाक-व्यवस्था

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं के घरों में खाना बनाने का कार्य मुख्य रूप से परिवार के सदस्य भी करतें हैं । करीब 12 प्रतिशत

सारणी - 8.4

भामस नेताओं के परिवारों की स्थिति -
आकार, लिंग, आर्थिक गतिविधि, शिक्षा

उद्योग	नेताओं की संख्या	लिंग			
		पुरुष		स्त्री	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	26	41.9	36	58.1
विनिर्माण	16	57	47.5	63	52.5
विद्युत	4	14	5.0	14	5.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	12	54.5	10	45.4
वित्तीय संस्थान	6	12	28.2	34	73.1
स्वास्थ्य	4	10	62.2	63	7.5
सामान्य	8	22	35.4	40	64.4
योग 50	153	42.9	203	57.1	

क्रमशः

सारणी - 8.5

भामस नेताओं की जीवन शैली

उद्योग	नेताओं की संख्या	नेताओं की पोशाक					
		साड़ी	पैंट	शर्ट	धोती	कुर्त्ता	पैजामा
खनन	8	0	4	4	4	6	4
विनिर्माण	16	1	12	12	4	8	6
विद्युत	4	0	4	4	2	4	4
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	4	4	2	2	2
वित्तीय संस्थान	6	0	6	6	2	2	2
स्वास्थ्य	4	0	4	4	2	2	2
सामान्य	8	0	8	8	4	4	6
योग	50	1	42	42	20	28	26

क्रमशः

सारणी - 8.5

भामस नेताओं की जीवन शैली

उद्योग	नेताओं की संख्या	नेताओं की नशा								
		सिगरेट	बीड़ी	खैनी	गांजा	भांग	ताड़ी	देशी शराब	विदेशी शराब	पान
खनन	8	4	2	4	2	2	2	2	2	8
विनिर्माण	16	6	7	10	3	4	2	2	1	10
विद्युत	4	0	0	0	0	0	2	0	0	4
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	0	0	0	0	0	0	0	4
वित्तीय संस्थान	6	0	0	0	0	0	2	0	0	4
स्वास्थ्य	4	0	0	2	0	0	0	0	0	2
सामान्य	8	0	0	2	0	0	0	0	0	2
योग	50	10	9	18	5	6	8	4	3	34

क्रमशः

सारणी - 8.5
भामस नेताओं की जीवन शैली

उद्योग	नेताओं की संख्या	ऐशो-आराम की सामाग्री					
		टी0बी0	रेडियो	टेपरिकार्ड	टेलिफोन	फ्रीज	कुकर
खनन	8	4	4	4	2	2	2
विनिर्माण	16	3	8	2	2	0	12
विद्युत	4	2	4	2	0	2	2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	4	2	0	0	2
वित्तीय संस्थान	6	0	6	0	0	2	4
स्वास्थ्य	4	2	2	2	0	0	2
सामान्य	8	6	8	4	2	0	2
योग	**50**	**23**	**36**	**16**	**6**	**6**	**26**

सारणी - 8.6

भामस नेताओं की जीवन शैली- समाचार पत्र, रहन-सहन का स्तर, पाक व्यवस्था

उद्योग	नेताओं की संख्या	खाना बनाने का काम कौन करता है					
		परिवार के लोग		नौकर		श्रमसंघ के लोग	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	8	100.0	0	0	0	0
विनिर्माण	16	15	93.8	0	0	1	6.2
विद्युत	4	2	50.0	2	50.0	0	0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	100.0	0	0	0	0
वित्तीय संस्थान	6	2	33.3	4	66.7	0	0
स्वास्थ्य	4	4	100.0	0	0	0	0
सामान्य	8	6	75.0	0	0	2	25.0
योग	50	41	82.0	6	12.0	3	6.0

सारणी - 8.7

भामस नेताओं की जीवन शैली- उपासना प्रवृत्ति

उद्योग	नेताओं की सं0	देवी-देवता के नाम						
		लक्ष्मी	सरस्वती	शंकर	विष्णु	हनुमान	दुर्गा	विश्वकर्मा
खनन	8	0	0	0	0	0	4	0
विनिर्माण	16	0	0	0	4	0	0	0
विद्युत	4	0	0	0	0	2	0	0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	0	2	0	0	0	0
वित्तीय संस्थान	6	2	0	0	0	0	0	0
स्वास्थ्य	4	0	0	0	0	0	4	0
सामान्य	8	0	0	4	0	0	0	2
योग	**50**	**2**	**0**	**6**	**4**	**2**	**8**	**2**

क्रमशः

8.4 संगठनात्मक विशेषतायें

प्रस्तुत खण्ड में सम्बंधित नेताओं की संगठनात्मक पृष्टभूमि की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है। उन कारकों का पता लगाया गया है। जिनसे प्रभावित होकर वे श्रम संघ आन्दोलन में प्रविष्ठ हुए हैं तथा संघ की गतिविधियों एवं आन्दोलनों को सफलीभुत बनाने के लिए उन्हार्ने किस हद तक विभिन्न औद्योगिक कारवाइयों में भाग लिया है। इसी खण्ड में यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि राजनीतिक दलों से वे किस रूप में जुड़े हुए हैं तथा किस हद तक किसी राजनैतिक दल या स्वैक्षिक संगठ्न की विचारधारा से प्रभावित हैं।

8.41 श्रम संघ आन्दोलन में प्रवंश की प्रेरणा

नेतागण अनेक उत्प्रेरक तत्वों द्वारा प्रभावित हो कर श्रमसंघ आन्दोलन में प्रविष्ठ हुए हैं । इन तत्वों का प्राप्त उत्तरों का विवरण उद्योगों के क्रमानुसार सारणी 8.8 में दिया गया है।

इस सारणी के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक समर्थन "श्रमसंघ आनदोलन कों मजबुत करना" – नामक तत्व को मिला है। करीब 64 प्रतिशत नेताओं ने श्रमसंघ आन्दोलन को मजबूत करने के उद्देश्य से तथा आन्दोलन में व्याप्त व्याधियों और कमजोरियों कों निर्मुल करने के उद्देश्य से भरतीय मजदुर संघ की सदस्यता ग्रहण की है । इस संदर्भ में दूसरा स्थान सेवा भावना का है करीब 52 प्रतिशत नेताओं ने श्रमिकों की सेवा भावना से ओत- प्रोत होकर भामस की छत्रछाया में आने का फैसला किया है। श्रमसंध आन्दोलन कों मजबुत करना तथा सेवाभावना ही महत्वपुर्ण उत्प्रेरक कारक हैं जिन्हार्ने नेताओं को भारतीय मजदूर संध की ओं उन्मुख होने के लिए विवश किया है। सुचना अनूसूचि में अंकित अन्य तत्वों को अल्पमत का समथर्न मिला है। तकरीबन 16 प्रतिशत नेताओं ने अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा में ईजाफा लाने के उद्देश्य से आन्दोलन के दरवाजे को खटखटाया है, 6 प्रतिशत नेताओं ने अपनी आर्थिक स्थिति को समृद्ध करने के लिए श्रमसंघ आन्दोलन का सहारा लिया है, 2 प्रतिशत नेता राजनैतिक भवना के प्रवाह में बहते हुए श्रमसंघ आनदोलन के घाट पर आ पहुँचें । मात्र दो सदस्यों के रमसंघ आनदोंलन में प्रवेश करने के कारण अज्ञात हैं।

8.42 संघ की स्थापना में भूमिका

बिहारभामस के वर्तमान नेतृत्व में अभी भी वैसे सदस्य मौजुद हैं जिन्होने मजदूर संघो की स्थापना में संस्थापक की भूमिका आदा की है। सारणी 8.8 के आँकड़े इस की पुष्टि करतें है कि भामस के नेतृतव में वैसे लोग काफी मात्रा में उपस्थित हैं जिन्होने इसें संघो की स्थापना में स्थापक की अदा की है। सम्पूर्ण नेतृत्व में करीब 62 प्रतिशत नेता अपने कों श्रमसंघो का संस्थापक मानते हैं।

8.43 संघ की गतिविधियों में सहभागिता

श्रमिक संध आधुनिक समाज का अभिन्न अंग हो गया है। संघ एक प्रजातांत्रिक संगठ्न है जो मजदुरें द्वारा निर्मित है, मजदुरें का है तथा मजदूरों के जीवन उत्थान के लिए कटिबद्ध है। आधुनिक उद्योगों (खास कर पूंजीवादी व्यवस्था में) का औद्योगिक सम्बन्ध संधर्ष से परिपूर्ण है। वह एक युद्धक्षेत्र का चित्र प्रस्तुत करता है। पूंजी के सवामियों तथा श्रम के आपूर्तिकर्ताओं में यह संघर्ष अनवरत चलता रहता है। यूँ ता माना जाता है कि सहयोग और संघर्ष औद्योगिक सम्बन्ध के दो महत्वपुर्ण पहलू हैं तथा दोनों ही इसमें अन्तर्निष्ट हैं एवं दोनों ही इसकी सामानय विशेषतायें है, किन्तु अनुीाव के आधर पर हमें यह महसूस करने कों बाध्य किया गया है कि औद्योगिक सम्बन्ध में व्याप्त संघर्ष का तत्व सहयोग के तत्व के उपर हावी हो गया है। श्रम और प्रवन्ध के लक्ष्यों में भिन्नता है तथा वे परस्पर विरोधी हैं । ऐसी स्थ्सिति में जबकि दोनों ही पक्ष अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर अग्रसर हो रहे हों, औद्योगिक सम्वन्ध का क्षेत्र सणभूमि का दृष्य उपस्थित करता है।

श्रमसंघ अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कई तरीकों का इस्तेमाल करता है। वेबस दम्पत्ति ने इन तरीकों को तीन वर्गो में विभाजित किया है - परस्पर बीमा, सामूहिक सौदाकारी तथा कानूनी प्रावधान । भारतीय श्रमसंघों के संदर्भ में पारस्परिक बीमा के तरीकों का इस्तेमाल बहुत ही कम मात्रा में हो रहा है। श्रमसंघों के राजनीतिक दलों से सम्बन्ध होने के कारण श्रम कानून के निर्माण की प्रक्रिया में, परोक्षरूप से ही सही श्रमसंघ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं कार्य स्थल पर सामूहिक सौदाकारी का उपयोग उत्तरोत्तर बढ़ता जा

निलंबन बरखास्तगी, अवनति और स्थानांतरण के रूप में पायी जाती है।

भारतीय मजदूर संघ आन्दोलन संघों के परस्पर प्रतिद्वंद्विता से व्याधिग्रस्त हो गया है। एक ही औद्योगिक इकाई में एकाधिक संघों की स्थिति श्रमिकों को शक्ति हीन तथा प्रबन्धकों को शक्तिशाली बनती है। प्रबन्धकों को इस मौका से लाभ उठाने का समुचित अवसर मिलता हे तथा "फुट डालो और राज करो" की उनकी नीति बहूत ही कारगर साबित होती है एक संध हड़ताल अदा करता है तो दूसरा हड़ताल-तोड़ने की भूमिका अदा करता हैं। हड़ताल भईयों को परेशान करते हैं एवं भाँति-भाँति से अपमानित करते हैं भामस- नेताओं में से 50 प्रतिशत को औद्योगिक कार्रवाइयों के दाम्यान प्रविद्वन्द्वी संघों के रदस्यों एवं नेताओं द्वारा अपमानित होना पड़ता है।

श्रमसंघो के नेताओं को प्रभावहीन करने के लिए तथा उन्हे परेशान करने के लिए प्रवन्धको द्वारा उनपर अदालतों में मूकदमें चलाये जाते हैं । भामस के 46 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार किया हे कि श्रमसंघों के नेतृत्व में रहने तथा उनकी गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़े होने के कारण प्रबंधकों ने विभिन्न न्यायालयों में उन पर मुकदमें दायर किये हैं । यह बतलाना कहाँ अनुचित न होगा कि प्रबंधकों की ये कार्रवाइयाँ अनुचित श्रम प्रचलन में आती हैं जिसका व्यवहार औद्योगिक विवाद अधिनियम के अन्तर्गत वर्जित हैं

अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए श्रम- संघ के नेता आमरण अनशन पर बैठते हैं या भुख हड़ताल का सहारा लेते हैं । भारतीय मजदूर संघ की राष्ट्रीय नीति आमरण अनशन की अनुमति नहीं प्रदान करती है फिर भी क्षेत्रीय और इकाई स्तर पर आमरण अनशन का आयोजनकिया जाता है। करीब 34 प्रतिशत नेताओं ने आमरण अनशन का भूख हड़ताल में शरीक होने की बात स्वीकार की है।

जेल भरो अभियान श्रम संगठ्नों का एक नया तकनीक के रूप में उभर कर सामने आया है। जेलयातना जो पहले भय प्रदान करती थी तथा नागरिकों को गैर कानूनी काम करने से रोकती थी उसे भी श्रम संगठ्नों ने संधर्ष के एक तरीका के रूप में इस्तेमाल करना प्रारम्भ कर दिया है । आम तैर से श्रमसंघों द्वारा आहूत हड़तालों को गैर कानूनी करार दिया जाता है तथा गैर कानूनी हड़ताल में शरीक

सारणी - 8.9

संघ की गतिविधियों में सहभागिता

उद्योग	नेताओं की संख्या	आन्दोलन को सफल बनाने के लिए आपने किन-किन कार्रवाइयों में भाग लिए									
		क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ट
खनन	8	2	0	4	6	8	6	2	0	8	6
विनिर्माण	16	7	8	9	12	15	11	7	9	7	7
विद्युत	4	0	0	4	4	4	2	0	0	0	0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	0	0	4	4	2	2	2	2	2
वित्तीय संस्थान	6	0	0	2	4	6	4	0	0	0	0
स्वास्थ्य	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4	4
सामान्य	8	2	2	8	8	8	8	2	8	6	6
योग	**50**	**15**	**14**	**31**	**42**	**49**	**37**	**17**	**23**	**27**	**25**

सारणी 8.10 का अध्ययन करने से कई तथ्य प्रकाश में आतं है।

(क) भामस नेत्तव का बहुत वता भाग किसी भी राजनैतिक दल से औपचारिक रूप से जुड़ा हुआ नहीं है। भामस नेतृत्च के 74 प्रतिशत सदस्यों ने यह स्वीकार किया है कि वे किसी भी राजनैतिक दल के औपचारिक सदस्य नहीं है।

(ख) प्रजातांत्रिक राष्ट्र में यह अपेक्षित है कि वहाँ की जनता सदस्य न होने के बावजूद किसी न किसी राजनैतिक दल से भावात्मक रूप से जुड़ी हों । भामस के नेताओं ने भी उन दलों का नाम बतलाया है जिनसे उनका भावनात्मक लगाव है। करीब 80 प्रतिशत नेताओं का भवात्मक लगाव भारतीय जनता पार्टी से है । कॉंग्रेस पार्टी से भावात्मक लगाव का रहस्योद्‌घटन 12 प्रतिशत नेताओं ने किया है। 6 प्रतिशत नेताओं ने लोकदल से तथा 2 प्रतिशत ने कम्युनिस्ट आन्दोलन से जुड़ें होने का बात स्वीकारी है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व पर भारतीय जनता पार्टी का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव हैं।

(ग) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व पर है। भामस नेतृत्व के 76 प्रतिशत सदस्यों ने राष्ट्रीय स्वयंसेंवक संघ की विचारधारा से सहमति व्यक्त की है। राष्ट्रीय स्वयंसेंवक संघ कों अगर भारतीय मजदूर संघ का जनक, पथ प्रदर्शक एवं धर्मपिता कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

8.5 औद्योगिक सम्बन्ध की समस्याएँ

अन्य देशों की भाँति भारत के औद्योगिक सम्वन्ध भी अनेक समस्याओं से ग्रसित है तथा एक बहुत ही जटिल स्थिति उत्पन्न हो गयी है। औद्योगिक सम्वन्ध की स्थिति मुख्यतः प्रतयक्ष पक्षों–प्रबन्ध एवं श्रम तथा परोक्ष पक्ष सरकार–की मनोवृति एवं विचारधारा से प्रभावित होती है। औद्योगिक सम्बन्ध सामाजिक व्यवस्था की एक

समाधन की समस्या, सामूहिक वार्ता की समस्या तथा श्रमसंघ और राजनीति की समस्या। इन समस्याओं पर एक प्रश्नावली के माध्यम से भारतीय मजदूर संघ के नेताओं की प्रतिक्रियायें संकलित की गयी हैं, जिनका वर्णन एवं विश्लेषण आगे किया गया है।

8.51 प्रतिद्वन्द्विता एवं घटकवाद की समस्या

भारतीय श्रमिक संघ आन्दोलन अन्तर संघीय प्रतिद्वन्द्विता एवं आनतरिक ध्अकवाछ नामक विकराल एवं अराध्य वयाधियों की चपेट में आ गया हैं जिसके कारण आन्दोलन दुर्वलता एवं रूग्णता का शिकार हो गया है। इन व्याधियों से मुक्ति प्रदान कराने के लिए स्वर्गीय वी0 वी0 गिरी एवं अनय नेताओं ने, "एक उद्योग में एक ही संघ" का नूस्खा प्रस्तुत किया था लेकिन राजनीतिक दलों तथा श्रमिक संघों के रवैया के कारण यह नूस्खा इस रोग के लिदान में कामयाब न हो सका । जहाँ राजनीतिक दलों में मजदूर क्षेत्र को अपनी गिरफ्त में लेने की होड़ चल रही हों, वहाँ इस नूस्खे पर अमल कौन करता है ? प्रत्येक राजनीतिक दल नेअपना राष्ट्रीय मासंघ सथापित किया है जिसके माध्यम से वे राजय, अद्योग तथा अद्योगों की सभी इकाइयों तक पहुँचना चाहते हैं या पहुँच चुके हैं । फलस्वरूप, अधिकांश उद्योंगो तथा उनकी इकाइयों में श्रमसंघों की बहुलता हो गयी हैं । श्रमसंघ की बहुलता अनतर संधीय प्रतिद्वन्द्विता को जन्म देती है और तीव्र करती है श्रमगृह में दरारें पैदा होती हैं और वह एक अव्यवस्थित गृह का चित्र प्रस्तुत करता है। "घर फूटें गवाँर लूटे" की उकित चारितार्थ होती है ।प्रबन्ध इस स्थिति का नाजायज फायदा उठता है तथा श्रमिक वर्ग अपनी हीकरनी से तथा अपने ही द्वारा निर्मित जान में उलझ जाता है। अपनी इस कमजोरी के कारण श्रमिक संघ मजदूरों के हितों की रक्षा करने में अक्ष्म हो जाता है।

श्रमसंघों की बहुलता एवं अन्तरसंघीय प्रतद्वंन्द्विता की उपस्थिति आनदोलन, औद्योगिक सम्बन्ध में मधूरता, तथा श्रमिकोंके हितवर्घ्न एवं हितरक्षण कें लिए अवांछनीय है । राष्ट्र के राजनीतिक परिविश के कारण इस अवांछित स्थिति से लिपटने कि लिए शोरगुल तो मचाया जाता है लेकिन इसकी अनूपस्थिति के लिए कोई भी राजनीतिक दल त्याग और बलिदान करने के लिए तत्पर नहीं होता । भारतीय मजदूर संघ के नेता भी श्रमसंघ की वहूलता तथा इससें उत्पन्न प्रतिद्वंद्विता को

गये तथा वे भी माफिया गिरोह की वृत्ति अपनाने लगे। भामस के स्थापित नेतृत्व ने इसका विराध किया तथा माफिया मनोवृत्ति कों कुचलने का प्रयास किया। फलस्वरूप, माफिया मनोवृत्ति से ग्रसित सदस्यों ने स्थापिता नेत्त्व की चूनौती दी तथा खुद नेतृत्व को अपनी गिरफ्त में लेने का प्रयास किया।

फलस्वरूप कोयलांचल के भामस संघ में घटकवाद की स्थिति उत्पन्न हुई। घटकवाद के कारण संघों की छवि धूमिल होती है। सदस्यों में तिकर्षण उत्पन्न होता है तथा आय श्रमिकों की दृष्अि में संध बदनाम होता है। घटकवाद कों समाप्त करने के लिए भामस के नेताओं ने कई सुझाव प्रस्तुत कियें हैं।

कुछ सदस्यों ने इस संदर्भ यह सूझाव दिया है कि घटकवाद को समाप्त करने या कम करने के लिए आवश्यक है कि संगठ्न में पनपे रहें व्यक्तिवाद और जातिवाद की प्रतिवद्धता संगठ्न के प्रति होनाचाहिए न कि किसी नेता- विशेष के प्रति। नेतृत्व के नेताओं के चयन में उनकी संगठ्न के प्रति होना चाहिए न कि किसी नेता- विशेष के प्रति । नेतृत्व के नेताओं के चयन में अनकी संगठ्न के प्रति कर्मठ्ता, संगठ्न की गतिविधियों मं सहभागिता आदि गुणों को आधार बनाना चाहिए तथा जातीयता, क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता तथा राजनीतिक सम्बन्ध, सहयोग की भावना, समय पर उचित निर्णय, मजदूर- एकता, सेवा- भवना आदि तत्वां को पर्याप्त मान्यता देने का सूझाव रखा हैं।

8.52 वाह्य नेतृत्व की समस्या

श्रमसंघों के नतृत्व में वाह्य वयक्तियों की आवश्यकता एक विवदास्पद समस्या का रूप ग्रहण कर चूकी हैं । अनेक गोष्टियों में इस प्रश्न पर विचार किया गया हैं विभिन्न कमीटियों एवं कमीशनों ने भी अपनी सिफारिशें दी हैं। ट्रेड यूनियन एक्ट, 1926 ने भी श्रमसंघों के नेतृत्व में बाहरी व्यक्तियों का प्रतिशत निर्धारित कर दिया है। इस सब के बावजूद समस्याज्यों की त्यों बनी हूई है। श्रमसंघो के नेतृत्व मे वाह्य व्यक्तियों की वाछनीयता पर दो प्रकार की विचारधरायें प्रचलित हैं। एक विचारधरा के अनुसार श्रमसंघों के नेतृत्व में बाहरी वयक्तियों को आने से नहीं रोकना चाहिए। इनका तर्क है कि बाहरी

श्रमसंघों के उद्‌भव एवं विकास में बाहरी व्यक्तियों कि ने अतुलनीय योगदान किया हैं। आज भी वाह्य व्यकितियों की मदद से श्रमिक संघ फल–फुल रहे है। एक तंक यह भी दिया जाता है कि बाहरी व्यकियों की अपस्थिति से श्रमसंगठनों का दृष्टिकोंण विस्तृत होता है तथा राष्ट्रहित को पर्याप्त बल मिलता है। श्रमसंघ एक स्वैक्षिक संगठन है अतः उसे यह अधिकार होना चाहिए कि अपनी सदस्यता के क्षेत्र में आने का अवसर जिसे चाहे प्रदान करें।

इस संदर्भ में दूसरी विचारधारा श्रम संगठनों में वाह्य व्यक्ति के समावेश के अवांछनीय मानती है। इसके अनूसार वाह्य व्यक्तियों की उपस्थिति श्रमसंघ के प्रशासन में तानाशही प्रवृति कों जन्म देती है तथा श्रमियों को दोहरे शोषण का शिकार होना पड़ता है। वाह्य व्यक्ति की उपस्थिति से श्रमसंघों का राजनीतिकीकरण होजाता है तथा उनका दुरूपयोग राजनीतिक कारणों के लिए होने लगता है। कुछ ऐसे भी तर्क हैं जिनके अनुसार कह कहा जाता है कि वाह्य व्यक्तियों को न तो उद्योग की समस्याओं की जानकारी होती है और न उनमें कार्यरत श्रमिकों की समस्याओं की। बाह्य व्यक्तियों की उपस्थिति के कारण श्रमिकों के भीतर व्याप्त नेतृत्व की क्षमता प्रस्फुठित नहीं हो पाती जब तक नेतृत्व से वाअ्य व्यक्तियों का लोप नहीं हो जाता श्रमिकों के अन्दर से नेतृत्व का उभरना नामुमकिन है।

नेतृत्व में वाह्य व्यक्तियों की अपस्थिति की समस्या के अनेक पहलू हैं। पहला प्रश्न तोयही है कि बाहरी व्यक्ति है कौन ? क्या बाहरी व्यक्ति की उपस्थिति से श्रमिक संघ आन्दोलन कमजोर हो रहा है ? श्रम संघ आन्दोलन में बाहरी व्यकितियों के बने रहने के कारण क्या हैं? क्या आन्दोलन के नेतृत्व में नवयुवकों की कमी है ? इन सारे प्रश्नों पर सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं से उत्तर प्रप्त किये गयें हैं तथा उन्हें सारणी का रूप दिया गया है।

(क) श्रमसंघों के नतृत्व में बाहरी वयक्ति कौन हैं

श्रम अधिनियम कानून के अनूसार श्रमसंघों के नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति वह है जो संघ की सीमा में आने वालें औद्योगिक इकाइयों में श्रमिक के रूप में कार्यरत नहीं है। इस विधान के अन्तर्गत वे सारे लोंग बाहरी व्यक्ति हैं जो कभी श्रमिक नहीं रहे है तथा जो संघ की सीमा में आनेवाले इकाइयों में अभी काम

से एक एलर्जी है। अधिकांश नता श्रमसंघो के नेतृत्व में वाह्य व्यक्तियों की उपस्थिति को बर्दास्त करने की स्थिति में नहीं हैं। इस संदर्भ में यह बतला देना आवश्यह जान पड़ता है कि अधिकांश नेता श्रमसंघों को अपनी इकाइयों में बाहरी व्यक्ति के प्रवेश से एक एलर्जी है। अधिकांश नेता श्रमसंघों के नेतृत्वमें वाह्य व्यक्तियों की अपस्थिति को बर्दास्त करने की स्थिति में नहीं हैं। इस संदर्भ में यह बतना देना आवश्यक जान पड़ता है कि अधिकांश नेताओं की राय भारतीय मजदुरसंघ की घोषित नीति के विरूद्ध है। भारतीय मजदूर संघ की घोषित नीति के अनूसार, "श्रमिकों कों यूनियन बनाने और अपने नेता कों चूनने की आजादी होनी चाहिए। पदाधिकारी बनने के लिए बाहरी व्यक्ति को अनूमति होनी चाहिए और उनकी अधिकतम संख्या का प्रावधन किया जाना चाहिए।"[2]

इस सर्वेक्षण के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि इस संदर्भ में भामस की घेषित नीति को मात्र30 प्रतिशत नेताओं का समर्थन प्राप्त है। ऐसी स्थिति में शोधकर्त्ता यह सुझाव देना चाहेगा कि भारतीय मजदूर संघ या तो अपनी घोषित नीति मे परिर्वतन करे या अपने इकाई स्तर में नेताओं को अपनी नीति समर्थन के लिए राजी करें।

(ग) श्रमसंघों पर वाह्य नेतृत्व का प्रभाव

श्रमसंघों पर वाह्य नेतृत्व का प्रभाव अच्छा है या बुरा इस पर नेताओं की अभियूक्ति की सारणि 8.13 में ही स्थान दिया गया हैं। करीब 75 प्रतिशत नेताओं ने ऐसा मत व्यक्त किया है कि नेतृत्व में वाह्य व्यक्ति की उपस्थिति से श्रमिक संघ कमजोर एवं दूर्वल हो जाता है।

(घ) नेतृत्व मं नवयुवकों की कमी

इस बिन्दु पर भामस के नेतागण समद्विभजित है। आधे नेताओं के मत से श्रमसंघो में नवयूवकों की कमी है तथा आधे के अनुसार ऐसी कोई कमी नहीं । मतो के समद्विभजन के कारण निष्कर्ष निकालना असंभव सा है।

---

2. भारतीय मजदूर संघ, श्रमनीति, खण्ड-3, अध्याय-17 पृ0 25,26

सारणी - 8.13

औद्योगिक संबंध की समस्याएँ : वाह्य नेतृत्व

उद्योग	नेताओं की संख्या	नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति				बाहरी व्यक्ति कमजोर बनाते हैं			
		हाँ		नहीं		हाँ		नहीं	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	4	50.0	4	50.0	6	75.0	2	25.0
विनिर्माण	16	5	31.3	11	68.7	8	50.0	8	50.0
विद्युत	4	0	—	4	100.0	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	100.0	0	—	2	50.0	2	50.0
वित्तीय संस्थान	6	0	—	6	100.0	6	100.0	0	—
स्वास्थय	4	2	50.0	2	50.0	4	100.0	0	—
सामान्य	8	0	—	8	100.0	8	100.0	0	—
योग	50	15	30.0	35	70.0	38	76.0	12	24.0

क्रमशः

सारणी - 8.14
शिल्प संघों की आवश्यकता

उद्योग	नेताओं की संख्या	शिल्प संघों का बनना मजदूर आन्दोलन के लिए घातक है।			
		हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
खनन	8	6	75.0	2	25.0
विनिर्माण	16	10	62.5	6	37.5
विद्युत	4	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	2	50.0
वित्तीय संस्थान	6	0	—	6	100.0
स्वास्थ्य	4	2	50.0	2	50.0
सामान्य	8	2	25.0	6	75.0
योग	**50**	**26**	**52.0**	**24**	**48.0**

करता है तथा औद्योगिक संघो का हिमायती है। फिर इकाई स्तर के नेताओं द्वारा शिल्प संघो का समर्थन करना नेतृत्व प्रशिक्षण की आवश्यक्ता की ओर संकेत करता है।

8.54 औद्योगिक विवाद के समाधान की समस्या

औद्योगिक विवाद के समाधन के कई तरीके कालान्तर में विकसित हुए हैं। सामुहिक सौदेबाजी विवादों के समाधान का एक प्रजातांत्रिक तरीका है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा दोनों ही पक्षों के प्रतिनिधि आपस में बातचित करते हैं तथा अपनी समस्याओं का सर्वमान्य हल ढूढते हैं। सामुहिक सौदेबाजी व्यावहारिक दृष्टिकोण से दो प्रकार की होती है। एक वह, जिसमें दोनों ही पक्षों को सीधी कार्रवाई में जाने की छूट होती है और दूसरी वह जिसमें सीधी कार्रवाईयों पी प्रतिबन्ध होता है।

विवादो के समाधान का एक दूसरा तरीका पंच- निर्णय है। कह तरीका सामुहिक सौदेबाजी से पूर्णतः जुड़ा हुआ है एवं उसी की एक उपज है ऐसा कहने का आधर यह है कि पंच की नियुक्ति तथा अनके द्वारा विवादों का समाधान दोनो ही पक्षों की सहमति पर निभर करता है।

न्यायालय विवादों के समाधान का एक ऐसा तरीका है जिसमें निर्णय का अधिकार सरकार द्वारा नियुक्त न्यायधीशों को होता है। दोंनों ही पक्षों को तर्क प्रस्तुत करने के अधिकार होंते हैं लिकिन निर्णय में उनकी कोंई दखल नही होती । उन तरीकों पर भामस के नेताओं के विचार संग्रहित किये गयें हैं जों सरणी8.15 में अंकित हैं। भामस के नेताओं के दृष्टिकोण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तरीका सामूहिक सौरेबाजी है लेकिन वे मानते हैं कि श्रमिकों को हड़ताल का अधिकार भी होना चाहिए। इस तरीका कों 52 प्रतिशत नपेताओं का समर्थन प्राप्त हुआ है।

इस संदर्भ में दूसरा स्थान पंच- निर्णय का है जिसे 36 प्रतिशत नेताओं ने पसंद किया है तथा तीसरा स्थान न्यायालय का है जिसे मात्र 12 प्रतिशत नेताओं का सहमति मिली है।

भामस-नेताओं ने बिना हड़ताड़ के अधिकार की सामूहिक सौदेबाजी को निरर्थक बतलाया है। वस्तुतः हड़ताल का अधिकार

सामूहिक सौदेबाजी के लिए प्राण वायु है इस प्राण के अभाव में सामुहिक दम तोंड़ देगी।

8.55 सामूहिक वार्ता की समस्या

सामुहिक सौदाबाजी विवादों के प्रजातांत्रिक निदानका एक मात्र तरीका है। भामस की धोषित नीति के अनूसार भी, "औद्योगिक सम्बन्धों के क्षेत्र में यथार्थ में सामूहिक सौदेबाजी का कोई विकल्प नहीं है। द्विपक्षीय इकरार का स्थान कोई तीसरे पक्ष द्वारा किया गया समझौता नहीं ले सकता है।"[3] इस सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं के बहुमत भी सामूहिक सौदेबाजी को औद्योगिक विवाद के समाधान कार्वोतम तरीका माना है।

सौदेबाजी को जितना समर्थन मिला है असकी प्रक्रिया उतनी सरल नहीं। भारत जैसे देशों में जहाँ श्रमसंघ आन्दोलन अन्तर संघय प्रतिद्वंद्विराता घटकवाद एवं बहुलवाद का शिकाद है। सौदेबाजी की प्रकिया जटिल होती है। सामूहिक सौदेबाजी के लिए आवश्यक है कि सौदा एजेन्ट का चुनाव हो तथा सौदा एजेन्ट के रूप में श्रमिक संघों को मान्यता का प्रदान की जाय। अगर एक इकाई मं एक ही संघ होता तों मान्यता का प्रश्न अत्यन्त सरल होता पर अनेक संघों की उपस्थिति से यह जटिल हो गया है। सौदेबाजी के लिए लिस सेघ को मान्यता प्रदान की जाय और किस संघ के कितने अनूयायी हैं, इसका पता कैसे लगाया जाय। पता लगाने का काम किस एर्जेसी का सौंपा जाय। इन प्रशनें के उत्तर भमस- नेताओं लिए गये हैं तथा उन्हे सारणी 8.16 में दर्शाया गया है, प्राप्त उत्तरों का विशलेषण नीचे किया गया है।

---

3. भारतीय मजदूर संघ, श्रमनीति, अध्याय - 6 पृ0 17

(क) शील सौदा एजेन्ट का निर्धारण

सामूहिक सौदेबाजी की एक आवश्यक शर्त है कि इस

सारणी – 8.16
सामूहिक वार्ता

उद्योग	नेताओं की संख्या	सौदा एजेंट किसे बनाना चाहिए			तो सत्यापन कैसे किया जाय			किस एजेंसी से		
		क	ख	ग	क	ख	ग	क	ख	ग
खनन	8	4	0	4	2	0	4	0	0	6
विनिर्माण	16	8	1	7	4	8	4	1	7	8
विद्युत	4	0	4	0	4	0	0	0	0	4
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	2	0	0	4	0	0	0	4
वित्तीय संस्थान	6	2	2	2	2	2	2	0	0	6
स्वास्थ्य	4	0	4	0	2	2	0	0	2	2
सामान्य	8	2	4	2	8	0	0	0	0	8
योग	**50**	**18**	**17**	**15**	**22**	**16**	**10**	**1**	**9**	**38**

दिया जायेगाा तो जाहिर है कि इस संदर्भ में जो कानून बनगा उसे यह भी बताया पड़गा किी किस संघ को मान्यता प्रदान की जाय। आम राय निश्चित रूप से यह है कि बहूमत संघ को भी मान्यता मिलनी चाकिए तथाउसे ही सौदा का अधिकार मिलना चाहिए । भारतीय मजदूर संघ ने भी अपने राष्ट्रीय अधिकार पत्र में मान्यता से सम्वन्धित एक कसौटी को शामिल किया है। यह कशौटी निम्नांकित है-

1. सत्बन्धित संस्थान के कम से कम 55 प्रतिशत श्रमिकों में यूनियन की सदस्यता व्याप्त होनी चाहिए।
2. जहॉ कोंई एक यूनियन उक्त परिस्थिति को पूर्ण न करती हो वहॉ सभी यूनियनें, जो 30 प्रतिशत या उससे अधिक श्रमिकों की सदस्यता रखती हो उन्हें मान्यता देनी चाहिए।
3. केवल उन्हीं व्यक्तियों की सदस्यता गिनी जानी चाहिये, जो गिनते समय से ठीक पूर्व लगातार 6 महीनें का चन्दा दे चूके हों।[5]

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं के मतों में स्पष्ट भिन्नता हैं। जहाँ 36 प्रतिशत नेताओं ने बहूमत संघ को सौदा एजेंट नियुक्त करना पसंद किया है वहॉ 32 प्रतिशत कई संघों को एक साथ तथा 30 प्रतिशत सभी संघो के सम्मिलित रूप से सौदा एजेंट बनने की अनूशंसा करते हैं। नेताओं के मतों में भिननता के कई कारण हो सकते हैं, एक कारण तों यह है कि इस संदर्भ में सभी औद्योगिक इकाईयों की स्थिती एक समान नहीं है । कूछ इकाइयों में वैसे संघ हैं जिन्हें श्रमिकों के बहूमत का समर्थन प्राप्त है लेकिन बहुत सारी इकाइयों में बहूमत संघ की अनूपस्थिति है। दूसरा कारण यह हो सकता है कि वैसे नेता, पिनका संघ बहूमत में है, वहूमत संघ को ही सौदा एजेंट के रूप में सीापित करना चाहते हैं अल्पमत संघों को भी मान्यता प्रदान की जाय तथा उन्हें भी सौदा एजेंट के रूप में काम

---

5. भारतीय मजदूर संघ, भारत के श्रमिकों की मांगों का राष्ट्रीय अधिकार-पत्र,पृ090

करने का मौका मिले। नेताओं के मतों में व्याप्त भिन्नता की व्याखया

भामस में नेताओं की अभियूक्ति के परिप्रेक्ष्यमें यह कहा जा सकता है कि इस संदर्भ में सरकारी तंत्र अपनी विश्वसनीयता खें चुका है। अधिकांश सदस्यों ने इस संर्भ में तटस्थ एजेन्सी का नाम लिया है। तटस्थ एजेन्सी के समर्थन में 76 प्रतिशत, सरकारी तंत्र के समर्थन मं 18 प्रतिशत तथा प्रबन्ध के समर्थन में मात्र 2 प्रतिशत नेताओं ने मत व्यक्त किया । दस संदर्भ में तटस्थ एर्जेन्सी कौन-सी होगी इसके पदाधिकारी कौन होंगें, उनकी नियुक्ति कौन करेगा, उनके कार्य क्या-क्या होंगें आदि प्रशन महत्वपूर्ण तो हैं किन्तु इन नेताओं के विचार नही लिए गयें हैं।

8.56 भारतीय मजदूर संघ और राजनीतिक दल

स्वतंत्रता - प्राप्ति के बाद विभिन्न राजनीतिक दलों ने श्रम - क्षेत्र में अपनी पैठ मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर श्रमिक महासंघों की स्थापना की। भारत जैसे प्रजातांत्रिक राष्ट्र में तथा यहाँ के संविधन के परिप्रेक्ष्य में ऐसा करना स्वाभविक भी था और वैधनिक रूप से संभव भी । श्रम क्षेत्र में बिना प्रभाव जमाये किसी भी राजनीतिक दल के लिए लोकप्रियता प्राप्त करना संभव नहीं था । राजनीतिक दल के लिए सभी तबकों का महत्व है। राजनीतिक दलों की इस कार्रवाई से श्रमगृह में विभाजन हूआ है तथा श्रमिक वर्ग और उनके संघ राजनीतिक खेमों मे बँट गये हैं । राजनीतिक दलों के साथ श्रमिक संघो के जुड़ जाने से अनेक परिणाम निकले हैं। इससे श्रमिक संघों तथा श्रमिक संघ आन्दोलन को लाभ भी प्राप्त हो रहे हैं तथा हानियूं भी उठानी पड़ रही है । इन लाभ और हानियों को संतूलित कर श्रमसंघों के राजनीतिक दलों के साथ सम्बन्ध के पक्ष या विपक्ष में फैसला करना कठिन हैं। कूछ विचारक तथा श्रमसंघों के प्रवक्ता के अनूसार श्रमसंघों को राजनीति तथा राजनीतिक दल से संबंध रखना आवश्यक एवं लाभप्रदा है। एक दूसरे दृष्टिकोंण के अनूसार

श्रमसंघो कों राजनीति दल से खास कर दलगता राजनीति से पृथक रहना चाहिए । इसके अनूसार श्रमसंघो के दलगत राजनीति में पड़ने से हानियाँ उठानी पड़ती है। भरतीय मजदूर संघ के आधत्मिक गुरू दततोपंत ठेंगड़ी के अनुसार आदर्श स्थिति में आशा है कि जन-

(ग) दलगत सम्बन्ध के परिणीम

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं में से मात्र दो ने यह स्वीकारा है कि किसी राजनैतिक दल से सेबद्ध रहने से श्रमसंघों कों लाभ होते हैं । ये लाभ श्रमिकों कों कई रूपों में प्राप्त होते हैं । श्रमिकों की आवाज संसद एवं विधान मंडलों में आसानी से उठाई जा सकती हैं। समान राजनीतिक विचारधारा वालें श्रमिकों को गोलबन्द करना आसान होता श्रमसंघों के दृष्टिकोण में व्यापकता आती है तथा श्रमहित के ऊपर राष्ट्रहित हावी हो सकता है।

उपर्यूक्त विचार से भामस के अधिकार नेता सहमत नही हैं उनके अनूसार श्रमसंघो को दलगत राजनीति के दलदल में भूल कर भी नहीं फसना चाहिए। क्योकि इसके परिणाम मजदूर संघों तथा श्रमिकों के लिए आत्मघाती होते हैं। इस विचारधरा के नेताओं ने अनेक खामियों की ओर ध्यान दिलाया हैं। उनके अनूसार दलगत राजनीति में फँसने से मजदूर संघों में भ्रष्ठचार का वातावरण छा जाता है, श्रमिक हित पर राजनैतिक हित हावी हो जाता हैं। राजनीतिक कारणों से उद्योगों में संघर्ष का वातावरण कायम किया जाता है जिससे मजदूरों कों क्षति उठानी पड़ती है। अगर राजनीतिक दल सत्ता में आ जाता है तों उसेसे संवद्धता प्राप्त संगठनों का जुझारूपन समाप्त होने लगता है। श्रमसंघों कें नेतृत्व में अगर राजनीतिक नेता स्थापित हो जाते है तो श्रमिकों लिए नेतृत्व में आन का अवसर समापत हो जाता है। रापनैतिक नेताओं के कारण श्रमसंघ अपना प्रजातांत्रिक चरित्र खो बैठता है। रापनीतिक कारणें से श्रमसंघों मं घटकवाद का जन्म होता है तथा उन्हे फूट का शिकार होना पड़ता हैं।

उपयुक्त विवेचना के आधार पर यह साबित होता है कि इस संदर्भ में भमस के आध्यात्मिक गुरू की कल्पना साकार हो रही हैं। या यों कहें कि उनकी कल्पना से इकाई स्तर के नेतागण भी पूर्णतः वाकिफ है। बिहार -भामस के नेताओं के राजनीतिक सम्बन्धों पर दृष्टि डालने से तस्वीर का दूसरा रूप भी उजागर होता है। भारतीय जनतापार्टी के बहूत सारे नेता श्रमसंघों के नेतृत्व पर पूर्णतः हावी हैं। एसा भी प्रतीत होता है कि वे अपनी राजनीत पर पकड़ के लिए श्रमसंघों में अपने स्थार का उपयोंग करते हैं। इस संदर्भ में भारतीय

अरूण रंजन की उपर्युक्त टिप्पणी से यह स्पष्ट होता है कि बिहार भमस तथा भारतीय जनता पार्टी में नेतृत्व के प्रश्न को लेकर एक कश्मकश चल रही है। ऐसी स्थिति में यह मनना कि भारतीय मजदूर संघ दलगत राजनीति में विश्वास नहीं रखता तथा उसमें अभी तक कदम नहीं रखर, बेतुका-सा प्रतीत होता है। भजपा तथा भमस के सम्बन्ध स्पष्ट नजर आतें हैं तथा इस सम्बन्ध में व्याप्त सहयोग और संघर्ष के तत्व कभी कभी अखबारों की सूर्खियों में भी स्थान पा नेते हैं।

8.6 भामस के आदर्श वाक्य एवं नारों से सहमति

भारतीय मजदूर संघ ने अनेक आदर्श वाक्यों एवं नारों की घेष्णा की गयी है। के आदर्श वाक्य एवं नारे भामस के चरित्र को स्पष्ट करते हैं तथा भामस की विशेषताओं का जाहिर करते हैं। भामस अपने को भारतहय परम्पराओं का समर्थक एवं पाक साबित करना चाहता है। ऐसा करने के क्रम में उसने साम्यवादी मजदु संघों से अलग रखने की कोशिश की है तथा अपनी पृथक पहचान कायम करने की चेष्टा की है। इसका घोषित नारा "मजदूरो दूनिया को एक करों" "साम्यवादी नारा दुनिया के मजदूरों एक हो" का जवाब है। फिर श्रम दिवस के रूप में भारतीय मजदूर संघ "मई दिवस" को मान्यता नहीं प्रदान करता । उसके लिए विश्वकर्मा जयंती महत्वपूर्ण है। मई दिवस साम्यवादी का श्रम दिवस है फलस्वरूप भरतीय मजदूर संघ ने विश्वकर्मा जयंती को असके विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है। भारतीय मजदूर संध पूंजीवादी व्यवस्था में भी वर्ग-संघर्ष का हिमायती न होकर वर्ग- सहयोग का हिमायती हैं जाहिर है कि इसका विश्वास पूंजीवादी व्यवस्था मतें परिवर्तन के लिए क्रान्तिकारी कदम उठाने के लिए नहीं है, मौजूदा व्यवस्थसा में कतिपय परिवर्तनों के द्वारा सूधार लाने का इनका विचान - साम्य है। श्रमिक संघों का मुख्य उद्देश्य पूंजीवादी व्यवस्थ्सा कों उखाड़ फेंकना नहीं, उसी व्यवस्था में रह कर श्रमिकों के जहवन में सूधार लाना है। जिस प्रकार अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेवर श्रमिक संघ आन्दोलन में सरम्यवादी विचारधरा का घेर विरोधी है ठीक उसी प्रकार भामस भी सरम्यवादी विचारधरा के प्रति कठोर रूख अपनाता है तथा उसे अपदस्त करने की हर संभव कोशिश करता है। सूधरवादी दृष्टिकोण के नाते भामस वैज्ञानिक समाजवाद में

सारणी - 8.17
आदर्श वाक्य और विकल्प

उद्योग	नेताओं की संख्या	विकल्प-1				विकल्प-2			
		वर्ग-संघर्ष		वर्ग सहयोग		व्यवस्था परिवर्तन		तुरंत लाभ	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	0	—	8	100.0	0	—	8	100.0
विनिर्माण	16	1	6.2	15	93.8	16	100.0	0	—
विद्युत	4	0	—	4	100.0	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	—	4	100.0	4	100.0	0	—
वित्तीय संस्थान	6	0	—	6	100.0	4	75.0	2	25.0
स्वास्थ्य	4	0	—	4	100.0	2	50.0	2	50.0
सामान्य	8	0	—	8	100.0	8	100.0	0	—
योग	**50**	1	2.0	49	98.0	38	76.0	12	24.0

क्रमशः

सारणी - 8.17
आदर्श वाक्य और विकल्प

उद्योग	नेताओं की संख्या	विकल्प-5				विकल्प-6			
		वैज्ञानिक समाजवाद		गाँधी का रामराज्य		उद्योगों का राष्ट्रीयकारण		श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण	
	संख्या	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	4	50.0	4	50.0	2	25.0	6	75.0
विनिर्माण	16	14	87.5	2	12.5	12	75.0	4	25.0
विद्युत	4	4	100.0	0	—	2	50.0	2	50.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	100.0	0	—	0	—	4	100.0
वित्तीय संस्थान	6	2	25.0	4	75.0	0	—	6	100.0
स्वास्थ्य	4	4	100.0	0	—	0	—	4	100.0
सामान्य	8	8	100.0	0	—	0	—	8	100.0
योग	**50**	**40**	**80.0**	**10**	**20.0**	**16**	**32.0**	**34**	**68.0**

क्रमशः

सर्वेक्षित नेताओं ने भामस की घोषित नीति से शत-प्रतिशत सहमति व्यक्त की है। मात्र एक नेता को छोड़कर जिसने वग-संघर्ष से सहमति व्यक्त की है, सभी नेताओं ने वर्ग-सहयोग से सहमति जाहिर की है।

8.64 व्यवस्था – परिवर्तन तुरत-लाभ

भारतीय मजदूर संध के दर्शन से यह स्पष्ट होता है कि वे समाज में परिवर्तन ता चाहते हैं लेकिन पूंजीवाद का खुल कर विरोध नही करते। ये पूंजीवाद एवं साम्यवाद दोनों की आलोचना करते हैं । लेकिन इसका विकल्प प्रस्तुत नहीं करते । इनके साहित्य के अध्ययन से भी इस संदर्भ में कोई ठेस विकल्प का पता नहीं चलता।

जिस प्रकार भामस का साहित्य उलझा हुआ है। जो जैसा चाहे कार्य लगाये। भामस के नेतागण भी शायद इस उलझन से मुक्त नहीं हो पायं हैं। करीब 76 प्रतिशत नेताओं ने व्यवस्था- परिवर्तन का समर्थन किया है तथा 24 प्रतिशत ने तुरंत लाभ के दृष्टिकोण से अपनी सहमति व्यक्त की है। अगर कह पूछ्र जा कि व्यवस्था परिवर्तन से आपका तात्पर्य क्या है, किस विकल्प के आप हिमायती हैं तो शयद उत्तर पूर्ण हों।

8.65 क्रान्तिकारी संघवाद या व्यावसायिक संघवाद

श्रमसंघवाद के क्षेत्र में दो दर्शन मुख्य रूप से प्रचलित है – क्रान्तिकारी दर्शन एवं व्यावसायिक दर्शन। क्रान्तिकारी दर्शन को मानने वाले वंघ पूजीवादी के प्रति अनास्था रखतें हैं तथा वे मानते हैं कि सभी प्रकार की सामाजिक,आर्थिक, राजनीतिक बुराईयों की जननी पूंजीवादी व्यवस्था है। उनके अनुसार जव तक इस व्यवस्था को उखाड़ नहीं फेंका जायेगा तब तक मजदूरों के शेषण का अनत न होगा और न शोषण – मुक्त समाज की स्थापना होगी। मुख्य रूपसे वे समाजवादी या साम्यवादी व्यवस्था के समर्थक हैं।

व्यावसायिक दर्शन कों मानने वाले संघ पूंजीवादी व्यवस्था का विस्थापन नहीं अपितु सुधार के हिमायतह हैं। मौजूदा व्यवस्था में रह कर ही वे मजदूरों के अधिकार केलिए संघर्ष करते हैं तथ मजदूरों के जीवन-स्तर में पर्याप्त सूधार लाते हैं। कभी-कभी इसे मखन रोटी

राष्ट्रीय आयोग की स्थापना का आग्रह किया। जाहिर है कि भामस का दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं है और नाकारात्मक हैं। उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के एवज में उसने श्रमिकों के राष्ट्रीयकरण का नारा बुलंद किया फिर श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण कैसे हो ? क्या भरत के श्रमिक राष्ट्रीय न होकर गैर-राष्ट्रीय हैं ? जिस प्रकार उद्योगों के राष्ट्रीयकरण में उद्योगों का स्वामित्व सरकार के हाथ में हो जायगा ? अन्तराष्ट्रीय श्रम संगठन ने यह घोषणा की है कि श्रम क्रय-विक्रय की चीज नहीं है तो फिर श्रमियों के स्वामित्व की धारणा कहाँ तक सही हो सकती है शयद भमस का यह नारा राष्ट्रीयकरणर के विराध में एक आमर्षक नारा देने का प्रयास तों नहीं है ? अगर हैतो दस मनसूबे में असे सफलता भी मिली है। 68 प्रतिशत नेताओं ने उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के स्थान पर श्रमिकों के राष्ट्रीयकरण की बात स्वीकारी है।

8.69 निजी सम्पति

निजी सम्पति के संदीर्ा में दो धारणाए प्रचलित हैं । साम्यवादी धरणी के अनूसार निजी सम्पति तथा इसके अधिकार कों पूर्णतः समाप्त कर देना चाहिए। साम्यवादी व्यवस्था में निजी सम्पति का कोई स्थान नहीं ।

सूधारवादी दृष्टिकोण के अनूसार निजी सम्पत्ति के अधिकार की समाप्ति वांछित नहीं है। इनके अनूसार निजी सम्पत्ति की अधिकतम सीमा का निर्धारण कानून द्वारा होना चाहिए । सर्वेक्षण में सम्मिलित सभी नेताओं ने इसी दृष्टिकोण से सहमति व्यक्त की है। भमस की नीति भी यही है।

8.6.10 धर्मनिरपेक्षता वनाम हिन्दू राष्ट्र

हिन्दू राष्ट्र की परिकल्पना भामस के जनक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने की है। भामस ने भी इस परिकल्पना के प्रति अपनी पूरी आस्था व्यक्त की है। हालाँकि हिन्दू राष्ट्र की व्याख्या वे इस ढंग से करते हैं कि इसकी परिधि में सभी धर्मावलंबी भारतीय आ जाते हैं। लेकिन विभिन्न धमावलंबी पर इसका असर भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। गैर-हिन्दू भारतीय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध को अपना घोर शत्रू मानते हैं तथा गैर-हिन्दू श्रमिक भामस की छत्र-छाया में आने से

अध्याय – नौ
सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध-प्रबंध नौ अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में भामस के किसी खास पहलू पर प्रकाश डाला गया है। प्रस्तुत अध्याय में पूर्व अध्यायों में किये गये वर्णन, विश्लेषण एवं व्याख्याओं के सारांश तथा निष्पादित निष्कर्षो का संकलन एवं क्रमबद्ध प्रस्तुति की गयी है और कुछ सुझाव भी प्रस्तुत किये गये हैं।

9.1 विषय-प्रवेश एवं शोध-विधि

इस शोध प्रबंध की विषय-वस्तु बिहार प्रदेश में भारतीय मजदूर संघ का उदय एवं विकास है। बिहार में भामस का जन्म 1963 में हुआ है। इस प्रदेश में भामस ने अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया है। इससे संबद्ध 151 यूनियनें तथा 4 लाख 23 हजार श्रमिक सदस्य हैं। प्रथम अध्याय में शोध -विषय की महत्ता, व्यापकता तथा उद्‌देश्य का विवेचन किया गया है तथा प्रयुक्त शोध विधि का वर्णन किया गया हैं अध्ययन का आधार सर्वेक्षित 14 संघ, 50 नेता तथा 334 सदस्य श्रमिक हैं।

9.2 भामस : उद्‌भव, विकास एवं विचारधारा

इस शोध-प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में भामस की उत्पत्ति, विकास स्थान, संरचना एवं विचारधारा पर प्रकाश डाला गया है।

9.21 भामस की स्थापना की पृष्ठभूमि

भामस की उत्पत्ति का प्रेरणा-स्त्रोत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। इसकी स्थापना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेताओं तथा स्वयंसेवकों और भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्त्ताओं ने अग्रणी भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से भामस की पूर्ण सहमति

प्रथम अखिल भारतीय सम्मेलन 1967 में हुआ जिसमें पहली बार राष्ट्रीय कार्यकारिणी का गठन किया गया। प्रथम सम्मेलन में प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसार इस महासंघ से संबद्ध संघों की संख्या 541 थी जिनकी सदस्य संख्या करीब 2 लाख 47 हजार थीं। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक प्रतीत होता है कि भामस का यह दावा कि इसका ढाँचा नीचे से ऊपर विकसित हुआ है, ऊपर से नहीं थोपा गया है, आधारहीन है। पहले महासंघ की स्थापना हुई है तथा इसकी प्रेरणा एवं प्रयास के फलस्वरुप इकाई, उद्योग एवं राज्य स्तर पर संघो का गठन किया गया है।

इस बीच भामस का उत्तरोत्तर विकास हुआ है तथा राष्ट्रीय स्तर पर अपनी सदस्य-संख्या के आधार पर यह दूसरे स्थान पर आसीन हुआ है। कई राज्यों में इसने सदस्य-संख्या के आधार पर प्रथम स्थान भी कर लिया है। असम के चाय बागान से लेकर सौराष्ट्र के तेल और प्राकृतिक गैस कॉर्पोरेशन के मजदूरों तक तथा कश्मीर की केसर कियारियों के मजदूर से लेकर केरल के मछुआरों तक भारतीय मजदूर संघ का फैलाव हो गया है।

भामस का आठवाँ अखिल भारतीय अधिवेशन 26-28 दिसम्बर 1987 को बेंगलूर में हुआ। इस अधिवेशन के रिपोर्ट के अनुसार इसके श्रमसंघों की कुल संख्या 2,353 है तथा सदस्य संख्या 32,86,559 हो गया है। इस बीच भामस ने 1981 में महिला विभाग की एक अलग इकाई गठित की है। सदस्यता बढ़ने के साथ ही भामस का अन्तर्राष्ट्रीय संबंध भी बढ़ा है। भामस के नेता राष्ट्रीय अभियान समिति की जो श्रमिक संघों का एक संयुक्त मोर्चा है, अगुआई कर रहे है। •

आँकड़ों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि भामस को सबसे अधिक वृद्धि उत्तर प्रदेश में हुई है। गोवा, नागालैण्ड और त्रिपुरा में कम वृद्धि हुई है।

भारत सरकार ने विभिन्न महासंघों द्वारा प्रस्तुत श्रमसंघों तथा सदस्यों की संख्या के दावे की 1980 में जाँच की। श्रमसंघों का सदस्य संख्या की प्रमाणित एवं सत्यापित-प्रति के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर भामस की स्थान द्वितीय है, जिसके श्रमसंघों की संख्या 1333 है तथा सदस्यों की संख्या 12 लाख 11 हजार है।

इस मांग की ओर से मजदूरों को विचलित करने का प्रयास किया है। भामस ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि व्यक्तिगत पूँजीवाद का एक मात्र विकल्प राष्ट्रीयकरण नहीं है। लेकिन भामस ने कोई अन्य विकल्प प्रस्तुत नहीं किया है।

भामस की विचारधारा की अभिव्यक्ति इसके द्वारा प्रतिपादित एवं प्रसारित आदर्श वाक्यों एवं नारों द्वारा भी होती है। इसके आदर्श वाक्यों एवे औद्योगिक नारों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि भामस एक गैर–साम्यवादी संगठ्न है। यह राष्ट्रीयता एवं भारतीयता की भावना से ओत–प्रोत है। भारतीयता और राष्ट्रीयता का सहारा लेकर साम्यवादी दर्शन के आर्दश वाक्यों को श्रमिकों के मानस–पटल से हटाने का प्रयास किया है। इसने पूंजीवादी दृष्टिकोण की यत्र–तत्र भर्त्सना की है। लेकिन भारतीय दर्शन एवं परम्परा के आलोक में इसने भावी समाज की स्पष्ट तस्वीर नहीं प्रस्तुत की है। भारतीय दर्शन और परम्परा से किसी एक प्रकार के समाज की तस्वीर नहीं उभरती, भारत अनेक परस्पर विरोधी दर्शनों का जन्म स्थल रहा हैं। जब संसार में राजतंत्र की काली–काली घटायें घिरी हुई थीं तब भी इस प्राचीन भूमि के कुछ भूभाग में प्रजातंत्र की लाली चमक रही थी। अर्थात् राजतंत्र और प्रजातंत्र दोनों परम्परायें प्राचीन भारत में विद्यमान थीं। भारतीय परम्परा की किस प्रणाली में भामस की आस्था है यह भारतीय परम्परा की दुहाई मात्र देने से स्पष्ट नहीं होता। इससे भामस की दार्शनिक दरिद्रता दृष्टिगोचर होती हैं। भामस उद्योगों में श्रमिकों के साझेदारी का पक्षधर है तथा चाहता है कि काम के अधि ाकार को मौलिक अधिकार में सम्मिलित किया जाय।

फिर भी, भामस के आर्दश वाक्य एवं नारे चाहे जितने भ्रामक और विरोधाभासी हो, भारतीय श्रमिक समाज पर वे वंशीकरण मंत्र के समान कारगर साबित हुए हैं। भामस की उत्तरोत्तर प्रगति एवं विशाल सदस्य संख्या का राज इन्हीं वंशीकरण मंत्रों में खोजा जा सकता है।

9.3 बिहार भामस का उद्‌भव एवं विकास

बिहार भामस का जन्म भामस की स्थापना के बाद लेकिन भामस के प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन के पूर्व हुआ है। बिहार भामस की नींव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दो प्रचारक रामप्यारे लाल

बिहार भामस निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होता रहा। 1982 में इसकी छत्र-छाया में पलने वाले संघों की संख्या 110 तथा सदस्यों की संख्या 2 लाख से ऊपर हो गयी। 1985 में यह संख्या बढ़कर क्रमशः 144 तथा 3 लाख 44 हजार से ऊपर हो गयी।

अब बिहार भामस बिहार प्रदेश में सदस्य संख्या के आधार पर प्रथम स्थान पर आ गया है। 31.12.1986 को बिहार प्रदेश भारतीय मजदूर संघ द्वारा जारी एक सूचना के अनुसार इससे संबद्ध श्रम संघों की संख्या 151 और सदस्यता संख्या 4 लाख 22 हजार से ज्यादा हो गयी है। बिहार भामस की यह प्रगति निश्चितरुपेण सराहनीय है। इसके पास 70 से ज्यादा पूर्णकालिक कार्यकर्त्ता हैं।

9.4 अध्ययन में सम्मिलित संघ

इस अध्ययन के अध्याय चार में सवेक्षण में सम्मितिल संघों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है, जिसके आधार पर यहाँ उनकी कुछ विशेषताएँ अंकित की गयी हैं।

(क) **उद्योग** – अध्ययन में 14 श्रमिक संघ सम्मिलित किये गये है। जिनमें से 3 खनन में, 5 विनिर्माण में, 3 वित्तीय संस्थान में तथा एक-एक विद्युत, स्वास्थ्य तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान के क्षेत्र में क्रियाशील हैं।

(ख) **स्थान** – खनन उद्योग के तीनों श्रमिक संघ धनबाद में स्थित हैं। विनिर्माण के पाँच श्रमसंघों में से दो-दो राँची तथा बिहारशरीफ में तथा एक टाटा नगर में स्थित है। विद्युत से लिया गया श्रम संघ का मुख्यालय बिहारशरीफ में है तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान और स्वास्थ्य के श्रमिक संगठनों का कार्य क्षेत्र राँची है। वित्तीय संस्थान के तीनों ही कर्मचारी संघों का मुख्यालय पटना है। इस प्रकार नमूना पटना, राँची, टाटा, धनबाद तथा बिहारशरीफ का प्रतिनिधित्व करता है।

(ग) **स्थापना वर्ष** – नमूने में सम्मिलित पाँच श्रमिक संघों का जन्म इस शताब्दी के छठे दशक में, दो का सातवें दशक में तथा सात का वर्तमान दशक में हुआ है।

और उनके नियोजको के बीच संबद्ध विनियमित करना।

- उनके लिए जीवन और काम की उचित शर्ते सुनिश्चित करना।
- बेहतर मजदूरी एवं काम की शर्तो के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना।
- दुर्घटना की दशा में सदस्यों को कर्मकार प्रतिकार अधिनियम के अधीन क्षतिपूर्ति दिलवाने का प्रयत्न करना।
- बीमारी, बुढ़ापा, बेकारी और मृत्यु की दशा में सदस्यों और उनके आश्रितों के लिए सहायता की व्यवस्था हेतु प्रयत्न करना।
- नियोजक और कर्मचारी के बीच के संबद्ध को सुधारने का प्रयत्न करना।
- समान उद्देश्यों वाले कामगारों के अन्य संगठनों के साथ सहयोग करना और उनके साथ संबद्ध होना।
- केन्द्रीय श्रमिक शिक्षण पर्षद् के सहयोग से कामगारों के लिए शिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना
- ऊपर लिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामान्यतः ऐसे अन्य प्रसास करना, जो आवश्यक हो।
- संघ अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बराबर संवैधानिक और शान्तिपूर्ण तरीके अपनायेगा और हिंसात्मक या ऐसी कोई कारवाई नहीं करेगा, जो समाज और राष्ट्र के लिए हानिकारक हो।

(ज) संरचना – भामस के संघों की संरचना प्रशासन एवं अन्य महत्वपूर्ण बातें एक सामान्य संविधान एवं नियमावली द्वारा निदेशित होती हैं। संविधान एवं नियमावली की एक प्रति परिशिष्ठ 6 में दी गयी है।

(झ) मकान की स्थिति – सर्वेक्षित 14 संघों में से 3 का मुख्यालय निजी मकान में, 9 का किराया के मकान में तथा 2 का प्रबंध द्वारा प्रदत्त मकान में स्थित है।

विवाहित और अविवाहित दोनों ही तबके के कर्मचारियों को आकर्षित किया है।

भाजपा एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से जुड़े हुए होने के कारण ऐसी आम धारणा है कि हिन्दू धर्मावलंबियों को छोड़कर अन्य ध्र्मावलंबियों में भामस के प्रति आकर्षण नहीं है। किन्तु इसके विपरीत भामस ने सभी धर्मो के लोगों को अपनी विचारधारा एवं अपने नेताओं की कर्मठता द्वारा अपनी ओर आकर्षित किया है। सदस्यों का धर्मानुसार वर्गीकरण यह स्पष्ट करता है कि भामस संघों में हिन्दू, मुसलमान एवं ईसाई सभी सदस्य के रुप में क्रियाशील हैं। लेकिन भामस की सदस्यता में प्रचुरता हिन्दुओं की ही है। इस क्रम में मुस्लिम सदस्यों का स्थान दूसरा तथा ईसाई सदस्यों का स्थान तीसरा है। जिस क्रम में बिहार की जनसंख्या धर्मावलंबियों की संख्या है, प्रायः उसी क्रम में इनका प्रतिनिधित्व भी बिहार भामस की सदस्यता में है। भामस के ऊपर आरोपित यह आलोचना कि हिन्दू धर्म को छोड़कर दूसरे धर्म वाले इससे दूर भागते हैं, मिथ्या, निराधार एवं बेबुनियाद है।

9.52 पारिवारिक विशेषताएँ

सर्वेक्षित सदस्यों की जाति संरचना के अध्ययन से यह जाहिर होता है कि भामस के संघों में सभी जातियों के सदस्य हैं। कुल 334 उत्तरदाताओं में से 40.4 प्रतिशत ऊँची जाति के, 37.8 प्रतिशत पिछड़ी जाति के तथा करीब 22 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं जन जाति के सदस्य हैं। विभिन्न जातियों की संख्या बिहार के उद्योगों की श्रमशक्ति में उनकी स्थिति के अनुकूल है। भामस से संबद्ध संघों ने सभी जाति के श्रमिकों को अपने प्रभाव में लिया है।

भामस की सदस्यता की शैक्षणिक योग्यता एक सुखद एवं आकर्षक चित्र प्रस्तुत करती है। भामस की सदस्यता में करीब 27 प्रतिशत अनपढ़ एवं साक्षर श्रेणी के सदस्य हैं। करीब 41 प्रतिशत सदस्यों ने मैट्रिक एवं इन्टर की परीक्षायें पास की हैं तथा करीब 32 प्रतिशत सदस्यों की योग्यता स्नातक तथा इससे अधिक है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भामस संघों की सदस्यता में शैक्षणिक योग्यता का स्तर ऊँचा है। भारत जैसे देश में जहाँ जनसंख्या

9.61 सदस्यता–अवधि

भामस से सम्बद्ध बिहार प्रदेश के संघों के सदस्यों में से आधा से अधिक की सदस्यता–अवधि 5 वर्ष की है। 5 से 10 वर्ष की सदस्यता–अवधि में करीब 30 प्रतिशत सदस्य तथा 10 वर्ष से ऊपर की अवधि वाले 16 प्रतिशत सदस्य हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भामस के अधिकांश सदस्यों ने 10 वर्ष के भीतर ही सदस्यता ग्रहण की है।

9.62 सदस्यता–ग्रहण के कारण

भामस के सर्वेक्षित सदस्यों ने भामस की सदस्यता ग्रहण करने के अनेक कारण बताये हैं। इनमें से तीन कारणों को आधे से अधिक सदस्यों का समर्थन प्राप्त हुआ है। समर्थन का गहनता के आधार पर इन कारणों में भामस की विचारधारा का स्थान प्रथम, नेताओं के आचरण एवं व्यवहार का स्थान द्विती तथा भारतीयता एवं भारतीय परम्पराओं में विश्वास का स्थान तीसरा है। व्यक्तित्व में निखार की एवं नेतृत्व में आने की संभावना तथा मात्र इसी संघ की जानकारी भी सदस्यता ग्रहण के ऐसे कारण हैं जिनके चलते सदस्यों की एक अच्छी संख्या ने समर्थन दिया है। करीब 20 प्रतिशत सदस्यों ने भामस की सदस्यता इसलिए ग्रहण की है क्योंकि अन्य संघों के क्रियाकलापों से वे पूर्णतः असंतुष्ट थे।

भामस के प्रति आकर्षण का मुख्य स्त्रोत इसकी विचारधारा तथा भारतीयता एवं भारतीय परम्पराओं में इसकी आस्था है। यह आस्था निश्चित रुप से भामस की विचारधारा का एक अभिन्न अंग है। इस अध्ययन के द्वितीय अध्याय में भामस की विचारधारा पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। भामस की विचारधारा की बुनियाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का दर्शन है।, जिसमें राष्ट्रीयता, भारतीयता, अखण्डता, परम–वैभव, एकात्म मानववाद और हिन्दू राष्ट्र पर जोर डाला गया है। जहाँ तक भामस का सवाल है, श्रमिक क्षेत्र में इसने "राष्ट्र का उद्योगीकरण, उद्योगों का श्रमिकीकरण तथा श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण" की धारणा प्रस्तुत की है। भामस न तो राष्ट्रीयकरण को मान्यता प्रदान करता है और न ही अराष्ट्रीयकरण को। यह बात तो स्पष्ट है कि भामस एक गैर–साम्यवादी संगठन है लेकिन पूंजीवाद पर भी

आलोचना की है वह कांग्रेस के पक्ष में मानसिकता बनाने में सक्षम नहीं हो सकेगा। अब उस व्यक्ति के पास, उस साम्यवादी व्यक्ति के पास दूसरा विकल्प क्या है? भामस एक विकल्प के रुप में उसके स्वागत के लिए खड़ा है।

भारतीय श्रमिक वर्ग में कुछ ऐसे श्रमिक भी हैं जो भूमिहीन परिवारों से आते हैं उनमें से कुछ तो पूंजीवादी प्रवृतियों के प्रतिकूल होते हैं लेकिन कुछ ऐसे भी हैं जो पूंजीवादी प्रवृतियों से पूर्णतः लिप्त हैं। उनके सपने अपरमपार हैं तथा वे अपने को पूंजीपति वर्ग में लाने के लिए आकुल-आतुर हैं। इस तरह की मानसिकता रखने वाले श्रमिकों के लिए भामस की विचारधारा अतिप्रिय है।

भामस की विचारधारा में स्पष्टता का अभाव है। जो जिस मनोवृति का है उसी के अनुरुप इसकी व्याख्या कर सकता है। ऐसी स्थिति में भामस का मौन नियंत्रण अनेक श्रमिकों के लिए ग्राह्य हो जाता है।

लेकिन प्रश्न उठता है कि कल कैसी विचारधारा है जिसमें सबके लिए जगह है? क्या पूंजीवादी, क्या साम्यवादी, गैर-साम्यवादी, वामपंथी, दक्षिणपंथी, मध्यमार्गी सबके लिए भामस का दरवाजा खुला हुआ है। यह इसलिए संभव हो पाया है कि इसकी विचारधारा आवश्यकता से अधिक लोचदार है इसे पूंजीवादी के पक्ष में या विपक्ष मे, साम्यवाद के पक्ष या विपक्ष में, मध्य मार्ग के पक्ष या विपक्ष में, इच्छानुसार झुकाया जा सकता है। क्या विचारधारा की यह लोच सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से वांछित है? इसका जबाब भामस के शीर्षस्थ नेता ही दे सकते है।

इस संदर्भ में एक बात और महत्वपूर्ण है। भारत के श्रमिक वर्ग आन्दोलन में सर्वप्रथम लाल झंडा या साम्यवादी विचारधारा का पदार्पण हुआ। श्रमिक संघों कें निमार्ण में साम्यवादियों ने अग्रणी भूमिका निभाई है। इनके नेता "दुनिया के मजदूरों एक हो" का नारा बुलन्द करते रहे तथा समता पर आधारित शोषण-मूक्त समाज की तस्वीर जनसाधारण के मानस पटल पर खींचते रहे। आन्दोलन की शुरुआत देश की आजादी के पूर्व हो गयी थी। देश के आजादी का इक्तालीसवाँ वर्ष गाँठ भी मना लिया। इनके नेता जहाँ-तहाँ सत्ता में भी आये लेकिन वह तस्वीर ही बनी रही। उस तस्वीर के अनुरुप समाज का

एवं निष्ठा बनी रहती है।

9.64 वाह्य नेतृत्व की आवश्यकता

श्रम संघों में वाह्य नेतृत्व की समस्या एक गंभीर समस्या मानी जाती है । यह सत्य है कि श्रमसंघों की स्थापना एवं विकास में वाह्य व्यक्तियों का अपुल्य योगदान रहा है। भारत में श्रमसंघों की स्थापना की प्रेरणा वाह्य नेतृत्व से ही आयी तथा उन्होनें ही स्थापित संघों कों फलने-फुलने में पर्याप्त सहायता प्रदान कीं। एक मत यह भी है कि भरतीय श्रमसंघों में व्याप्त भ्रष्टाचार, तानाशाही प्रवृति एवं अप्रजातांत्रिक तौर-तरीकों के लिए वाह्य नेतृत्व ही जिम्मेवार है।

भामस के अधिकतर सदस्य श्रम-संघों के नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति कों आवांछनीय तत्व नहीं मानतें तथा वे वाह्य नेतृत्व की आवश्यक्ता कों महसूस करते हैं।

9.7 श्रमिक संघ के नेताओंकी छवि

किसी भी संस्था या संगठन की छवि मुख्य रूप से उसके नेताओं की छवि से अभिव्यक्त होती है। नेता वह है जों निर्धारित एंव वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति में अपने अनुयायियों की अनुआई करता है। सफल नेता वही हो सकताहै जो उद्देश्यों के प्रति अनूयायियों में पूर्ण निष्ठा कायम कर सके, उनका पूर्ण विशवार प्राप्त कर सके तथा अपने मन-कर्म-वचन से अनूयायियों को सम्मोहित करे और निर्धारित पथ पर उन्हे अत्साह पूर्वक बढ़ाने को तत्पर रखे। श्रम संघों में भी नेता वही भूमिका अदा करता है जों किसी स्वैक्षिक संगठन का नेता करता है। अध्याय सात में सदस्यों की दृष्टि में भारतीय मजदूर संघ के नेताओं की जों छवि बनी है उसे चित्रित किया गया है। मजदूर संघ के नेताओं के प्रति कुछ आमधारणाओं की सच्चाई भामस की इकाइयों के संदर्भ में परखने की कोंशिश की गयी है।

9.71 नेताओं से जान-पहचान की सीमा

नेतृत्व की प्रभावशीलता इस बात पर भी आधरित होती है कि नतागण अपने अनुयायियों के कितने करीब है। नेताओं और अनुयायियों में सामिपय जितना ही अधिक होगा नेतृत्व उतना हि प्रभावशाली

कुछ के साथ से दूरी कायम रखते हैं। इस संदर्भ में भामस-नेताओं की छवि बहुत अच्छी नहीं है। हलॉकि करीब 51 प्रतिशत सदस्य यह मानते हैं कि उनके नेता स्वार्थपूर्ण रवैया के शिकार नहीं है फिर भी 49 प्रतिशत सदस्य किसी ने किसी मात्रा में अपने नेताओं के व्यवहार में पक्षपात पूर्ण रुख दृष्टिगोचर करते हैं। इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि नेतागण अपने सदस्यों के इस मूल्यांकन से अपने व्यवहार में पक्षपात की गंध न आने देंगें।

भामस के करीब 70 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में इनके नेतागण खुशामद पसंद नहीं है। फिर भी करीब 25 प्रतिशत की यह मान्यता है कि उनके एक चौथाई नेता तथा 8 प्रतिशत की दृष्टि में आधे नेतागण तथा एक प्रतिशत की दृष्टि में तीन चौथाई नेतागण खुशामद पसंद हैं। नेतृत्व में खुशामद पसंदगी की वर्तमान होना एक ऐसी असाध्य व्याधि का सूचक है, जो किसी भी क्षण संघ की एकबद्धता में दार पैदा कर सकती है।

भामस के अधिकतर सदस्य अपने नेताओं में संघ-संचालन की क्षमता के दर्शन करते हैं। करीब 79 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में सम्पूर्ण नेतृत्व, 14 प्रतिशत की दृष्टि में तीन चौथाई नेतृत्व तथा 5 प्रतिशत के दृष्टि में आधा नेतृत्व संघ संचालन में सक्षम है।

सभी उद्योगों के अधिकांश सदस्य अपने नेताओं में सहायता करने की तत्परता पाते हैं। लेकिन खनन उद्योग के अधिकांश सदस्य एक चौथाई नेताओं में इस तत्परता का अभाव पाते हैं।

प्रजातंत्र में ऐसी मान्यता है कि उनके नेता अपने अनुयायियों की खुशी से खुश तथा उनके दुख से दुखी होते हैं। इस संदर्भ में सम्पूर्ण नेताओं की सराहना करने वाले 45.5, तीन चौथाई की सराहना करने वाले 47.9 तथा आधा की सराहना करने वाले 6.6 सदस्य हैं। अधिकांश सदस्य नेताओं के सम्पूर्ण भाग में इस गुण को वर्तमान नहीं पाते ।

सदस्यों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व उनके नेता करते हैं। करीब 51 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में सम्पूर्ण नेतृत्व, 34 प्रतिशत की दृष्टि में तीन चौथाई नेतृत्व, 19 प्रतिशत की दृष्टि में आधा नेतृत्व तथा एक प्रतिशत की दृष्टि में चौथाई नेतृत्व समस्याओं को प्रबंध तक ले जाने में कोई हिचक महसूस नहीं करते।

3. भामस के नेतागण श्रमिकों की समस्याओं से पूर्णतः परिचित हैं।

4. संघ के नेता अपने संघ का कार्य निष्ठापूर्वक करते हैं।

5. भामस के नेता श्रमिक के रूप में कर्तव्य परायण होंने की सलाह देते हैं।

7. भामस के नेता राजनीति से ग्रसित नहीं रहतें हैं।

8. भामस के नेता संघ की विचारधरा और आचरणसे श्रमिकों को प्रभावित करते हैं तथा संध के पक्ष में माहौल तैयार करते है।

9. अधिकांश सदस्यों की मान्यता है कि उनके नेता शिष्ट-भाषा का प्रयोग करते हैं।

10. अधिकांश सदस्यों की जानकारी में भमस के मांग- पत्रों में सही और न्यायोचित मांगे ही शामिल की जाती है।

11. भामस के नेता इस तरह मामले नहीं उठातें जिनमें उनके किसी सदस्य पर भारी दुराचार का आरोप हो।

12. भामस के नेता वार्ता के समय किसी भी विषय को प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनातें हैं।

13. भामस के नेता गाली-गलौज एवं आवेशपूर्ण भाषा के प्रयोग से परहेज रखते हैं।

14. भारतीय मजदूर संघ हड़ताल को अनितम शस्त्र मानता है।

15. भामस के नेता हिंसक घेराव, तोड़7 फोड़ आदि को बढ़ावा नहीं देते हैं।

16. भामस के सदस्य नेताओं पर कोष के दुरूपयोग का अभियोग नहीं लगातें।

17. भामस के नेता का रहन-सहन प्रशंसनीय है।

18. भामस के संघों द्वारा नेतृत्व प्रशिक्षण के लिए अभ्यास वर्गो का आयोजन होता है।

9.82 पारिवारिक विशेषताएँ

भामस नेताओं के परिवारों के आकार पर दृष्टिपात करने से यह पता चलता है कि औसत प्रति परिवार 7 सदस्य है। उनके परिवार में संख्या के आधार पर महिला सदस्यों की प्रधानता है। सदस्यों में करीब 18 प्रतिशत उपार्जक तथा 82 प्रतिशत परावलंबी है। इनके परिवारों में उपार्जक-आश्रित का अनुपात 1:4:5 है। साक्षरता की दर बहुत अच्छी है, 86 प्रतिशत सदस्य साक्षर तथा मात्र 14 प्रतिशत निरक्षर है।

9.83 नेताओं की जीवन-शैली

भामस नेताओं के पहनावे में पैंट और शर्ट की प्रधानता है। भोजन में करीब 72 प्रतिशत सदस्य मांसाहारी है तथा 28 प्रतिशत शाकाहारी हैं। भामस के नेताओं में पान बहुत प्रचलित है तथा कुछ खैनी, बीड़ी भी सेवन करते है। करीब 46 प्रतिशत नेताओं ने यह बताया कि जिस शहर में वे रहते हैं उसमें उनका अपना मकान हैं। करीब 58 प्रतिशत के पास साईकिल और 28 प्रतिशत के पास स्कूटर या मोटर साईकिल है। करीब 72 प्रतिशत नेताओं के पास अपना रेडियो सेट है। 12 प्रतिशत ने यह सूचना दी कि उनके घर में टेलिफोन भी है।

नेताओं के घरों मे खाना बनाने का कार्य मुख्य रुप से परिवार के सदस्य ही करते हैं।

भामस नेताओं में आस्तिकता का वर्चस्व है। सभी नेताओं ने अपने रहन-सहन का स्तर मध्यम दर्जे का होने का दावा किया है।

9.84 संगठनात्मक विशेषतायें

नेतागण अनेक उत्प्रेरक तत्वों द्वारा प्रभावित होकर श्रमसंघ आन्दोलन में प्रविष्ट हुए हैं। करीब 64 प्रतिशत नेताओं ने श्रम संघ आन्दोलन को मजबूत करने के उद्देश्य से तथा आन्दोलन में व्याप्त व्याधियों और कमजोरियों को निर्मल करने के उद्देश्य से भारतीय मजदूर संघ की सदस्यता ग्रहण की है। करीब 52 प्रतिशत नेताओं ने श्रमिकों की सेवा भावना से ओतप्रोत होकर भामस की छत्रछाया में आने का फैसला किया है। करीब 16 प्रतिशत नेताओं ने अपनी

हड़तालें एवं प्रदर्शन भी अपवाद नहीं है। इस संदर्भ में 28 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार किया है कि ऐसे विभिन्न अवसरों पर उन्हें पुलिस द्वारा लाठी चार्ज का शिकार होना पड़ा है। इन औद्योगिक कार्रवाइयों में भामस नेतृत्व की सहभागिता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उनके नेता कर्मठ, त्यागी एवं बलिदानी हैं तथा निर्धारित उद्देश्यों के प्रति वे पूर्ण समर्पित हैं तथा उनकी प्राप्ति के लिए वे हर संभव तरीका अपना सकते हैं तथा त्याग करने के लिए अपनी कटिबद्धता से डिग नहीं सकते।

भामस नेतृत्व का बहुत बड़ा भाग किसी भी राजनैतिक दल से औपचारिक रुप से जुड़ा हुआ नहीं है। फिर भी भामस के नेताओं ने उन दलों का नाम बतलाया है जिनसे उनका भावात्मक लगाव है। करीब 80 प्रतिशत नेताओं का भावात्मक लगाव है। करीब 80 प्रतिशत नेताओं का भावात्मक लगाव भारतीय जनता पार्टी से है। भामस के नेतृत्व पर भारतीय जनता पार्टी का प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से प्रभाव है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा का भी स्पष्ट प्रभाव भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व पर है। भामस–नेतृत्व के 76 प्रतिशत सदस्यों ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से सहमति व्यक्त की है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अगर भामस का जनक, पथ प्रदर्शन एवं धर्म पिता कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

9.85 औद्योगिक सम्बन्ध की समस्याएँ

औद्योगिक संबंध की स्थिति मुख्यतः प्रत्यक्ष पक्षों – प्रबंध एवं श्रम तथा परोक्ष पक्ष सरकार – की मनोवृत्ति एवं विचारधारा से प्रभावित होती है। औद्योगिक संबंध सामाजिक व्यवस्था की एक उपव्यवस्था है। समाज व्यवस्था तथा उसकी उपव्यवस्थाओं का प्रभाव औद्योगिक संबंध व्यवस्था पर भी यथेष्ठ रुप से पड़ता है। भारतीय श्रमिक संघ आन्दोलन अंतर संघीय प्रतिद्वंद्विता एवं आन्तरिक घटकवाद नामक विकराल एवं असाध्य व्याधियों की चपेट में आ गया हैं जिसके कारण आन्दोलन दुर्बलता एवं रुग्णता का शिकार हो गया है। भामस की बिहार इकाइयों में घटकवाद का प्रवेश बहुत समय तक नहीं हुआ था किन्तु विगत कुछ वर्षो से भामस के भी कई संगठन घटकवाद की चपेट में आ गये है। 18 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार किया है कि उनके संघों में भी घटकवाद का रोग फैल गया है या फैलता जा रहा

भारत में श्रमसंघवाद की शुरुआत औद्योगिक संघों से हुई जबकि पाश्चात्य देशों में शिल्प संघों से हुई । आज जबकि पाश्चात्य देशों के श्रमिक किल्प संघों से औद्योगिक संघों की ओर तेजी से जा रहें है। भारत के श्रमिक औद्योमिक संघवाद से शिल्पवाद की ओर मन्थर गति से बढ़ रहें हैं। शिल्पसंघों की स्थापना भारतीय श्रमंघ आन्दोलनकि लिए हानिप्रद है। सभी राष्ट्रीय महासंघें ने तथा औद्योगिक महासंघों ने शिल्प संघ की अवधारणा का विराध किया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 52 प्रतिशत नेता यह मानतें हैं कि शिल्प संघें का बनना मजदूद आन्दोलन के लिए घातक है लेकिन 48 प्रतिशत नेतागण उनका विरोध करतें हैं।

औद्योगिक विवाद के समाधान के कई तरीके कालान्तर में विकसित हुए हैं। सामूहिक सौदेबाजी विवादों के समाधान का एक प्रजातांत्रिक तरीका है। विवादों के समाधान का एक दूसरा तरीका पंच निर्णय है। न्यायालय विवादों के समाधान का ऐसा तरीका है जिसमें लिर्णय का अधिकार सरकार द्वारा नियफक्त न्यायाधीशें को होता है। भामस के नेताओं के दृष्टिकोंण में सर्वाधिक महव्वपूर्ण तरीका सामुहिक सौदेबाजी है नेकिन वे मानते हैं कि श्रमिकों को हड़्ताल का आधिकार भी होना चाहिए। दसरा स्थान पंच निर्णय का है जिसे 36 प्रतिशत नेताओं ने पसंद किया है तथा पिसे मात्र 12प्रतिशत नेताओं की सहमति मिली है।

भामस की घोषित नीति के अनुसार भी, "औद्योगिक सम्बन्धों के क्षेत्र में यथार्थ में सामूहिक सौदेबाजी का कोई विकल्प नहीं है।" द्विपक्षीय इकरार का स्थान कोई तीसे पक्ष द्वारा किया गया संझौता नहीं ले सकता है। सामूहिक सौदेबाजी की एक आवश्यक शर्त है कि इस कार्य के लिए श्रमसंघों को मान्यता प्रदान की जाय। सर्वेक्षित भामस के नेताओं में से 75 प्रतिशत ने पृथक सौदा एजेन्ट केलिर्धारण की आवश्यकता पर जोर दिया है। भामस नेभी अपने राष्ट्रीय अधि ाकार-पत्र में मान्यता से सम्बन्धित एक कसौटी को शामिल कया है। सम्बल्धित संस्थान के कम से कम 55 प्रतिशत श्रमिकों में यूनियन की सदस्याता व्यापत होनी चाहिए। जहाँ कोई एक यूनियन उक्त परिस्थिति को पूर्ण न करती हो वहाँ सभी यूनियनें, जों 30 प्रतिशत या उसेसे अधिक श्रमिकों की सदस्यता रखती हों, उन्हें मान्यता देनी याहिए। केवल उन्हीं व्यक्तियों की सदस्यता गिनी जानी चाहियें जो

शक्ति केन्द्रों के रूप कार्य करेगें। यह सर्वविदित है कि भामस की स्थापना का प्रेरणा स्त्रोत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है। इसकी स्थापना में संघ के स्वयंसेवकों तथा भाजपा के नेताओं ने अग्रणी भूमिका निभाई है। सर्वेक्षण में सम्मिलित करीब 75 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार किया है कि भारतीय मजदूर संघ तथ उससे संबद्ध संघों की स्थापना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा भाजपा ने पहल की है तथा इस संदर्भ में उनकी भूमिका काबिले तारीफ है। उनका संघ किसी भी राजनीतिक दल से न तो संबंध रखता है और न किसी दल के नियंत्रण में है। सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं में से मात्र दो ने यह स्वीकारा है कि किसी राजनैतिक दल से संबंध रखने से श्रमसंघों को लाभ होते हैं। भामस के अधिकतर नेताओं के अनुसार श्रमसंघों को दल-गत राजनीति के दलदल में भूल कर भी नहीं फँसना चाहिए। क्योकि इसके परिणाम मजदूर संघों तथा श्रमिकों के लिए आत्मघाती होते हैं। दलगत राजनीति में फँसने से मजदूर संघों में भ्रष्टयचार का वातावरण छा जाता है, श्रमिक हित पर राजनैतिक हित हावी हो जाता है अगर राजनीतिक दल सत्ता में आ जाता है तो उससे संबंद्धता प्राप्त संगठनों का जुझारूपन समाप्त होने लगता है। राजनैतिक नेतााओं के रादण श्रमसंघ अपना प्रजातांत्रिक चरित्र खे बैठता है। श्रमसंघें में घटकवाद का जन्म होता हैं।

बिहार भामस के नेताओं के राजनीतिक सम्बन्धों पर दृष्टि डालने से तस्वीर का दूसरा रूप भी उजागर होता है। भाजपा के बहुत सारे नेता श्रमसंघें के नेतृत्व पर पूर्णतः हावी है। ऐसा भी प्रतीत होता है कि वे अपनी राजनीति पर पकड़ के लिए श्रमसंघों में अपने स्थान का उपयोग करते हैं। बिहार भामस तथा भाजपा में नेतृत्व के प्रश्न को नेकर एक कशमकश चल रही है। ऐसी स्थिति में यह मानना कि भामस दलगत राजनीति में विश्वास नहीं रखता तथा असमें अभी तक कदम नहीं रखा, बेतुका सा प्रतीत होता है। भाजपा तथा भामस में सम्बन्ध स्पष्ट नजर आतें है। तथा इस सम्बन्ध मे व्याप्त सहयोग और संघर्ष के तत्व कभी-कभी अखवारों की सुर्खियों में भी स्थान पा लेते हैं।

9.87 भामस के आदर्श वाक्य एवं नारों से सहमति

भामस में अनेक आदर्श वाक्यों एवं नारों की घोषणा की गयी

के दोनों छोरों को ठुकरा दिया है। भामस का दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं है। निजी सम्पति के संदर्भ में दो धारणाएँ प्रचलित हैं। राम्यवादी धारण के अनुसार निजी सम्पत्ति तथा इसके अधिकार कों पूर्णतः समाप्त कर देना चाहिए। सुधारवादी दृष्टिकोण के अनुसार निजी सम्पत्ति के अधिकार की समाप्ति वांछित नहीं है। सर्वेक्षण में सम्मिलित सभी नेताओं नेइसी दृष्टिकोण से सहमति व्यक्त की है। भामस की नीति भी यही है।

हिन्दू राष्ट्र की परिकल्पना भामस के जनक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने की है। भामस ने भी इस परिकल्पना के प्रति अपनी पूरी आस्था व्यक्त की है। आलाँकि हिन्दू राष्ट्र की व्याख्या वे इस ढ़ग से करतें हैं। कि इसकी परिधि में सभी धर्माविलंबी भारतीय आ जातें है। लेकिन विभिन्न ध्र्माविलंबियों पर इसका असर भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है। हिनदू बहुलक राष्ट्र में इस परिकल्पना से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा इसकी विभिन्न शाखायें नाना प्रकार से लाभान्वित होती है। पता नहीं इस परिकल्पना के कारण भामस की शक्ति में कितनी अभिवृद्धि हूई है। जहाँ तक सर्वेक्षित नेताओं का प्रश्न है, 76 प्रतिशत ने हिन्दू राष्ट्र की धारणा कों तथा 24 प्रतिशत ने धर्म लिरपेक्षता की धारणा को अहमियत प्रदान की है।

9.9 सुझाव

प्रस्तुत अध्ययनके क्रम में बिहारभामस से सम्बद्ध श्रमिक संघोंकी गतिविधियों एवं कार्यकलापों में कुछ त्रुटियाँ एवं कमजोरियाँ भी दृष्टिगत हुई हैं। भामस संघों के स्वास्थ्य केक पराक्षण एवं निरोक्षण द्वारा कुछ व्याधियों का भी पता चला है। दन व्याधियों एवं त्रुटियों के निदान के लिए निम्नांकित नुस्खा प्रस्तुत है।

1. यह स्पष्ट है कि अधिकांश श्रमिकों ने भामस की विचारधारा से प्रभावित होकर इसकी सदस्यता ग्रहण की है। भामस की विचारधर मुलतः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दर्शन पर आध ारित है। उस दर्शन में हिन्दु राष्ट्र एवं परमवैभव तथा एकात्ममान्ववाद पर विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय स्वय ।सेवक संघ के दर्शन की एक व्याख्या एवं एक समझ नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति इसकी व्याक्ष्या अपने ढ़ग से तथा अपनी मानसिकता के अनुरुप करता है। संघ के अनूसार

वर्ग के सामने रखे ताकि जों भी मजदूर इसकी छत्रछाया में आवे वे पूरी सूझबूझ के साथ आवे गुमराह होकर नहीं। वे धनात्मक प्रवृत्ति के साथ प्रवेश करें ऋणात्मक प्रवृति के साथ नहीं सम्मोहन तंतु मजबूत होने चाहिए ताकि जों आये वह उसी का हो जाय, हमेशा हमेशा के लिए । क्षणिक आकर्षण के कारण आये सदस्य संस्था के धरोहर नहीं हो सकतें और न वे भारोसेमंद ही हो सकेते हैं।

6. बिहार भामस में घटकवार का प्रवेश धीरे-धीरे हो रहा हैं घटकवाद का मुख्य कारण राजनीति है। भाजपा की राजनीति भामस में भी प्रविष्ट करती जा रहीं है। भास को राजनीतिक गठबन्धन के इस भार्येकर दूष्परिणाम से बचना चाहिए।

7. भामस के संर्धो में से कुछ पर कुछ खास व्यक्तियों ने एन-केन-प्रकारेण अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया है। वर्षो से आम चुनाव नहीं हुए है। तथा प्रजातंत्र के सिद्धान्त की घोर अवहेलना हो रही है। एकाधिकार की यह प्रवृति घटकवाद को जन्म देती है, आम सदस्यों को नेतृत्व के खिनाफ विदाह करने को विवश करती है तथा भविष्य में संगठन के कमजोंर होने की आशंका आधिक होती जा रही है। जहाँ कहीं भी चुनाव निर्धारित समय पर नहीं हो रहे हैं वहाँ होन चाहिए। इस संदर्भ में भामस की राज्य स्तरीय कार्यकारिणी को महत्वपुर्ण भुमिका निभानी चाहिए।

8. जहाँ तक संघ की विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशालिता का प्रश्न है, भामस संघ अपने अधिकांश सदस्यों की दृष्टि में अत्यधिक प्रभावशानी है। लेकिन कुछ सदस्यों ने इनकी प्रभावशालिता को कम या साधारण की सीमा में बाँध है। भामस कों यह प्रयास करना चाहिए कि इन सदस्यों के मूल्यांकन से फायदा उठावें तथा संघों की प्रभावशालिता में वृद्धि करें। जिन सदस्यों ने भामस की प्रभावकारिता कों कम एवं साधारण बतलाया है वे निश्चितरूपेण भामस की प्रभाव क्षमता से तथा नेताओं की कार्य क्षमता से असंतुष्ट हैं।

सभी सदस्यों की दृष्टि में भामस संघ राजनीतिक

करीब आधे सदस्यों ने नेतृत्व के किसी न किसी अंश पर यह आरोप लगाया है कि वे श्रमिकों की समस्याओं को प्रबन्ध तक पहुँचने में सक्षम नहीं हैं। तथा पक्षपातपूर्ण व्यवहार करते हैं। करीब 36 प्रतिशत सदस्यों ने नेताओं के विभिनन भागों की ईमानदारी पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। करीब 21 प्रतिशत ने नेताओ में मित्रवत ने अपने नेताओं को खुशमद - पसंद पाया है तथा करीब 26 प्रतिशत ने अन्हें राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में मशगगूल पाया है। करीब 21 प्रतिशत ने नेतृत्व के कुछ अंश को संघ संचालन में अक्षम उनमें सहायता की तत्परता की कमी पायी है। सदसयों की एक छोटी संख्या ने नेतृत्व में जातियता एवं साम्प्रायिक्ता की भावना का भी दिग्दर्शन किया है। सदसयों की इन प्रतिक्रियाओं से नेतृत्व के चक्षु–पटल खुल जाने चाहिए तथा अपनी छवि सुधारने के लिए अपने में व्याप्त कमजोरियों को यथाशीघ्र दूर करना चाहिए।

11. परिकल्पनाओं के परीक्षण से भी नेतृत्व की कमजोरियों का पता चलता है। हलाँकि इन कमजोरियों की ओर सदस्यों की अल्पसंख्या ने ध्यान आकृष्ट किया है। सदस्यों की संख्या कों गौण करते हुए, नेताओं कों उनकी प्रतिक्रियाओं से लाभ उठाना चाहिए। इससे नेताओं की छवि में और निखार आयेगा।

12. नेताओं की पाश्विका के अध्ययन से भामस के सिद्धान्तों एवं नेताओं की सूझ में फर्क का आभास मिलता है। भामस के शीर्षस्थ नेताओं को चाहिए कि वे सघन प्रशिक्षण द्वारा दर्शन एवं नेताओं की सुझ मे व्याप्त सम्प्रेषण–अन्तर एवं संचार - फर्क को यथाशीघ्र दूर करें ताकि भामस के दर्शन की हर स्तर के नेताओं द्वारा पूर्ण, सटीक एवं समीचीन व्याख्या संभव हो सके।

परिशिष्ठ – 1

अध्याय में सम्मिलित संघों के बारे में जानकारी

सूचना अनुसूची

1. श्रमिक संघ का नाम तथा पता :–
2. स्थापना का वर्ष :–
3. पंजीयन संख्या तथा वर्ष :–
4. भामस से संबद्धता की संख्या तथा वर्ष :–
5. स्थापना के समय सदस्यों की संख्या :–
6. स्थापना की आवश्यकता

   (क)

   (ख)

   (ग)

   (घ)

7. स्थापना के लिये पहल तथा प्रयास करने वाले व्यक्तियों से संबंध में विवरण :–

	नाम	पेशा	मजदूर या गैर मजदूर	शैक्षिणक योग्यता	राजनीतिक दल/विचार
(क)					
(ख)					
(ग)					
(घ)					

8. संघ की प्रकृति – शिल्प/ उधोग/ सामान्य/ महासंघ
9. औद्योगिक इकाई का नाम (जो संघ के क्षेत्र में आता है) तथा मजदूरों की कुल संघ

19. संघ की स्थिति

(क) भान - निजी/किराया दर

(ख) कार्यालय- कर्मचारी की संख्या तथा मासिक वेतन

(ग) उपस्कर

(घ) जमा रकम

(ङ) वाहन

(च) संचार माध्यम-रेडियों/टी0 वी0/टेलिफोन/प्रेस

20. संघ के प्रकाशनों के नाम :-

21. संघ द्वारा किये जा रहे कल्याण - कार्यो का विवरण

22. संघ द्वारा किए गयें संघर्षो का विवरणः-

वर्ष	संघर्ष की प्रकृति	मुख्य माँगे	परिणाम	श्रमिकों की भगीदारी प्रतिशत मे श्रमिक सदस्य

23. संघ क्षरा सम्पन्न सामूहिक समझौता का विवरणः-

वर्ष	मांग पत्र देने की तिथि	मुख्य मार्गे	बातचीत कि कितने दौर चले	क्या हड़ताल समझौते की भी करनी पड़ी तिथि

परिशिष्ठ -2

सदस्यों में भमस के प्रति आकर्षण के कारण तथासंघ एवं नेताओं की छवि

सूचना अनुसूची

1.0 व्यक्तिगत सूचनायें :

1.1 उत्तरदाता का नाम :

1.2 संस्थान का नाम एवं पद नाम :

1.3 उम्र :

1.4 लिंग :

1.5 स्थायी निवास-स्थान : ग्रामीण/अर्द्धशहरी/शहरी

1.6 वैवाहिक स्थिति : आविवाअित/विवाहित- तलाक शुदा

1.7 धर्म :

1.8 जाति : ऊँची जाति/पिछड़ी जाति/अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति।

1.9 शैक्षणिक योग्यता :

1.10 मौजूदा संस्थान कब से कार्यरत है ?

- 5 वर्ष से कम
- 5 वर्ष से उपर तथा 10 वर्ष तक
- 10 वर्ष से 15 वर्ष तक
- 15 वर्ष से 20 वर्ष तक
- 20 वर्षसे 25 वर्ष तक
- 25 वर्ष से उपर

1.11 क्या इस संस्था में कार्य करने के पहले अन्यंत्र कार्य किया है ? हॉ/नही

1.12 यदि हॉ तो निम्नांकित व्योरा दें।

संस्था का नाम	पद-नाम	कार्यकाल	संस्था त्याग के कारण

(छ) राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ/ भारतीय जनता पार्टी की विचारधरा में आस्था।

(ज) संघ के नेतृत्व में मेरी जाति केलोगों का बोल-बाला-

(झ) संघ के नेतृत्व में मेरे क्षे के लोगों का बोल-बाला -

(ञ) देश एवं प्रदेश की सत्ता में जनता पार्टी का आना -

(ट) व्यक्तित्व के निखार की संभावना -

(ठ) नेतृत्व में आने की संभवना -

(ड) नेतृत्व में आनेकीसंभवना -

(ढ़) राजनीति में प्रवेश करने की इच्छा -

(ण) आर्थिक लाभ एवं राजनीतिक/सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि -

2.5 इस संघ की सदस्यता ग्रहण करने के पूर्व क्या आप किसी श्रम संघ के सद स्य थे? -

2.6 कदि हाँ तो लिम्नोकित सचना ये दें।

(क) संघ का नाम -

(ख) महांघ का नाम जिससे संघ सम्बद्ध था -

(ग) कितनी अवधि तक सदस्य रहे? -

(घ) सदस्यता त्यागने के कारण

(1)

(2)

(3)

(4)

(5)

3. <u>संघ की गतिविधियाँ में भागीदारी</u>

3.1 क्या संघ द्वारा निर्धारित अंतराल पर आम सदस्यों की बैठकों आयोजित की जाती है? - हाँ/नही

3.2 यदि हाँ तों 1985-86 मं आयोंजित बैठकों में से कितने में आप उपस्थित हुए।

3.8 अगर चुनाव उचित एवं स्वच्छ नहीं होते तों इसके कारण क्या है ?

(क)

(ख)

(ग)

3.9 क्या संघ की गतिविधियों पर राजनीतिक प्रभाव पड़तें है ? – हॉं/नही

3.10 यदि हॉं तों क्या यह राजनीतिक प्रभाव संघ के कार्य–कलाप में बाधाउपस्थित करतें हैं ? हॉं/नही

3.11 क्या संघ को राजनीतिक प्रभाव में नहीं आना चाहिए ? – हॉं/नहीं

3.12 क्या श्रमसंध के नेृतत्व में बाही व्यक्ति का रहना बांछित है ? हॉं/ नहीं

3.13 यदि नही तों क्यों ?

(क)

(ख)

(ग)

3.14 निम्नांकित मुद्धों पर आप का संघ किस हद तक प्रभाव–कारी है ?

(क) संदस्यों के हितों की रक्षा– बहुत ज्यादा / ज्यादा साधारण / कम / बहुत कम

(ख) सदस्यों के हित वर्धन में –

(ग) प्रबन्ध के समक्ष सदस्यों के विचारों के प्रतिनिधि से

(घ) सदस्यों के रोजमर्रे की शिकायतों के समाधान में

(ड़) संघ की गतिविधियां के संचालन के लिए उपलब्ध साधन कों गतिशील करने में

(च) सदस्यों में आपसी सहयोग की भावना कायम करने में

(छ) प्रबन्धकों के साय सामूहिक वार्ता करने में

(ञ) सदस्यों में शिक्षा के प्रचार में

(झ) राजनीतिक विचारधरा के प्रचार – प्रसार में

3.22 इस अवसर पर आप ने क्या किया ?

(क) भाग लिया

(ख) दूसरों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया

(ग) भाग नहीं लिया

(घ) दूसरों को भाग लेने से मना किया

3.23 यदि आप ने भाग नहीं लिया तो क्या वह सीधी कर्रवाई का आह्वान अनुचित था ? हां/नहीं

3.24 यदि हॉं तो किस आधर पर ?

(क) मांग अनूचित थी

(ख) मांग उचित था पर समय उपर्यूक्त नहीं था

(ग) न तों मांग ही उचित थी औन समय ही उपर्युक्त था

(घ) उपलब्ध शंतिपूर्ण तरीकों का पूरा इस्तेमाल नहीं हूआ था

(ङ) क्या आपने अनावश्यक सीधी कारवाई के निर्णयों का विरोध किया है ? – हां/नही

(च) क्या आपने आनावश्यक सीधी करवाई के निर्णयों का विरोध किया है ? हां/नही

3.25 अन्य संघों की तुलना में आप के संघ की क्या विशेषतायें है ?

(क)

(ख)

(ग)

3.26 आप की दृष्टि में आप के संघ किन-किन बुराइयों एवं कमजोरियों से ग्रसित है ?

(क)

(ख)

(ग)

(ट) राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में तल्लीन

(ठ) जातीयता की भवना से ओत–प्रोत

(ड) साम्प्रदायिकता कों प्रोत्साहन

4.4 श्रमसंघों एवं नेताओं के संबंध में कुछ कथन प्रस्तुत किये गये हैं। आप बताएँ कि आपके संघ एवं नेताओं के संबंध में वे कथन सही या गलत है?

कथन	सही	गलत	मत नहीं
(क) सामान्यतः एक नेता संघ में सदस्यों के कल्याण हेतु आता है।			
(ख) हॉलाकि एक नेता अपने सदस्यों की सेवा करना चाहता है, लेकिन अपनी सुस्ती एवं अकर्मण्यता के कारण वह ऐसा नही कर पाता।			
(ग) संघ के नता मजदूरों की समस्याओं से पूरी तरह वाकिफ है।			
(घ) संघ के नेता अपने स्वार्थो की सिद्धि में कशगुल रहतें हैं।			
(ङ) नेता संघ के कार्य निष्ठापूर्वक करतें है। कुछेक को छोड़कर एंघ के सभी नेता श्रमिक ही है।			
(छ) हमारे नेता श्रमिक के रूप में कर्तव्य परायण होने की सलाह देते है।			
(ज) संघ के नेता हमेशा राजनीति से ग्रसित रहतें है।			

कथन	सही	गलत	मत नहीं
(ध) नेताओं के रहन-सहन का ढंग ऐसा है कि इसका प्रशंसा हम सब करतें हैं।			
(न) संघ द्वारा कार्यकर्त्ताआं के समुचित प्रशिक्षण के लिए अभ्यास वर्गो का आयोजन करते रहतें हैं।			
(प) नेतागण सदस्यो के गलत व्यवहार कों भी संर्थन देते है।			
(फ) नेतागण आम तौर से श्रमिक के रूप में काम से जी चूरातें है।			
(ब) संघ के नेता श्रमिक के रूप में कर्त्तव्य-परायण है।			

प्रशिक्षण की अवधि –

1.13 पेशा –

1.14 जीवन निर्वाह के साधन

(क)

(ख)

(ग)

1.15 मासिक आय तथा आय के स्रोत –

	श्रोत	आय
(क)		
(ख)		
(ग)		
(घ)		

(ङ) ट्रेड यूनियन–

1.16 परिवार के सदस्यों की संख्या –

(क) लिंग के आधार पर– पुरूष / महिला :–

(ख) आर्थिक स्थिति के अनुसार – उपार्जक / परावलंबी

(ग) शिक्षा के आधार पर – निरक्षर / साक्षर

1.17 परिवार का कुल मासिक आय –

1.18 क्या आप किसी राजनीतिक दल कि सदस्य हैं। हॉं / नही

1.19 (2) यदि हॉं तों दल का नाम बतायें –

1.20 (3) यदि नही तो निम्नलिखित दलों में से किसकी विचारधारा आपके ज्यादा नजदीक है:–

(क) सी0पी0 आई0

(ख) कांग्रेस आई

(ग) लोकदल

(घ) भारतीय जनता पार्टी

(ङ) जनता पार्टी

(च) सी.पी.एम.

(छ) अन्य

1.28 क्या शहर में आपका अपना मकान है। हॉ/नही

1.29 यदि हॉ तों किसने बनवाया है।:- (क) पुश्तैनी (ख) खुद

1.30 आपके घर में निम्नलिखित में से कौन-कौन से उपकरण का वस्तुएँ हैं।

सवारी - साइकिल/स्कूटर/मोटर/मोटर साइकिल/जीप

उपकरण - टी. वी. रेडियों/टेप रेकार्डर/टेलीफोन/फ्रीज/कूसूर

1.31 आप कौन-कौन से अखबार या मैगजीन नियमित रूप से खरीदते है।

(क) दैनिक अखबार

(ख) पत्रिकॉए-

(ग) मजदूर संघ से संबंधित पत्र-पत्रिकाएँ-

1.32 मजदूरों की समस्याओं पर आपने कभी कोंई लेख, कविता या कहानी लिखी है।

शीर्षक	किस पत्र-पत्रिका में छपा

1.33 आपके अनूसार आपके रहन-सहन का स्तर क्या है-

निम्न / निम्न मध्य / मध्य / ऊँचा

1.34 आपके घर में खाना बनाते एवं सफाई करने का काम कौन करता है

(क) परिवार के सदस्य

(ख) नौकर/सेवक

(ग) श्रमसंघ के सदस्य

1.35 क्या आप किसी देवी-दवेता के उपासक है। -हॉ/नही

2.1 क्या आप वर्तमान समय में उस संस्थान के वेतन पाने वाने कर्मचारी या मजदूर हैं जहॉ ट्रेड यूनियन कार्य करता हैं - हॉ/नही

2.11 क्या आपके संघ की स्थापना से श्रम संघ की बहुलता की प्रोत्साहन नहीं मिल। – हॉ/नही

2.12 श्रम संघों की परिस्परिक प्रतिस्पर्धा से मजदूर संघ आन्दोलन की एकता खण्डित होती है

2.13 क्या सामुहिक सौदेवाजी के लिये शीलबारगेनिृग ऐजेंट का निर्धारण होना चाहिए। हॉ/नही

2.14 यदि हॉ तों सौदा एजेंट किसे नियुक्त करना चाहिए।

(क) बहुमत संघ को

(ख) कई संघो को एक साल

(ग) सभी संघों को

2.15 अगर बहुमत संघ को ही सौदा एजेंट बनाना हो तों उसके बहुमत में होने के दरावे का सत्यापन कैसे क्रिया जाय।

(क) सघों की सदस्य संक्ष्या के सत्यापन द्वारा।

(ख) सभी संघों के सभी सदस्यों के बीच चुनाव द्वारा।

(ग) सभी श्रमिकों (सदस्यों या गैर सदस्यों) के बीच चुनाव द्वारा।

2.16 यह चुनाव या सत्यापन किस एजेंसी द्वारा होना चाहिए।

2.17 क्या आपका संघ मान्यता प्राप्त संघ है। हॉ/नही

2.18 यदि हॉ तो कितने वर्षो से

2.19 यदि नहीं तों क्या आप का संघ मान्यता प्राप्त करने का दावेदार है। हॉ/नही

2.20 मान्यता प्राप्ति के लिये आपके संघ ने कौन–कौन से प्रयास किये है।

क– ....

ख– ....

ग– ....

2.21 क्या आपका संघ घटकवाद के पैदा होने के क्या कारण है।

2.22 यदि हॉ तो घटकवाद के पैदा होने के क्या करण हे।

2.23 घटकवाद के कारण आपके संघ को क्या हानि हुई या हो रही है।

3.9 भामस में आने के पूर्व आप किन यूनियनों के सदस्य का पदाधिकारी थें।

संघ का नाम	संबद्धता महासंघ का नाम	सदस्य	पदाधिकारी पद नाम	अवधि

3.10 अन्य संघों को छोड़कर आप भामस के संघ तथा उसके नेतृत्व में क्यों आये।

3.11 संघ को मजबुत करने कि लिये तथा श्रमिकों के आन्दोलन को सफल बनाने के लिय आपने कितनी कारवाईयों में भाग लिया या यातनायें झेलीं।

बारम्बारता संख्या

(क) जल यात्रा

(ख) पूलिस लाठीचार्ज के शिकार

(ग) प्रबन्धकों के गुण्डों द्वारा अपमानित

(घ) हड़ताल का नेतृत्व

(ड.) धरना (सत्याग्रह)

(च) घेराव

(छ) अमरण अनर्शन

(ज) संघ कार्य के लिय चलाये गयें मुकदमें

(झ) प्रबन्ध द्वारा दंड
- निलम्बन
- चेतावनी
- जूर्माना
- बर्खास्तगी
- अवनति
- अन्य

(ञ) प्रतिद्वंदी संघें द्वारा अपमानित

3.19 क्या हॉ तो इसके कारण क्या है।

(क)

(ख)

(ग)

3.20 श्रम संघों की वित्तीय स्थिति सुधारने के लिये आपके क्या सूझाव है।

(क)

(ख)

(ग)

3.21 भामस में अधिकतर श्रम संघ श्रमिकों के लिय अपने तौर पर कल्याण कार्य नही करते है। आपका संघ कोई कल्याण कार्य करता है तो उसका विवरण दें।

3.22 औद्योगिक विवाद के समाधान के निम्नलिखित तरीकों में से आप किसे पसंद करतें है।

(क) सामुहिक सौदेबाजी (हड़ताल) के अधिकार के साथ

(ख) सामूहिक सौदेबाजी (बिना हड़ताल) के अधिकार के

(ग) पंच – निर्णय .

(घ) न्यायालय

3.23 क्या न्यायालयों द्वारा विवाद के समाधान के उपयोग से श्रम संघ के आंदोलन को क्षति हुई है। – हॉ/नही

3.24 यदि हॉ तो किस तरह और कितनी बहुत ज्यादा / ज्यादा / थोड़ा/ बिलकुल नही किस तरह –

4.1 क्या आपके संघ या महासंघ का संबंघ किसी राजनीतिक दल से हैं। हॉ/नही

4.2 यदि हॉ तो किस दल से और कैसा ।

दल का नाम–

संबंध की प्रकृति – सौम्पचारिक/ अनौपचारिक

4.3 श्रम संघ को राजनीतिक दलों से संबंध से नहीं होता है या हानि लाभ / लाभ / हानि / दोनों

क		ख
1. वर्ग संघर्ष	या	वर्ग सहयोग
2. व्यवस्था परिवर्तन	या	तुरत लाभ
3. क्रान्तिकारी संधवाद	या	व्याव्सायिक संघ
4. उद्योगिक संघ	या	शिल्प संघवाद
5. वैज्ञानिक समाजवाद	या	गॉंधी जी का रामराज्य
6. उद्योगों का राष्ट्रीयकरण	या	श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण
7. निजी सम्पत्ति की कानुन द्वारा समाप्ति	या	निहज सम्पति को कानुन द्वारा सीमित करना
8. धर्म निरपेक्षता	या	हिन्दु राष्ट्र

कार्यसमिति सदस्य	– श्री रामदेव प्रसाद	– बिहार
	– श्री सूरेश प्रसाद सिन्हा	– बिहार
	– श्री लक्ष्मण रवीन्द्र सिंह	– जम्मु, काश्मीर
	– श्री रामलुभाया बाबा	– पंजाब
	– श्री कुँवर विजय सिंह	– हिमाचल
	– श्री जीत सिंह खुराना	– हरियाना
	– श्री राज कुमार गुप्ता	– दिल्ली
	– श्री राम दास पांडे	– दिल्ली
	– श्री घनश्याम दास गुप्ता	– उत्तर प्रदेश
	– श्री रामदोर सिंह	– उत्तर प्रदेश
	– गिरीश अवस्थी	– उत्तर प्रदेश
	– परितोष पाठक	– पश्चिम बंगाल
	– श्री बैजनाथ राय	– पश्चिम बगांल
	– श्री द्वारिका प्रसाद यादव	– आसाम
	– श्री अच्यूत राव देशपांडे	– आसाम
	– श्री रंगनाथ माहायात्री	– उड़ीसा
	– श्री सरोज मित्रा	– उड़ीसा
	– श्री मदन लाल सैनी	– राजस्थान
	– श्री श्रषभचन्द्र जैन	– राजस्थान
	– श्री धन प्रकाश	– राजस्थान
	– श्री षिराज शर्मा	– राजस्थान
कार्यसमिति सदस्य	– श्री अरविन्द मोंघे	– मध्य प्रदेश
	– श्री केशव भई ठक्कर	– गुजरात
	– श्री हंसमुख भाई देव	– गुजरात
	– श्री नाना खेड़कर	– विदर्भ
	– श्री एम. जी. डोंगरें	– महाराष्ट्र
	– श्री डी. एम. रावदेव	– महाराष्ट्र
	– श्री एस. एन देशपांडे	– महाराष्ट्र

परिशिष्ठ –5

भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश
13 वाँ अधिवेशन, जमशेदपुर, 29–31 दिसम्बर, 1985
कार्य समिति का चुनाव

अध्यक्ष	श्री रामदेव प्रसाद	
उपाधायक्ष	श्री कूमार आशोक विजय	पटना
उपाध्यक्ष	श्री नलिनी कान्त मुखर्जी	जमशेदपुर (कान्ड्र)
उपाध्यक्ष	श्री भगवान प्रसाद	उत्तर बिहार, सिवान
उपाध्यक्ष	श्री शुभनारायण तिवारी	जमालपुर, रेलवे
महामंत्री	श्री सुरेश प्रसाद सिन्हा	
मंत्री	श्री के. सी. झा	बोकारों
मंत्री	श्री अरूण कुमार ओझा	पटना
मंत्री	श्री शंभु शरण श्रीवास्तव	दाउनगर
मंत्री	श्री रघुबंश प्रसाद सिंह	खलारी
कोषध्यक्ष	श्री बी. एल. दास	पटना
अंवेक्षक	श्री राम चरित्र यादव	बरौनी
संगठन मंत्री	श्री सीताराम सिंह	जपला
संगठन मंत्री	श्री कनक प्रकाश	बिहार शरिफ
संगठन मंत्री	श्री यमुना राय	

परिशिष्ठ - 6

संविधान एवं नियमावली

1. संघ का नाम :- .... होगा।

2. संघ के प्रधान कार्यालय का पता .... होगा।

(यदि इस कार्यालय के पते में कोई परिवर्तन होगा तों ऐसे परिवर्तन से प्रभावी होने की तारीख से 14दिनों के भीतर सभी संबद्ध व्यक्तियो एवं निबन्धय, श्रमिक संघ, बिहार को इसे सम्यक रूप से सूचित किया जायगा)-

3. संघ की मुहर-संघ एक निगम - निकाय होगा और उसकी एक सामानय मुहर होगा। निबंधक, श्रमिक संघ के पास पेश किए जानेवाजे सभी कागजों पर संघ की मुहर लगी रहेगी

4. संघ के निम्नलिखित उद्देश्य होंगें :-

(क) .... मे काम करने वाले कर्मचारियों को संगठित करना।

(ख) सदस्यों के अधिकारों और हितों का रक्षा करना तथा सदस्यों और उनके नियोजकों के बीच संबंध विनियमित करना।

(ग) उनके लिए जीवन और काम को उचित शर्ते सुनिश्चित करना।

(घ) बेहतर मजदूरी एवं काम की शर्तो के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना।

(ङ) दुर्घटना की दश में सदस्यों को कर्मकार प्रतिकर अधिनियम के अधीन क्षतिपूर्ति दिलवाने का प्रयत्न करना।

(च) बीमारी, बुढ़ापा, बेकारी और मृत्यु की दशा में सदस्यों और उनके आश्रितों के लिए सहायता की व्यवस्था के लिए प्रयत्न करना।

opted) होने के प्रयोजनार्थ संघ के मान्यक (Honorary) सदस्य बनाये जा सकेगें । ऐसे मान्यक सदस्यों की संख्या किसी भी समय पाँच या कार्यकारिणी समिति की कुल संख्या के आर्धे, से उनमें जो भी कम हो, अधिक न होगी।

8. सदस्यता पंजीः- सदस्यों की, जिसके अनतर्गत मान्यक सदस्य भी हैं। एक पंजी होगी जिसमें प्रतयेक सदस्य का नाम, उम्र पता और पेशा दिया रहेगा। वह पंजी संघ के निबंधित कार्यालय में रखी रहेगी तथा जिम्मेंवार पराधिकारियों द्वारा सुचित रूप से भरी जाएगी । संघ का कोई भी सदस्य या पदधारी निरीक्षण करने कके तीन दिनों की पूर्व सूचना देकर सप्ताह में किसी भी दिन संघ के सामान्य कार्यालय समय में इस पंजी का निरीक्षण कर सकेगा।

9. सदस्यों का निष्कासन (हटाया जाना) :- जाल-साजी का काम करने या संघ कारिणी समिति के प्रतिकुल करने के कारण संघ के कोई भी सदस्य जिसके अन्तर्गत कार्य- कारिणी समिति के सदस्य भी सम्मिलित है, सदस्यें की आम सभा की बैठक के निर्णय से संघ की सदस्यता से निष्कासित कियो जा सकिंगे। परन्तु निष्कासित किए जाने वाले सदस्य को अपने आचरण का औचित्य स्पष्ट करनेका पर्याप्त अवसर दिया जायेगा।

10. साान्य बैठक (आम सभा) :- निम्नलिखित कार्यो के संचालन के लिए प्रति वर्ष जनवरी/फरवरी में संघ के सभी सदस्यो की एक सामान्य (आम) वार्षिक बैठक होगीः-

(क) संघ द्वारा किये.गयें कार्यो की रिपोर्ट और अंकेक्षित लेखा विवरण को पारित करना ।

(ख) अगने सान के लिए संघ के पदाधिकारियों का निर्वाचन करना।

(ग) अध्यक्ष की अनुमति से पेश किए गये किसी अन्य कार्य-क्रम कों सम्पादित करना।

वार्षिक सामान्य बैठक (आम सभा) के लिए कोरम संघ की पंजी में दर्ज सदस्यों की कुल संख्या को दो तिहाई का होगा। सदस्यों को सामान्य बैठक की सुचना कम से कम 15 दिन पूर्व

जाऐंगी।

हर दो महीने पर कार्यकारिणी समिति की कम से कम एक बैठक होगी अध्यक्ष की सम्मति से महामंत्री बैठक बुलाएगा और कार्यावली सहित इस तरह की बैठक की सूचना बैठक के कम से कम तीन दिन पहले कार्यकारिणी समिति के हरेक सदस्य को देदी जायगी। कार्यकारिणी की बैठक का कोरम इसके कुल सदस्यों के दो तिहाई सदस्य से पुरा होगा।

कार्यकारिणी समिति को यह शक्ति प्रदत्त होगी कि संघ के किसी भी सदस्य को, जिसके अंतर्गत उसका पदधारी भी है, पर्याप्त कारण के साधारण बहुमत द्वारा मुअत्तल कर दे बशर्ते की यह बैठक की कार्यावली में शामिल कर लिया गया हो और इसके लिए सामान्य निकाय का अन्तिम अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाय। हरेक बैठक में कार्यकारिणी समिति महामंत्री से रिर्पोट प्राप्त करेगी और लेखा पास करेगी। यह सामान्यतः संघ और इसके पदाधिकारियों के कार्यकलापों का पर्यवेक्षण करेगी। किन्तु इन पर अन्तिम नियंत्रण सामान्य निकाय का होगा। संघ का वार्षिक रिपोर्ट अंकेक्षित लेखा वार्षिक सामान्य बैठक में रखे जाने के पहले कार्यकारिणी समिति द्वारा अनुमोदित किये जायेगें।

12. पदाधिकारियों का कर्त्तव्य : अध्यक्ष संघ के सभी के कार्यकलापों का पर्यवेक्षण और इनके नियंत्रण करेगा। वह संघ की कार्यकारिणी समिति और सामान्य बैठक अध्यक्षता करेगा और इनके कार्यो का संचालन करेगा। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में वरीयता के अनुसार उपाध्यक्ष कार्य करेगा। अध्यक्ष को पचास रुपया तक खर्च करने का प्राधिकार देने का शक्ति होगी, किन्तु इसके लिए अगली बैठक अध्यक्षता करेगा और इनके कार्यो का संचालन करेगा। अध्यक्ष की अनुपस्थिति में वरीयता के अनुसार उपाध्यक्ष कार्य करेगा । किन्तु इसके लिए अगली बैठक में कार्यकारिणी समिति का अनुमोदन प्राप्त कर लेना होंगा।

2. उपाध्यक्ष अध्यक्ष को दैनिक कार्यो में सहायता करेगा और वह उनकी अनुपस्थिति में उसके स्थान पर कार्य करेगा।

3. महामंत्री संघ का मुख्य प्रशासी पदाधिकारी होगा और निम्नलिखित बातों के लिए उतरदायी होगाः–

करना चाहे तो वह संध के कार्यालय में निरीक्षण के लिए कम-से-कम तीन दिनो की सूचना देकर अवकाश दिन को छोड़कर सप्ताह के किसी भर दिन सामान्य कार्यकाल में लेखा बही का निरीक्षण कर सकेगा। इसी तरह संध का लेखा निबंध ाक, श्रमिक संध द्वारा निरीक्षण के लिए भी संध के कार्यालय में या उसके द्वारा यथानियत स्थान में उपलब्ध रहेगा।

14. प्रयोजन जिनके लिए संध की समान्य निधि खर्च की जा सकेगी- संध की सामान्य निधियाँ निम्नलिखित से भिन्न कोई अन्य उद्दश्यो पर व्यय नही की जायेगी, नामतः-

(क) संध के पदधरियो को वेतन, भत्ते और व्ययो का भुगतान,

(ख) श्रमिक संध के प्रशासन के लिए व्ययो का भुगतान जिसके अन्तर्गत श्रमिक संध की साधारणा निधियो के लेखाओ का अकेक्षण भी सम्मिलित है।

(ग) ऐसी कोई वैधिक कार्यवाही चलाना, जिसमें ट्रेड यूनियन या उसका कोई पक्षकार (पार्टी) हो, बशर्ते कि ऐसी कार्यवाही या उसके प्रति कार्यवाही ट्रेड यूनियन किसी अधिकार को अथवा संध के किसी सदस्य को उसके नियोजक के साथ या उसके द्वारा किसी नियोजित किसी व्यक्ति के साथ संबंध के चलते होने वाले किसी अधिकार को प्राप्ति या उसकी रक्षा के लिए चलायी जाए,

(घ) श्रमिक संध या उसके किसी सदस्य की ओर से श्रम-निवाद (मालिक मजदूर के झगड़े) का संचालन।

(ङ.) श्रम विवाद (Trade Dispute) के कारण हुई क्षति के लिए सदझयो कि क्षतिपूर्ति का दिया जाना ।

(च) सदस्यो की मृत्यु, बुढ़ापे, बिमारी, दुर्घटना, शारीरिक असमर्थता या बेरोजगारी के कारण सदस्यो या उनके आश्रितो के भत्ते,

(छ) सदस्यो की जीवन बीमा पॉलिसियों अथवा बिमारी, दुर्घटना या बेरोजगारी के विरूद्ध सदस्यो का बीमा करने वाली पॉलिसियो को दिया जाना या उसके अन्तर्गत दायित्व का ग्रहण,

समिति द्वारा यथा अनुमोदित बैंक या बैंको में संध के नाम से जमा की जाऐगी तथा उक्त लेखो का संचालन उसके महामंत्री और कोषघ्यक्ष अथवा अघ्यक्ष और कोषाघ्यक्ष द्वारा संयुक्त रूप से किया जाएगा। महामंत्री या कोषाघ्यक्ष चालू खर्चे के लिए अपने पास अधिक–से–अधिक............रू0 रखेगा।

16. राजनितिक प्रयोजनो के लिए पृथक निधि खोलना– संध एक पृथ्क निधि ऐसे अंशदानी से गठ्न कर सकेगा जो उस निधि के लिए पृथकतः उद्गृहीत किए गए हो, जिसमें से भुगतान श्रमिक सत्र अधिनियम की धारा 16 की उपधारा (2) में निर्दिष्ट उद्देश्यो में किसी को अग्रसर करने में उसके सदस्यो के नागरिक और राजनैतिक हितों की अभिवृद्धि के लिए किए जाए संध का सदस्य होने के लिंए उक्त निधि में चन्दा देना जरूरी नहीं होगा और कोई भी सदस्य चंदा देने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा तथा यदि कोई व्यक्ति उक्त निधि में चन्दा देने से इन्कार करे तो वह इससे किसी बात के लिए नियोग्य नहीं किया जा सकेंगा। राजनीतिक निधि का अंकेक्षण करेगा।

17. वार्षिक विवरण प्रस्तुत करना – ट्रेड यूनियन अधिनियम के अधिनियम, 1926 की धारा 28 के अनुसार महामंत्री ट्रेड यूनियन के निबन्धन के पास प्रत्येक वर्ष 30 अप्रैल तक संध का वार्षिक विवरण प्रस्तुत करेगा।

18. नियमावली का संशोधन, परिवर्तन या रद्द किया जाना– ट्रेड यूनियन अधिनियम के अधिभावी उपबंधो के अधिन रहते हुए, संध का कोई भी नियम समसन्य निकाय का बैठ्क में सदस्यो के बहुमत द्वारा संशोधित परिवर्तित या रद्द किया जा सकेगा। (उपर्युक्त बैठ्क के 15 दिनो के भीतर नियम या नियमो में किए गये परिवर्तन की सूचना निबंधक के पास भेज दी जाएगी। परिवर्तन को तबतक प्रभावी न माना जाएगा, जबतक उसका निबंधन ना हो जाय)

19. हड़ताल– संध हड़ताल पर जाने का निर्णय तबतक ना लेगा जबतक सौहार्दपूर्ण ढंग से समझौता के लिए किए गए सभी र्पयास विफल ना हो जाए। हड़ताल तबतक न कि जाएगी जबतक इस प्रयोजन से बुलाई गई बैठ्क में सदस्यो का सामसन्य निकाय इस संबंध में अपना अनुमोदन नहीं देदें। यदि

ग्रंथ सूची

1. अयोध्या सिंह, भारत का मजदूर आन्दोलन
2. दत्तोपंत ठेंगड़ी, भारतीय मजदूर संघ के बढ्ते चरण, कानपुर
3. दत्तोपंत ठेंगड़ी, सप्तक्रम
4. दत्तोपंत ठेंगड़ी, लक्ष्य औा कार्य
5. दत्तोपंत ठेंगड़ी, आपात स्थिति और भारतीय मजदूर संध
6. दत्तोपंत ठेंगड़ी, विचार सूत्र
7. श्री गुरूजी समग्र दर्शन, खण्ड – 2
8. श्री गुरूजी समग्र दर्शन, खण्ड – 4
9. श्री गुरूजी समग्र दर्शन, खण्ड – 6
10. भाल चन्द्र कृष्णाजी केलकर, पं0 दीन दयाल उपाध्याय विचार दर्शन, खण्ड–3
11. भारत की नवचेतना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध, 1985
12. भामस श्रमनिति (खण्ड–3) अध्याय–17
13. भामस श्रमनिति अध्याय–6
14. भामस, भारत के श्रमिको कि मांगो का राष्ट्रीय अधिकार– पत्र
15. भारतीय मजदूर संध, विधान
16. भारतीय मजदूर संध का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन, दिल्ली
17. भारतीय मजदूर संध का द्वितीय अखिल भारतीय अधिवेशन, कानपुर
18. भारतीय मजदूर संध का चतुर्थ अखिल भारतीय अधिवेशन, अमृतसर
19. भारतीय मजदूर संध का पंचम अखिल भारतीय अधिवेशन, जयपुर

भारत सरकार द्वारा प्रमाणित

40. भारत सरकार राष्ट्रीय श्रम आयोग की रिपोर्ट, 1969

41. केन्द्रीय श्रमिक संगठनो की सत्यानित सदस्य संख्या, दिनांक 31.12.1980

पद – संक्षेप

ए0 आई0 टी0 यू0 सी0	– ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कॉंग्रेस
भामस	– भारतीय मजदूर संध
भाजपा	– भारतीय जनता पार्टी
आर0 एस0 एस0	– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संध
सी0 आई0 टी0 यू0	– सेन्टर ऑफ इण्डियन ट्रेड यूनियन्स
आइ0 एन0 टी0 यू0 सी0	– इण्डियन नेशनल ट्रेड यूनियन कॉंग्रेस
एन0 एल0 ओ0	– अन्राष्ट्रीर्य श्रम संगठन
यू0 टी0 यू0 सी0	– यूनाईटिड ट्रेड यूनियन कॉंग्रेस
बिहार भामस	– बिहार भारतीय मजदूर संध
राँची भामस	– राँची भारतीय मजदूर संध

प्रारम्भिक काल में संगठनकर्त्ता के रुप में इसे कुछ अन्य लोगों के भी सहयोग प्राप्त हुए जिनमें प्रमुख थे बद्रिका नाथ झा, कालिकानन्दन, युगल किशोर, सुवंश पाठक तथा कृष्ण ठाकुर। ये सभी लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं भारतीय जनसंघ की विचारधारा से पूर्णतः प्रभावित थे। इन नेताओं में से अनेक आज भी राजनीतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। राम प्यारे लाल बिहार के भाजपा नेताओं में से एक हैं। रामदेव प्रसाद बिहार भामस के अध्यक्ष हैं। कालिकानन्दन जो पेशा से अधिवक्ता हैं, विश्व हिन्दू परिषद्, बिहार शाखा, के अध्यक्ष हैं। युगल किशोर तथा सुवंश पाठक भी भाजपा एवं भामस से जुड़े हुए हैं तथा सक्रिय है।

बिहार भामस की स्थापना की मुख्य प्रेरणा राजनीति से मिली। 1960 के दशक में भारतीय जनसंघ ने बिहार की राजनीत में अपना स्थान बना लिया था तथा इसे अपने को ज्यादा शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बनने के लिए समाज के विभिन्न वर्गो को संगठित करना आवश्यक प्रतीत हुआ। बिहार भामस की उत्पत्ति के प्रत्यक्ष कारण के रुप में इस कारक का नाम लिया जाना चाहिए। कैलाशपति मिश्र, सांसद, ने शोधकर्त्ता को यह जानकारी देते हुए बतलाया कि भारतीय जनसंघ की बिहार इकाई ने अपने को प्रभावशाली बनाने, राष्ट्रवादी दर्शन के प्रचार-प्रसार करने तथा उस दर्शन के अनुरुप व्यक्ति निर्माण के लिए भामस तथा कई अन्य संगठनों के निर्माण में योगदान किया।[2]

3.12 प्रारम्भिक काल (1963 से)

संघ की प्रथम इकाई "प्रदीप लैम्प वर्क्स कर्मचारी संघ", पटना की स्थापना 10 अगस्त 1963 में हुई और इसका निबन्धन 28 मार्च, 1964 का हुआ।[3] पटना सिटी के प्रमुख कार्यकर्त्ता रामबाबू का संगठन में विशेष योगदान रहा। इसी के साथ पटना की बिस्कुट निर्मात्री कम्पनी लकी बिस्कुट में लकी बिस्कुट कर्मचारी संघ की स्थापना की गयी। 14 अक्टूबर, 1964 को भामस, बिहार प्रदेश

---

2. कैलाशपति मिश्र, सांसद से साक्षात्कार
3. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

टिस्को, आई0 टी0 वर्क्स, ट्यूब फैक्टरी, स्टोर क्वायरी आदि में यूनियनों का गठन तथा बद्रिका नाथ झा और रमाशंकर सिंह जैसे दिग्गज श्रमिक नेताओं का भामस में आना हुआ।

अधिवेशन के पूर्व मान्यता प्राप्त सिन्दरी वर्क्स यूनियन, पाथर मजदूर कांग्रेस तथा स्टोन क्वायरी वर्क्स यूनियन जैसी विख्यात यूनियनें सम्बद्ध हो चुकी थीं। सिन्दरी वर्क्स यूनियन की स्थापना 3 दिसम्बर, 1947 को डॉ0 राजेन्द्र बाबू के जन्म दिवस पर हुई थी तथा इसके नेता को अन्तर्राष्ट्रीय श्रम मंचों में प्रतिनिधित्व का अवसर मिला था। इस यूनियन ने मजदूरों के साथ-साथ क्षेत्रीय विकास में शिक्षा, संस्कृति, श्रम-कल्याण, श्रमिक शिक्षा आदि के माध्यम से महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

सम्मेलन में दत्तोपंत ठेंगड़ी , भारतीय रेल मजदूर संघ के अध्यक्ष विनय कुमार मुखर्जी चीनी मिल मजदूर संघ के महामंत्री सुधीर सिंह तथा क्षेत्रीय मंत्री रामनरेश सिंह आदि ने भाग लिया था। प्रतिवेदन के अनुसार इस कालावधि तक 15 हजार सदस्य संख्या थी।

अधिवेशन में नयी कार्य समिति गठित हुई जिसके अध्यक्ष रमाशंकर सिंह (सिन्दरी), उपाध्यक्ष काली पाठक अधिवक्ता, जगदीश गोयनका, महामंत्री रामदेव प्रसाद, संगठन मंत्री डी0 मनोहर एवं कोषाध्यक्ष नित्यगोपाल चक्रवर्ती चुने गये। कार्य समिति में कृष्ण ठाकुर, योगेन्द्र प्रसाद सोनी, बालेश्वर प्रसाद शर्मा, अनिरुद्ध मिश्र, कामेश्वर प्रसाद सिंह, बद्रिका नाथ झा आदि बरिष्ठ श्रमिक नेताओं का समावेश किया गया।

तीसरा अधिवेशन संगठनात्मक एवं कार्य विस्तार की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। संगठन की इस अवधि में कई आन्तरिक एवं वाह्य संघर्षो से जूझना पड़ा।[7] प्रारम्भ के तीन वर्षो में आये इन संघर्षो एवं आन्तरिक संकटों की बेला में श्री रामदेव प्रसाद की कर्त्तव्यनिष्ठता एवं संगठनात्मक सूझ-बूझ के कारण इन्हें महासचिव का भार सौंपा गया। उस समय उनकी उम्र 24 वर्ष मात्र थी। इनके साथ संगठन सचिव के पद पर मनोहर डोंगरे जैसे बरिष्ठ अनुभवी प्रचारक भी दिये गये।

---

7. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

ठेंगड़ी और रामनरेश सिंह ने 500 प्रतिनिधियों को विभिन्न विषयों पर प्रशिक्षित किया। बिहार सरकार ने विभिन्न श्रम समितियों में संघ को प्रतिनिधित्व प्रदान किया।

बिहार राज्य विद्युत बोर्ड के लिए गठित प्रथम वेतन आयोग में रामदेव प्रसाद, अध्यक्ष, विद्युत श्रमिक संघ को, स्वतंत्र पर्षद में रमाशंकर सिंह, प्रदेशाध्यक्ष को तथा केन्द्रीय श्रम परामर्शदातृ पर्षद में प्रथम बार रामदेव प्रसाद, महामंत्री को प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ। इस समय तक यूनियनों की संख्या 45 तथा सदस्य संख्या 54 हजार से ऊपर थी। लेकिन संघ की आर्थिक स्थिति शोचनीय थी।

इसी कालखण्ड में सरकारी कर्मचारियों के क्षेत्र में भागीरथ राम, प्रभासचन्द्र दुबे आदि के नेतृत्व में सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय मंच के नाम से काम खड़ा किया गया।

वर्ष 1971 के अक्टूबर से दिसम्बर माह तक धनबाद, भुरकुंडा और जमशेदपुर में कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इसी प्रकार अ० भा० मंत्री रामनरेश सिंह का प्रवास जमशेदपुर, पटना, राँची, बोकारो, बेरमों, गिरीडीह, जमालपुर में आयोजित किया गया। इस अवधि में अनेक स्थानों पर श्रमिक शिक्षण वर्ग (साप्ताहिक) भी आयोजित किये गये।

वर्ष 1972 में पहली बार केन्द्रीय श्रम सलाहकार पर्षद में भामस को प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ। बैठक की अध्यक्षता श्रम मंत्री श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने की। प्रथम बैठक में ही रामदेव प्रसाद ने पर्षद को सम्बोधित करते हुए भामस की नीति एवं दृष्टिकोण को जोरदार शब्दों में स्पष्ट किया।

17 अप्रैल, 1972 में संघ का सप्तम अधिवेशन कम्युनिटी हॉल, पटना में सम्पन्न हुआ। इसमें प्रतिनिधियों की संख्या 750 थी। अब तक बैंक, बीमा, रेलवे, इंजीनियरिंग, चीनी मिल, निजी परिवहन आदि में भी काम खड़ा हो चुका था। यूनियनों की संख्या 58 तथा सदस्य संख्या 68 हजार तक पहुँच गयी थी।[9] इसी वर्ष

---

9. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

आन्तरिक सुरक्षा अधिनियमों के तहत कारागारों की यात्रा करनी पड़ी।

फिर भी संघ के कार्य में विशेष व्यवधान नहीं पड़ा। इसकी संख्या में कमी नहीं आयी। अनेक कार्यकर्त्ताओं ने भूमिगत आन्दोलन को बल दिया तथा सम्पूर्ण आपात काल में जनतंत्र बहाली के लिए प्रयासरत रहे। जून 1975 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय आपालकाल की घोषणा की जो 1977 में समाप्त हुआ।[11] राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आपालकाल के दौरान सम्पूर्ण क्रान्ति का एक महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ बन गया था। संघ के प्रभाव में रहने वाले सभी संगठन इस क्रांति को सफल बनाने के लिए तथा प्रजातंत्र को पुनः बहाल करने के लिए मैदाने जंग में कूद पड़े। बिहार भामस श्रमसंघों की स्वतंत्रता एवं अधिकार दिन जाने से तिलमिला उठा था। उसने अपने संघों एवं कार्यकर्त्ताओं को आपातकाल से जूझने के लिए गोल बन्द किया, इस क्रम में इसके कार्यकर्त्ताओं को सरकार, सरकारीयंत्र एवं सत्ताधारी पार्टी का कोप भाजन बनना पड़ा। अनेक कार्यकर्त्ताओं को विभिन्न कानूनों के तहत गिरफ्तार किया गया । अनेक को नौकरी से हाथ धोना पड़ा तथा नाना प्रकार की यातनाएँ सहनी पड़ी। भामस के अनेक कार्यकर्त्ताओं ने भूमिगत आन्दोलन को बल दिया तथा सम्पूर्ण आपात्काल में जनतंत्र बहाली के लिए व्यापक अभियान चलाया। बशिष्ठ नाथ त्रिपाठी, किशोरी मोहन प्रसाद, लल्लू सिंह, बी0 पाण्डेय, अमर किशोर झा, चन्देश्वर सिंह और लालचन्द महतो को जहाँ कठोर जेल यातना मिली वहीं रामविलास पाण्डेय की सेवामुक्ति कर दी गयी। 7 डी0 आई0 आर0 और 11 कार्यकर्त्ता मीसा में बंदी बनाये गये थे। आपात् काल में हटिया.श्रमिक संघ कार्यालय को प्रबन्धक ने सामान के साथ छीन लिया था। जोरदार विरोध के कारण एच0 ई0 सी0 प्रबनधक ने दूसरे कार्यालय के साथ उन्हें 5000 रुपये हर्जाना के रुप में दिया। आपात्काल में कांद्रा ग्लास वर्क्स के प्रबन्धक ने यूनियन की मान्यता छीनकर इन्टक को दे दी। पुनः आपात्काल के बाद उसे भामस को मान्यता वापस करनी पड़ी।

अगस्त 1975 में पटना में आयी भीषण बाढ़ ने भी भामस को कम आघात नहीं पहुँचाया। कार्यालय पूर्णतः पानी में डूबा रहा

---

11. दत्तोपंत ठेंगड़ी, आपात स्थिति और भारतीय मजदूर संघ, पृ0 1

1979 में राँची, जमशेदपुर, खलारी, धनबाद, राजगीर में वर्ग आयोजित किये गये तो दूसरी ओर हटिया, पटना, राँची, जमशेदपुर, डालमियानगर आदि में श्रमिक शिक्षण वर्गों का आयोजन हुआ।

15-17 अप्रैल, 1979 में धनबाद में ग्यारहवाँ अधिवेशन सम्पन्न हुआ। अधिवेशन का उद्घाटन केन्द्रीय उद्योग मंत्री जगदम्बी प्रसाद यादव ने किया। इस समय तक 88 यूनियनें और 1 लाख 85 हजार सदस्य संख्या पहुँच गयी थी। 20 यूनियनें अनिबंधित गठित हो चुकी थीं। इस समय तक 19 महासंघ सभी प्रमुख उद्योगों में कार्यरत हो चुके थे। सांसद रीत लाल प्रसाद वर्मा का अपेक्षित सहयोग भी बिहार, भामस को मिल रहा था।

अखिल भारतीय महासंघ

बिहार में इंजीनियरिंग उद्योग में लगे विभिन्न कारखानों में श्रमसंघों की संख्या 23 थी। इनकी सदस्यता 60,660 थी। इसी प्रकार खनन उद्योग में 9 यूनियनें तथा 37,576 सदस्यता, विद्युत में 14,991 तथा रेलवे मजदूर संघ के 4 श्रम संघ गठित थे। जिनकी सदस्यता 34,857 तक पहुँच गयी थी। बीमा में नेशनल आर्गेनाइजेशन ऑफ इन्सयोरेंस वर्क्स और बैंक में एन0 ओ0 बी0 डब्ल्यू0, चीनी में भारतीय सूगर मजदूर संघ के अतिरिक्त सीमेंट, पेट्रोलियम, कागज, मुद्रंण-प्रकाशन, शीशा एवं धातु स्थानीय निकायों आदि में कार्यपूर्ण प्रगति पर पहुँच गया तब तक 11 महासंघ कार्यशील हो चुके थे।

जिस प्रकार देश के श्रमिक मानचित्र में भारतीय मजदूर संघ तेजी से दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया उसी प्रकार प्रदेश भारतीय मजदूर संघ ने 12 वें प्रादेशिक अधिवेशन के समय (18, 19 और 20 अप्रैल, 1982, मुजफ्फरपुर) बिहार प्रदेश में कार्यरत श्रमसंघों में तीसरे स्थान से दूसरा स्थान प्राप्त कर लिया इसके सदस्य के रुप में 110 निबंधित तथा 15 अनिबंधित श्रमसंघ कार्यरत थे, जिनमें सदस्य संख्या 2 लाख 8 हजार थी।[13]

---

13. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, 12वाँ प्रादेशिक अधिवेशन, पृ0 1

इंटक, एटक, सीटू, सभी संगठन इसके पीछे छूट गये । 13 वाँ, अधिवेशन 29-31 दिसम्बर, 1985 को जमशेदपुर में हुआ। महामंत्री के रिपोर्ट के अनुसार श्रमसंघों की संख्या 134 तथा सदस्यता 3,50,000 लाख तक हो गयी।

इस अवधि में कई अखिल भारतीय महासंघों का सफल अधिवेशन बिहार में हुआ। भारतीय डाक-तार कर्मचारी महासंघ के द्वितीय फेडरल कौंसिल का अधिवेशन पटना में अप्रैल, 1983 में हुआ। फरवरी 85 में ऑल इंडिया रिजर्व बैंक वर्क्स आर्गेनाइजेशन की केन्द्रीय कार्य समिति की बैठक पटना में सम्पन्न हुई। बिहार प्रदेश बीडी मजदूर संघ का प्रथम अधिवेशन मई, 1984 में बिहारशरीफ में हुआ जिसका उद्घाटन दत्तोपंत ठेंगड़ी ने किया था। खेतिहार मजदूरों का विशाल सम्मेलन भी पूसा में हुआ।

3.2 बिहार भामस : संघर्ष एवं उपलब्धियाँ

अपने राष्ट्रवादी रुख के साथ ही भामस मजदूर क्षेत्र में आया। बिहार प्रदेश भामस का प्रथम यूनियन प्रदीप लैम्प वर्क्स कर्मचारी संघ के निबन्धन की तिथि यानी 28 मार्च, 1964 से ही संघर्षरत हो गया। इसने विधान सभा के समक्ष प्रदर्शन किया। विधान सभा के अन्दर जनार्दन तिवारी (विधायक, जनसंघ) ने प्रदीप लैम्प के मजदूरों की समस्या को उठाया। हड़ताल हो गयी और 26 कर्मचारी सेवामुक्त कर दिये गये। प्रबन्धक ने तालाबंदी कर दी। डी0 आई0 आर0 के अंतर्गत ताला खुला। मामला श्रम न्यायालय में दिया गया। अगस्त 1969 में उच्चतम न्यायालय ने मजदूरों के पक्ष में निर्णय दिया (23 दिनों की तालाबन्दी में भी श्रम न्यायालय द्वारा मजदूरों के पक्ष में फैसला दिया गया। हटाये गये श्रमिक काम पर लिये गये तथा बकाये वेतन का भुगतान हुआ।

इसी तरह 1966 में पटना-सिटी के लक्की बिस्कुट कम्पनी में 15 दिनों की हड़ताल के फलस्वरुप 10 प्रतिशत मंहगाई भत्ता की वृद्धि हुई।[17] कोयला क्षेत्र में भी जगह-जगह मांगों के लिए

---

17. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

हड़ताल के फलस्वरुप 1973 में श्रीराम वेयरींग वर्क्स यूनियन ने अनेक विवादों का हल किया तथा मान्यता प्राप्त किया। सरायकेला ग्लास में एन0 के0 मुखर्जी के कुशल नेतृत्व में आंदोलन का परिणाम हुआ कि 20 प्रतिशत बोनस मिला। इसी प्रकार शिल्क स्पन मिल्स, भागलपुर में आंदोलन के आधार पर स्थानीय लोगों के नियोजन में सफलता मिला। विद्युत श्रमिक संघ के कार्यालय मंत्री ने पतरातू में 7 दिनों तक अनशन किया तब लंबित 48 लोगों की प्रोन्नति में सफलता मिली। मुंगेर जहाज कर्मचारी संघ द्वारा किया गया आंदोलन ऐतिहासिक कहा जायेगा। इसी प्रकार सीतामढ़ी दूकान कर्मचारी संघ, मोटर कर्मचारी संघ, छपरा दूकान कर्मचारी, अररिया, मुजफ्फरपुर, राँची, भागलपुर आदि ने संघर्ष के कारण दुकान कर्मचारी को सेवा कार्ड, बोनस वेतन वृद्धि कराया।

मार्च 1974 से दिसम्बर 76 तक के काल खंड में बिहार भामस के कार्यकर्त्ता भी जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन में लग गये। जिसके कारण मीसा और डी0 आई0 आर0 में जेल गये। अनेक सेवामुक्त भी कर दिये गये।

1977 में जनता सरकार में भी बिहार भामस ने संघर्ष जारी रखा। विद्युत श्रमिक संघ ने धरना, अनशन और जुलूस-रैली के बल पर 300 शिशिक्षुओं को स्थायी कराया तथा विद्युत मजदूरों को 20 रुपये अन्तरिम सहायता दिलाने में सफलता प्राप्त की। हटिया भारी अभियंत्रण में 8 दिनों के धरना के कारण 107 कर्मचारियों को इन्सेन्टिव मिला। इसी प्रकार 8 दिनों की हड़ताल के कारण गलत सेवा शर्त्त समाप्त हुई तथा मृतकों के आश्रितों को नौकरी मिली।

बरौनी तेलशोधक में दो दिनों के प्रोजेक्ट भत्ता के लिए हड़ताल हुई। दीनानाथ पांडेय, शंभुशरण श्रीवास्तव और चन्देश्वर सिंह के नेतृत्व में टेल्को के 3 हजार ठीकेदार मजदूरों ने हड़ताल एवं अन्य आन्दोलन किये जिसके कारण 70 रु0 प्रतिमाह बढ़ोत्तरी हुई। ट्यूब कर्मचारी संघ के संघर्ष के परिणामस्वरुप 800 रुपये बोनस 5 हजार कर्मचारियों को मिला। डालमियानगर में घेराव के कारण बोनस दिया गया। कोल्ड स्टोरेज, बिहारशरीफ में भी वेतन बढ़ोत्तरी हुई। जयश्री टेक्सटाइल में 400 छँटनीग्रस्त कामगारों को नियोजन दिया गया। अन्त में 1979-80 में हड़ताल एवं अन्य आन्दोलनों के फलस्वरुप दीनानाथ पांडे और चन्देश्वर सिंह के नेतृत्व में टेल्को के तीन हजार

वरीय कार्यकर्त्ता को सेवाच्युत कर दिया गया। विवाद न्यायालय के विचाराधीन है।

1978 में इंडियन ट्यूब कम्पनी जमशेदपुर में बोनस अदायगी के लिए आन्दोलन किया गया। इस क्रम में प्रबंधक को घेराव भी हुआ। तब प्रबंधन ने अध्यक्ष, महामंत्री एवं संगठन मंत्री उमापति सेठी, रुपनारायण झा और अभिमन्यु सिंह को कार्यमुक्त कर दिया। श्रम न्यायालय से विवाद में विजय मिली पर मामला उच्च न्यायालय में लंबित है। इसी प्रकार पेब्को में 1979 में यूनियन का गठन ही आंदोलन के गर्भ में हुआ।

मार्च, 1980 में संगठन ने अपने स्वरुप एवं संगठनात्मक ढाँचे को पूर्णतः मजबूत बनाने के लिए पटना में प्रदर्शन किया। पहली बार गाँधी मैदान से सचिवालय तक शहर भगवाध्वज एवं मजदूरों के राष्ट्रवादी नारों (भारत माता की जय) से गूँज उठा। समाचार पत्रों ने भरपुर सराहना की। प्रदर्शन में 25-30 हजार मजदूर थे जो सभी औद्योगिक, असंगठित क्षेत्रों से आये थे। नेतृत्व रूद्र प्रताप सारंगी, रामदेव प्रसाद और सुरेश प्रसाद सिन्हा ने किया। इस प्रदर्शन में भामस के महासचिव बड़े भैया भी मौजूद थे।

जुझारू नेता एव श्रमशक्ति के प्रतीक समरेश सिंह का सक्रिय योगदान इस अवधि में भामस को मिला। फलतः कोयलांचल, बोकारो स्टील, हटिया, माइन्स क्षेत्र, एक बार पुनः करवटें लेने लगा। हटिया में 1984 में हड़ताल हुई। प्रोन्नति नीति का निर्धारण मुख्य मुद्दा था। समरेश सिंह के नेतृत्व ने जहाँ आन्दोलन का मैदानी मोर्चा संभाला वहीं महासचिव रामदेव प्रसाद ने समझौता वार्ता के टेबुल पर अपने तर्कों द्वारा सरकार को झुकने के लिए वाध्य किया। सरकारी हस्तक्षेप और इंटक यूनियन को घुटने टेकना पड़ा। भामस की जीत हुई और चिर लंबित मांगे मान ली गयी। संघर्ष की इस घड़ी में समरेश सिंह को हथकड़ियों से भी प्रशासन ने जकड़ा। इस आंदोलन में कर्मठ मजदूर नेता बी० पांडेय एवं महेश राम की सेवा समाप्त की गयी जो 1985 में सभी सुविधाओं सहित काम पर लिये गये।

मजदूर–विरोधी था तथा सत्ताधारी यूनियन का काम मजदूर हित न रहकर कुछ और हो गया था। ऐसी परिस्थिति में भामस ने जुलाई, 1984 में 18 हजार मजदूरों और चार हजार पदाधिकारियों की जायज मांगों के लिए संघर्ष किया। 22 दिनों की अभूतपूर्व हड़ताल हुई और आंदोलन के स्तम्भ वी० पी० पांडेय एवं महेश राम को सेवा मुक्त कर दिया गया। जिसका प्रभाव हटिया के कारखाने, गलियों, सड़कों से लेकर पटना के सचिवालय और दिल्ली के उद्योग तथा श्रम मंत्रालय तक पड़ा। समझौता के लिए सरकार को वाध्य होना पड़ा। वे सारी मांगे मान ली गयी जिनके कार्यान्वयन के लिए मजदूरों को इतना बड़ा संघर्ष करना पड़ा। संघर्ष के प्रणेता समरेश सिंह एवं कार्यकर्त्ताओं को प्रशासन ने हथकड़ियों में जकड़ा। निगम के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व है। दोनों सेवा मुक्त मजदूर नेताओं को सभी सुविधाओं सहित सेवा में वापस ले लिया गया है। पदोन्नति नीति सम्बन्धी डा० विनोद कुमार की रिपोर्ट आयी है। 20 वर्षो तक यहाँ कोई स्थायी पदोन्नति नीति नहीं थी।[20] अब प्रतिवर्ष मजदूरों को प्रोन्नति मिलेगी। इस आंदोलन के फलस्वरुप भामस की गुणात्मक वृद्धि में काफी सहयोग मिला है।

बोकारों का ऐतिहासिक आन्दोलन

बोकारो स्टील प्लान्ट में ब्लास्ट फर्नेस्ट के मजदूरों के इंसेटीव की मांग लेकर 5 अप्रैल से 13 मई 1985 तक ऐतिहासिक हड़ताल हुई 17 अप्रैल को सम्पूर्ण बोकारो प्लांट में सांकेतिक हड़ताल हुई। 1 मई से 13 मई तक धमन भट्ठी के मजदूरों के समर्थन में लगभग 80 प्रतिशत मजदूरों ने हड़ताल किया।[21] 2 मई को बोकारो स्टील राष्ट्रीय मजदूर संघ के अध्यक्ष तथा आन्दोलन के नायक समरेश सिंह की गिरफ्तार कर लिया गया। सिंह को बोकारो जेल से 4 मई को भागलपुर केन्द्रीय कारा में स्थानान्तरित कर दिया गया। सिंह के ऊपर की गयी कारवाई उनकी लोकप्रियता को समाप्त करने का ही षडयंत्र था। जिसमें सरकार हर स्तर पर विफल रही। भामस के अखिल भारतीय मंत्री राम प्रकाश मिश्र ने आंदोलन को दिशा निर्देश

---

20. 13वें प्रादेशिक अधिवेशन के अवसर पर महासचिव का प्रतिवेदन, पृ0 5
21. 13वें प्रादेशिक अधिवेशन के अवसर पर महासचिव का प्रतिवेदन, पृ0 5

विद्युत

यों तो बिहार प्रदेश विद्युत श्रमिक संघ बरौनी, पतरातू, मुजफ्फरपुर, गया, बिहारशरीफ, सिवान, धनबाद, राँची इत्यादि विभिन्न स्थानों पर अपने रचनात्मक उपलब्धियों के लिये मजदूरों के बीच स्थापित हो चुका है। 11सितम्बर से 30 सितम्बर 1985 तक सफल हड़ताल का श्रमिक संघ एक महत्त्वपूर्ण घटक था। औद्योगिक न्यायाधिकरण द्वारा दिये गये फैसले को लागू कराने के लिये हड़ताल हुई।

कोयला

अन्य क्षेत्रों की तरह भामस का कोयलांचल में सुरेश प्रसाद सिन्हा, समरेश सिंह, कुमार अर्जुन सिंह, रघुवंश नारायण सिंह, गोपाल प्रसाद के प्रयास का प्रतिफल है कि कार्य विस्तार अवाधगति से हुआ है। जून 1982 में यहाँ कोयला भवन पर षाड़ंगी, रामप्रकाश एवं समरेश के नेतृत्व में विभिन्न मांगों को लेकर प्रदर्शन हुआ। इसी प्रकार राष्ट्रीय अभियान समिति के आह्वान पर 21,22 अगस्त को सम्मेलन तथा 8 नवम्बर 1982 को सफल हड़ताल हुई। 17 से 19 जनवरी 1983 को त्रिद्विसीय हड़ताल को त्रिद्विसीय हड़ताल किया गया जिसमें जे0 बी0 सी0 सी0 आई0 में बराबर प्रतिनिधित्व ठीकेदारी प्रथा की समाप्ति आदि विभिन्न मांगों के समर्थन में किया गया। 14,25 अप्रैल को दो दिनों का अधिवेशन भूरकुण्डा में सम्पन्न हुआ। विभिन्न लम्बित मांगों के क्रम में 7 मार्च को कोयला भवन पर अनशन एवं 11 मार्च को ऊर्जा मंत्री को दिया गया ज्ञापन संघ की उपलब्धि है। कोलियरी कर्मचारी संघ ने न केवल संगठनात्मक उपलब्धि हासिल की है वरन प्राकृतिक आपदाओं के समय पीड़ित लोगों की सर्वाधिक सहायता की है। 13 सितम्बर 1983 को हुई होरलाडीह खान दुर्घटना में संघ ने प्रत्येक पीड़ितों को 555/- रु0 की सहायता प्रदान की तथा आश्रितों को राहत दिलाने के लिये आंदोलन चलाया। गत वर्ष 1 से 7 मार्च तक कम्प्युटरीकरण तथा मशीनीकरण के विरुद्ध आम सभायें की गयीं और 18 अप्रैल 1984 को संसद भवन पर प्रदर्शन किया गया। 4,5 जून 1984 को कोयला उद्योग में विभिन्न मांगों को लेकर हड़ताल हुई। 16 जुलाई को एक दिवसीय हड़ताल किया गया।

मजदूरों के पक्ष में हुआ। सेवायोजन हेतु कालीचरण सिंह के नेतृत्व में अक्टूबर–नवम्बर महीने में जोरदार आन्दोलन चलाया गया। नई दिल्ली में संचार भवन के समक्ष प्रदर्शन तथा संविधान की धारा 311(2) बी पर हुए फैसले के विरुद्ध पटना में एक द्वितीय धरना आयोजित किया गया।

अबरख उद्योग

दस हजार मजदूरों की बहाली के लिये 18 दिनों का धरना और प्रदर्शन 1984 में हुआ जिसमें सफलता मिली। 20 सूत्री मांग पत्र के 12 बिन्दुओं को प्रबन्धन ने मान लिया है। इसी प्रकार निजी अबरख कम्पनियों में भी विभिन्न स्तरों पर आन्दोलनात्मक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

किरिबुरु

खान मजदूर संघ की ओर से 25 नवम्बर 1985 को विरोधी यूनियनों के प्रतिगामी प्रयास के बाद समरेश जी के नेतृत्व में शतप्रतिशत हड़ताल हुई। फलतः मांगें मिली।[23]

झींक पानी

यहाँ भी 5 नवम्बर 1985 को बोनस सम्बन्धी अधिसीमा को समाप्त करने के लिये बहिष्कार कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इसके पूर्व भी यूनियन द्वारा सभी राष्ट्रीय एवं अपनी मांगों को लेकर समय–समय पर आन्दोलन हुए।

सरायकेला ग्लास

ग्रेड पुनरीक्षण में 185/– रु0 लाभ हुआ। तीन महीने का बकाया मिला तथा ठीकेदार मजदूरों की दैनिक मजदूरी 9.95 पैसा से 12.25 पैसा करायी गयी। संघर्ष का ही परिणाम है कि 17 प्रतिशत बोनस दिया गया।

---

23. मजदूर उद्घोष, दिसम्बर, 1985, पृ0 4

3.22 श्रम समितियों के प्रतिनिधित्व

पहली बार कर्मचारी राज्य बीमा योजना सलाहकार समिति, भविष्य निधि, क्षेत्रीय समिति तथा इंजीनियरिंग वेतन परिषद में प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ है। जिसमें शम्भूशरण तथा रामदेव प्रसाद क्रमशः सदस्य है। इसके अतिरिक्त प्रदेश स्तर की सभी श्रम समितियों में भामस को प्रतिनिधित्व प्राप्त है। प्रमुख समितियों तथा स्वतंत्र पर्षद में जनार्दन तिवारी, रामदेव प्रसाद राज्य मूल्यांकन एवं कार्यान्वयन समिति में रामदेव प्रसाद एवं कनक प्रसाद तथा स्थायी श्रम समिति में रामदेव प्रसाद को प्रतिनिधित्व मिला है। संघ की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है कि क्षेत्रीय श्रमिक शिक्षा सलाहकार समिति मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष रामदेव प्रसाद मनोनीत किये गये है। ऐडभाइजरी कमिटी फौर फिक्सेसन ऑफ मिनिमम वेज इन हार्ड कोक ओभन में कुमार अर्जुन सिंह प्रतिनिधि हैं।

<u>अन्य कार्यक्रम</u>

उपरोक्त वृहत कार्यक्रमों के अतिरिक्त प्रायः सभी यूनियनों द्वारा मांगों के संदर्भ में रचनात्मक तथा आन्दोलनात्मक कार्यक्रम लिये गये है। सी० सी० एल० के सियाल कोलियरी में 28 अगस्त 1985 को सांकेतिक हड़ताल द्वारा ठीकेदार मजदूरों का स्थायीकरण कराया गया। बी० सी० सी० एल० में सुदामडीह कोलियरी में आश्रितों को सेवायोजन तथा आवास के लिये 8 घंटे का घेराव तथा सांकेतिक हड़ताल हुई। जमशेदपुर में टी० वी० अस्पताल के मजदूरों को वेतन बढ़ोत्तरी दिलायी गयी। उषा एलॉज, उषा मार्टिन, उषा ब्रेको तथा पेब्को के मजदूरों को 20 प्रतिशत बोनस दिलाया गया। टेल्कों जमशेदपुर स्थायीकरण का मामला न्यायालय में चल रहा है। दूसरी ओर स्क्रैप यार्ड के मजदूरों का मामला राँची उच्च न्यायालय के विचाराधीन है। टिस्को कर्मचारी संघ के महामंत्री जयनारायण शर्मा का विवाद श्रम न्यायालय में है जिसमें घरेलू जांच में यूनियन की जीत हुई है। इसी प्रकार उषा ब्रेको के दो तथा ट्यूब कर्मचारी संघ के तीन कार्यकर्त्ताओं का विवाद श्रम न्यायालय से जीतने के बाद उच्च न्यायालय के विचाराधीन है। रोहतास उद्योग के 40 तथा अन्य यूनियनों के 20 विवाद न्यायालयों में विचाराधीन है। उर्वरक श्रमिक

सारणी - 3.1

भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश के विकास, स्थापना दिवस-1 जुलाई, 1963 प्रादेशिक अधिवेशन

क्र.	स्थान	तिथि एवं वर्ष	यूनियन	सदस्यता
1.	पटना	13-14 अक्टूबर,64	4	2000
2.	पटना	16-17 अक्टूबर,65	10	10049
3.	सिन्दरी	29-30 अक्टूबर,66	19	18436
4.	सिन्दरी	15-16 अक्अूबर,67	25	25301
5.	राँची	17-18 मई,69	35	36715
6.	पतरातू	10-11 फरवरी,71	45	54823
7.	पटना	16-17 अप्रैल,72	58	67998
8.	जमालपुर	7-8 अप्रैल,74	63	75207
9.	राजगीर	30-31 जनवरी,77	66	86113
10.	राँची	5-6 फरवरी,78	74	115732
11.	धनबाद	15-17 अप्रैल,79	81	185712
12.	मुजफ्फरपुर	18-20 अप्रैल,82	110	208510
13.	जमशेदपुर	29-31 दिसम्बर,85	144	344306

3.22 बिहार में श्रमिक संघों की तुलनात्मक स्थिति

बिहार में सभी केन्द्रीय महासंघों की प्रदेश शाखाएँ हैं जिनसे सम्बद्ध संघों तथा उनकी सदस्य संख्या का विवरण सारणी 3.2 में दिया जाता है।

सारणी में अंकित आँकड़ो के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि बिहार में भामस सदस्य संख्या के दृष्टिकोण से सबसे शक्तिशाली है। 1980 में सत्यापित सरकारी आँकड़ों के आधार पर इसे द्वितीय स्थान पर रखा गया था। प्रथम स्थान इंटक का था। मात्र दो वर्षो के अन्तराल में इसने इंटक को भी मात दे दिया तथा प्रथम स्थान का दावेदार हो गया। 1983 के आँकड़ों के अनुसार बिहार भामस

अध्याय-4

अध्ययन में सम्मिलित संघ

प्रस्तुत अध्ययन एक सर्वेक्षण पर आधारित है। बिहार भामस के 151 संघों में से 14 संघों का चयन किया गया। संघों के चयन में ऐसा ध्यान रखा गया है कि मुख्य उद्योगों, मुख्य स्थानों, छोटे एवं बड़े संघों का प्रतिनिधित्व हो जाय ताकि जो निष्कर्ष निकाले जायें वे बिहार भामस के संदर्भ में प्रासंगिक एवं यथार्थ हो। इस तरह, अध्ययन के लिए 6 उद्योगों में कार्यरत 14 संघों तथा उनके सदस्यों एवं नेताओं को विषय-वस्तु के रूप में स्वीकारा गया है । उद्योगों एवं अध्ययन के लिए नमूने के तौर पर लिए गये संघों का वर्णन आगे किया गया है।

4.1 खनन

खनन बिहार प्रदेश का एक महत्त्वपूर्ण उद्योग है जिसने लाखों लोगों की रोटी का प्रबन्ध किया है। बिहार भामस से सम्बद्ध प्रथम "कोलियरी कर्मचारी संघ" की स्थापना 1966 में हुई। इस संघ की परिधि में बिहार के सभी कोलियरी आ जाते थे। लेकिन 1984 में इसे तीन भागों में बाँट दिया गया- (1) धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ (2) सी0 सी0 एल0 कोलियरी कर्मचारी संघ, राँची (3) संथाल परगना कोलियरी कर्मचारी संघ, देवघर। धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ के अन्तर्गत 12 कोलियरी हैं, उनकी तीन इकाइयों का अध्ययन किया गया है।

"धनबाद कोलियरी कर्मचारी संघ" का गठन 1984 में हुआ, जिसका पंजीयन संख्या 2805 है। यह संघ 1985 में बिहार भामस से विधिवत् संबद्ध हो गया।

सर्वेक्षण के समय धनबाद कोलियरी संघ के नेता कुमार अर्जुन ने बताया कि उनकी सदस्य संख्या 1986 में 38 हजार से ज्यादा थी। यह संघ मान्यता प्राप्त संगठन है । धनबाद कोलियरी संघ के अध्यक्ष के० डी० मिश्र और महामंत्री गोपाल प्रसाद हैं। संघ एक किराये के भवन में स्थित है उसमें एक सबैतनिक कर्मचारी भी है। संघ के पास टेलिफोन एवं गाड़ियाँ भी हैं। बैंक खाते में भी 500 रुपया जमा है।

1987 में श्रमिकों के "पेयजल, शिक्षा, चिकित्सा, आवास एवं सेवा निवृत कर्मचारी के एक आश्रित को काम" को लेकर प्रदर्शन किया। प्रबन्ध ने वार्त्ता के लिए निमंत्रण दिया, बातचीत का दौर करीब 10 बार चला जिसमें 50 प्रतिशत समस्याओं का समाधान हुआ। इस संघ का कोई राजनीतिक कोष नहीं है। संघ के लक्ष्य राष्ट्रहित उद्योगहित एवं मजदूरहित है। उद्देश्यों की प्राप्ति के तरीके सामूहिक विचार-विमर्श हैं। इसके साथ दो अन्य श्रम संगठन भी कोयला उद्योग में मान्यता प्राप्त हैं।

4.2 विनिर्माण

आधुनिक उद्योगों में विनिर्माण का महत्त्वपूर्ण स्थान है। बिहार भामस से सम्बद्ध विनिर्माण के क्षेत्र में 40 संघ है जिसमें से 5 संघों को इस अध्ययन में सम्मिलित किया गया है तथा जिसका वर्णन क्रमानुसार नीचे प्रस्तुत है।

4.21 बिहार राज्य शीत गृह कर्मचारी संघ, बिहारशरीफ, नालंदा

इस संघ का मुख्यालय बिहारशरीफ में स्थित है। इस संघ की स्थापना 1965 में हुई थी। इसका श्रम संघ अधिनियम, 1926 के अन्तर्गत पंजीयन 9.8.1965 को हुआ। इसकी पंजीयन संख्या 1154 है। इसकी स्थापना में बिहार भामस के नेताओं ने योगदान किया है। अतः स्थापना के साथ ही यह बिहार भामस का एक अंग हो गया। स्थापना के समय इस संगठन की सदस्य संख्या मात्र 16 थी। शीतगृह उद्योग में श्रम संघ का अभाव था। साथ ही श्रमिकों का शोषण चरम सीमा पर था। इसलिए शीतगृह में लगे कर्मचारियों के

16114 थी । सदस्यता शुल्क प्रति माह दो रुपये है । व्यक्तिगत आधार पर शुल्क का संग्रह किया जाता है । संघ का अपना एक संविधान है। इस संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष विजय चौरसिया और मंत्री भूषण कुमार हैं। ये लोग तीन वर्षो से अपने पद पर आसीन हैं। संघ का अपना भवन है जिसमें कुर्सी टेबुल, दरी, आलमारी आदि हैं। संघ के पास टेलिफोन भी है। संघ शांति पूर्ण संघर्ष में विश्वास करता है। संघर्ष के परिणाम स्वरूप सफलता भी प्राप्त हुई है। सभा द्वारा संघ का मांग - पत्र तैयार होता है । इस संघ का लक्ष्य है मजदूरों को अधिक सुविधा दिलाना। यह मान्यता प्राप्त श्रम संघ है।

4.23 स्वर्णरेखा घड़ी कारखाना श्रमिक संघ

इसका मुख्यालय राँची है। इस संघ की स्थापना 1983 में हुई है। इसका श्रम संघ अधिनियम 1926 के अन्तर्गत पंजीयन 1988 में हुआ। इसकी पंजीयन संख्या 3010 है। इसकी स्थापना में राँची भामस के नेताओं ने योगदान किया है। 1986 में बिहार भामस से संबद्ध हो गया। स्थापना के समय इस संगठन की सदस्य संख्या 65 थी। इस संगठन को प्रारंभ करने की आवश्यकता थी क्योंकि यहाँ अन्य कोई श्रम संघ था ही नहीं। इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है जिसमें प्रमुख हैं लाल बाबू प्रसाद, नीलम साँचा, सलोमी किलाटा और ज्योति। इनमें प्रथम लाल बाबू प्रसाद राँची भामस के नेता हैं और बाद के तीनों उसी घड़ी कारखाना के श्रमिक हैं।

सर्वेक्षण के समय कारखाने के सभी 72 कर्मचारी इसके सदस्य थे। सदस्यता शुल्क प्रति मास एक रुपया है। संघ का अपना एक संविधान भी है। इस संघ के पदाधिकारी के रुप में अध्यक्ष लालबाबू प्रसाद, महामंत्री नीलम साँचा और कोषाध्यक्ष ज्योति है। ये लोग 1983 से पद पर बने हुए हैं। संघ का कार्यालय राँची भामस के कार्यालय में है। संघ की स्थापना के बाद मुख्य मांग रही "वेतन का निर्धारण"। संघ का मांग-पत्र कार्यकारिणी द्वारा तय किया जाता है। यह संघ प्रबंध द्वारा मान्यता प्राप्त है।

स्थापना के साथ ही यह बिहार भामस से संबद्ध हो गया। स्थापना के समय इस संगठन की सदस्य-संख्या मात्र 11 थी। इस संगठन की स्थापना टेल्को में राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रचार करने के लिए की गई। इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा जिनमें प्रमुख हैं- कामेश्वर प्रसाद सिंह, चन्देश्वर प्रसाद सिंह और दीना नाथ पाण्डेय। ये सभी उसी टेल्को के श्रमिक हैं। दीनानाथ पाण्डेय जमशेदपुर के जाने माने नेता हैं, पूर्व विधायक भी हैं।

सर्वेक्षण के समय इस संघ की सदस्य संख्या 10 हजार से अधिक बतायी गयी। इस संघ का अपना एक संविधान भी है। सदस्यता शुल्क प्रति माह दो रुपये लिया जाता है। इस संघ के वर्तमान अध्यक्ष चन्देश्वर प्रसाद सिंह और महामंत्री शंभुशरण हैं। संघ को कारखाना द्वारा प्रदत एक कार्यालय है , बैंक में 3000 से अधिक रुपये जमा हैं, साथ ही एक मोटर साईकिल और एक टेलिफोन भी है। यह संघर्षशील श्रम संघ है। अभी टेल्को कर्मचारी संघ के 4 सदस्य सर्स्पेंड और 21 पद मुक्त कर दिये गये हैं। संघ का मांग-पत्र कार्यकारिणी द्वारा तैयार किया जाता है। संघ का एक ही लक्ष्य है मजदूरों की सेवा करना। यह भी मान्यता प्राप्त संघ नहीं है। बिहार में टेल्को टाटा का सबसे बड़ा ट्रक कारखाना है। यहाँ 22 हजार से ज्यादा मजदूर कार्यरत है। टेल्को कर्मचारी संघ के आन्दोलन के फलस्वरुप 1980 में "ठेकेदार मजदूरों को टेल्को, के स्थायी मजदूरों की श्रेणी में लाया गया।"[1] इस संघ द्वारा अर्जित यह सफलता श्रम संघ आन्दोलन के इतिहास में गौरवशाली स्थान रखती है।

4.3 विद्युत

उद्योगों में विद्युत एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। बिहार भामस से विद्युत के क्षेत्र में तीन संबद्ध संघ हैं जिसमें से एक का चयन इस अध्ययन के लिए किया गया है। "बिहार राज्य विद्युत श्रमिक संघ" का गठन 1970 में किया गया। इसके पहले से ही इस उद्योग में अन्य श्रम संघ कार्यरत थे। 1970 में ही इसका पंजीयन हो गया

---

1. बिहार विधान सभा याचिका समिति का 222 वाँ प्रतिवेदन, 1984, पृ0 1

भी देर से खुली। भारतीय मजदूर संघ ने भी इस क्षेत्र के श्रमिकों को संगठित करने, उनमें संघ चेतना जगाने तथा उन्हें शोषण से मुक्त करने के प्रयास किये है। "राँची दूकान कर्मचारी संघ" बिहार भामस के प्रयासों का प्रतिफल है। इसके प्रयास से इस क्षेत्र में अन्य तीन संघों की भी स्थापना हुई है। इस अध्ययन में मात्र "राँची दूकान कर्मचारी संघ" ही सम्मिलित है।

4.41 राँची दूकान कर्मचारी संघ

राँची बिहार का दूसरा बड़ा शहर है। 1966 में हटिया श्रमिक संघ की स्थापना के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लोगों में एक आत्म विश्वास जगा। देवराज नामक एक स्वयंसेवक ने 1968 में "राँची दुकान कर्मचारी संघ" की स्थापना की। इस संघ की स्थापना में मदद करने वाले हटिया श्रमिक संघ के सदस्य भी थे। दुकान श्रमिकों में संगठन का अभाव और कार्यरत श्रमिक को बहुत कम मजदूरी इसकी स्थापना के मुख्य कारण बताये जाते हैं। संगठन का पंजीयन भी 1968 में हुआ (न0 1302)। इस संघ की यह विशेषता है कि स्थापना के समय ही 500 से ज्यादा दूकान कर्मचारी इसके सदस्य थे। 1970 में सदस्यों की संख्या 800 हो गयी, 1980 में सदस्य संख्या 1200 हो गयी और अन्तिम सूचना तक (1986) 1500 से ज्यादा दूकान कर्मचारी इसके सदस्य हैं।

सदस्यता शुल्क प्रतिमास दो रुपये रखा गया है जो साल में एक बार संग्रह किया जाता है। संघ की संरचना और प्रशासन वही है जो भामस के अन्य श्रम संघों की है। पदाधिकारियों का निर्वाचन आम सभा के द्वारा ही होता है। पर राँची दूकान कर्मचारी संघ के निर्माणकर्ता देवराज ही 1968 से लेकर आज तक अध्यक्ष हैं और दो वर्ष पहले दिनेश प्रसाद महामंत्री बने हैं। 1985 में इस संघ को सदस्यता शुल्क से 3000 रुपये की आय हुई और इस राशि का व्यय संघ द्वारा आयोजित कार्यक्रमों पर हुआ।

इस संगठन का कार्यालय किराये के मकान में है। राँची शहर का यह एक शसक्त संगठन है। 1986 में इसकी मुख्य मांग थी– सभी कर्मचारियों का सेवा कार्ड बने, ड्युटी चार्ट, न्यूनतम वेतन आदि। अब तो सभी दूकानों में भी बोनस मिलना शुरु हो गया। राँची

स्थापना के समय से ही इसने वेतनवृद्धि के मामले पर संघर्ष किया और जीत हासिल की। 1984 में कर्मचारियों की प्रोन्नति-नीति पर संघर्ष किया। संघ का मांग-पत्र कार्यकारिणी द्वारा तैयार किया जाता है। संघ का कोई राजनीतिक कोष नहीं है। संघ के लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के तरीके हैं सदस्यों का हित-संवर्द्धन शांतिपूर्ण संघर्ष के द्वारा। इस संघ को प्रबंध द्वारा मान्यता नहीं मिली है।

4.52 बिहार प्रदेश बैंक वर्क्स आर्गेनाइजेशन, पटना

इसका मुख्यालय पटना में स्थित है। इस संघ की स्थापना 1967 में हुई है। इसका श्रम संघ अधिनियम, 1926 के अन्तर्गत पंजीयन 1967 में हुआ और इसकी पंजीयन संख्या 1295 है। इसकी स्थापना में बिहार भामस के नेताओं ने योगदान किया है। अतः स्थापना के साथ ही यह बिहार भामस से संबद्ध हो गया। स्थापना के समय इस संगठन की सदस्य संख्या मात्र 12 थी। इस संगठन को प्रारम्भ करने की आवश्यकताएँ निम्नलिखित रहीं

(क) बैंक कर्मचारियों में नेताओं के विरुद्ध असंतोष
(ख) बैंक कर्मचारियों को राजनैतिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल
(ग) कर्मचारियों में राष्ट्र के विरुद्ध भावना भरने के कारण
(घ) हितों की उपेक्षा।

इसकी स्थापना में कई व्यक्तियों का योगदान रहा है जिनमें प्रमुख हैं- रामदेव प्रसाद, नित्य गोपाल चक्रवर्ती और देवेन्द्र राम। रामदेव प्रसाद बिहार भामस के अध्यक्ष हैं और वे दोनो वित्तीय संस्थान के कर्मचारी।

यह एक बैंकिंग उद्योग की श्रेणी में आता है। सदस्यता शुल्क दो रुपये प्रति माह है। शुल्क संग्रह व्यक्तिगत सम्पर्क के आधार पर निर्भर है । पदाधिकारियों के निर्वाचन की विधि आम सभा एवं अवधि द्विवार्षिक है। इस संघ के मुख्य पदाधिकारी हैं अध्यक्ष सच्चिदानंद राय, महामंत्री राम किशोर पाठक और कोषाध्यक्ष प्रभांश कुमार। ये सभी पदाधिकारी तीन साल से पद पर बने हैं। 1987 में संघ को 10 हजार से अधिक का आय हुई और औद्योगिक विवादों के संचालन में खर्च भी हुआ। संघ के खाते में लगभग एक हजार रुपये जमा है। 1987 में बैंकिंग उद्योग में कम्प्यूटरीकरण और

जिसका नाम है – "मोदी सेवा सदन कर्मचारी संघ, राँची"। मोदी सेवा सदन राँची का एक प्रमुख चिकित्सा संस्था है। 1985 में मोदी सेवा सदन कर्मचारी संघ की स्थापना की गयी। शोषण से मुक्ति पाने हेतु मोदी सेवासदन के कर्मचारियों ने श्रम संघ का निमार्ण किया। 1985 में ही यह संघ पंजीकृत हो गया (2893/85)। और अगले वर्ष बिहार भामस से संबद्धता ले ली। स्थापना के समय इसके सदस्यों की संख्या 90 थी जो 1986 में बढ़कर 102 हो गयी। इस संगठन की स्थापना में राँची भामस के कुछ प्रमुख युवा नेताओं, जैसे लक्ष्मीचन्द्र दीक्षित, धर्मवीर, सुरेन्द्र नायक और महिला सदस्या वेरोनिका की भूमिका उल्लेखनीय है। इस संगठन का सदस्यता शुल्क प्रति मास एक रुपया मात्र है जिसे कोषाध्यक्ष बेरोनिका खुद ही संग्रह कर लेती हैं। संघ का अपना संविधान एवं नियमावली है। जो बिहार भामस द्वारा निर्मित प्रारुप पर आधारित है। पदाधिकारियें का चुनाव सभी सदस्यों की सलाह से किया जाता है। सुरेश प्रसाद सिन्हा, अध्यक्ष लक्ष्मी चन्द्र दीक्षित, महामंत्री और बेरोनिका कोषाध्यक्ष हैं। ये लोग लगातार तीन वर्षो से संघ के पद पर बने हुए है।

संघ किराये के एक भवन में स्थित है। संघ का मांग पत्र कार्य कारिणी के सदस्य बनाते हैं। संघ के महामंत्री ने प्रबंध को एक सात सूत्री मांग पत्र 7.11.85 को पेश किया जिसमें प्रमुख मांगें हैं– वेतन बढ़ोत्तरी, साप्ताहिक अवकाश, काम के घंटे, आवास भत्ता, बोनस आदि। संघ बनते ही प्रबंध द्वारा सदस्यों को तंग किया जाने लगा और यह मामला श्रम अधीक्षक राँची के यहाँ लम्बित है और संघर्ष जारी है।

मादी सेवा सदन कर्मचारी संघ, मोदी सेवा सदन के कर्मचारियों

की औद्योगिक इकाइयों में 25 वर्ष तक के सदस्यों की संख्या अन्य उद्योगों की तुलना में अधिक है। यहाँ करीब 49 प्रतिशत सदस्य 25 या उससे कम के हैं।

सारणी – 5.1

आयु के आधार पर सदस्यों का वर्गीकरण

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	आयु वर्ग			
		25 वर्ष तक		25 से ऊपर	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	10	33.3	20	66.7
विनिर्माण	131	64	48.8	67	51.2
विद्युत	45	—	—	45	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	4	8.2	45	91.8
वित्तीय संस्थान	74	16	21.6	58	78.4
स्वास्थ्य	5	1	20.0	4	80.0
योग	334	95	28.5	239	71.5

चयित सदस्यों की आयु–संरचना से यह स्थिति स्पष्ट होती है कि सर्वेक्षण में बहुलता वैसे सदस्यों की है जो उम्र की दृष्टि से परिपक्व हैं।

5.2 लिंग

सर्वेक्षण में पुरुष एवं स्त्री दोनों की लिंगों के सदस्यों को शामिल किया गया है। शामिल सदस्यों का लिंगानुसार वितरण सारणी 5.2 में किया गया है।

सारणी 5.2 के आँकड़ों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि नमूने में लिए गये सदस्यों में अधिकांश पुरुष हैं। कुल सदस्य संख्या का 93.5 प्रतिशत परुष तथा 6.5 प्रतिशत महिलाएँ हैं। उद्योगों के अनुसार इनके वितरण से यह जाहिर होता है कि खनन, विद्युत तथा वित्तीय संस्थान से चुने गये सभी सदस्य पुरुष हैं। स्वास्थ्य सेवा में चुने गये सदस्यों में से सभी महिलाएँ है। महिला सदस्यों का प्रतिशत

है कि वित्तीय संस्थान एवं स्वास्थ्य संस्थान को छोड़ कर अन्य सभी उद्योगों में बहुलता वाले अर्द्धशहरी क्षेत्र के निवासियों का प्रतिशत खनन में 73.4, विनिर्माण में 68.7, विद्युत में 53.3 तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान में करीब 47 प्रतिशत है। वित्तीय एवं स्वास्थ्य संस्थानों में बहुलता शहरी क्षेत्र के निवासियों की है। ग्रामीण क्षेत्र के सदस्य किसी भी उद्योग में 27 प्रतिशत से अधिक नहीं है, स्वास्थ्य सेवा में उनकी संख्या नगण्य है।

सदस्यों की ग्ररमीण शहरी पृष्ठभूमि से यह स्पष्ट होता है कि भामस ने शहरी एवं अर्द्धशहरी क्षेत्र के लोगों को ज्यादा प्रभावित किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि अर्द्धशहरी पृष्टभूमि वाले कर्मचारियों पर भामस का प्रभाव सबसे ज्यादा है। इस प्रभावनुक्रम से शहरी क्षेत्र उसके बाद तथा ग्रामीण क्षेत्र अंत में आता है।

5.4 वैवाहिक स्थिति

सारणी 5.4 में सर्वेक्षित सदस्यों की वैवाहिक स्थिति स्पष्ट की गयी है।

वैवाहिक स्थिति के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भामस के सदस्यों में प्रचुरता विवाहित सदस्यों की है। करीब 84 प्रतिशत सदस्य विवाहित हैं जिसमें 4 सदस्य सर्वेक्षण के समय विधुरावस्था में थे। कुल सदस्यों के करीब 1.6 प्रतिशत अविवाहित हैं। सभी उद्योगों में विवाहित सदस्यों की प्रचुरता है। अविवाहित सदस्यों का प्रतिशत दुकान एवं प्रतिष्ठान में 24.4, विनिर्माण में 21.4 तथा खनन एवं वित्तीय संस्थान में करीब 13.5 है। जाहिर है कि भामस ने विवाहित एवं अविवाहित दोनों ही तबके के कर्मचारियों को अपनी ओर आकर्षित किया है।

5.5 धर्म

भारतीय जनता पार्टी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से जुड़े हुए होने के कारण ऐसी आम धारणा है कि हिन्दू धर्मालंबियों को छोड़ कर अन्य धर्मावलंबियों में भामस के प्रति आकर्षक नहीं, विकर्षक है। इस धारणा को प्रमाणित या अप्रमाणित करने के लिए सर्वेक्षण में सम्मिलित सदस्यों से उनके धर्म की भी जानकारी हासिल की गयी है। इस जानकारी के आधार पर सदस्यों

सारणी- 5.4

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	वैवाहिक स्थिति							
		अविवाहित		विवाहित		तलाक		विधुर	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	4	13.4	26	86.6	0	—	0	—
विनिर्माण	131	28	21.4	103	78.6	0	—	0	—
विद्युत	45	00	00.0	45	100.0	0	—	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	12	24.4	33	67.3	0	—	4	8.3
वित्तीय संस्थान	74	10	13.5	64	86.5	0	—	0	—
स्वास्थ्य	5	0	—	5	100.0	0	—	0	—
योग	**334**	**54**	**16.3**	**276**	**82.6**	**0**	**--**	**4**	**1.1**

सारणी - 5.5

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	धर्म					
		हिन्दु		मुस्लिम		ईसाई	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	26	86.6	4	13.4	0	—
विनिर्माण	131	108	82.6	17	12.9	6	4.5
विद्युत	45	27	60.0	10	22.3	8	17.7
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	21	42.9	28	57.3	0	—
वित्तीय संस्थान	74	62	83.7	10	13.5	2	2.7
स्वास्थ्य	5	1	20.0	0	—	4	80.0
योग	**334**	**245**	**73.4**	**69**	**20.6**	**20**	**6.0**

भामस के खनन संघों में ऊँची जाति के सदस्य 33.4 प्रतिशत, पिछड़ी जाति 46.6 प्रतिशत और अनुसूचित जाति के 20 प्रतिशत है। खनन संघों में जनजाति के सदस्यों का नगण्य होना खटकता है। विनिर्माण के संघों में 18.3 प्रतिशत ऊँची जाति के, 45.8 प्रतिशत पिछड़ी जाति के 26.7 प्रतिशत अनुसूचित जाति के और 9.2 प्रतिशत जनजाति के सदस्य हैं। विद्युत उद्योग के संघों में 55.6 प्रतिशत ऊँची जाति के और 44.4 प्रतिशत पिछड़ी जाति के सदस्य हैं। दुकान प्रतिष्ठान के क्षेत्र में कार्यरत भामस संघों में 30.6 प्रतिशत ऊँची जाति के और 49.0 प्रतिशत पिछड़ी जाति के और 20.4 प्रतिशत जनजाति के सदस्य हैं। वित्तीय संस्थान के संघों में ऊँची जाति के सदस्यों का प्रतिशत 82.5 है। यहाँ पिछड़ी और अनुसूचित जाति की संख्या कम है। स्वास्थ्य संघ में ऊँची और पिछड़ी जाति के लोग हैं ही नहीं अनुसूचित जाति के 40. 0 प्रतिशत और जनजाति 60.0 प्रतिशत सदस्य है।

सारणी 5.6 का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि विद्युत और वित्तीय संस्थान के क्षेत्रों में ऊँची जाति के लोग ज्यादा हैं। खनन, विनिर्माण और दुकान एवं प्रतिष्ठान में पिछड़ी जाति की संख्या अधि क है। स्वास्थ्य मे अनुसूचित और जनजाति की ही बहुलता है। कुल उत्तरदाताओं में 40.4 प्रतिशत ऊँची जाति के सर्वेक्षित सदस्यों की जाति संरचना के अध्ययन से यह जाहिर होता है कि भामस के संघों में सभी जातियों के सदस्य है। कुल 334 उत्तरदाताओं में से 40.4 प्रतिशत ऊँची जाति के, 37.8 प्रतिशत पिछड़ी जाति के तथा करीब 22 प्रतिशत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के सदस्य हैं। विभिन्न जातियों की संख्या बिहार के उद्योगों की श्रमशक्ति में उनकी स्थिति के अनुकूल है। इस सारणी के अध्ययन से ऐसा निष्कर्ष निष्पादित किया जा सकता है कि भामस से संबंद्ध संघों में सभी जाति के श्रमिकों को अपने प्रभाव में लिया गया है।

5.7 शैक्षणिक योग्यता

सदस्यों की शैक्षणिक योग्यता किसी भी संगठन के प्रभावशाली होने का एक मुख्य कारण है। संगठन का प्रभावशाली होना न सिर्फ नेताओं की योग्यता पर आधारित है अपितु अनुयायियों की योग्यता भी इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। शैक्षणिक योग्यता के महत्त्व को मद्देनजर रखते हुए बिहार भामस के सर्वेक्षित सदस्यों का इस

सारणी - 5.7

शैक्षणिक योग्यता के आधार पर सदस्यों का वर्गीकरण

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	योग्यता					
		इण्टर		स्नातक		एम0ए0, अन्य	
		सं0	प्र0	सं0	प्र0	सं0	प्र0
खनन	30	2	6.6	2	6.6	0	--
विनिर्माण	131	18	13.7	19	14.5	28	21.5
विद्युत	45	27	60.0	0	--	0	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	4	8.2	0	--	0	--
वित्तीय संस्थान	74	5	6.7	40	54.1	17	22.9
स्वास्थ्य	5	0	--	0	--	0	--
योग	**334**	**56**	**16.8**	**61**	**18.3**	**45**	**13.4**

में आता है। ऐसा कहा जा सकता है कि भामस की सदस्यता की शैक्षणिक योग्यता एक सुखद एवं आकर्षक चित्र प्रस्तुत करती है।

5.8 कार्यानुभव

यह पता लगाने के लिए कि भामस की सदस्यता में कार्यानुभव की सीमा क्या है, सर्वेक्षण में सम्मलित सदस्यों से उनके अपने संस्थान में कोई काल की जानकारी हासिल की गयी है। इस संदर्भ में प्राप्त उत्तरों को सारणी 5.8 में पिरोया गया है।

सारणी 5.8 के आँकड़ों पर दृष्टि डालने से ऐसा प्रतीत होता हैं कि भामस की सदस्यता में विभिन्न कार्य-अवधि के श्रमिक विभिन्न अनुपात में मौजूद है। भामस अन्य महासंघों की तुलना में एक नवीन महासंघ है जिसका पदार्पण 1955 में हुआ है। प्रदेश शाखाओं एवं उनकी विभिन्न इकाईयों का उद्‌भव 1960 के दशक में हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है कि संगठन में नये श्रमिकों को भामस ने अपनी ओर अधिक आकर्षित किया है। कुल सदस्यों में से करीब 27 प्रतिशत की कालावधि 5 वर्ष से कम है तथा करीब 24 प्रतिशत की 5 और 10 वर्ष के बीच, करीब 36 प्रतिशत सदस्यों का कार्यानुभव 10 से 15 वर्ष के बीच है एवं शेष 14 प्रतिशत की 15 वर्ष से ऊपर। इस आँकड़ों के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट होती है कि नये श्रमिको पर भामस का असर अपेक्षाकृत तीव्र गति से हो रहा है तथा नये श्रमिक इसके आगोश में खिचें चले आ रहे है। करीब 50 प्रतिशत सदस्यों की कार्यवधि का 10 साल से कम होना इस बात का संकेत है कि भामस संघों में नौजवानों की अधिकता है तथा शायद ही कारण है कि भामस नित्य नवीन बना हुआ है तथा पराकाष्ठा की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रहा है। सिर्फ विद्युत उद्योग को छोंड़ कर अन्य सभी उद्योंगों के संघों में 10 वर्ष से कम कार्यानुभव वाले सदस्यों की बहुलता एवं प्रधानता है।

5.9 मासिक आय

मासिक आय सदस्यों की आर्थिक स्थिति स्पष्ट करनें का एक मान्य आधार है। अतएव सदस्यों का वर्गीकरण उनकी मासिक आय के आधार पर सारणी 5.9 में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी - 5.8
कार्यानुभव के आधार पर सदस्यों का वर्गीकरण

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	कार्य अनुभव की अवधि					
		15 से 20		20 से 25		25 से ऊपर	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	0	--	0	--	0	--
विनिर्माण	131	10	7.6	0	--	2	1.6
विद्युत	45	0	--	0	--	0	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	0	--	7	14.3	0	--
वित्तीय संस्थान	74	2	2.7	12	16.3	13	17.5
स्वास्थ्य	5	0	--	0	--	0	--
योग	**334**	**12**	**3.6**	**19**	**5.7**	**15**	**4.4**

सारणी - 5.9

मासिक आय के आधार पर सदस्यों का

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	मासिक					
		2001 से 3000		3001से 4000		4000 से ऊपर	
		स0	प्रतिशत	स0	प्रतिशत	स0	प्रतिशत
खनन	30	10	33.3	0	----	0	-----
विनिर्माण	131	0	---	0	----	0	-----
विद्युत	45	0	----	0	----	0	-----
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	0	----	0	----	0	----
वित्तीय संस्थान	74	19	25.6	2	2.7	3	4.2
स्वास्थय	5	0	----	0	---	0	----
योग	334	29	8.7	2	0.6	3	0.8

सारणी - 5.10

परिवार का आकार लिंगानुसार

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	परिवार के सदस्यों की कुल संख्या	लिंग			
			पुरुष		महिला	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	188	106	56.4	82	43.6
विनिर्माण	131	666	372	55.8	294	44.2
विद्युत	45	189	96	50.7	93	49.
3दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	290	165	56.8	125	43.2
वित्तीय संस्थान	74	408	216	52.9	192	47.1
स्वास्थय	5	31	14	45.2	17	54.8
योग	**334**	**1772**	**969**	**54.7**	**803**	**45.3**

सारणी - 5.11

परिवार के सदस्यों की आर्थिक स्थिति

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	परिवार के सदस्यों की कुल संख्या	उपार्जक		परालंबी	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	188	30	15.9	158	84.1
विनिर्माण	131	666	150	22.5	516	77.5
विद्युत	45	189	45	23.8	144	76.2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	290	51	17.5	239	82.5
वित्तीय संस्थान	74	408	114	27.9	294	72.1
स्वास्थय	5	31	9	29.1	22	70.9
योग	**334**	**1772**	**399**	**22.6**	**1373**	**77.4**

सारणी - 6.1
सदस्यता की अवधि

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अवधि									
		0 से 5		5 से 10		10 से 15		15 से 20		20 से ऊपर	
		सं0	प्र0	सं0	प्र0	सं0	प्र0	सं0	प्र0	सं0	प्र0
खनन	30	26	86.6	4	13.4	0	—	0	—	0	—
विनिर्माण	131	72	54.9	31	23.6	23	17.7	5	3.8	0	—
विद्युत	45	16	35.6	24	53.3	5	11.1	0	—	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	22	44.9	18	36.7	9	18.4	0	—	0	—
वित्तीय संस्थान	74	37	50.0	24	32.5	4	5.4	4	5.4	5	6.7
स्वास्थ्य	5	5	100.0	0	—	0	—	0	—	0	—
योग	334	178	53.2	101	30.2	41	12.2	9	2.6	5	1.0

सारणी – 6.2
सदस्यता ग्रहण के कारण

सदस्यता ग्रहण के कारण	खनन (30)		विनिर्माण (131)	
	संख्या	प्र0	संख्या	प्र0
(क) भामस की विचारधारा	26	86.6	86	65.6
(ख) संघ के नेताओं के आचरण एवं व्यवहार	8	26.6	70	53.4
(ग) भारतीयता एवं भारतीय परंपराओं मे विश्वास	0	—	55	41.9
(घ) अन्य संघो से असंतोष	0	—	25	19.0
(ङ) सिर्फ इसी संघ की जानकारी	20	66.6	29	22.1
(च) अधिक लाभ की आशा	0	—	0	—
(छ) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ/भाजपा की विचारधारा में आस्था	2	6.2	2	1.5
(ज) संघ के नेत्त्व में अपनी जाति के लोगों का बोलबाला	0	—	5	3.8
(झ) संघ के नेतृत्व में अपने क्षेत्र के लोगों का बोलबाला	0	—	3	2.2
(ञ) देश एवं प्रदेश की सत्ता में जनता पार्टी का आना	0	—	0	—
(ट) व्यक्तित्व में निखार की संभावना	0	—	61	46.5
(ठ) नेतृत्व में आने की संभावना	0	—	24	18.3
(ड) राजनीति में प्रवेश करने की इच्छा	0	—	20	15.2
(ढ) आर्थिक लाख एवं राजनीतिक/ सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि	0	—	13	9.5

क्रमशः

सारणी - 6.2

सदस्यता ग्रहण के कारण

सदस्यता ग्रहण के कारण	वित्तीय संस्थान(74)		स्वास्थय(5)		योग(334)	
	सं०	प्र०	सं०	प्र०	सं०	प्र०
(क) भामस की विचारधारा	41	55.4	3	60.0	211	63.1
(ख) संघ के नेताओं के आचरण एवं व्यवहार	34	45.9	5	100.0	189	56.5
(ग) भारतीयता एवं भारतीय परंपराओं मे विश्वास	31	41.8	0	--	166	49.7
(घ) अन्य संघो से असंतोष	6	8.1	2	40.0	67	20.1
(ड़) सिर्फ इसी संघ की जानकारी	7	9.4	5	100.0	86	25.7
(च) अधिक लाभ की आशा	2	2.7	0	--	10	2.9
(छ) राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ/ भाजपा की विचारधारा में आस्था	12	16.2	0	--	24	7.1
(ज) संघ के नेतृत्व में अपनी जाति के लोगों का बोलबाला	4	5.4	0	--	24	7.1
(झ) संघ के नेतृत्व में अपने क्षेत्र के लोगों का बोलबाला	2	2.7	0	--	9	2.6
(ञ) देश एवं प्रदेश की सत्ता में जनता पार्टी का आना	2	2.7	0	--	9	2.6
(ट) व्यक्तित्व में निखार की संभावना	28	37.8	5	100.0	152	45.5
(ठ) नेतृत्व में आने की संभावना	18	24.3	2	40.0	105	31.4
(ड) राजनीति में प्रवेश करने की इच्छा	5	6.7	0	--	57	17.1
(ढ) आर्थिक लाख एवं राजनीतिक/ सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि	2	2.9	0	--	30	8.9

वरीयता क्रम	उत्प्रेरक तत्व	प्राप्त उत्तरों की संख्या	कुल उत्तरदाताओं का प्रतिशत (334)
1.	भामस की विचारधारा	211	63.1
2.	नेताओं के आचरण एवं व्यवहार	189	56.5
3.	भारतीयता एवं भारतीय परम्पराओं में विश्वास	166	49.7
4.	व्यक्तित्व मे निखार की संभावना	152	45.5
5.	नेतृत्व में आने की संभावना	105	31.4
6.	सिर्फ इसी संघ की जानकारी	86	25.7
7.	अन्य संघों से असंतोष	67	20.1
8.	राजनीत में प्रवेश की इच्छा	57	17.1
9.	आर्थिक राजनैतिक समाजिक प्रतिष्टा में वृद्धि	30	8.9
10.	राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ/भाजपा की विचारधारा में आस्था	24	7.1
11.	संघ के नेतृत्व में अपनी जाति के लोगों का बोलबाला	24	7.1
12.	अधिक लाभ की आशा	10	2.9
13.	संघ के नेतृत्व में अपने क्षेत्र के लोगों का बोलबाला	9	2.6
14.	देश एवं प्रदेश की सत्ता में जनता पार्टी का आना	9	2.6

समय ने इनकी इस धारणा और भविष्यवाणी को गलत साबित कर दिया। भारतीय मजदूर संघ मौत के मुंह में नहीं गया, अपने प्रतिद्वन्द्वियों को पीछे छोड़ते हुए श्रमसंघ आन्दोलन में शीर्ष स्थान पर आसीन हो गया। करीब आधे सदस्यों ने खुले दिल से यह स्वीकार किया है कि भारतीय मजदूर संघ की भारतीयता एवं भारतीय परम्परा में आस्था ने उन्हें इसके संगठनों में दाखिल होने के लिए उत्प्रेरित किया है। कुल सदस्यों के मतानुसार इस कारक के अनुसार तृतीय है लेकिन विद्युत एवं दुकान एवं प्रतिष्ठान में इसे प्रथम स्थान, वित्तीय संस्थान में तृतीय तथा विनिर्माण में चतुर्थ स्थान मिला है। खनन एवं स्वास्थ्य संस्थान के सदस्यों ने इस कारक को सदस्यता ग्रहण करने के कारण के रुप में स्वीकार करने से इनकार कर दिया।

6.24 व्यक्तित्व मे निखार की संभावना

सदस्यता ग्रहण करने के कारणों में इसका चतुर्थ स्थान है। बहुत सारे श्रमिकों को ऐसा महसूस हुआ कि इस संगठन की सदस्यता ग्रहण करने से उनके व्यक्तित्व में निखार आयेगा। इस संभावना ने 45.5 प्रतिशत श्रमिकों को भामस की सदस्यता ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया है। स्वास्थ्य संस्थान के सभी उत्तरदाताओं ने इससे अपनी सहमति व्यक्त की है। विद्युत के 77.7 प्रतिशत, दुकान एवं प्रतिष्ठान के 46.9 प्रतिशत, विनिर्माण के 46.5 प्रतिशत तथा वित्तीय संस्थान के 37.8 प्रतिशत सदस्यों की राय में व्यक्तित्व में निखार की संभावला एक ऐसा कारक हैं जिससे प्रभावित होकर श्रमिकों ने भामस की छत्रछाया में जाने की निर्णय लिया।

6.25 नेतृत्व में आने की संभावना

यह कारक व्यक्तित्व में निखार की संभावना से बहुत हद तक जुड़ा हुआ है। नेतृत्व में आने से भी व्यक्तित्व में निखार आता है। सर्वेक्षित सदस्यों में से 30 प्रतिशत ने नेतृत्व में आने की संभावना को एक कारक माना है जिससे श्रमिकों के भामस संघों की ओर खिंचे चले जाने में सहायक सिद्ध हुआ है।

6.26 सिर्फ इसी संघ की जानकारी

करीब एक चौथाई उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि जिस

सारणी - 6.3

बैठकों की नियमितता

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	बैठकों का नियमित आयोजन			
		हाँ		नहीं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
खनन	30	28	93.4	2	6.6
विनिर्माण	131	99	75.5	32	24.5
विद्युत	45	35	77.8	10	22.2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	42	85.7	7	14.3
वित्तीय संस्थान	74	74	100.0	0	—
स्वास्थ्य	5	3	60.0	2	40.0
योग	**334**	**281**	**84.2**	**53**	**15.8**

यह स्पष्ट होता है कि भामस संघ पर्याप्त मात्रा में तथा नियमित रुप से बैठकें आयोजित करते है। जिसके कारण संघों का प्रजातांत्रिक चरित्र बरकरार रहता है तथा सदस्यो में संगठन तथा उनके कार्यक्रमों के प्रति श्रद्धा एवं निष्ठा बनी रहती है।

6.4 पदाधिकारियों के चुनाव की नियमितता एवं निष्पक्षता

श्रमिक संघों के प्रजातांत्रिक चरित्र को बरकरार रखने के लिए नियमित समय पर पदाधिकारियों के चुनाव का होना तथा चुनाव का निष्पक्ष होना एक आवश्यक शर्त है। श्रमिक संघों की आम तौर से यह कह कर आलोचना की जाती है कि उनके पदाधिकारियों का चुनाव नियमित एवं निष्पक्ष रुप से नहीं होता । बहुत सारे संगठन हैं जहाँ वर्षो से चुनाव नहीं हुए हैं। ऐसी स्थिति में प्रजातंत्र के सिद्धांतों के आध ाार पर बने संगठन उन सिद्धांतों का ही गला घोट देते हैं। इस सर्वेक्षण के माध्यम से भामस संघों के संदर्भ में पदाधिकार्यों के चुनाव की नियमितता एवं निष्पक्षता की जानकारी हासिल करने का प्रयास किया गया है। प्राप्त जानकारी को सारणी 6.5 तथा 6.6 में अंकित किया गया है।

सारणी - 6.5
पदाधिकारियों के चुनाव की नियमितता

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नियमित		अनियमित नहीं	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्र0
खनन	30	30	100.0	0	—
विनिर्माण	131	122	93.2	9	6.8
विद्युत	45	38	84.4	7	15.6
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	29	59.2	20	40.8
वित्तीय संस्थान	74	70	94.5	4	5.5
स्वास्थ्य	5	4	80.0	1	20.0
योग	**334**	**203**	**87.7**	**41**	**12.3**

सारणी - 6.6

पदाधिकारियों के चुनावों का औचित्य एवं निष्पक्षता

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	चुनाव को उचित एवं निष्पक्षता होने की सीमा					
		बहुत हद तक		अच्छे हद तक		सामान्य हद तक	
		सं0	प्र0	सं0	प्र0	सं0	प्र0
खनन	30	26	86.6	4	13.4	0	—
विनिर्माण	131	121			10		0
विद्युत	45	43	95.6	2	4.4	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	29	59.2	12	24.5	8	16.3
वित्तीय संस्थान	74	65	87.8	6	8.1	3	4.0
स्वास्थ्य	5	5	100.0	0	—	0	—
योग	**334**	**289**	**86.5**	**34**	**10.1**	**11**	**3.4**

की पूर्ति के लिए जहाँ तक संभव हो शांतिपूर्ण तरीकों का सहारा लिया जाता है। लेकिन जहाँ आवश्यक एवं अत्यावश्यक हो जाता है उनके संघ सीधी कारवाईयों के लिए भी सदस्यों को आहूत करने में नहीं हिचकते। उनके संघों ने हड़ताल सत्याग्रह धरना नियमानुसार कार्य एवं घेराव-जैसी सीधी कारवाइयों का समय-समय पर आयोजन किया है। सदस्यों ने आम तौर पर यह बतलाया है कि उन्होने अपने-अपने संघों के आह्वान पर विभिन्न प्रकार की सीधी कारवाईयों में भाग लिया है तथा दूसरों को भाग लेने के लिए अभिप्रेरित किया है।

सदस्यों की इस अभिव्यक्ति से ऐसा पता चलता है कि सदस्यों में संगठन एवं नेतृत्व के प्रति पूरी आस्था है। संघों में अनुशासन की मात्रा पर्याप्त है । शायद यही कारण है कि प्रबंधकों द्वारा कठोर विरोध के बावजूद इन संघों ने अपने आन्दोलनों को आयोजित करने, सुसंचालन करने तथा लक्ष्यों की प्राप्ति करने में एक अच्छी हद तक सफलता अर्जित की है। सदस्यों की दृढ़ता एकजुटता एवं लक्ष्यों के प्रति गहरी आस्था ने एवं नेताओं की कर्मठता एवं वाक्यटुता ने गैर-सदस्य श्रमिकों के मानस में भी भारतीय मजदूर संघ का एक उज्जवल तस्वीर प्रस्तुत किया है तथा अपने प्रति एक आकर्षण पैदा किया है।

6.8 संघ की प्रभावशीलता

किसी भी संगठन की प्रभावसीमा की जाँच करने के लिए एक कसौटी का निर्माण करना होता है। सर्वेक्षण में सम्मिलित भारतीय मजदूर संघ की इकाईयों की प्रभावशीलता का मुल्यांकन करने के लिए कुछ महत्व के मुद्दों की एक सूची तैयार की गयी तथा सदस्यों से उन मुद्दों पर अपने संघ की सफलता की सीमा अंकित करने के लिए कहा गया। इस संदर्भ में निर्मित सूची में अनेक प्रासंगिक मुद्दे रखे गये तथा सदस्यों का हितवर्धन एवं हित-रक्षा, विचारों का प्रतिनिधित्व, शिकायत-निवारण, उपलब्ध साधनों को गतिशील करने की क्षमता, परस्पर सहयोग में विस्तार, सामूहिक वार्ता, शिक्षा का प्रचार, राजनैतिक विचारधारा का प्रचार, कल्याणकारी गतिविधियाँ औद्योगिक विवादों का समाधान सुख-दुःख में सहायता, रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन तथा राष्ट्रीय एकता की भावना, इन मुद्दों पर सदस्यों के संघ की प्रभावसीमा को ज्यादा साधारण एवं कम मात्राओं में मूल्यांकित किया है। इस संदर्भ में सदस्यों के मूल्यांकन को मुद्दों के क्रमानुसार सारणी

की राय में उनका संघ अधिक प्रभावशाली है तथा करीब 21 प्रतिशत सदस्यों की राय में उनका संघ साधारण रुप से प्रभावशाली है। मात्र 5 प्रतिशत सदस्यों ने इस संदर्भ में संघ की प्रभावसीमा को कम विशेषण से विभूषित किया।

6.83 शिकायत–निवारण

विभिन्न उद्योगों के श्रमिकों में आमतौर से शिकायतों एवं परिवेदनाओं का उत्पन्न होना आम बात हो गयी है। रोजमर्रे के जीवन में शिकायतें जन्म लेती रहती हैं चाहे उनका आधार जो भी हो शिकायतें वास्तविक भी होती है और काल्पनिक भी। शिकायतों की प्रकृति चाहें जो भी हो श्रमिकों के लिए तथा औद्योगिक संस्थान के लिए उनका अविलम्ब निवारण श्रेयस्कर है। उनके अविलम्ब निवारण न होने से श्रमिकों के मनोबल पर तथा उद्योग की उत्पादन–क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। प्रजातांत्रिक संगठनों में शिकायत–निवारण में श्रमिक संघ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

सारणी 6.11 के आँकड़े यह बतलाते हैं कि भारतीय मजदूर संघ की इकाइयाँ अपने सदस्यों की शिकायतों के निवारण में असरदार है। इस असर की हद करीब 77 प्रतिशत सदस्यों की राय में ज्यादा है तथा करीब 20 प्रतिशत सदस्यों की राय में साधारण है। 12 सदस्यों ने इस संदर्भ में संघ के असर को निम्न माना है।

6.84 उपलब्ध साधनों का समुचित उपयोग

इस संदर्भ में अधिकतर सदस्यों ने यह महसूस किया है कि उनके संघ उपलब्ध साधनों को गतिशील करने तथा उनका समुचित उपयोग करने में पूरी तरह सक्षम नहीं है। सारणी 6.12 के आँकड़ों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि अधिकांश सदस्यों की दृष्टि में उनके संघ साधनों के अवदोहन में साधारण रुप से प्रभावशाली है। साक्षात्कार के क्रम में अनेक सदस्यों ने इस तथ्य की ओर इशारा किया कि अगर उनका संघ उपलब्ध साधनों का पूर्णतः उपयोग करें तो अनेक क्षेत्रों में सफलतायें उनके कदम चूमेंगी। इससे इस संदर्भ में सदस्यों में व्यक्त असंतुष्टि का पता चलता हैं

6.85 परस्पर सहयोग की भावना

सारणी - 6.9

संघ की प्रभावशीलता : सदस्यों के हितों की रक्षा में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	30	100.0	0	—	0	—
विनिर्माण	131	124	95.4	5	3.1	2	1.5
विद्युत	45	40	88.9	3	6.7	2	4.4
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	47	95.9	2	4.1	0	—
वित्तीय संस्थान	74	52	70.2	21	28.4	1	1.4
स्वास्थ्य	5	5	100.0	0	—	0	—
योग	**334**	**298**	**89.2**	**31**	**9.2**	**5**	**1.6**

अधिकतर उत्तरदाताओं ने यह स्वीकार किया है कि उनके संघ परस्पर सहयोग की भावना को कायम रखनें तथा बढ़ाने में प्रभावशीलता अधिक, करीब 30 प्रतिशत की दृष्टि में साधारण है।

6.86 सामूहिक वार्ता

आधुनिक युग में सामुहिक वार्ता एक ऐसी प्रक्रिया का रुप ग्रहण कर चुकी है। जिसके द्वारा उद्योगों का समुचित प्रबंधन एवं संचालन होता है। सामूहिक वार्ता के द्वारा उद्योगों के प्रबंधन में प्रजातंत्र के तत्वों को प्रेरित किया जा सकता है। सामूहिक वार्ता के द्वारा उद्योगों के प्रबंधन से तानाशाही को हटाकर लोकशाही की स्थापना की जा सकती है। भारत जैसे प्रजातंत्र राष्ट्र में उद्योंगों के प्रबंधन मे सामूहिक वार्ता की विशेष महत्व दिया जा रहा है। सामूहिक वार्ता में श्रमिकों के ऊपर भी यह दायित्व आता है कि वे अपने घर को एकताबद्ध रखें एवं फूट से परे रखें अन्यथा सफलता उनसे दूर भागेगी।

भारतीय मजदूर संघ के नेताओं में सामूहिक वार्ता करने की कितनी क्षमता हैं तथा सामूहिक वार्ता में संघ किस हद तक प्रभावकारी है इसका मूल्यांकन सारणी 6.14 में प्रस्तुत किया गया है । करीब 54 प्रतिशत सदस्यों ने संघ के प्रभाव का ज्यादा माना है। करीब 33 प्रतिशत ने साधारण तथा करीब 12 प्रतिशत ने कम माना है। इससे यह पता चलता है कि अन्य कई मुद्दों की तुलना में इस मुद्दे पर संघ की प्रभावशीलता कम है।

6.87 शिक्षा का प्रचार-प्रसार

आम तौर से श्रमिक संघों की इस बात के लिए आलोचना की जाती है कि यह अपने सदस्यों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर समुचित ध्यान नहीं देती । सारणी 6.15 के आँकड़े भी इस बात की ओर संकेत करते है। करीब 35 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में उनके संघों की प्रभाव सीमा कम है, करीब 54 प्रतिशत की दृष्टि में साधारण और करीब 10 प्रतिशत की दृष्टि में ज्यादा। इस संदर्भ में ज्यादा कहने वाले सदस्य वैसे है जो भामस के प्रति अन्धभक्ति रखते है। उन्हें भामस में जो कुछ भी है, अच्छा दिखाई देता है। उसकी बुराईयाँ उन्हें नजर ही नहीं आती। सभी संगठनों में कुछ ऐसे व्यक्ति पाये जाते हैं।

कारण से न्यायाधिकरण औद्योगिक विवाद के समाधान में एक मान्य तरीका के रुप में कायम हैं।

भारतीय मजदूर संघ की सर्वेक्षित इकाइयों के सदस्य अपने-अपने संघो की इस संदर्भ में प्रभावशीलता से प्रसन्न नहीं है। अधिकांश सदस्यों ने यह माना है कि उनका संघ न्यायालय द्वारा विवादों के अनुकूल समाधान में प्रभावकारी नहीं है। इस संदर्भ में करीब 58 प्रतिशत सदस्यों ने अपने संघों का प्रभावशीलता को निम्न तथा करीब 42 प्रतिशत ने साधारण माना है। सदस्यों के इस मूल्यांकन से भामस के नेताओं को सबक लेनी चाहिए तथा सदस्यों की संतुष्टि-दर को बढ़ना चाहिए।

6.8.11 सदस्यों के सुख-दुख में सहायक

अधिकतर सदस्यों की राय में उनके संघ उनके सुख-दुख में सहायक होते है इस संदर्भ में संघ की गतिविधियाँ प्रशंसनीय है।

6.8.12 सामूहिक उत्सव तथा रचनात्मक कार्यक्रम

आम सदस्यों में इस संदर्भ में संघ की प्रभावशीलता पर अप्रसन्नता प्रगट की गयी है। सारणी 6.21 के आँकड़ों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भामस की इकाईयों द्वारा सामूहिक उत्सव एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन कम होते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सदस्यगण सामूहिक उत्सवों तथा रचनात्मक कार्यक्रमों के आयोजन की मांग अपने अपने संघों से कर रहे है।

6.8.13 राष्ट्रीय एकता की भावना

भामस की विचारधारा में राष्ट्रहित सर्वोपरि है। राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता उनका मुख्य राष्ट्रीय ध्येय है। सर्वेक्षित सदस्यों ने भी इस बात की पूर्ण पुष्टि की है। राष्ट्रीय एकता की भावना के प्रचार-प्रसार में उनके संघ तल्लीन हैं तथा वे इसमें पूर्णतः प्रभावशाली साबित हुए है।

सारणी- 6.12

संघ की प्रभावशीलता : उपलब्ध साधनों को गतिशील करने में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	0	—	30	100.0	0	—
विनिर्माण	131	45	34.5	85	64.8	1	0.7
विद्युत	45	7	15.6	35	77.8	3	6.7
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	15	30.6	34	69.4	0	—
वित्तीय संस्थान	74	16	21.6	58	78.4	0	—
स्वास्थ्य	5	0	--	0	--	5	100.0
योग	**334**	**83**	**24.8**	**242**	**72.4**	**9**	**2.8**

सारणी- 6.14

संघ की प्रभावशीलता : प्रबंधको के साथ सामूहिक वार्ता करनें में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	16	53.4	14	46.6	0	—
विनिर्माण	131	41	31.2	59	45.2	31	23.6
विद्युत	45	34	75.6	7	15.6	4	8.9
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	35	71.4	10	20.4	4	8.2
वित्तीय संस्थान	74	52	70.2	19	25.6	3	4.2
स्वास्थ्य	5	3	60.0	2	40.0	0	--
योग	**334**	**181**	**54.1**	**111**	**33.2**	**42**	**12.5**

सारणी- 6.16

संघ की प्रभावशीलता : राजनीतिक विचारधरा के प्रचार प्रसार में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	0	—	2	6.6	28	93.4
विनिर्माण	131	0	—	38	29.1	93	70.9
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	0	—	5	10.2	44	89.8
वित्तीय संस्थान	74	0	—	9	12.2	65	87.8
स्वास्थ्य	5	0	—	0	—	5	100.0
योग	**334**	**0**	**--**	**61**	**18.2**	**273**	**81.8**

सारणी- 6.18

संघ की प्रभावशीलता : संघ के स्तर पर सदस्यों के कल्याणार्थ सेवा प्रदान करने में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	6	20.0	24	80.0	0	--
विनिर्माण	131	65	49.6	65	49.6	1	0.8
विद्युत	45	21	46.6	20	44.6	4	8.8
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	20	40.8	29	59.2	0	--
वित्तीय संस्थान	74	26	35.1	45	60.8	3	4.1
स्वास्थ्य	5	3	60.0	1	20.0	1	20.0
योग	**334**	**141**	**42.2**	**184**	**55.2**	**9**	**2.6**

सारणी- 6.20

संघ की प्रभावशीलता : सदस्यों के सुख-दुःख में सहायक होने में

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	16	53.4	14	46.6	0	--
विनिर्माण	131	70	53.6	55	41.9	6	4.5
विद्युत	45	40	88.9	5	11.1	0	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	28	57.3	14	28.5	7	14.2
वित्तीय संस्थान	74	48	64.8	20	27.1	6	8.1
स्वास्थ्य	5	4	80.0	1	20.0	0	--
योग	**334**	**206**	**61.6**	**109**	**32.6**	**19**	**5.8**

सारणी- 6.22

संघ की प्रभावशीलता : राष्ट्रीय एकता की भावना करने मे।

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रभाव की सीमा					
		ज्यादा	प्रति0	साधा0	प्रति0	कम	प्रति0
खनन	30	30	100.0	0	—	0	—
विनिर्माण	131	131	100.0	0	—	0	—
विद्युत	45	45	100.0	0	—	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	49	100.0	0	—	0	—
वित्तीय संस्थान	74	74	100.0	0	—	0	—
स्वास्थ्य	5	5	100.0	0	—	0	—
योग	**334**	**334**	**100.0**	**0**	**--**	**0**	**--**

7.1 नेताओं से जान पहचान की सीमा

नेतृत्व की प्रभावशीलता इस बात पर भी आधारित होती है कि नेतागण अपने अनुयायियों के कितने करीब हैं। नेताओं और अनुयायियों में सामिप्य जितना ही अधिक होगा नेतृत्व उतना ही प्रभावशाली होगा। भामस के सदस्यों तथा नेताओं के सामिप्य को आँकर्ने के लिए सदस्यों से यह सवाल किया गया कि वे अपने नेताओं के कितने भाग से परिचित हैं अथवा जान–पहचान रखते हैं। प्राप्त उत्तरों को सारणी 7.1 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 7.1 के आँकड़ों का सिंहावलोकन करने से यह तथ्य प्रकट होता है कि अधिकांश सदस्यों को सम्पूर्ण नेतृत्व के जान–पहचान है। सम्पूर्ण नेतृत्व से जान पहचान रखने वाले करीब 72 प्रतिशत सदस्य हैं। सदस्यों का प्रतिशत सभी उद्योगों में एक समान नहीं है। खनन एवं स्वास्थ्य के सभी सदस्य अपने सभी नेताओं को पहचानते हैं। विनिर्माण, वित्तीय संस्थान एवं विद्युत में यह प्रतिशत क्रमशः 84.1, 66.2 और 53.4 है। दुकान एवं प्रतिष्ठान में स्थिति पृथक हैं। इसमें करीब 43 प्रतिशत सदस्य ही अपने सभी नेताओं को जानते पहचानते हैं। दुकान एवं प्रतिष्ठान में इस स्थिति का होना स्वाभाविक है। क्योकि यहाँ के श्रमिक किसी एक छत के नीचे काम नहीं करते है अपितु वे सम्पूर्ण क्षेत्र में बिखरे हुए है। उनमें शिक्षा की भी कमी है तथा अपने मालिकों के सीधे सम्पर्क में रहने के कारण नेताओं से अधिक सम्पर्क रखने में हिचकते है।

इस संदर्भ में करीब 20 प्रतिशत सदस्यों ने अपने नेताओं के तीन चौथाई भाग से परिचित होने का दावा किया है। करीब 7 प्रतिशत सदस्य आधे नेताओं से, और 2 प्रतिशत एक चौथाई नेताओं से परिचित हैं। जैसे नेताओं का प्रतिशत कम होता है उत्तरदाताओं का प्रतिशत की कमता गया । यह स्थिति करीब–करीब सभी उद्योगों में एक सी है।

7.2 नेतृत्व की विशेषताएँ

नेतृत्व की अनेक विशेषताएँ होती है। इनमें से कुछ विशेषताएँ अच्छी मानी जाती है तथा कुछ वैसी भी हैं जिन्हें अवांक्षित एवं अनापेक्षित की संज्ञा दी जा सकती है। सूचना अनुसूची में ऐसे ही

सारणी- 7.1

नेताओं से जान-पहचान की सीमा

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं का भाग							
		संपूर्ण		तीन चौथाई		आधा		चौथाई	
		सं0	प्रति0	सं0	प्रति0	सं0	प्रति0	सं0	प्रति0
खनन	30	30	100	0	--	0	--	0	—
विनिर्माण	131	110	84.1	5	3.8	10	7.6	6	4.5
विद्युत	45	24	53.4	21	46.6	0	--	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	21	42.9	18	36.7	10	20.4	0	—
वित्तीय संस्थान	74	49	66.2	23	31.1	2	2.7	0	—
स्वास्थ्य	5	5	100.0	0	--	0	--	0	—
योग	**334**	**239**	**71.6**	**67**	**20.1**	**22**	**6.6**	**6**	**1.7**

सारणी - 7.2
नेतृत्व की विशेषता : मित्रवत व्यवहार

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	8	26.6	12	40.0	10	33.4	--	--	--	--
विनिर्माण	131	97	74.1	24	18.3	10	7.6	--	--	--	--
विद्युत	45	37	82.2	8	17.8	--	--	--	--	--	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	46	93.9	2	4.1	1	2.0	--	--	--	--
वित्तीय संस्थान	74	72	97.3	2	2.7	--	--	--	--	--	--
स्वास्थय	5	5	100.0	--	--	--	--	--	--	--	--
योग	**334**	**265**	**79.3**	**48**	**14.3**	**21**	**6.4**	--	--	--	--

सारणी - 7.4

नेतृत्व की विशेषता : स्वार्थपरता

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	—	—	—	—	—	—	26	86.6	4	13.4
विनिर्माण	131	—	—	—	—	—	—	18	13.7	113	86.3
विद्युत	45	—	—	—	—	5	11.1	8	17.8	32	71.1
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	—	—	—	--	—	—	7	14.3	42	85.7
वित्तीय संस्थान	74	—	—	—	—	2	2.7	4	5.5	68	91.8
स्वास्थय	5	—	—	—	—	—	—	—	—	5	100.0
योग	**334**	--	--	--	--	**7**	**2.0**	**63**	**18.8**	**264**	**79.2**

सारणी - 7.5

नेतृत्व की विशेषता : पक्षपातपूर्ण व्यवहार

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	—	—	—	—	—	—	22	73.4	8	26.6
विनिर्माण	131	—	—	2	1.5	3	2.2	91	69.4	35	26.7
विद्युत	45	—	—	3	6.7	5	11.1	2	4.4	35	77.8
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	—	—	—	—	7	14.3	15	30.6	27	55.1
वित्तीय संस्थान	74	—	—	—	—	—	—	11	14.8	63	85.2
स्वास्थय	5	—	—	—	—	—	—	—	--	5	100.0
योग	**334**	**--**	**--**	**5**	**1.4**	**15**	**4.4**	**141**	**42.2**	**173**	**51.0**

7.26 संघ- संचालन की क्षमता

भामस के अधिकतर सदस्य अपने नेताओं में संघ-संचालन की क्षमता के दर्शन करते है। करीब 79 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में सम्पूर्ण नेतृत्व, 14 प्रतिशत की दृष्टि में तीन चौथाई नेतृत्व तथा 5 प्रतिशत के दृष्टि में आधा नेतृत्व संघ संचालन में सक्षम है। खनन छोड़कर सभी उद्योगों के अधिकतर सदस्य यह मानते है कि उनके सारे नेता संघ की गतिविधियों को सूचारु रुप से चलाने मे निपूण हैं। खनन की स्थिति अलग है यहाँ के अधिकतर सदस्य यह मानते हैं कि आधा से अधिक नेताओं में संघ-संचालन की क्षमता का अभाव है।

7.27 सहायता के लिए तत्परता

सभी उद्योगों के अधिकांश सदस्य अपने नेताओं में सहायता करने की तत्परता पाते हैं इसमें अपवाद भी है। खनन उद्योग के अधिकांश सदस्य एक चौथाई नेताओं में इस तत्परता का अभाव पाते हैं।

7.28 सदस्यों की चिन्ता से चिन्तित

प्रजातंत्र में ऐसी मान्यता है कि उनके नेता अपने अनुयायियों की खुशी से खुश तथा उनके दुःख से दुःखी होते हैं। सदस्यों की चिन्ता उनकी अपनी चिन्ता का रुप लेती है। सारणी 7.9 के आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि इस संदर्भ में सम्पूर्ण नेताओं की सराहना करने वाले 45.5, तीन चौथाई की सराहना करने वाले 47.9 तथा आधा की सराहना करने वाले 6.6 सदस्य हैं। जाहिर है कि अधि ाकांश सदस्य नेताओं के सम्पूर्ण भाग में इस गुण का वर्तमान नहीं पाते। स्वास्थ्य, विद्युत तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान या अधिकतर सदस्य सम्पूर्ण नेतृत्व में उस गुण का दर्शन करते है। खनन एवं विनिर्माण के अधिकतर सदस्यों की दृष्टि मे करीब एक चौथाई नेताओं में इस गुण का अभाव है। वित्तीय संस्थान के सदस्य ने भी अपने नेताओं के एक अच्छे भाग में उस गुण का अभाव पाया है।

7.29 समस्याओं का समुचित प्रतिनिधित्व

सदस्यों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व उनके नेता करते है।

सारणी - 7.8

नेतृत्व की विशेषता : सहायता के लिए तत्परता

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	14	46.6	16	53.4	—	—	—	=	=	=
विनिर्माण	131	95	72.5	34	25.9	2	1.6	—	—	—	—
विद्युत	45	40	88.9	5	11.1	—	—	—	—	—	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	43	87.8	6	12:2	—	—	—	—	—	—
वित्तीय संस्थान	74	62	83.7	12	16.3	—	—	—	—	—	—
स्वास्थय	5	5	100.0	—	—	—	—	—	—	—	—
योग	**334**	**259**	**77.5**	**73**	**21.8**	**2**	**0.7**	--	--	--	--

सारणी - 7.9

नेतृत्व की विशेषता : सदस्यों की चिंता से चिंतित

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	4	13.4	26	86.6	—	—	—	—	—	—
विनिर्माण	131	34	25.9	93	70.9	4	3.2	—	—	—	—
विद्युत	45	42	93.3	2	4.4	1	2.3	—	—	—	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	37	75.5	7	14.3	5	10.2	—	—	—	—
वित्तीय संस्थान	74	30	40.5	32	43.2	12	16.3	—	—	—	—
स्वास्थय	5	5	100.0	—	—	—	—	—	—	—	—
योग	**334**	**152**	**45.5**	**160**	**47.9**	**22**	**6.6**	--	--	--	--

सारणी - 7.11

नेतृत्व की विशेषता : प्रबंधकों के उचित निर्णय पर उनकी सराहना

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	8	26.6	22	73.4	—	—	—	—	—	—
विनिर्माण	131	100	76.4	31	23.6	—	—	—	—	—	—
विद्युत	45	35	77.8	8	17.8	2	4.4	—	—	—	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	37	75.5	7	14.3	5	10.2	—	—	—	—
वित्तीय संस्थान	74	74	100.0	—	—	—	—	—	—	—	—
स्वास्थय	5	5	100.0	—	—	—	—	—	—	—	—
योग	**334**	**259**	**77.5**	**68**	**20.3**	**7**	**2.2**	--	--	--	--

7.2.11 राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति

ऐसी आम मान्यता है कि श्रमसंघ के नेतागण राजनीतिक आकांक्षओं की पूर्ति में तल्लीन रहते है। भामस के संदर्भ में 74 प्रतिशत सदस्यों का राय है कि उनका नेतृत्व राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में तल्लीन नहीं रहता है फिर भी 16.4 प्रतिशत सदस्यों ने एक चौथाई नेताओं को, 5.6 प्रतिशत ने आधे नेताओं को तथा करीब 3 प्रतिशत ने तीन चौथाई नेताओं को राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में तल्लीन पाया। वित्तीय संस्थान तथा स्वास्थ्य संस्थान के सभी सदस्यों ने यह माना है कि उनके नेतागण राजनीतिक गतिविधियों में मशगूल नहीं है। विनिर्माण, विद्युत तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान के अधिकांश सदस्यों की भी यही मान्यता है। खनन उद्योग इस संदर्भ में एक अलग तस्वीर प्रस्तुत करता है। इस उद्योग के 40 प्रतिशत सदस्यों की नजर में नेतृत्व का आधा भाग, 34.4 प्रतिशत की नजर में तीन चौथाई भाग और 13.3 प्रतिशत की नजर में चौथाई भाग राजनीतिक आकांक्षों की पूर्ति में तल्लीन है।

7.2.12 जातीयता एवं साम्प्रदायिकता

भामस के नेताओं पर अकसर साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित करने का तथा जातीयता की भावना से ओतप्रोत होने का आरोप लगाया जाता है। लेकिन उनके सदस्यों की दृष्टि में यह आरोप सर्वथा गलत है। जहाँ तक जाँति-पाँति की भावना से ओत-प्रोत का सवाल है। करीब 86 प्रतिशत सदस्यों की मान्यता है कि उनके नेतागण जातियता की भावना से ओत-प्रोल नहीं है। मात्र 14 प्रतिशत सदस्य अपने नेतृत्व में विभिन्न अंश तक इस आरोप के मौजूद रहने की पुष्टि करते है।

सारणी 7.14 के आँकड़े इस बात के सदस्य का उद्घाटन करते हैं कि भामस के नेतागण साम्प्रदायिकता की भावना को प्रोत्साहन प्रदान नहीं करते । ऐसी मान्यता वाले सदस्यों का प्रतिशत 92.3 है। एक बात और स्पष्ट होती है कि खनन को छोड़कर सभी उद्योगों को सभी सदस्य यह मानते हैं कि उनके नेताओं में साम्प्रदायिकता करे प्रोत्साहित करने की पृवृत्ति का सर्वथा अभाव है। लेकिन खनन उद्योग तस्वीर का एक दूसरा पक्ष उजागर करता है।

सारणी - 7.14

नेतृत्व की विशेषता : साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	नेताओं की संख्या									
		संपूर्ण	प्र0	तीन चौथाई	प्र0	आधा	प्र0	चौथाई	प्र0	शून्य	प्र0
खनन	30	—	—	—	—	—	—	26	86.6	4	13.4
विनिर्माण	131	—	—	—	—	—	—	—	—	131	100.0
विद्युत	45	—	—	—	—	—	—	—	—	45	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	—	—	—	—	—	—	—	—	49	100.0
वित्तीय संस्थान	74	—	—	—	—	—	—	—	—	74	100.0
स्वास्थय	5	—	—	—	—	—	—	—	—	5	100.0
योग	334	--	--	--	--	--	--	26	7.7	308	92.3

सदस्यों ने अपने नेताओं पर सुस्ती एवं अकर्मण्यता का आरोप नहीं लगाया है। इस कल्पना के समर्थन में 13 प्रतिशत तथा विरोध में करीब 66 प्रतिशत मत प्राप्त हुए। सभी उद्योगों के अधिकांश सदस्यों ने इस परिकल्पना से असहमति व्यक्त की है। फलस्वरुप यह कहा जा सकता है कि भामस के नेता सुस्ती एवं अकर्मण्यता के शिकार नहीं है।

परिकल्पना–3 : <u>संघ के नेता मजदूरों की समस्याओ से पूरी तरह वाकिफ हैं।</u>

सारणी 7.17 के आँकड़े इस परिकल्पना का समर्थन करते है। करीब 58 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को सही और करीब 26 प्रतिशत ने गलत बतलाया है। 16 प्रतिशत सदस्यों ने इस विन्दु पर मौन रखा है। बहुमत के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भामस के नेतागण श्रमिकों की समस्याओं से पूर्णतः परिचित हैं। लेकिन विद्युत तथा दुकान एवं प्रतिष्ठान में इस मत को बहुमत का समर्थन प्राप्त नहीं हुआ है।

परिकल्पना–4 : <u>संघ के नेता अपने स्वार्थो की सिद्धि में मशगुल रहते है।</u>

इस परिकल्पना की जाँच सारणी 7.18 के आँकड़ों के आधार पर की जा सकती है। संघ के सदस्यों में आमतौर से इस परिकल्पना को गलत करार दिया है। गलत करार देने वाले सदस्यों का प्रतिशत कुल सदस्यों में 70 है अतः यह प्रमाणित होता है कि भामस के नेता अपने स्वार्थो की सिद्धि में मशगूल नहीं रहते।

परिकल्पना–5 : <u>नेता संघ का कार्य निष्ठापूर्वक करते हैं।</u>

इस परिकल्पना को बहुतायत सदस्यों का समर्थन प्राप्त हुआ। कुल सदस्यों का करीब 70 प्रतिशत भाग यह मानता है कि उनके संघों के नेता संघ के कार्य में निष्ठा रखते हैं तथा उसका संचालन निष्ठापूर्वक करते है। वित्तीय संस्थान में स्थिति स्पष्ट नहीं है।

परिकल्पना–8 : भामस नेता नये संघ के गठन के समय लम्बे–चौडे वायदों या आश्वासनों से नहीं अपितु विचारधारा और आचरण से श्रमिक को आकर्षित करते है।

भामस के संस्थापक नेता का यह सुझाव है कि भामस के नेताओं को श्रमिक–संघ बनाते समय लम्बा–चौड़ा भाषण या आश्वासन नहीं देना चाहिए और संघ की विचारधारा से प्रभावित श्रमिकों को ही सदस्य बनाना चाहिए।[1] उनके इस सुझाव का पालन होता है, ऐसा मत लगभग 68 प्रतिशत सदस्यों ने व्यक्त किया है। लगभग 20 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को गलत माना है और 12 प्रतिशत सदस्यों ने इस विषय पर अपने मत का प्रयोग नहीं किया है। इस परिकल्पना के परीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि भामस के नेता संघ की विचारधारा और अपने आचरण से श्रमिकों को प्रभावित करते हैं तथा भामस के पक्ष में माहौल तैयार करते है।

परिकल्पना–9 : भामस के नेता वार्तालाप या पत्राचार में शिष्ट भाषा का प्रयोग करते है।

भामस के नेताओं को यह निर्देश होता है कि वे भाषण, वार्तालाप या पत्राचार के समय शिष्ट भाषा का प्रयोग करें। आज प्रायः देखा जाता है कि भाषणों के दौरान अशिष्ट भाषा का प्रयोग होता है। सारणी 7.23 से यह स्पष्ट होता है कि लगभग 73.6 प्रतिशत सदस्यों की मान्यता है कि उनके नेता शिष्ट भाषा का प्रयोग करते है। करीब 17.9 प्रतिशत सदस्यों का कहना है कि उनके नेता शिष्ट भाषा का प्रयोग नहीं करते है और 8.5 प्रतिशत सदस्यों ने अपने मत का प्रयोग नहीं किया है। शिष्टाचार के चलते भी भामस की लोकप्रियता बढ़ी है।

परिकल्पना–10 : मांग पत्र में वेही माँगे सम्मिलित की जाती है जो न्यायोचित व तर्क संगत है।

यह एक परिकल्पना ही नहीं, सच्चाई भी है कि आज मांग पत्रों में वैसी भी माँगे रखी जाती हैं जो अनुचित या असंगत है।

---

1. दत्तोपंत ठेंगड़ी का भाषण, 13वाँ प्रादेशिक अधिवेशन जमशेदपुर, 1985

पर प्रतिबन्ध है। भामस के नेताओं को यह पाठ पढ़ाया गया है कि वे "मधुरभाषी, सामान्य रहन-सहन एवं समरस होने की क्षमता रखें तथा कथनी-करनी में एकता रखें साथ ही साथ नम्र और दृढ़. बनें।[3] सारणी 7.27 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि 74.5 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को सही माना है। करीब 12.2 प्रतिशत सदस्यों ने इसे गलत कहा है और 13.3 प्रतिशत सदस्यों ने अपना मत नहीं दिया है। इस परिकल्पना के परीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि भामस के नेता गाली-गलौज एवं आवेशपूर्ण भाषा के प्रयोग से परहेज रखते हैं।

परिकल्पना-14 : <u>हमारा संघ हड़ताल को अंतिम हथियार मानता है।</u>

भामस ने अपनी श्रमनीति में कहा कि "हड़ताल अन्तिम हथियार है"[4], प्रबंध से पहले अन्य तरीकों के माध्यम से भी निपटा जा सकता है और जब सारे माध्यम असफल हो जायें तब हड़ताल का प्रयोग होना चाहिए।

सर्वेक्षण में 68.5 प्रतिशत सदस्यों ने कहा कि भारतीय मजदूर संघ हड़ताल को अंतिम शस्त्र मानता है और इसका प्रयोग उस अवस्था में करता है जबकि अन्य सारे रास्ते बन्द हो जायें। लेकिन 13.7 प्रतिशत सदस्यों ने इसके विरोध में मत व्यक्त किया है।

परिकल्पना-15 : <u>नेतागण हिंसा, तोड़-फोड़ या हिंसक घेराव को प्रोत्साहित नहीं करते।</u>[5]

शांति व्यवस्था के दृष्टिकोण से यह एक महत्त्वपूर्ण परिकल्पना है। नेताओं के भाषण के साथ ही अनेक उपद्रव हो जाते है। सर्वेक्षित कुल सदस्यों में से 76.9 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना को सही माना है। अतः निष्कर्ष यह कहा जा सकता है कि भामस के नेता हिंसक घेराव, तोड़-फोड़ आदि को बढ़ावा नहीं देते । 5 प्रतिशत सदस्यों ने इस परिकल्पना से असहमति व्यक्त की है।

---

3. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1984पृ0 16-17
4. दत्तोपंत ठेंगड़ी, भारतीय मजदूर संघ, उत्तर प्रदेश, पृ0 20
5. संविधान एवं नियमावली, पृ0 1

परिकल्पना–20 : <u>नेतागण आम तौर से श्रमिक के रुप में काम करने से जी चुराते है।</u>

आज के औद्योगिक परिवेश में यह परिकल्पना प्रासंगिक है। श्रम संघों के नेतागण खुद काम नहीं करते हैं सिर्फ बैठकर गप लड़ाते हैं या बैठे रहते हैं। भामस के संदर्भ में 14.6 प्रतिशत सदस्यों ने इसे सही और 66.1 प्रतिशत सदस्यों ने गलत माना है। भामस जैसे राष्ट्रवादी संगठन के लिए यह 14.6 प्रतिशत भी बहुत है। वित्तीय संस्थान में तो 37.8 प्रतिशत सदस्यों के दृष्टिकोण में नेता काम से जी चुराते हैं। इस संदर्भ में भामस का यह नारा कुछ फीका लगने लगता है "देश के हित में करेगे काम–काम का लेगें पूरे दाम"।[6]

परिकल्पना–21 : <u>संघ के नेता श्रमिक के रुप में कर्त्तव्य परायण हैं।</u>

ऐसी आम धारणा बनती जा रही है कि श्रमिक संघ के नेता एक श्रमिक के रुप में कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं होते। श्रमिकों में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता के लिए श्रमिक संघ के नेताओं को जिम्मेवार ठहराया जाता है ऐसा इसलिए कि श्रमिक अपने नेताओं का अनुकरण करता है। अगर नेता के व्यवहार में उच्छृंखलता, कार्य के प्रति लापरवाही तथा काम से जी चुराने की प्रवृत्ति होगी तो इसका असर विभिन्न सीमा में अनुयायी श्रमिकों पर भी पड़ेगा।

इस मान्यता की जाँच करने के लिए एक धनात्मक परिकल्पना को सूचना–अनुसूची में स्थान दिया गया। इस परिकल्पना पर सर्वेक्षित सदस्यों की प्रतिक्रियायें सारणी 7.35 में संकलित हैं। आम सदस्यों की राय में भामस संघों के नेता श्रमिक के रुप में कर्त्तव्य परायण हैं। इस अभिमत को करीब 77 प्रतिशत उत्तरदाताओं का समर्थन प्राप्त है। सभी उद्योगों के बहुतायत सदस्य इस कथन की पुष्टि करते हैं।

---

6. भारतीय मजदूर संघ, बिहार प्रदेश, श्रमिक स्मारिका, 1985

सारणी - 7.16

परिकल्पना - 2 : हॉलाकि एक नेता अपने सदस्यों की सेवा करना चाहता है लेकिन अपनी सुस्ती एव अकर्मण्यता के कारण यह ऐसा नहीं कर पाता

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	—	—	23	76.6	7	23.4
विनिर्माण	131	7	5.3	83	63.3	41	31.4
विद्युत	45	5	11.1	37	82.2	3	6.7
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	4	8.2	35	71.4	10	20.4
वित्तीय संस्थान	74	27	36.5	39	52.7	8	10.8
स्वास्थ्य	5	1	20.0	3	60.0	1	20.0
योग	334	44	13.1	220	65.8	70	20.0

सारणी - 7.18

परिकल्पना - 4 : संघ के नेता अपने स्वार्थी की सिद्धि मे मशगूल रहते है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	--	--	23	76.6	7	23.4
विनिर्माण	131	8	6.1	90	68.7	33	25.2
विद्युत	45	7	15.6	25	55.6	13	28.8
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	--	--	40	81.6	9	18.4
वित्तीय संस्थान	74	4	5.4	51	68.9	19	25.7
स्वास्थ्य	5	--	--	5	100.0	--	--
योग	**334**	**19**	**5.6**	**234**	**70.0**	**81**	**24.4**

सारणी - 7.20

परिकल्पना - 6 : हमारे नेता श्रमिक के रुप में कर्त्तव्य परायण होने की सलाह देते है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	—	—	7	23.4
विनिर्माण	131	96	73.2	32	24.4	3	2.4
विद्युत	45	42	93.3	—	—	3	6.7
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	31	63.3	5	10.2	13	26.5
वित्तीय संस्थान	74	54	72.9	—	—	20	27.1
स्वास्थ्य	5	5	100.0	—	—	—	--
योग	**334**	**251**	**75.1**	**37**	**11.0**	**46**	**13.9**

सारणी - 7.22

परिकल्पना - 8 : भामस के नेता लम्बे चौड़े वायदों एवं आश्वासनों से नहीं अपितु विचारधारा व आचरण से श्रमिकों को आकर्षित करते हैं।

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	7	23.4	--	--
विनिर्माण	131	73	55.7	51	38.9	7	5.4
विद्युत	45	32	71.1	3	6.7	10	22.2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	38	77.6	4	8.2	7	14.2
वित्तीय संस्थान	74	55	74.3	1	1.3	18	24.4
स्वास्थ्य	5	5	100.0	--	--	--	--
योग	334	226	67.6	66	19.7	42	12.7

सारणी - 7.24

परिकल्पना - 10 : मांग-पत्र में वे ही मांगे सम्मिलित की जाती है जो न्यायोचित व तर्क संगत है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	7	23.4	—	—
विनिर्माण	131	89	67.9	38	29.0	4	3.1
विद्युत	45	38	84.4	—	—	7	15.6
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	40	81.6	2	4.1	7	14.3
वित्तीय संस्थान	74	54	72.9	—	—	10	27.1
स्वास्थ्य	5	5	100.0	—	—	—	—
योग	334	249	74.5	47	14.0	38	11.5

सारणी - 7.26

परिकल्पना - 12 : वार्तालाप में हमारे नेता किसी भी विषय को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर नहीं लड़ते

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	22	73.3	1	3.3	7	23.4
विनिर्माण	131	97	74.0	4	3.1	30	22.9
विद्युत	45	38	84.4	2	4.4	5	11.2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	25	51.0	8	16.3	16	32.7
वित्तीय संस्थान	74	57	77.1	--	--	17	22.9
स्वास्थ्य	5	3	60.0	2	40.0	--	--
योग	334	242	72.4	17	5.0	75	22.6

सारणी - 7.28

परिकल्पना - 14 : हमारा संघ हड़ताल को अन्तिम हथियार मानता है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	22	73.3	1	3.3	7	23.4
विनिर्माण	131	90	68.7	10	7.6	31	23.7
विद्युत	45	32	71.1	8	17.8	5	11.1
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	30	61.2	9	18.4	10	20.4
वित्तीय संस्थान	74	50	67.5	18	24.3	6	8.2
स्वास्थ्य	5	5	100.0	—	—	—	—
योग	334	229	68.5	46	13.7	59	17.8

सारणी - 7.30

परिकल्पना - 16 : नेतागण संघ के कोष का व्यक्तिगत लाभ के लिए दुरुपयोग करते हैं

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	--	--	23	76.6	7	23.4
विनिर्माण	131	5	3.8	98	74.8	28	21.4
विद्युत	45	7	15.6	29	64.4	9	20.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	5	10.2	42	85.7	2	4.1
वित्तीय संस्थान	74	15	20.2	49	66.2	10	13.6
स्वास्थ्य	5	--	--	5	100.0	--	--
योग	334	32	9.5	246	73.6	56	16.9

सारणी - 7.32

परिकल्पना - 18 : संघ द्वारा कार्यकर्त्ताओं के समुचित प्रशिक्षण के लिए अभ्यास वर्गो का आयोजन करते रहते है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	23	76.6	—	—	7	23.4
विनिर्माण	131	98	74.8	30	22.9	3	2.3
विद्युत	45	29	64.4	5	11.1	11	24.5
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	36	73.5	7	14.3	6	12.2
वित्तीय संस्थान	74	25	33.7	37	50.0	12	16.3
स्वास्थ्य	5	5	100.0	—	—	—	—
योग	334	216	64.6	79	23.6	39	11.8

सारणी - 7.34

परिकल्पना - 20 : नेतागण आमतौर से श्रमिक के रुप में काम से जी चुराते है

उद्योग	उत्तरदाताओं की संख्या	अभिमत					
		सही	प्रतिशत	गलत	प्रतिशत	मत नहीं	प्रतिशत
खनन	30	--	--	23	76.6	7	23.4
विनिर्माण	131	16	12.2	86	65.6	29	22.2
विद्युत	45	--	--	45	100.0	--	--
दुकान एवं प्रतिष्ठान	49	5	10.2	35	71.4	9	18.4
वित्तीय संस्थान	74	28	37.8	27	36.4	19	25.8
स्वास्थ्य	5	--	--	5	100.0	--	--
योग	334	49	14.6	221	66.1	64	19.3

अध्याय – आठ

नेतृत्व पार्श्विका

प्रस्तुत अध्याय छः खण्डो में विभाजित है। सर्वेक्षित नेताओ का परिचय उनके जनांकिकीय विषेशताओ के आद्यार पर खण्ड एक में, पारिवारिक विशेषताओं के आघार पर खण्ड दो में, जीवन शैली के आद्यार पर खण्ड तीन में तथा संगठनात्मक विशेषताओं के आघार पर खण्ड चार में प्रस्तुत किया गया है। खण्ड पॉच में औद्योगिक संबंद्य की ज्वलन्त समस्याओं पर भामस नेताओ की प्रतिक्रियाओ का विश्लेषण किया गया है। अंतिम खंड में भामस के आदर्श वाक्यों तथा प्रचलित नारों से नेताओं की सहमति का सीमांकन किया गया है।

8.1 जनांकिकीय विशेषताएँ

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओ का एक समन्वित चित्रांकन उनके जनांकिकीय विशेषताओ के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास इस खण्ड में किया गया है। इस संदर्भ में जनांकिकीय कारक जिनके आध ार पर नेताओं का परिचात्मक विवरण प्रस्तुत किया है, निम्नलिखित हैं –

1. आयु,
2. लिंग,
3. निवास स्थान,
4. वैवाहिक स्थिति,
5. धर्म,
6. जाति,
7. शिक्षास्तर
8. नेतृत्व प्रशिक्षण
9. मातृभाषा एवं अन्य भाषाएँ,
10. पेशा एवं जीवन-निर्वाह के साधन।

सारणी - 8.1

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण

उद्योग	नेताओं की संख्या	आयु वर्ग					
		20 से 30 वर्ष		30 से 50 वर्ष		51 से 60 वर्ष	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	0	—	8	100.0	0	—
विनिर्माण	16	4	25.0	9	50.0	3	18.7
विद्युत	4	0	—	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	2	50.0	0	—
वित्तीय संस्थान	6	0	—	4	66.7	2	33.3
स्वास्थ्य	4	2	50.0	2	50.0	0	—
सामान्य	8	0	—	2	25.0	6	75.0
योग	50	8	16.0	31	62.0	11	22.0

क्रमशः

सारणी - 8.1

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण

उद्योग	नेताओं की सं0	निवास स्थान					
		ग्रामीण		शहरी		अर्द्धशहरी	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	8	100.0	0	—	0	—
विनिर्माण	16	2	12.5	4	25.5	10	62.5
विद्युत	4	0	—	0	—	4	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	0	—	2	50.0
वित्तीय संस्थान	6	2	33.3	4	66.7	0	—
स्वास्थय	4	4	100.0	0	—	0	—
सामान्य	8	0	—	6	75.0	2	25.0
योग	50	18	36.0	14	28.0	18	36.0

सारणी - 8.2

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण- धर्म, जाति, शिक्षा स्तर

उद्योग	नेताओं की संख्या	धर्म					
		हिन्दू		मुस्लिम		ईसाई	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	8	100.0	0	—	0	—
विनिर्माण	16	15	93.8	0	—	1	6.2
विद्युत	4	4	100.0	0	—	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	100.0	0	—	0	—
वित्तीय संस्थान	6	6	100.0	0	—	0	—
स्वास्थ्य	4	4	100.0	0	—	0	—
सामान्य	8	8	100.0	0	—	0	—
योग	**50**	**49**	**98.0**	**0**	--	**1**	**2.0**

क्रमशः

सारणी - 8.2

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण- धर्म, जाति, शिक्षा स्तर

उद्योग	नेताओ की सं0	शिक्षा स्तर					
		साक्षर		मैट्रिक		स्नातक	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	2	25.0	4	50.0	2	25.0
विनिर्माण	16	4	25.0	4	25.0	8	50.0
विद्युत	4	0	—	0	—	4	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	—	4	100.0	0	—
वित्तीय संस्थान	6	0	—	2	33.3	4	66.7
स्वास्थ्य	4	0	—	4	100.0	0	—
सामान्य	8	0	—	8	100.0	0	—
योग	**50**	**8**	**16.0**	**24**	**48.0**	**18**	**36.0**

क्रमशः

8.21 परिवार का आकार एवं लिंग- संरचना

भामस – नेतृत्व के नेताओं के परिवारों के आकार भिन्न- भिन्न हैं। करीब 62 प्रतिशत नेताओं के परिवारों में 6 से 10 सदस्य, करीब 28 प्रतिशत के परिवारों में 1से 5 सदस्य तथा 10 प्रतिशत के परिवारों में 11 या दससे अधिक। भमस–नेताओं के परिवारों के आकार पर दृष्ठिपात करने से यह पता चलता है कि औसत प्रति परिवार 7 सदस्य हैं।

8.22 परिवार की लिंग- संरचना

भामस नेताओं के परिवार में संख्या के आधर पर महिला स्दस्यों की प्रधनता है कुल सदस्यों में 57 प्रतिशत महिला तथा 43 प्रतिशत पुरूष हैं।

8.23 आर्थिक स्थिति

सारणी 8.4 में भामस के नेताओं के परिवारों के सदस्यों की आर्थिक स्थिति का आवलोकन हुआ है। सदस्यों में करीब 18 प्रतिशत उपार्जक तथा 82 प्रतिशत परावलंबी हैं । इनके परिवारों में उपार्जक – आश्रित का अनूपात 1:4:5 है। दुसरें शब्दों में, एक उपार्जक कों 4. 5 परवलंबी सरस्यों का भार वहन करना पड़ता है । इस स्थिति से ऐसा अनूमान किया जा सकता है कि भामस – नेताओं के परिवारों की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है।

8.24 परिवार में शिक्षा

भामस नेताओं के परिवारों में सरक्षरता की दर बहुत अच्छी है कुल सदस्यों में से करीब 86 प्रतिशत साक्षर तथा मात्र 14 प्रतिशत निरक्षर हैं।

8.3 नेताओं की जीवन –शैली

सारणी 8.5, 8.6, एवं 8.7 में जीवन शैली से सम्वन्धित विन्दूओं के आधार पर भामस के नेताओं का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इन रारणियों के अध्ययन से भामस नेतृत्व की जीवन- शैली का निम्नलिखित चित्र उभरता है।

सारणी - 8.3

भामस नेताओं का जनांकिकीय गुणों के आधार पर वितरण- भाषा एवं पेशा

उद्योग	नेताओं की सं0	पेशा			जीवन निर्वाह के अन्य साधन		
		नौकरी	अन्य	संघ	नौकरी	खेती	व्यापार
खनन	8	4	—	—	4	—	—
विनिर्माण	16	14	—	2	14	2	—
विद्युत	4	4	—	—	4	—	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	—	—	4	—	—
वित्तीय संस्थान	6	6	—	5	6	—	—
स्वास्थ्य	4	4	—	—	4	—	—
सामान्य	8	6	6	—	6	4	6
योग	50	42	6	2	42	5	5

सारणी - 8.4

भामस नेताओं के परिवारों की स्थिति - आकार, लिंग, आर्थिक गतिविधि, शिक्षा

उद्योग	नेताओं की संख्या	परिवार का आकार						परिवार का औसत आकार	
		1 से 5		6 से 10		10 से अधिक			
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	कुल सं0	औसत प्रतिशत
खनन	8	2	25.0	4	50.0	2	25.0	62	7.7
विनिर्माण	16	4	25.0	9	36.3	3	18.7	120	7.5
विद्युत	4	0	—	4	100.0	0	—	28	7
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	2	50.0	0	—	22	5.5
वित्तीय संस्थान	6	2	33.3	0	—	0	—	46	7.6
स्वास्थ्य	4	4	100.0	0	—	0	—	16	4
सामान्य	8	0	—	8	100.0	0	—	62	7.7
योग	50	14	28.0	31	62.0	5	10.0	356	7.1

क्रमशः

सारणी - 8.4

[illegible] नेताओं के परिवारों की स्थिति - आकार, लिंग, आर्थिक गतिविधि, शिक्षा

उद्योग	नेताओं की संख्या	आर्थिक गतिविधि				शिक्षा			
		उपार्जक		परावलंबी		साक्षर		निरक्षर	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	10	16.1	52	83.9	48	77.4	14	22.4
विनिर्माण	16	23	19.1	97	8.8	109	9.8	11	9.1
विद्युत	4	4	14.2	24	85.7	20	71.4	8	28.5
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	18.1	18	81.8	14	63.6	8	36.3
वित्तीय संस्थान	6	6	13.1	40	86.9	44	95.7	2	4.3
स्वास्थय	4	4	25.0	12	75.0	10	62.5	6	37.5
सामान्य	8	14	22.5	48	77:4	62	10.0	0	—
योग	50	65	18.2	291	81.8	307	86.2	49	13.7

सारणी - 8.5

भामस नेताओं की जीवन शैली

उद्योग	नेताओं की संख्या	भोजन की प्रकृति		शहर में मकान	
		शाकाहारी	मांसाहारी	हाँ(सं0)	नहीं(सं0)
खनन	8	2	6	0	8
विनिर्माण	16	2	14	7	9
विद्युत	4	0	4	2	2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	4	2	2
वित्तीय संस्थान	6	2	4	4	2
स्वास्थ्य	4	2	2	2	2
सामान्य	8	6	2	6	2
योग	50	14	36	23	27

क्रमशः

सारणी - 8.5

भामस नेताओं की जीवन शैली

उद्योग	नेताओं की संख्या	सवारी				
		साईकिल	स्कूटर	मोटर साईकिल	कार	जीप
खनन	8	2	4	2	0	0
विनिर्माण	16	11	2	2	0	0
विद्युत	4	0	0	2	0	0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	2	2	0	0
वित्तीय संस्थान	6	4	4	0	0	0
स्वास्थ्य	4	2	0	2	0	0
सामान्य	8	6	2	4	0	0
योग	50	29	14	14	0	0

क्रमशः

सारणी - 8.6

भामस नेताओं की जीवन शैली- समाचार पत्र, रहन-सहन का स्तर, पाक व्यवस्था

उद्योग	नेताओं की संख्या	समाचार पत्र			रहन-सहन का स्तर		
		दैनिक	पत्रिका	मजदूर पत्रिका	निम्न	मध्य	ऊँचा
खनन	8	8	8	0	0	8	0
विनिर्माण	16	16	12	13	1	15	0
विद्युत	4	4	4	4	0	4	0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	4	4	0	4	0
वित्तीय संस्थान	6	6	6	6	0	6	0
स्वास्थ्य	4	4	4	4	2	2	0
सामान्य	8	8	8	8	0	8	0
योग	50	38	46	47	3	47	0

क्रमशः

नेताओं का खाना श्रमसंघ के सदस्य बनातें है।

8.35 उपासना- प्रवृति

भामस7 नेतृत्व में आस्तिकता का बर्चस्व है। करीब 74 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार किया है कि वे विभिन्न देवी - देवताओं के उपासक हैं उपास्य देवों में दुर्गा, शंकर, विष्णु, काली, विश्वकर्ता, हनुमान, लक्ष्मी, भारत माता आदि प्रमुख हैं।

सारणी - 8.7

भामस नेताओं की जीवन शैली- उपासना प्रवृत्ति

उद्योग	नेताओं की सं0	आप देवी-देवता के उपासक हैं			
		हाँ		नहीं	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	6	75.0	2	25.0
विनिर्माण	16	11	68.8	5	31.2
विद्युत	4	2	50.0	2	50.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	2	50.0
वित्तीय संस्थान	6	4	66.7	2	33.3
स्वास्थ्य	4	4	100.0	0	0.0
सामान्य	8	8	100.0	0	0.0
योग	50	37	74.0	13	26.0

8.36 रहन-सहन का स्तर

अध्ययन में सम्मिलित भामस- नेताओं से यह कहा गया कि वे अपने रहन-सहन के स्तर का मुल्यांकन निम्न मध्य एवं उच्च श्रेणी में करें । उनके जवाब सारणी 8.6 में अंकित हैं इस सारणी के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मात्र 3 कों छोंड़कर, जो अपने कों निम्न स्तर में रखतें हैं, सभी नेताओं ने अपनें रहन सहन के स्तर मध्यम दर्जे का होंने का दावा किया है।

सारणी - 8.7
भामस नेताओं की जीवन शैली- उपासना प्रवृत्ति

उद्योग	नेताओं की सं0	देवी-देवता के नाम					
		काली	सूर्य	श्रीराम	कृष्ण	भारत	अन्य
खनन	8	0	0	0	0	2	0
विनिर्माण	16	7	0	0	0	0	0
विद्युत	4	0	0	0	0	0	0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	0	0	0	2	0
वित्तीय संस्थान	6	0	2	0	0	0	0
स्वास्थ्य	4	0	0	0	0	0	0
सामान्य	8	0	0	0	0	2	0
योग	50	7	2	0	0	6	0

सारणी - 8.8

श्रम-संघ आंदोलन में प्रवेश की प्रेरणा

उद्योग	नेताओं की संख्या	श्रम-संघ आंदोलन में प्रवेश के कारण						संस्थापक	
		क	ख	ग	घ	ड़	च	हाँ	नहीं
खनन	8	4	0	0	0	8	0	6	2
विनिर्माण	16	12	1	1	0	2	0	7	9
विद्युत	4	2	0	0	0	4	0	2	2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	0	0	0	4	0	2	2
वित्तीय संस्थान	6	4	0	2	2	4	0	6	0
स्वास्थ्य	4	0	0	0	2	2	0	4	0
सामान्य	8	4	0	0	4	8	2	4	4
योग	**50**	**26**	**1**	**3**	**8**	**32**	**2**	**31**	**19**

रहा है । सामूहिक वार्ता में दोनों ही पक्ष अपनी वार्ता, कुशलता एवं संगठात्मक शक्ति का प्रदर्शन करते है। इन कार्रवाइयों के जरिये दोनों ही पक्ष पर समूचित दबाव पड़ता है जिसके कारण उनमें विवेक उत्पन्न होता है जो समझौते का मार्ग प्रशस्त करता है। वार्ता के लिए राजी न करना औद्योगिक क्षेत्र में तनाव की स्थिति उत्पन्न करते हैं तथा दोनो ही पक्षों की की रणक्षेत्र में कूदने के लिए मौन लिमंत्रण देते हैं। श्रमसंघ के नेताओं कोभी इस निमंत्रण को स्वी कारना पड़ता है तथा अपने सदस्यों के लिए रणभेरी बजानी पड़ति हैं। सछस्यों कों मौका मिलता है कि इन कठिन परिसिथतियों में अपनी नेताओं की भूमिकाओं का अवलोकनएवं मूल्यांकन करें । नेताओं को मौका मिलता है कि वे त्या, तपस्या, निष्ठ्य एवं श्रद्धा का प्रदर्शन करें तथा अपने रण कौशल- से अपने अनूयापियों को मुगध करें।

भामस के संघों को भी औद्योगिक रणक्षेत्र में अपने रण– कौशल का प्रदर्शन करने के अनेक अवसर लिले हैं । इनमें उनके नेताओं ने किस सीमा तक अपने तयाग और वलिदान का परिचय दिया हैं तथा किस हद तक अपने कों अपने सदस्यो के प्रति समर्पित सरबित क्रिया है। इस तथ्य को प्रकाशित करने के लिए सारणी 8.9 के आँड़े प्राप्त मशाला उपस्थित करते हैं ।

भामस – नेताओं ने अपने संघ कों मजबूत करने के लिए और उनके लक्ष्यों की प्राप्त करने के लिए अने आन्दोलनों का आयोजन एवं संचालन किया है। लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उन्होने विभिन्न प्रकार की औद्योगिक कार्रवाईयों मके अग्रणी भूमिका निभाई है। करीब 98 प्रविशत नेताओं ने धरना एवं सतयाग्र तथा 84 प्रतिशत ने विभिन्न स्तरों पर हड़ताल का नेतृत्व किया है। घेराव, जिसे वैधनिक मानयता नहीं मिली है, का भी उपयोग भामस7 नेताओं कों लक्ष्यों की प्राप्ति – हेतु करना पड़ा है। करब 74 प्रतिशत नेताओं ने घेराव का नेतृत्व किया हैं।

इन कार्रवाइयों में भाग लेने के लिए श्रमसंघ के सदस्यों एवं उनके नेताओं को प्रवन्धकों का कोपभजन बनना पड़ता है। प्रबन्धक इस स्थिति में अपने विशेषाधिकारों का प्रयोग कर नाना प्रकार के सितम ढाता है। करीब 54 प्रतिशत नेताओं को प्रबन्धकों द्वारा इस संदर्भ में दण्डित किया गया है। दण्डों की प्रकृति चेतावनी, जुर्माना,

होने के कारण विभिन्न कानूनों के तहत बने दण्ड घेराओं में लाने का प्रयास किया जाता है। मजदूरों मे लाने का प्रयास किया जाता है । मजदूरो ने यह कहते हुए कि उनकी मागें जायज हैं इस कानूनी व्यवस्था का जेल भरो अभियान के द्वारा मजाक उड़ाया है। जेल भरो अभियान के सम्बन्ध में एक प्रचलित चूनौती पूर्ण नारा है- "कितनी लम्बी जेल तूम्हारी देख लिया है, देखेगें।" भामस नेतृत्व के 30 प्रतिशत सदस्यों ने इस संदर्भ मे अपनी जेल यात्रा का वृतान्त सुनाया है।

हड़तालें एवं प्रदर्शन शान्ति एवं व्यवस्था कों कायम रखने में बाधा उपस्थित करतें हैं। इस आधार पर कभी-कभी शान्ति एवं व्यवस्था के पदाधिकारी भी सक्रिय हो जाते हैं या कर दिए जाते हैं। प्रदर्शनों एवं हड़तालों को हिंसा पर उतारु भीड़ की संज्ञा दी जाती है तथा जुलूस को पुलिस बर्वरता का शिकार होना पड़ता है। भामस द्वारा आयोजित हड़तालें एवं प्रदंर्शन भी उपवाद नहीं हैं। इस संदर्भ में 28 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार किया है कि ऐसे विभिन्न अवसरों पर अन्हें पुलिस द्वारा लाठी चार्ज का शिकार होना पड़ा है।

इन औद्योगिक कार्रवाइयों में भामस-नेतृत्व की सहभागिता के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उनके नेता कर्मट, त्यागी एवं बलिदानी हैं तथा निर्धारित उद्देश्यों के प्रति वे पूर्ण समर्पित हैं तथा उनकी प्राप्ति के लिए वे हर संभव तरीका अपना सकते हैं तथा तयाग करने के लिए अपनी कटिबद्धता से डिग नहीं सकतें।

8.4 राजनैतिक एवं स्वैक्षिक संघों से सम्बन्ध

इस शोध प्रबन्ध के द्वितीय अध्याय में भारतीय मजदूर संघ की विचारधारा तथा राजनैतिक दलों एवं सामाजिक संगठनों से इसके सम्बन्ध पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। भारतीय मजदूर संघ की स्थापना मं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान रहा है ऐसी आम मानयता है कि भरतीय मजदूर संघ के नेताओं में भारतीय जनता पार्टी तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रति असीम श्रद्धा हैं इस परिकल्पना को साबित करने के लिए सारणी 8.10 का निर्माण किया गया हैं

सारणी – 8.10
राजनीतिक एवं स्वैच्छिक संघों से सम्बन्ध

उद्योग	नेताओं की संख्या	राजनीतिक दल का सदस्य				दल का नाम जिससे भावात्मक लगाव है			
		हाँ		नहीं		भाजपा	लोकदल	कम्युनिस्ट	कांग्रेस
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	सं0	सं0	सं0
खनन	8	2	25.0	6	75.0	6	2	0	0
विनिर्माण	16	4	25.0	12	75.0	14	1	1	0
विद्युत	4	0	0	4	100.0	2	0	0	2
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	0	4	100.0	2	0	0	2
वित्तीय संस्थान	6	0	0	6	100.0	4	0	0	2
स्वास्थ्य	4	2	50.0	2	50.0	4	0	0	0
सामान्य	8	5	75.0	3	25.0	8	0	0	0
योग	50	13	28.0	37	72.0	40	3	1	6

क्रमशः

उपव्यवस्था हैं समाज व्यवस्था तथा उसकी उपव्यवस्थओं का प्रभाव औद्योगिक सम्बन्ध–व्यवस्था पर भी यथेष्ठ रूप में पड़ता है। समाज की आर्थिक एवं राजनैतिक व्यवसथा औद्योगिक सम्बन्ध के पक्षों की विचाधरा को और औद्योगिक सम्बन्ध कों भी यथेष्ट रूप में प्रभावित करता है। किसी भी राष्ट्र में उसकी औद्योगिक संबंध कोंभी यथेष्ट रूप में प्रभावित करता हैं किसी भी राष्ट्र में उसकी औद्योगिक सम्बन्ध – व्यवस्था उसकी सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक व्यवस्था के ही अनूरूप होती हैं। औद्योगिक सम्वन्ध की कुछ समस्यायें ऐसी होती है जिनका समाधान बिना अन्य व्यवस्थाओं में परिवर्तन किये संभव नहीं है। फिर भी, मौजुदा व्यवस्था में ही समाधान ढूढ़ने के प्रयास होते रहतें हैं तथा औद्योगिक सम्बंध ने पक्षों के बीच एक कामचलाव सामांजस्य स्थापित करने की तथा उनके बीच परस्पर ताल मुल बिठने की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है।

अन्य व्यवस्थाओं की तरह औद्यागिक सम्बन्ध भी समाज की प्रगति के लिए अपनी प्रतिवद्धता का इजहार करता है। औद्यागिक सम्बन्ध उद्योगों में शांति की स्थापना, उनके प्रबन्ध में प्रजातंत्र के तत्वों का समावेश, अधिकतम उत्पादन, तकनीकी विकास तथा उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों के कल्याण को अपना आदर्श मानता है। इन आदर्शों की प्राप्ति के लिए औद्योगिक सम्बन्ध के पक्षों को कटिबद्ध होना चाहिए। लेकिन इन लक्ष्यों की प्राप्ति सरल एवं सहज नही होती। नियोजकों एवं श्रमिकां के लक्ष्यों में अन्तर पाया जाता है, फलस्वरूप सामंजस्य–स्थापन की प्रक्रिया जटिल होती जाती है औद्योगिक सम्बन्ध संघर्ष के तत्वों से आक्षादित हो जाता है। ऐसी स्थिति में सहयोग के तत्वो का पता नहीं चलता। भारत मुं औद्योगिक सम्बन्ध का चित्र भी संघर्ष के तत्वों से परिपूर्ण है। संचार माध्यमो से औद्योगिक सम्बन्ध चित्र ही उभरता है । किन्तु आवश्यकता है सहयोग के तत्वों की उजागर करने की दोनों ही पक्षों ने सहयोग की भावना को सुदृर्ध करने की।

भारत की औद्योगिक सम्बन्ध – व्यवस्था ने अनेक समस्याओं को जन्म दिया है तथा उनके समाधन के लिए अनोनेक संगठन एवं सरकारी एजेंसियाँ कार्यरत हैं । इन समस्याओं में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाली समस्याँ हैं प्रतिद्वन्द्विता एवं घटकवाद की समस्या, बाह्य नेतृत्व की समस्या, शिल्प संघों की समस्या, औद्योगिक विवाद के

आवाछनीय मानते हैं तथा इससें श्रमिकों को जो नूकसारन हो रहे हैं उसे भी स्वीकारतें हैं।

इस संदर्भ में श्रमसंध आन्दोलन की दूसरी व्याधि है आन्तरिक घटकवाद। किसी भी संघ में घटकवावाद की स्थिति तव उत्पन्न होती है जबकि दो यादो से अधिक गिरोह अस संध के पेतृत्व पर कब्पा करना चाहते हैं । नेतृत्व के लिए सम्पादित चूनावों कों वे गलत करार देते हैं तथा अपने को उस संघ का पदाधिकारी घेषित करते हैं एवं अस संघ के नाम से ही कार्य सम्पादन करते हैं। बिहार में अराजपत्रित कर्मचारी मासंघ धटकवाद का ज्वलंत उदाहरण है। भरतीय मजदूर संघ की बिहार - दकाइयों मे घटकवाद का प्रवेश बहुत समय तक नहीं हुआ था किन्तु विगत कुछ वर्षो से भामस के कई संगठन घटकवाद की चपेट में आ गयें हैं । 18 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार *किया है कि उनके संघो में भी घअक्वाद का रोग फैल गया है या फैलता जा रहा हैं। नेताओं की अभियूक्ति से यह भी स्पष्ट हैकि भारतीय मजदूर संघ की अधिकांश इकाइयाँ अभी भी घटकवाद से अछूती हैं। आनतरिक घटकवाद का दृश्य बिहार प्रदेश भरतीय मजदूर संघ के वार्षिक अधिवेशनों में भी उपस्थित हुआ है। इस संदर्भ में नव भांरत टाइम्स में छपी अरूणरंजन की व्याख्या एवं समीक्षा काफी सटीक है, अतः इसे यहाँ उद्धत करना समीचीन प्रतीत होताहै "भारतीय जनता पार्टी के रों दिग्गज मजदूर नेता रामदेव प्रसाद वना समरेश सिंह में अह। का अपर्दस्त अकरा हें। चार दलीय संगठन- भरतीय मजदूर संघ, भरतीय जनता पार्टी , आर0 एस0 एस0 तााि भाजपा का श्रम संघ इस विवाद मे फँसा है। सामानानतर मजदूर संगठन उभाननेका प्रयास्स चल रहा है।"

उपर्युक्त टिप्पणियों तथा अध्ययन में सम्मिलित नेताओं के साक्षात्कार से यह स्पष्ट होता है कि भामस की बिहार-इकाइयों में घटकवाद का मुख्य कारण नेताओं की महत्वकांक्षा है जिसके कारण वे नेतृत्व के विभिन्न स्तरों पर शीर्ष प्रापत करना चाहतें हैं । कहीं-कहीं कुछ नेताओं ने स्थापित नेतृत्व के खिलाफ जेहाद छेड़ दिया है। घटकवाद के कारणों में बिहार तकं व्याप्त जातियता की भी गंध मिलती है। बिहार के कोयजांचल में घटकवाद कें एक नया कारण सामने आया है भामस के कुछ सदस्य माफियागिरोहों से प्रभावित हो

सारणी – 8.11

श्रमिक संघों मे घटकवाद

उद्योग	नेताओं की संख्या	घटकवाद की उपस्थिति			
		हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
खनन	8	2	25.0	6	75.0
विनिर्माण	16	3	18.8	13	81.2
विद्युत	4	—	—	4	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	—	—	4	100.0
वित्तीय संस्थान	6	—	—	6	100.0
स्वास्थ्य	4	2	50.0	2	50.0
सामान्य	8	2	25.0	6	75.0
योग	50	9	18.0	41	82.0

नहीं कर रहे हैं। भूतपूर्व श्रमिक, अवकाश प्राप्त श्रमिक और बर्शस्त भी श्रमसंघ में इस निंयम के अनुसार बाहरी व्यक्ति माने जायेगें। हालाँकि इस अधिनियम की अपर्युक्त व्याख्या से न तों श्रमिक संघ ही सहमत है और न सरकारी एजेसिंयाँ ही। इस संदर्भ में भामस के नेताओं की प्रतिक्रिया सारणी 8.12 में अंकित है।

भमस के नपेताओं के दृष्टिकोंण में वह व्यक्ति बाहरी है जिसने कभी भी,कही भी श्रमिक के रूप में काम नहीं किया हैं। इस मनतव्य कों 72 प्रतिशत नेताओं का समर्थत प्राप्त हुआ है।

भमस ने नतागण उस व्यक्ति को भी बाहरी व्यक्ति मानते हैं जो श्रमसंघ की सीमा में आने वाले उद्योग या इकाई में श्रमिक नही है। करब 60 प्रतिशत नेताओं ने ऐसा मत व्यक्त किया है। श्रम संघें के नेत्त्व में बाहरी व्यक्ति नहीं मानतें । ये भूतपूर्व श्रमिक चाहे स्वेच्छ्र से पद त्याग की श्रेणी में आते हों या बर्खास्तगी या अवकाश प्राप्त की श्रेणी में।

भामस नेताओं की राय में वैसे व्यक्ति जो कभी भी श्रमिक नहीं रहे हैं लेकिन जिन्होंने श्रम संघवाद को अपना पेशा बना लिया है, श्रमसंघ के नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति माने जायेगें ऐसा मत 68 प्रतिशत नेताओं ने वयक्त किया है।

(ख) नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति को रखने का अधिकार

श्रम संघ एक स्वैक्षिक संगठन है तथा अन्य संगठनों की तरह इससे भी यह अधिकार होना चाहिए कि वह जिस व्यक्ति को चाहे अपनी सदस्यता प्रदान करें। भामस - नताओं से भी एक प्रश्न के तहत यह पूछा गया कि क्या श्रमसंघों को अपनी सदस्यता या नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति रखनें का अधिकार होना चाहिए ? इसके उत्तर सारणी 8.13 में दर्शायें गये हैं।

भामस - नेताओं में से 70 प्रतिशत का यह मत है कि श्रमसंघों को बाहरी व्यक्तियों को रखने का अधिकार नही होना चाहिए । जवकि 30 प्रतिशत नेताओं ने इस अधिकार के पक्ष में मत व्यक्त किया है। ऐसा प्रतित होता है कि भामस के अधिकांश नेताओं कों अपनी इकाइयों में बाहरी व्यक्ति के प्रवेश

सारणी - 8.12

औद्योगिक संबंध की समस्याएँ :

क्रमांक	बाहरी व्यक्ति मानने के आधार	उत्तर	
		हाँ	नहीं
1.	वह जो कभी श्रमिक नहीं रहा है।	36	10
2.	वह जो उस उद्योग–विशेष में श्रमिक नहीं है जहाँ संघ कार्यरत है।	30	16
3.	वह जो उस इकाई में श्रमिक नहीं है जहाँ मजदूर संघ कार्यरत है।	29	17
4.	क्या वैसे भूतपूर्व श्रमिकों को जो मजदूर संघ के नेतृत्व में हैं बाहरी व्यक्ति माना जा सकता है।	11	39
5.	जिन्होनें स्वेच्छा से पद त्याग दिया है।	18	32
6.	जिन्हें प्रबन्ध द्वारा बर्खास्त कर दिया है।	14	36
7.	जो अवकाश – प्राप्त है।	13	37
8.	एक वैसे व्यक्ति को जो कभी भी श्रमिक नहीं रहा है लेकिन श्रम संघवाद को जिसने पेशा बनाया है।	34	14

सारणी - 8.13

औद्योगिक संबंध की समस्याएँ : वाह्य नेतृत्व

उद्योग	नेताओं की संख्या	नवयुवकों की कमी है			
		हाँ		नहीं	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन्	8	6	75.0	2	25.0
विनिर्माण	16	5	31.3	11	68.7
विद्युत	4	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	2	50.0
वित्तीय संस्थान	6	0	—	6	100.0
स्वास्थ्य	4	2	50.0	2	50.0
सामान्य	8	6	75.0	2	25.0
योग	50	25	50.0	25	50.0

8.53 शिल्प संघों की समस्या

भामस में श्रमसंघवाद की शूरूआत औद्यागिक संघों से हुई जबकि पाश्चात्य देशों में शिल्प संघों से हुई। आज जबकि पाश्चात्य देशों के श्रमिक शिल्प संघों से औद्योगिक संघों की ओर तेजी से जा रहे हैं। भारत के श्रमिक औद्योगिक संघवाद से शिल्प संघवाद की ओर, मन्थर गति से सही, बढ़ रहे हैं। भारत में औद्योगिक संघो के द्वारा श्रमसंघ आन्दोलन का प्रारम्भ होना एक ऐतिहाकि तथ्य पर आधरित है। श्रमसंघ आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक अंग के रूप में सामने आया था। श्रमसंघ की स्थापना में स्वतंत्रता सेनानियों का बहुत बड़ा योगदान था । उनके लिए किसी भी उद्योग सारे सैनिक एक समान थे और वे सारे ही स्वतंत्रता संग्राम में समान रूप से योगदान कर सकते थे। अतः उनक लिए महत्वपूर्ण थे श्रमिक न कि अनका पेशा, शिल्प या श्रेणी। यही कारण है कि भरत में औद्योगिक संधो की ही स्थापना हुई। यह रूझान एक लम्बे अरसे तक कायम रही इसमें बदलाव आया 1960 के दशक से।

शिल्प संघों का स्थापना भरतीय श्रमसंध आनदोलन के लिए हानिप्रद है सभी राष्ट्रीय महासंघों ने तथा औद्योगिक महासंघों ने शिल्प संघ की अवधारण का विरोध किया है। फिर भी शिल्प संघों का बनाना जारी है। औद्योगिक संघो के विरोध के फलस्वरूप प्रकाश में आया है। इनके सदस्यो का कहना है कि औद्योगिक संघों में इन्हें उचित स्थान नहीं मिलता है तथा इनकी समस्याओं पर समुचित ध्यान नहीं दिया जाता है। औद्योगिक संघों में जहाँ बहुमत के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं अल्पमत में रहने वाले शिल्पियों की उपेक्षा होती है। किसी उपेक्षा, अप्रसन्नता एवं असन्तुष्टि की भावना ने श्रमसंघ आन्दोलन के नक्शे पर शिल्प संघों को स्थान दिलाया हे।

इस संदर्भ में भामस - नेताओं के विचार सारणी 8.14 में अंकित है। सारणी के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि 52 प्रतिशत नेता यह मानते है कि शिल्प संघो का बनना मजदूर आन्दोलन के लिए घातक 48 नेतागण उनका विरोध करते है। समर्थन और विरोध के मतों में बहुत का अन्तर नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि भामस के इकाई स्तर पर कार्यरत संघो के नेताओं को भामस की राष्ट्रीय नीति की जानकारी नहीं है। भारतीय मजदूर संध शिल्प- संघो का विरोध

सारणी - 8.15

औद्योगिक विवाद के समाधान के तरीके

उद्योग	नेताओं की संख्या	औद्योगिक विवाद के कौन तरीके आप पसंद करते है।			
		क	ख	ग	घ
खनन	8	6	0	2	0
विनिर्माण	16	8	0	4	4
विद्युत	4	4	0	0	0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	0	0	0
वित्तीय संस्थान	6	2	0	2	2
स्वास्थ्य	4	0	0	4	0
सामान्य	8	2	0	6	0
योग	50	26/52.0	0/0	18/36.0	6/12.0

सारणी - 8.16

सामूहिक वार्ता

उद्योग	नेताओं की संख्या	सौदेबाजी के लिए शोल वारगेनिंग एजेंट का निर्धारण होना चाहिए			
		हाँ		नहीं	
		सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	4	50.0	4	50.0
विनिर्माण	16	14	87.5	2	12.5
विद्युत	4	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	4	100.0	0	—
वित्तीय संस्थान	6	4	66.6	2	33.4
स्वास्थ्य	4	2	50.0	2	50.0
सामान्य	8	6	75.0	2	25.0
योग	50	38	76.0	12	24.0

क्रमशः

कार्य के लिए श्रमसंघों को मान्यता प्रदान की जाय। जब तक किसी संघ- विशेष कों मान्यता प्रदान नहीं की जायगी तब तक सौदा की प्रक्रिया प्रारम्भ नहीं हो सकती। ऐसी आम मान्यता है कि श्रमिकों के पक्ष को प्रस्तुत करने के लिए किसी एक संघ को एक निर्धारित अवधि के लिए मान्यता प्रदान की जाय। इस अवधि में मान्यता प्राप्त संघ को यह अधिकार होगा कि श्रमिकों के हितों की रक्षा के लिए तथा उनकी समस्याओं के निदान के लिए प्रबन्ध से समय समय पर वार्ता करें।

सर्वेक्षित भामस के नेताओं मे से 76 प्रतिशत ने पृथक सौदा-एजेन्ट के निर्धारण की आवश्यकता पर जोर दिया हैं। उनके दृष्टिकोंण में शांल सौदा- एजेन्ट के निधरिण से उद्योगों में शान्ति एवं प्रजातंत्र की स्थापना होगी तथा मजदूरों में खुशहाली आयेगी। भारतीय मजदूर संघ भी यह मानता है कि औद्योगिक विवादों का सच्चा हल सामूहिक सौदेबाजी ही प्रस्तुत कर सकती है। किन्तु मान्यता के प्रश्न पर इसकी नीति स्पष्ट नहीं है। सर्वेक्षण में सम्मिलित अधिकांश नेतागण जहाँ यह चाहते हैं कि सामूहिक वार्ता के लिए एक सार्वाभौम सौदा

सौदा एजेन्ट का निर्धारण होना चाहिए, जाहिर है कि यह निर्धारण किसी कानून के तहत ही हो सकता है, वहाँ भामस की नीति इस संबंध में कानून बनाने के पक्ष में नहीं है। भामस की घोषित नीति के कुछ अंश देखने योग्य हैं - "यूनियनों को सरलता से मान्यता प्रदान करनेके लिए कानून बनाने में शीघ्रता करने और फिर उस कानून पर सौदेबाजी की व्यवस्था ही असम्मलित हो जाएगी और उस एक में वो साधन का आधार नष्ट हो जाएगा जो कि भारतीय श्रमिक को अधिक समय तक जीवित रहने वाने लाभ दिला सकता है।"[4]

---

4. भारतीय मजदूर संघ, श्रम नीति, अध्याय-6,पृ0 19,20

(ख) सौदा एजेन्ट के लिए संघ का चयन

जब सामूहिक सौदेबाजी को उद्योगों के संचालन में स्थान

करने का मौका मिले। नेताओं के मतों में व्याप्त भिन्नता की व्याखया शायद इसी आधार पर की जा सकती है।

(ग) बहूमत के दावे का सत्यापन

अगर बहूमत संघ को ही कानून के तहत सौदा ऐजेन्ट का दर्जा देना हो तो इस संदर्भ मे बनने वाले कानून को यह भी स्पष्ट करना होगा कि बहूमत के दावे का सत्यापन कैसे किया जाय। बहूमत के दावे का सत्यापन मुख्यतः तीन विधियों द्वारा किया जा सकता है। ये विधियाँ निम्नलिखित हैं।

1. संघो की सदस्य- संख्या के सत्यापन द्वारा।

2. सभी संघों के सभी सदस्यों के बीच चुनाव द्वारा।

3. सभी श्रमिकों (सदस्यो या गैर- सदस्यो) के बीच चुनाव द्वारा

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं से इन विधियों में से एक चुनाव करने कों कहा गया है। इनमें से किसी भी विधि कों सपष्ट बहुमत नहीं प्राप्त हुआ है। प्रथम विधि को 44 प्रतिशत, द्वितीय को 32 प्रविशत तथा तृतीय कों 20 प्रतिशत नेताओं का समर्थन मिला हैं। भारतीय मजदूर संघ इस संदर्भ में द्वितीय विधि कों अपनी श्रमनीति के रूप में स्वीकार किया है। उसके अनूसार, "सभी स्तरों पर ट्रेड यूनियन की मान्यता के लिए यूनियनों के सदस्य श्रमिकों के एक गुप्त मतदान के प्रतिफलों कों आधार रूप में स्वीकार करना चाहिए ।"[6] स्पष्ट है कि भामस की घोषित नीति को मात्र 32 प्रतिशत नेताओं का समर्थन प्राप्त हुआ।

(घ) संघो के बहूमत के दावों का सत्यापन करे का भार किस एर्जेसी को सौंपा जाय। इस संदर्भ में तीन एर्जेसियों का नाम लिया जाता है- प्रबन्ध, सरकारी संघ तथा सदस्य एजेन्सी ।

---

6. भारतीय मजदूर संघ, श्रम नीति, अध्याय - 6, पृ020

संगठन राजनीतिक दलों के प्रभाव से मूक्त रहेंगें और दबाव डालने वाले समूहों तथा वैकल्पिक शक्ति – केन्द्रों के रूप में कार्य करेगें । भारतीय मजदूर संघ भी यही भूमिका निभयेगा।[7]

बिहार –भामस के नेताओं के दृष्टिकोण में आदर्श स्थिति उपस्थित है या नहीं और उपस्थितहै तों किस सीमा तक इसका पता लगाने के लिए नेताओं से कुछ प्रश्न किये गयें । उनके उत्तरों के आधार पर भामस और दलगत राजनीति का निम्नलिचित चित्र उत्पन्न होता है।

(क) भामस की स्थापना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा भरतीय जनता पार्टी की भूमिका

यह सर्वविदित है कि भरतीय मजदूर संघ की स्थापना का प्रेरणस्त्रोत रारूट्रीय स्वयंसेवक सेघ है। इसकी स्थापना में संघ के स्वयंसेवकों तथा भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने अग्रणी भूमिका निभाई है। इसके संस्थापक दत्तोंपंत ठेंगड़ी ने भी इस स्थिति कों सहर्ष स्वीकार किया है उनके ही शब्दों में, "भारतीय मजदूर संघ के लोग मजदूर संघ में पूर्ण समय कार्यकर्ता के रूप में आते जाएँ, यह हमारा भी प्रयास रहा।" [8]

सर्वेक्षण मं सम्मिलित करीब 75 प्रतिशत नेताओं ने यह स्वीकार किय है कि भरतीय मजदूर संघ तथा असरो संबद्ध संघो की स्थाषना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सथा भारतीय जनता पार्टी ने पहल की है तथा इस संदर्भ मे उनकी भूमिका काबिले तारीफ है। करीब 25 प्रतिशत नेताओ ने इस संदर्भ में अपनी अज्ञानता जाहिर की है।

(ख) भामस तथा दलगत राजनीति

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि उनका संघ किसी भी राजनीतिक दल से न तो संबध रखता है और न किसी भी दल के निमंत्रण में है।

---

7. *दत्तोपंत ठेंगड़ी, सप्तक्रम, पृ0 143*

8. *दत्तोपंत ठेंगड़ी, लक्ष्य और कार्य, पृ0 83*

मजदूर संघ के एक विख्यात नेता समरेश शिंह के सम्बन्ध में पत्रकार अरूणरंजन की टिप्पणी पर बरबस ध्यान आकृष्ट हो जाना है-

बोकारों के विधायक समरेश शिंह भारतीय मजदूर संघ में धूमकेतु की तरह चमके। उन्हें चंदा बटोरने की क्षमता के कारण पार्टी हलकों में मिनी-भामाशाह समझा जाने लगा। सिंह की भमस कें प्रतिद्वंद्वी सितारे रामदेव प्रसाद से नहीं पटती । प्रसाद अभी बी0एम0 एस0 के अध्यक्ष हैं।

1985 मे समरेश सिंह बी0 एम0 एस0 का अध्यक्ष बनना चाहते थे । भजपा के उनसे नाराप नेताओं ने एक लघु कामराज योजना लागू करा दी । इस तहत भारतीय जनता पार्टी का कोई पदाधिकारी बी0 एम0 एस0 के पदों से हटना पड़ा।

भाजपा के लोग समरेश सिंह की महत्व कांक्षा तथा निजी रापनीतिक के करण रंज थे । समरेश के बारे में उनका ख्याल था कि अगर यह पार्टी के लिए मेहनत करते तो संगठन बढ़ता । समरेश फिलहाल भजपा के प्रांतीय उपाध्यक्ष है।

समरेश यिंह के समरथकों नक कथित कामराज योजना के विराध में भरी हंगामा किया। तब संशेधन हूआ कि भजपा के पदाधि ाकारी बी0 एम0 एस0 से संबंधित ट्रेड यूलियनों में पदाधिकारी रह सकतें हैं। इसके बार समरेध सिंह बव0 एम0 एस0 के झंडा तले नए मजदर यूलियन गठित कराकर उसक पदा धिकारी बनने लगें।

अब कह विवाद छिड़ा है कि क्या श्रम मंच मजदूर संगठन खड़ा कर सकता है ? केन्द्रीय पार्टी - नेतृत्व कहता है कि नहीं । प्रांतीय भजपा - अध्यक्ष इदर सिंह नामधारी कहते हैं हाँ । यह प्रचार है कि भाजपा तथा बी0 एम0 एस में मतभेद हैं उसी तरह श्रम मंच कों बी0 म0 एस0 के विकल्प के रूप में उभरने की भीतरी कोशिश।[9]

---

9. नवभारत यदम्स, 8 अगस्त, 1988,पृ0।

अपना विश्वास व्यक्त नहीं कर सकता और न उद्योगों के राष्ट्रीकरण का ही समर्थान कर सकता है। निजी सम्पत्ति की समाप्ति में इसकी आस्था नहीं है किन्तु निजी सम्पत्ति की सीमा निर्धारण की अनुशंसा करता है। बावजूद इसके, धर्म – निरपेक्षता भारत का राष्ट्रीय उद्देश्य है। भमस स्पष्टतया इसे उद्देश्य के प्रति अपनी प्रतिवद्धता व्यक्त नहीं करता। इसकी आस्था हिन्दू राष्ट्र के दर्शन में है। इनका हिन्दू राष्ट्र सभी धर्मों को अपने के शामिल कर लेता है। इसके अनुसार सारे धर्मावलम्बी, जो भारत में रहतें हैं, हिन्दू हैं।

भामस के नेतागण कि सीमा तक इन आदर्श वाक्यों और नारों से सहमत हैं इसकी जानकारी के लिए नमूना में लिए गये नेताओं का मत- संग्रह किया गया है तथा इसे सारणी 8.17 में दर्शाया गया है।

8.61 मजदूरो दुनिया को एक करों

सर्वेक्षण में सम्मिलित सभी नेताओं ने इस नो से अपनी पूर्ण सहमति व्यक्त की है। उन्होंने साम्यवादी नारार "दूनिया के मजदूरो एक हो" की पूर्णतः अग्राह्य बतलाया है। स्पष्ट है कि इस संदर्भ में नेताओं का सैद्धान्तिक प्रशिक्षण पूर्णता को प्राप्त है।

8.62 श्रम दिवस

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं के समक्ष इस संदर्भ में तीन विकल्प रखे गयें- (क) मई दिवस, (ख) विश्वकर्मा दिवस तथा (ग) दोनो। सभी नेताओं ने विश्वकर्मा दिवस को ही श्रम दिवस के रूप में स्वीकार किया। कुछ नेताओं ने मई दिवस की आलोचना भी की है।

8.63 वर्ग–संघर्ष वनाम वर्ग–सहयोग

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया, भारतीय मजदूर संघ का विश्वास वर्ग संघर्ष में न हो कर वर्ग – सहयोग में है। इसका मुख्य कारण यह है कि भारतीय मजदूर संघ अमेरिकी फेडरेशन ऑफ लेबर के विचारों से सहमत है। उनका विश्वास है कि पूंजीवादी व्यवस्था में भी मजदूरों के हितों की रक्षा संभव है। मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए पूंजीवादी व्यवस्था में व्याप्त दलों के बीच सहयोग की भावना का जागरण करके मजदूरों के जीवन- स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है।

सारणी - 8.17

आदर्श वाक्य और विकल्प

उद्योग	नेताओं की संख्या	विकल्प-3				विकल्प-4			
		क्रांतिकारी संघवाद		व्यवसायिक संघवाद		औद्योगिक संघवाद		शिल्प संघ वाद	
	संख्या	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	4	50.0	4	50.0	8	100.0	0	—
विनिर्माण	16	16	100.0	0	—	16	100.0	0	—
विद्युत	4	4	100.0	0	—	4	100.0	0	—
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	2	50.0	2	50.0	4	100.0	0	—
वित्तीय संस्थान	6	4	75.0	2	25.0	6	100.0	0	—
स्वास्थय	4	2	50.0	2	50.0	4	100.0	0	—
सामान्य	8	2	25.0	6	75.0	8	100.0	0	—
योग	50	34	68.0	16	32.0	50	100.0	0	--

क्रमशः

सारणी - 8.17
आदर्श वाक्य और विकल्प

उद्योग	नेताओं की संख्या	विकल्प-7				विकल्प-8			
		निजी संपत्ति का कानून द्वारा समाप्ति		निजी संपत्ति का कानून द्वारा समाप्ति		थर्म निरपेक्षता		हिन्दू राष्ट्र	
	संख्या	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत	सं0	प्रतिशत
खनन	8	0	—	8	100.0	0	—	8	100.0
विनिर्माण	16	0	—	16	100.0	10	62.5	6	37.5
विद्युत	4	0	—	4	100.0	0	—	4	100.0
दुकान एवं प्रतिष्ठान	4	0	—	4	100.0	0	—	4	100.0
वित्तीय संस्थान	6	0	—	6	100.0	2	25.0	4	75.0
स्वास्थ्य	4	0	—	4	100.0	0	—	4	100.0
सामान्य	8	0	—	8	100.0	0	—	8	100.0
योग	50	0	--	50	100.0	12	24.0	38	76.0

संघवाद की भह संज्ञा दी जाती हैं।

भामस इनमें से जिस दर्शन का हिमायती है, कहना मुश्किल है। उपलब्ध साहित्य उलझा हुआ है। बातें, क्रान्ति की जाती है लेकिन ठोस लिष्कर्ष निकालने के समय लीया – पोती हो जाती है। ऐसी स्थिति में इकाई स्तर के नेतागण 68 प्रतिशत नेताओं ने क्रान्तिकारी संघवार से सहमति व्यक्त की है जबकि 32 प्रतिशत ने व्यावसायिक संघवाद से।

8.66 औद्यागिक संघ बनाम शिल्पसंघ

अध्ययन में सम्मिलित सभी नेताओं ने औद्योगिक संघ को शिल्प संघवाद की तूलना में बेहतर समझा है।

8.67 वैज्ञानिक समाजवाद वनाम गाँधीजी का राम राज्य

समाजवाद की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करने का श्रेय कार्ल मार्क्स को जाता है।'जब कभी भी वैज्ञानिक समाजवाद का जाता है तो तात्पर्य मार्क्स के दृष्टिकोण के समाजवाद से होता है। महात्मा गाँधी ने वैज्ञानिक समाजवाद का खुलम खुल्ला समर्थन नहीं किया । उन्होने पूंजीवादी व्यवस्था के विराधी वर्गो के बीच सहयोग की भवना के विस्तार की आंकाक्षा व्यक्त की। गाँधीजी का ट्रस्टी शिप सिद्धान्त उनकी इस धारणां की व्याख्या करता है। भारतीय मजदूर संघ आमंतौर से वैज्ञानिक समाजवार का विराध करता है। कुछ नेताओं ने गाँधी जी के समाजवाद का समर्थन भी किया है।

इस संदर्भ में सर्वेक्षित नेताओं के विचार चौंकान वाले हैं। 80 प्रतिशत नेताओं वैज्ञानिक समाजवाद का समर्थन किया है तथा 20 प्रतिशत ने गाँधी जी के रामराज्य की अवधारणा का। क्या इन नेताओं के उत्तर भामस की विचारधारा के प्रतिकूल नहीं हैं? अगर हैं तो इसका कारण क्या है? इन प्रश्नों के आलोक में भामस का या तो अपनी विचारधारा में परिवर्तन लाला चाहिए या सैद्धान्तिक प्रशिक्षण के आधार को और मजबूत करना चाहिए।

8.68 उद्योगों का राष्ट्रीकरण बनाम श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण

भामस ने पूर्ण "राष्ट्रीयकरण तथा राष्ट्रीयकरण नहीं"के दोनों छोरों को ठुकरा दिया है तथा औद्योगिक स्वामित्व के प्रकार पर एक

हिचकते है। दूसरी ओर हिन्दू धर्मावलंबी के लिए यह परिकल्पना शक्तिशाली चुम्बक का काम करती है तथा वे बरबश इसकी ओर खिंचे चले आते है। हिन्दू बहुल राष्ट्र में इस परिकल्पना से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा इसकी विभिन्न शाखायें ना प्रकार से लाभन्वित होती हैं। लाभ और हालि को अगर संतुलित किया जाय तो लाभ का पलड़ा भारी होता है । जहाँ तक सर्वेक्षित नेताओं का प्रश्न है 76 प्रतिशत ने हिन्दू राष्ट्र की धरणा की तथा 24 प्रतिशत ने धर्मनिरपेक्षता की धारणा को अहमियत प्रदान की है।

है। संघ की बहुचर्चित अवधारणाओं – हिन्दू राष्ट्र, परम वैभव का सिद्धांत, भारतीयता एवं राष्ट्रीयता को भामसने भी आत्मसत् किया है। भारतीय मजदूर संघ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में जनित करीब एक सौ संगठनों में से एक संगठन है जो मजदूर–क्षेत्र में संघ की विचारधारा के आलोक में श्रमिकों के उत्थान एवं कल्याण में अनवरत निरत है।

भामस की स्थापना की पृष्ठभूमि भारतीय जनसंघ के राजनीतिक, दार्शनिक, दीनदयाल उपाध्याय एवं मजदूर नेता ठेंगड़ी के बीच संपन्न विचार–विनिमय द्वारा तैयार हुआ। उनकी इच्छा थी कि दलगत राजनीत से पृथक तथा पूंजीवादी और साम्यवादी प्राणालियों के विरोध में तथा भारतीयताएवे राष्ट्रीयता से ओतप्रोत एवं श्रमिक महासंघ की स्थापना की जाय। इनकी इस कल्पना को साकार रुप प्रदान किया गया। लोकमान्य तिलक के जन्म दिवस 23 जुलाई, 1955 को। भोपाल में हुई इस सभा में करीब तीन दर्जन प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा भारतीय मजदूर संघ (भामस) की आधार–शीला रखी। इस प्रकार भारतीय श्रमिक संघ आन्दोलन के क्षितिज पर एक अतिरिक्त राष्ट्रीय महासंघ का उदय हुआ।

भारतीय मजदूर संघ के दर्शन के आलोक में यही कहा जा सकता है कि यह संगठन राजनीतिक प्रभाव एवं अवसरवादिता से मुक्त है। लेकिन इस संगठन की गतिविधियों के अवलोकन से इस बात की पुष्टि नहीं होती। जाहिर है कि राजनीति के गर्भ से जन्म लेनेवाला तथा राजनीतिक शक्तियों एवं आर्थिक प्रणालियों का विरोध करने वाला संगठन अपने आप को राजनीत से पृथक नहीं रख सकता। राजनैतिक तटस्थता के सिद्धांत का अनुसरण असम्भव–सा प्रतीत होता है।

9.22 भामस का विकास एवं स्थान

भामस का जन्म 23 जुलाई 1955 का भोपाल में हुआ। दत्तोंपंत ठेंगड़ी इसके संस्थापक महामंत्री बनें लेकिन करीब 12 वर्षो तक इस महासंघ का कोई भी अखिल भारतीय अधिवेशन नहीं हुआ। इसके महामंत्री तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्त्ता इकाई स्तर पर श्रम संघों के निर्माण के लिए प्रयत्नशील रहे। इस महासंघ का

9.23 भामस की संरचना एवं प्रशासन

भारतीय मजदूर संघ एक राष्ट्रीय श्रम संगठन है। इस कारण यह सभी सम्बद्ध श्रम संघों, महासंघों और प्रदेश भामस से ऊपर है। यह सभी के लिए नीतियों का निर्धारण करता है।

प्राथमिक संघ प्रदेश भामस या प्रादेशिक औद्योगिक महासंघ या दोनों ही से संबद्ध होते हैं। कुछ प्राथमिक संघ ऐसे भी हैं जो सीधे भामस से ही संबद्ध हैं। प्रदेश भामस तथा राष्ट्रीय औद्योगिक महासंघ भामस से सम्बद्ध हैं। भामस की संरचना में प्राथमिक संघों का स्थान महत्वपूर्ण है। प्रदेश भामस तथा राष्ट्रीय औद्योगिक महासंघ के विधान तो अपने होते हैं लेकिन किसी भी हालत में भामस के विधान के प्रतिकुल नहीं होते। भामस की कार्य समिति की यह अधिकार प्राप्त है कि यह किसी भी संबद्ध इकाई को निलम्बित कर सकती है।

भामस के प्रशासन के तीन अंग हैं– प्रतिनिधि सभा, कार्य समिति एवं स्थाई समिति। प्रतिनिधि सभा सर्वोच्च नीति निर्धारक सभा है। कार्य समिति प्रतिनिधि सभा के प्रस्तावों एवं निर्देशों के अनुसार भामस के सामान्य प्रशासन तथा कार्य को चलाने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाती है। स्थाई समिति कार्य समिति के निर्णयों को लागू करने व उचित क्रियान्वयन हेतु समय–समय पर मिला करती है।

9.24 भामस का जनक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है,

अतः इसने संघ का सम्पूर्ण विचारधारा को आत्म–सात कर लिया है। भामस ने अपनी चिन्तन प्रक्रिया का सप्त सोपानी स्वरुप प्रस्तुत किया है, जिसमें शीर्षस्थ सोपान विचारधारा तथा निम्नतम सोपान तात्तकालिक कार्यक्रम है। इन दोनों सोपानों के बीच में अन्तिम लक्ष्य, तात्कालिक उद्देश्य, नीति, रणनीति एवं रणयुक्ति नामक सोपान हैं। सभी सोपान एक दूसरे से पूर्णतः जुड़े हुए हैं तथा विचारधारा को कार्यरुप देने में सहायक हैं।

भामस की विचारधारा उसके संविधान में अंकित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों से भी प्रकट होती है। भामस ने कुछ नयी धारणाएँ भी विकसित की हैं। "श्रम का राष्ट्रीयकरण, राष्ट्र का औद्योगिकरण और उद्योग का श्रमिकीकरण" एक ऐसा ही धारणा हैं। इस धारणा के द्वारा भामस ने उद्योगों के राष्ट्रीयकरण की मांग पर पर्दा डालने का तथा

एवं रामदेव प्रसाद ने एक अगस्त 1963 को रखी। भारतीय जनता पार्टी के बिहार प्रदेश के दधीची कैलाशपति मिश्र के मतानुसार पार्टी की बुनियाद को सुदृढ़ करने के लिए यह आवश्यक था कि सभी उद्योगों में श्रम संगठनों का निर्माण किया जाय तथा अपनी विचारधारा का प्रचार-प्रसार हो। जाहिर है कि बिहार भामस की स्थापना एवं बिहार के उद्योगों में इसके विस्तार के पीछे राजनीतिक उत्प्रेरणा थी।

बिहार भामस भारतीय मजदूर संघ की एक प्रदेश इकाई है। फलस्वरुप इसने भामस की सम्पूर्ण विचारधारा को पूर्णरुपेण आत्मसात कर लिया हैं। इसका संविधान भामस के संविधान की सत्य प्रतिलिपि है तथा इसका संगठनात्मक एवं प्रशासनात्मक ढाँचा भी भामस के ढाँचे पर आधारित है। बिहार भामस की शुरुआत भी राष्ट्रीय भामस की तरह ही शुन्य से हुई है। 1963 में जब इस संगठन की बुनियाद रखी गयी, न तो इसके पास कोई श्रमसंघ था और न कोई श्रमिक-सदस्य लेकिन 1964 में जब इसका प्रान्तीय अधिवेशन हुआ इसके पास 4 श्रमसंघ थे। जिनकी सदस्यता सूची में 2000 श्रमिकों का नाम अंकित था। ठीक अगले ही वर्ष संबद्ध संघों की संख्या 10 और सदस्य संख्या 10 हजार हो गयी। इसका पाँचवा अधिवेशन 1969 में हुआ तथा महामंत्री के प्रतिवेदन से यह पता चला की सम्बद्ध संघों की संख्या 35 तथा सदस्यों की संख्या 36 हजार हो गयी।

आपात्काल के दौरान बिहार भामस की प्रगति अवरुद्ध हो गयी, इस दरम्यान मात्र तीन नये श्रमसंघ ही इसकी संबद्धता में दाखिल हुए। आपात्काल की समाप्ति के बाद इसकी प्रगति में चार चाँद लग गये। बिहार में जनता सरकार

स्थापना हुई। इस बीच पुराना जनसंघ का विलयन जनता पार्टी में हो गया था। श्रम मंच पर जनता पार्टी के सभी घटकों के श्रमसंघ अपनी पृथक पहचान बनाये हुए थे। तथा उनमें अपने-अपने संगठनों के विस्तार की होड़ लगी हुई थी। बिहार भामस भी श्रम क्षेत्र में सक्रिय था तथा उस होड़ में अधिकाधिक सफलता हासिल करने की कोशिश कर रहा था। इसमें इसे आशातीत सफलता प्राप्त हुई। 1977 में इसकी सदस्य संख्या 86,113 थी जो 1980 में बढ़ कर 1,53,843 हो गयी। संबद्ध संघों की संख्या जो 1977 में 66 थी 1980 में 93 हो गयी।

(घ) सदस्य संख्या – नमूना बड़े एवं छोटे संघों का प्रतिनिधित्व करता है। सम्मिलित संघों में से दो की सदस्य सख्या 100 से भी कम है, तीन की 100 से ऊपर लेकिन 500 से कम, एक की 500 से अधिक किन्तु एक हजार से कम, छः की एक हजार से ऊपर लेकिन दस हजार से कम तथा एक की दस हजार से भी ऊपर है। एक संघ के पदाधिकारियों ने सदस्यों की संख्या बताने में असमर्थता जाहिर की है।

(ङ) चुनाव – भामस के संघों में संविधान एवं नियमावली के विरुद्ध वार्षिक चुनाव की परिपाटी नहीं है। 5 संघों में चुनाव द्विवार्षिक तथा 4 में त्रिवार्षिक होते है। एक संघ में पदाधिकारियों का चुनाव 4 साल के अन्तराल पर तथा दो में पाँच साल के अन्तराल पर होते है। इस क्रम में दो श्रमिक संघ ऐसे भी है। जिनके पदाधिकारी स्थाई तौर पर काम करते आ रहे हैं। बिहार भामस द्वारा निर्मित एवं सत्यापित संविधान एवं नियमावली के अनुसार, "कार्यकारिणी समिति के सदस्य, जिसके अन्तर्गत पदाधिकारी भी हैं, प्रतिवर्ष संघ की वार्षिक सामान्य बैठक में चुने जायेंगे और वे तबतक पदधारण किये रहेगे जबतक कि पदाधिकारियों का अगला चुनाव नहीं हो जाता।" इस संदर्भ में प्राप्त आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि इन संघों की सामान्य बैठक, वार्षिक नहीं होती, फलस्वरुप पदाधिकारीगण वर्षो तक पद धारण किये रहते हैं। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भामस के संघ प्रजातांत्रिक रुप से कार्य नहीं कर रहे हैं।

(च) मान्यता – सर्वेक्षित 14 सदस्यों में से 8 मान्यता प्राप्त हैं तथा 6 मान्यता प्राप्ति के लिए संघर्षरत हैं।

(छ) लक्ष्य एवं उद्देश्य – सभी संघों के लक्ष्य एवं उद्देश्य बिहार भामस द्वारा निर्धारित हैं तथा एक समान हैं। ये निर्धारित लक्ष्य एवं तरीके निम्नलिखित हैं–

- मैं काम करने वाले कर्मचारियों को संगठित करना।
- सदस्यों के अधिकारों और हितों की रक्षा करना तथा सदस्यों

(ट) सवैतनिक कर्मचारी – आमतौर से श्रमसंघों के कर्मचारी अवैतनिक होते हैं क्योंकि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है। सर्वेक्षण में सम्मिलित 14 संघों में से 4 ने एक –एक सवैतनिक कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है।

(ठ) कल्याण कार्य – अन्य संघों की तरह भामस के संघों की भी वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं है। वे सामूहिक सौदेबाजी तथा कानून के माध्यम से श्रमिकों के कल्याणार्थ कार्य करते हैं। लेकिन ये पारस्परिक बीमा संस्था के रुप में कल्याणकारी कार्य करने में सर्वथा असमर्थ हैं।

9.5 सदस्यों की विवरणिका

अध्याय पाँच में सर्वेक्षित सदस्यों का परिचय जनांकिकीय एवं पारिवारिक विशेषताओं के आधार पर दिया गया है।

9.51 जनांकिकीय विशेषताएँ

सर्वेक्षित 334 सदस्यों में करीब 2 तिहाई 25 वर्ष से ऊपर की आयु के हैं। एक तिहाई से ज्यादा सदस्य अध्ययन के समय 25 वर्ष तक की उम्र के थे। सदस्यों की लिंग–संरचना इस संदर्भ में व्याप्त स्थिति को प्रतिबिंबित करती है। इन उद्योगों में महिला कार्मिकों की अल्पता पुनः दृष्टिगत होती है । नमूने में लिये गये सदस्यों में अधिकांश पुरुष हैं। कुल सदस्य संख्या का 93.5 प्रतिशत पुरुष तथा 6.5 प्रतिशत महिलाएँ हैं।

सर्वेक्षित सदस्यों का करीब आधा भाग अर्द्धशहरी क्षेत्र का निवासी है, शहरी क्षेत्र के वासिन्दों का प्रतिशत करीब 27 तथा ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले सदस्यों का प्रतिशत 22 है। शहरी एवं अर्द्धशहरी सदस्यों का बहुलता का एक कारण यह भी है कि सर्वेक्षित में सम्मिलित इकाईयाँ शहरी एवं अर्द्धशहरी क्षेत्र में स्थित हैं।

वैवाहिक स्थिति के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भामस के सदस्यों मे प्रचुरता विवाहित सदस्यों की है। करीब 84 प्रतिशत सदस्य विवाहित हैं तथा करीब 16 प्रतिशत अविवाहित हैं। भामस ने

का मात्र 33 प्रतिशत साक्षर है, भामस के सदस्यों का दो तिहाई भाग मैट्रिक से लेकर स्नातकोत्तर उपाधियों तक से अलंकृत हैं। करीब चौथाई भाग ही अनपढ़ एवं मात्र साक्षर की श्रेणी में आता है।

कुल सदस्यों में से करीब 27 प्रतिशत की कार्यावधि 5 वर्ष से कम है तथा करीब 24 प्रतिशत की 5 और 10 वर्ष के बीच, करीब 36 प्रतिशत सदस्यों का कार्यानुभव 10 से 15 वर्ष के बीच है एवं शेष 14 प्रतिशत का 15 वर्ष से ऊपर। इन आँकड़ों के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट होती है कि नये श्रमिकों पर भामस का असर अपेक्षाकृत तीव्र गति से हो रहा है तथा नये श्रमिक इसके आगोश में खिंचे चले आ रहे है।

कुल सदस्यों की मासिक् आय पर दृष्टि डालने से ऐसा आभास मिलता है कि भामस संघों में वैसे सदस्यों की बहुलता है जिनकी मासिक आय अपेक्षाकृत कम है। करीब 55 प्रतिशत सदस्यों की मासिक आय एक हजार रु0 के भीतर है, 35 प्रतिशत सदस्यों की मासिक आय एक हजार रु0 से ऊपर तथा दो हजार रु0 तक है। करीब 10 प्रतिशत सदस्य दो हजार से ऊपर की मासिक तनख्वाह उठाते है।

सभी सदस्यों को समन्वित रुप से नजर डालने पर प्रति परिवार औसतन सदस्य संख्या 5.3 आती है। इन परिवारों के सदस्यों में 54.7 प्रतिशत पुरुष तथा 45.3 प्रतिशत महिलाएँ हैं।

सभी उद्योग वर्गो के परिवारों में परावलंबी सदस्यों की संख्या उपार्जक की संख्या से अधिक है। कुल सदस्यों में 77.4 प्रतिशत परावलंबी तथा 22.6 प्रतिशत उपार्जक हैं। सर्वेक्षित सदस्यों के परिवारों में एक उपार्जक पर 3.5 आश्रित है।

9.6 भामस संघों की छवि

श्रमिक संघों की छवि के आकलन में सदस्यता-अवधि, सदस्यता-ग्रहण के कारण, चुनाव एवं बैठकों की नियमितता तथा वाह्य नेतृत्व की आवश्यकता आदि तथ्य महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

इसने प्रहार किया है। इसकी विचारधारा में सभी तरह के लोगों को आकर्षित करने की गुंजाइस हैं। गैर-साम्यवादी श्रमिकों को तो इसकी विचारधारा स्पष्ट रुप से आकर्षित करती है। पूंजीवादी दर्शन से मेल रखने वाले श्रमिकों पर इसका जादुई असर होता है।

आम तौर से भारतीय श्रमिक वर्ग को प्रगतिशील एवं वामपंथी माना जाता रहा है। इसी मान्यता के आधार पर बहुत सारे विद्वानों ने भामस के अस्तित्व के प्रति शकाएँ व्यक्त की थीं। पर, भामस की उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही सदस्य संख्या ने इन शंकाओ को निर्मूल साबित कर दिया है। भारतीय श्रमिकों की संरचना की एक विशेषता की ओर शायद श्रमशास्त्रियों का ध्यान नहीं गया है। भारतीय श्रमिक वर्ग मार्क्सवाद की धारणा के विपरीत, पूर्णतः सर्वहारा वर्ग नहीं है। आजादी के बाद तथा उसके पूर्व भी मात्र भूमिहीन श्रमिक एवं शिल्पी ही श्रमिक वर्ग में सम्मिलित नहीं हुए है। इसके विपरीत भारतीय श्रमिक वर्ग में वैसे श्रमिकों की भी एक बड़ी संख्या है जो भूस्वामी या मध्यवर्गीय व्यावसायियों के परिवार से आते है। बहुत से ऐसे मजदूर हैं जो कारखाने में मजदूर की भूमिका निभाते है तथा कारखानें के बाहर मालिक की श्रेणी में खड़ा नजर आते है। कारखानों में वे लाल झंडा के नीचे गोलबंद होकर मालिकों का सामना करते हैं तथा अपने गाँव में लाल झंडा की छत्रछाया में एकत्रित जनसमुदाय पर कहर ढाते हैं। इस तरह के श्रमिकों की संख्या कम नहीं है। फिर ऐसे श्रमिकों में लाल झंडा के प्रति उदासीनता पैदा हो तो आश्चर्य ही क्या? ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे-जैसे कृषि क्षेत्र में नक्सलबादी एवं आतंकवादी आंदोलन जोर पकड़ रहे हैं वैसे-वैसे औद्योगिक क्षेत्र मे लाल झंडा का महत्व घट रहा है। वैसे सारे श्रमिक जो अपने गाँव पर लाल आंदोलनों से आक्रांत हैं अपने अपने उद्योगों में लाल झंडों से विमुक्त हो रहे है। इस स्थिति का फाइदा भामस को मिल रहा है। यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि नक्सलवादी आंदोलनों से आक्रांत व्यक्ति जो अपने गाँव में मालिक की भूमिका निभाता है तथा अपने कारखानें में श्रमिक की भूमिका निभाता है, अगर लाल झंडा से विमुख होता है तो वह कहाँ जायेगा? क्या वह कांग्रेस की छत्रछाया में पलने वाले इंटक की शरण में जायेगा? इसका उत्तर नाकारात्मक होगा। जो सरकार नक्सलपंथियों के आक्रमण के विरुद्ध उसे संरक्षण प्रदान करने में सक्षम नहीं है वह उसकी शरण में नहीं जा सकता है। जिसने वर्षो से कांग्रेस की

निर्माण न हो सका। आखिर कितने दिनों तक भारतीय मजदूर उस तस्वीर की कल्पना में खोया रहे? आखिर धैर्य की भी एक सीमा होती है। कम्युनिस्ट आन्दोलन से उन लोगों मे उदासीनता आई है जो वर्षो से इस कल्पना को साकार होने की प्रतिक्षा कर रहें है।

अब इसी आधार पर भामस के लिए भी भविष्यवाणी की जाये तो उसे भी सत्य के नजदीक होना चाहिए। "मजदूरें दुनिया को एक करो" का नारा बुलन्द करनें वाला संगठन तथा भारतीय दर्शन पर आधारित एक शोषण मुक्त समाज बनाने की कल्पना करने वाला संगठन, इसे साकार रुप देने में असफल होता है तो इसके सदस्यों में भी विमुखता पैदा होगी। भामस की विचारधारा से भावी समाज का स्पष्ट चित्र नहीं उभरता। हर व्यक्ति अपनी मानसिकता के आधार पर एक चित्र खींचता है। चित्रों की यह भिन्नता भविष्य में भामस के लिए मौत का कारण बन सकती है।

भामस की सदस्य संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि का श्रेय भामस के कर्मठ, अनुशासित, सच्चरितत्र एवं राष्ट्रभक्त नेताओं को जाता है। इन नेताओं की कर्मठता, राष्ट्रभक्ति एवं श्रमहित, राष्ट्रहित एवं उद्योगहित के प्रति प्रतिबद्धता ने असंख्य श्रमिकों को भामस की छत्रछाया में आकर विश्राम करने के लिए लालायित किया है।

9.63 पदाधिकारियों के चुनाव एवं बैठकों की नियमितता

सर्वेक्षित सदस्यों की दृष्टि में उनके संघों का चरित्र प्रजातांत्रिक है। पदाधिकारियों के चुनाव नियमित अंतराल पर होते हैं। सदस्यों विचारों का अनुमोदन उनके पदाधिकारी नहीं करते । उनके अनुसार भामस के संघों में संविधान एवं नियमावली के विरुद्ध वार्षिक चुनाव की परिपाटी नहीं है। 5 संघों में चुनाव द्विवार्षिक तथा 4 में त्रिवार्षिक होते हैं। एक संघ में पदाधिकारियों का चुनाव 4 साल के अंतराल पर तथा दो में पाँच साल के अंतराल पर होता है। इस क्रम में दो श्रमिक संघ ऐसे भी है जिनके पदाधिकारी स्थाई तौर पर काम करते आ रहे है।

भामस संघ पर्याप्त मात्रा में तथा नियमित रुप से बैठकें आयोजित करते है। जिसके कारण संघों का प्रजातांत्रिक चरित्र बरकरार रहता है तथा सदस्यों में संगठन तथा उनके कार्यक्रमों के प्रति श्रद्धा

होगा। भामस के सदस्यों तथा नेताओं के सामिप्य को आँकने कि लिए सदस्यों से यह सवाल किया गा कि वे अपने नेताओं के कितनेभाग से परिचित हैं। दस संदर्भ में आँकड़ों का अवलोकन करने से या तथ्य प्रकत होता है कि अधिकांश सदस्यों कों सम्पूर्ण नेतृत्व से जान पहचान है। सम्पूर्ण नेतृत्व के जा पहचान रखने वाले करीब 72 प्रतिशत सदस्य है।

9.72 नेतृत्व की विशेषताएँ

नेतृत्व की अनेक विशेषतायें होती हैं। इनमें से कुछ विशेषतायें अच्छी मानी जाती हैं तथा कुछ वैसी भी है जिन्हें आवांछित की संज्ञा दी जा सकती हैं।

भामस संघों के सरीब 80 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में सम्पूर्ण नेतृत्व मित्रवत् व्यवहार के आभूषण से अलंकृत है।• अतः यह कहा जा सकता है कि भामस क अधिकांश नेतागए अपने सदस्यां के साथ मित्रवत् व्यवहार करते हैं।

ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है, यह कथन श्रम संघ ने नेताओं के लिए भी पूर्णतः लागू होता है। भामस के 63.4 प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में सारे नेतागण, 32.6 प्रतिशत के दृष्टि में नेताओं का तीन चौथाई भाग तथा 3.8प्रतिशत सदस्यों की दृष्टि में नेताओं का आधा भाग ईमानदारी के गुण से विभूषित है। भामस के नेताओं में ईमानदारी की सीमा अधिक होनी चाहिए क्योंकि कहीं नैतियता पर अधिक बल दिया जाता है।

आमतौर से श्रमिक संघ के नेताओं की यह कह कर आलोचना की जाती है कि वे अपने स्वार्थ की पूर्ति में मशगूल रहते हैं। दुहाई देते हैं मजदूरों की विवशता, लाचारी एवं उत्पीड़न की लेकिन काम साधतें हैं अपने हित का। भामस के अधिकांश सदस्यों की नजन में उनके नेतागण स्वार्थपरता के शिकार नहीं है, ऐसी मान्यता रखने वाले करीब 79 प्रतिशत सदस्य हैं। करीब 19 प्रतिशत सदस्यों की राय में नेतृत्व का चौथाई भाग तथा दो प्रतिशत की राय में नेतृत्व का आधा स्वार्थ लोलूप हैं।

मजदूर संघ के नेताओं कों आनितरिक समस्याओं से भी जूझाना पड़ता है। यहाँ भी कुछ सदस्य नेताओं के कृपा पात्र बन जाते हैं तथा

भामस के नेतागण प्रबंधकों के उचित निर्णय एवं कार्रवाइयों पर उनकी प्रशंसा करते है। करीब 77 प्रतिशत सदस्य मानते हैं कि यह गुण सम्पूर्ण नेतृत्व में वर्तमान हैं। 20 प्रतिशत सदस्यों को इस गुण की झलक तीन चौथाई नेताओं में दिखाई देती है।

ऐसी आम मान्यता है कि श्रमसंघ के नेतागण राजनीतिक आकंक्षाओं की पूर्ति में तत्लीन रहते हैं। भामस के संदर्भ में 74 प्रतिशत सदस्यों की राय है कि उनका नेतृत्व राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में तल्लीन नहीं रहता है फिर भी 16.4 प्रतिशत सदस्यों ने एक चौथाई नेताओं को, 5.6 प्रतिशत ने आधे नेताओं को तथा करीब 3 प्रतिशत ने तीन चौथाई नेताओं को राजनीतिक आकांक्षाओ की पूर्ति में तल्लीन पाया है।

भामस के नेताओं पर अक्सर साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहित करने का तथा जातीयता की भावना से ओतप्रोत होने का आरोप लगाया जाता है। उनके सदस्यों की दृष्टि मे यह आरोप सर्वथा गलत है। जहाँ तक जाँति-पाँति की भावना का सवाल है, करीब 86 प्रतिशत सदस्यों की मान्यता है कि उनके नेतागण जातीयात की भावना से ओतप्रत नहीं है। मात्र 14प्रतिशत सदस्य अपने नेतृत्व मं विभिन्न अंश तय इस प्रवृत्ति के मौजूद रहने की पुष्टि करते हैं।

9.73 नेतृत्व से संबंधित परिकल्पनाएँ

श्रम संघ नेतृत्व के संबंध में अनेक धारणायें, उक्तियाँ एवं कथन प्रयलित हैं। इन्के द्वारा श्रमसंघ के नेताओं की छवि उज्जवल भी होता है तथा धूमिल भी । भारतीय मजदूर संघ के बिहार प्रदेश में विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे नेताआों की छवि मे मूल्यांकन के लिए इन धारणाओं एवं कथनों को परिकल्पना के रूप में स्वीकार करके उनका परीक्षण किया गया है। इन परिकल्पनाओं पर सर्वेक्षित श्रमिकों की सही माना असे सही तथा जिसे बहूतायत सदस्यों ने गलतकरार दिया उसे गलत माना गया है। परिकल्पनाओां के परीक्षण के आधार पर भामस नेतृत्व की हो छवि उभरती है उसका सार अंश नीचें प्रस्तुत है।

1. भारतीय मजूर संघ के नेता श्रमसंघ आंदोलनमें सदस्यों के हितों की रक्षा करने की नियत से आते हैं।
2. भामस के नेता सुस्ती एवं अकर्मण्यता के शिकार नहीं हैं।

19. भामस के नेता सदस्यों के गलत व्यवहारों को न तो समर्थन प्रदान करते हैं और न संरक्षण।

20. भामस के नेतागण आमतौर से श्रमिक के रूप के काम चोर नहीं हैं।

21. आम सदस्यां की राय में भामस संघोंके नेता मजदूर के रूप में कर्तव्य परायण है।

9.8 नेतृत्व पार्श्विका

इस अध्ययन के अध्याय आठ में सर्वेक्षित नेताओं का परिचय जनांकिकीय, परिवारिक, जीवन-शैली तथा संगठनात्मक विशेषताओं के आधार पर दिया गया है तथा औद्योगिक सम्बन्ध की समस्याओं एवं भामस् के आर्दश वाक्यों एवं नारों पर उनके मन्तव्यों का विवेचन किया गया है।

9.81 जनांकिकीय विशेषताएँ

बिहार भामस के नेतृत्व में सभी आयु वर्ग के नेताओं का समावेश है। भामस नेतृत्व में 30 से 50 वर्ष की उम्र वाले नेताओं का वर्चस्व है। भामस नेतृत्व में महिला नेताओं का सर्वथा अभाव हैं। मात्र दो प्रतिशत महिला नेता है। भामस नेतृत्व में 36 प्रतिशत सदस्य क्रमशः ग्रामीण और अर्द्धशहरी तथा 28 प्रतिशत शहरी पृष्ठभूमि से आये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि भामस नेतृत्व ने ग्रामीण एवं अर्द्धशहरी पृष्ठभूमि वाले श्रमिकों को शहरी पृष्ठभूमि वाले श्रमिकों की तुलना में ज्यादा आकर्षित किया है। सर्वेक्षण में सम्मिलित मात्र दो नेताओं को छोड़कर सारे नेता शादी शुदा है। भामस नेतृत्व में बहुलता हिन्दु धर्मावलंबियों की है तथा सभी स्तरों पर प्रायः सभी जातियों का प्रतिनिधित्व है। भामस नेतृत्व शिक्षास्तर के दृष्टिकोण से एक सुखद चित्र प्रस्तुत करता है। सम्पूर्ण नेतृत्व का 48 प्रतिशत मैट्रिक और 36 प्रतिशत स्नातक तक की योग्यता से विभूषित हैं। अधिकांश नेताओं ने नेतृत्व का प्रशिक्षण विभिन्न एजेंसियों द्वारा प्राप्त किया हैं। मात्र एक नेता को छोड़कर सभी नेताओं की मातृभाषा हिन्दी है। भामस नेतृत्व का करीब 80 प्रतिशत भाग अंग्रेजी समझने की क्षमता रखता है। भामस के नेताओं का मुख्य नेताओं का मुख्य पेशा नौकरी है।

सामाजिक प्रतिष्ठा में इजाफा लाने के उद्देश्य से आन्दोलन के दरवाजे को खटखटाया है तथा 6 प्रतिशत नेताओं ने अपनी आर्थिक स्थिति को समृद्ध करने के लिए श्रमसंघ आन्दोलन का सहारा लिया है। बिहार भामस के वर्तमान नेतृत्व में अभी भी वैसे सदस्य मौजूद हैं जिन्होंने मजदूर संघों की स्थापना में संस्थापक की भूमिका अदा की है। सम्पूर्ण नेतृत्व मे करीब 62 प्रतिशत नेता अपने को श्रमसंघों का संस्थापक मानते है।

श्रमिक संघ आधुनिक समाज का अभिन्न अंग हो गया है। संघ एक प्रजातांत्रिक संगठन है जो मजदूरों द्वारा निर्मित है, मजदूरों का है तथा मजदूरों के जीवन-उत्थान के लिए कटिबद्ध है। आधुनिक उद्योगों का औद्योगिक संबंध संघर्ष के तत्वों से परिपूर्ण है। भामस के संघों को भी औद्योगिक रण क्षेत्र में अपने रण कौशल का प्रदर्शन करने के अनेक अवसर मिले हैं। नेताओं ने संघ को मजबूत करने के लिए और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनेक आन्दोलनों का आयोजन एवं संचालन किया है। करीब 98 प्रतिशत नेताओं ने धरना एवं सत्याग्रह तथा 84 प्रतिशत ने विभिन्न स्तरों पर हड़ताल का नेतृत्व किया है। भामस के करीब 62 प्रतिशत नेताओं को प्रबन्धकों के गुण्डों द्वारा विभिन्न अवसरों पर अपमानित होना पड़ता है। इन कारवाईयों मे भाग लेने के लिए श्रम संघ के सदस्यों एवं उनके नेताओं को प्रबंधकों का कोपभाजन बनना पड़ता है। करीब 54 प्रतिशत नेताओं को प्रबंध ाकों द्वारा इस संदर्भ में दण्डित किया गया है । दण्डों की प्रकृति चेतावनी, जुर्माना, निलम्बन, बरखास्तगी, अवनति और स्थानांतरण के रुप में पायी जाती है। भारतीय मजदूर संघ- आन्दोलन संघों के परस्पर प्रतिद्वंद्विता से व्याधिग्रस्त हो गया हैं। भामस नेताओं में से 50 प्रतिशत को औद्योगिक कारवाइयों के दरम्यान प्रतिद्वन्द्वी संघों के सदस्यों एवं नेताओं द्वारा अपमानित होना पड़ा है।

भारतीय मजदूर संघ की राष्ट्रीय नीति आमरण अनशन की अनुमति नहीं प्रदान करती है फिर भी क्षेत्रीय और इकाई स्तर पर आमरण अनशन का आयोजन किया जाता है। जेल भरो अभियान श्रमसंगठनों के एक नये तकनीक के रुप में उभर कर सामने आया है। भामस नेतृत्व के 30 प्रतिशत सदस्यों ने इस संदर्भ में अपनी जेल यात्रा का वृतांत सुनाया है। हड़तालें एवं प्रदर्शन शान्ति एवं व्यवस्था का कायम रखने में बाधा उपस्थित करते है। भामस द्वारा आयोजित

है। भामस की अधिकांश इकाइयाँ अभी भी घटकवाद से अछुती है। भामस की बिहार इकाईयाँ में घटकवाद का मख्य कारण नेताओं की महत्वाकांक्षा है। घटकवाद के कारणों में बिहार में व्याप्त जातीयता की भी गंध मिलती है। कोयलांचल में घटकवाद का एक नया कारण सामने आया है। माफिया मनोवृत्ति से ग्रसित सदस्यों ने स्थापित नेतृत्व को चुनौती दी तथा खुद नेतृत्व को अपनी गिरफ्त में लेने का प्रयास किया । घटकवाद के कारण संघों की छवि धूमिल होती है। सदस्यों में अलगाव उत्पन्न होता है तथा संघ बदनाम होता है। संगठन में पनप रहे व्यक्तिवाद और जातिवाद को नष्ट कर दिया जाय। सदस्यों की प्रतिबद्धता संगठन के प्रति होना चाहिए न कि किसी नेता विशेष के प्रति। नेताओं के चयन मे उनकी संगठन के प्रति कर्मठता और संगठन की गतिविधियों मे सहभागिता आदि गुणों को आधार बनाना चाहिए तथा जातीयता, क्षेत्रीयता, साम्प्रदायिकता तथा राजनीतिक गुटबन्धिता को कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए।

श्रम संघों के नेतृत्व में बाह्य व्यक्तियों की आवश्यकता एवं विवादास्पद सदस्यता कारुप ग्रहण कर चुकी है। नेतृत्व में वाह्य व्यक्तियों की उपस्थिति की समस्या के अनेक पहलु हैं। पहला प्रश्न तो यही है कि बाहरी व्यक्ति है कौन ? भामस के नेताओं के दृष्टिकोंण में वह व्यक्ति बाहरी है जिसने कभी भी, कहीं भी श्रमिक के रूप में काम नहीं किया है। भामस के नेतागण उस व्यक्ति को भी बाहरी व्यक्ति मानतें हैं जो श्रमसंघ की सीमा में आनेवाले उद्योग या इकाई में श्रमिक नहीं है। भामस – नेताओं की राय में वैसे व्यक्ति जों कभी भी श्रमिक नहीं रहे हैं लेकिन जिनहोने श्रमसंघवाद को अपना पेशा बना लिया है। श्रमसंध के नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति माने जायेंगे – ऐसा मत 68प्रतिशत नेताओं नेव्यक्त किया है। श्रमसंघ एक स्वैक्षिक संगठन है तथा अन्य संगठनों की तरह इससे भी यह अधिकार होना चहिए कि वह जिस व्यक्ति को चाहे अपनी सदस्यता प्रदान करें। भामस नेताओं में से 70 प्रतिशत का यह मत है कि श्रमसंघों कों बाहरी व्यक्तियों को रखने का अधिकार नही होना चाहिए। जबकि 30 प्रतिशत नेताओं ने इस अधिकार के पक्ष में मत व्यक्त किया है। इस संदर्भ में यह बतला देना आवश्यक जान पड़ता है कि अधिकांश नेताओं की राय भामस की घोषित नीति के विरूद्ध है। नेतृत्व में वाह्य व्यक्ति की उपस्थिति से श्रमिक संघ कमजोंर एवं दुर्बल हो जाता है।

गिनतें समय से ठीक पूर्व लगातार 6 महीनों का चन्दा दे चुके हों।

सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं के मतो में स्पष्ट भिन्नता है। जहाँ 36 प्रतिशत नेताओं ने बहूमत संघ को सौदा एजेंट नियूक्त करना पसंद किया है वहाँ 32प्रतिशत र्क संघों के एक साथ तथा 30 प्रतिशत सभी संघों के सम्मिलित रूपसे सौदा एजेन्ट बनने की अनुशंसा करते हैं। नेताओं के मतों में भिन्नता के कई कारण हो सके हैं। वैसे नेता, जिनका संघ बहुमत में है, बहुमत संघ कों ही सौदा एजेंट के रूप में स्थापित करना चाहतें हैं। अल्पमत संघों के नेताओं की मनावृति पृथक होती है। वे चाहते हैं कि बहुमत संघ के साथ साथ के नेताओं अल्पमत संघों को भी मान्यता प्रदान की जाय तथा उन्हें भी सौदा एजेन्ट के रूप में काम करने का मौका मिले अगर बहुमत संघ को ही कानून के तहत सौदा एजेन्ट का दर्जा देना हो तो इस संदर्भ में बनने वाले कानून को यह भी स्पष्ट करना होगा कि बहुमत के दावे का सत्यापन कैसे किया जाय । बहुमत के दावे सत्यापन मुख्यतः तीन विधियों द्वारा किया जा सकता है। संघों की सदस्या संख्या के सत्यापन द्वारा, सभी संघों के सभी सदस्योंके बीच चुनाव द्वारा सभी संघे के सभी सदस्यों के बीच चुनाव द्वारा तथा सभी श्रमिकों के द्वारा तथा सभी श्रमिाकों के बीच चुनाव द्वारा। सर्वेक्षण में सम्मिलित नेताओं से इन विधियों में से एक चुनाव करने को कहा गया तो प्रथम विधि का 44 प्रतिशत, द्वितीय को 32 प्रतिशत तथा तृतीय को 20 प्रतिशत नेताओं का समर्थन मिला है। भामस ने इस में द्वितीय विधि की अपनी श्रम नीति में स्वीकार किया है।

संघे में बहुमत के दावों का सत्यापन करने का भार किस एजेंसी को दिया जाय? इस प्रश्न के उत्तर में भामस के नेताओं ने तटस्थ एजेंसी का ना लिया।

9.86 भारतीय मजदूर संघ और राजनीतिक दल

स्वतंत्रता – प्राप्ति के बाद विभिन्न राजनीतिक दलों ने श्रम–क्षेत्र में अपनी पैठ मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर श्रमिक महासंघों की स्थापना की। भामस के आध्यात्मिक गुरू दत्तोपंत ठेंगड़ी के अनुसार आर्दश स्थिति में आश है कि जन–संगठन राजनीतिक दलों के प्रभाव से मुक्त रहेंगे और दबाव डालनेवाले समूहों तथा वैकल्पिक

है। ये आदर्श वाक्य एवं नारे भामस के चरित्र को स्पष्ट करते है।भामस अपने को भारतीय परम्पराओं का समर्थक एवं पोषक साबित करना चाहता है । इसने साम्यवादी मजदूर संघों से पृथ्क पहचान कायम करनेकी चेष्टा की है। अमेरिकन फेडरिशन ऑफ लेबर से इसका विचार साम्य है भामस के नेतागण किस सीमा तक इन आदर्श वाक्यों और नारों से सहमत हैं इसकी जानकारी के लिए नमूना में लिए गये नेताओं का मत- संग्रह किया गया है। भामस ने साम्यवारदी नारा "दुनिया के मजदूरों एक हो " को पूर्णतः अग्राह्य बतलाया है। सभी नेताओं ने "विश्वकर्मा दिवस" को ही श्रम दिवस के रूप में स्वीकार किया। भामस का विश्वास वगर्ग संघर्ष न होकर वर्ग सहयोग में है। उनका विश्वास है कि पूंजीवादी व्यवस्था में भी मजदूरों के हितों की रक्षा संभव है। सर्वेक्षित नेताओं नेभामस की घेषित नीति से शत प्रतिशत सहमति व्यक्त की है। भामस समाज में परिवर्तन तों चाहता है लेकिन पूंजीवाद का खुलकर विराध नहीं करता। पूंजीवाद एवं साम्यवाद दोनों की आलोचना करते हैं लेकिन इसका विकल्प प्रस्तुत नहीं करते। जिस प्रकार भामस का साहित्य उलझा हुआ है, भामस के नेतागण भी शायद इस उलझन से मुक्त नहीं हो पाये हैं। करीब 76 प्रतिशत नेताओं ने व्यवस्था परिवर्तन का समर्थन किया है तथा 24 प्रतिशत ने तुरत लाभ के दृष्टिकोण से अपनी सहमति व्यक्त की है।

श्रमसंघवाद के क्षेत्र मं दो दर्शन मुख्य रूप से प्रचलित हैं- क्रान्तिकारी दर्शन एवं व्यावसयिक दर्शन । क्रान्तिकारी दर्शन को माननेवालें संघ पूंजीवादी व्यवथाके प्रति अनास्था रखतें हैं। व्यावसायिक दर्शन को माननेवाले संघ पूंजीवादी वयवस्था के विस्थापन नहीं अपितु उसमें सुधार के हिमायती हैं। भामस इसनें से किस दर्शन का हिमायती है, कहना कठिन है। भामस साहित्य उलझा हुआ है, बातें क्रान्ति की जाती हैं लेकिन ठेस निष्कर्ष लिकालने के समय लीपा पोती हो जाती है। अध्ययन में सम्मिलित सभी नेताओं ने औद्योगिक संघ को शिल्प संघवाद की तुलना में बेहतर समझा है। भामस आमतौर से वैज्ञानिक समाजवाद का विराध करता है। कुछ ने गाँधी जी के समाजवादकासमर्थन भी किया है। इस संदर्भ में सर्वेक्षित नेताओं के विचार चौकाने वाले हैं। 80 प्रतिशत नेताओं ने वैज्ञानिक समाजवाद का समर्थन किया है तथा 20 प्रतिशत ने गाँधी जी के रामराज्य की अवधरणा का। भामस ने पूर्ण "राष्ट्रीयकरण तथा राष्ट्रीयकरण नहीं"

हिन्दू किसी पूजा–पद्धति का नाम नहीं है वनन् राष्ट्रीयता और जावन पद्धति का ही दूसरा नाम है लेकिन आम सदस्यों की समझदारी में दर्शन की इस विशालता का बोध नहीं होता है। अतः इस दर्शन को सरल भषा में तथा दा टूक शब्दों में रखने की आवश्यकता है।

2. श्रम संघवाद के क्षेत्र में भामस ने कुछ सिद्धानतों का प्रतिपादन किया है जिसमें "उद्योगों का श्रमिकीकरण, श्रमिकों का राष्ट्रीयकरण तथा राष्ट्र का उद्योगीकरण एक प्रमुख सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त मजदूरों को आकर्षित भी करता है। लेकिन इसे व्यावहारिक धरातल पर लाने की जों प्रक्रिया बतलाई गई है वह बोध्गाम्य नहीं है। इस सिद्धान्त को व्यवहारिक रूप प्रदान करना असम्भव – सा प्रतीत होता है। अतः भामस के दाशनिकों को यह चाहिए कि इसकी व्यावहारीक व्यांख्या प्रस्तुत करें तथा इसे व्यवहार में अनूदित करने की तरकीब बतावें।

3. सम्पति केस्वामित्व के ढ़ग एवं प्रकार पर भी भामस की विचारधरा स्पष्ट नहीं है। यह "राष्ट्रीयकरण" और "अराष्ट्रीयकरण" दोनों छोरों को नकारता है लेकिन कोई ठेस विकल्प नहीं प्रस्तुत करता । इस नकारात्मक प्रवृति से तात्कालिक लाभ तों हो सकते हैं लेकिन इसके दीर्घ गामीपरिणाम संघ से हित में नहीं होंगें।

4. भामस ने एक गैर–साम्यवादी संगठन के रूप में अपनी पहचान स्थापित करनी है। साम्यवाद के बहुचर्चित नारा " दुनिया के मजदुरो एक हो" का जवाब" मजदूरों दुनिया को एक करो" के नारे के रूप में दिया है। क्या भामस इस नारे कों कार्य रूप में परिणत करना चाहता है? अगर इसका उत्तर हॉं में है तो इसे कार्य रूप देने की रूप रेखा प्रस्तुत करनी चाहिए।

5. भामस को चाहिए की अपनी विचारधारा के अनूरूप देश की शासन प्रणाली, आर्थिक प्रणाली, औद्योगिक सम्बन्ध प्रणली, वैधानिक प्रणानी तथा अन्य प्रणालियों एवं उपप्रणालियों की स्पष्ट रूप रेखा समाज के सामने तथा खास कर मजदूर

विचारधारा के प्रचार–प्रसार, राजनीतिक चुनावों तथा रचनात्मक कार्यक्रमों के आयोजन में अधिक प्रभावशाली नहीं है। रापनीतिक विचारधरा एवं राजनीतिक चुनाव में अप्रभावी होना कुछ सदस्यों की दृष्टि में श्रमसंघों के लिए अच्छा भी माना जा सकता है लेकिन रचनात्मक कार्यक्रमों के आयोजन में प्रभावशालिता की सीमा का कम होना निश्चितरूपेण श्रमसंघों के लिए शर्म की बात है। करीब 88 प्रतिशत सदस्य संघ की शिक्षा के प्रचार–प्रसार में प्रभावशालिता से असंतुष्ट हैं तथा 75 प्रतिशत सदस्य साधनों को गतिशील करने में तथा 58 प्रतिशत सदस्य कल्याण कार्यों के समायोजन में अपने संघ की क्षमता से संतुष्ट नहीं है। संघों का यह दायित्व हो जाता है कि रचनात्कय कार्य, कल्याण कार्य तथा शिक्षा के प्रचार–प्रसार में अधिकाधिक रूचि ले तथा इस क्षेत्र में अपने साधनों का समुचित विदोहन करें।

9. सर्वेक्षित सदस्यों में से 32 प्रतिशत सदस्यों के हित वर्धन में 46 प्रतिशत सामुहिक वार्ता में, 38 प्रतिशत ससुख दुःख में सहायक होने में, 30 प्रतिशत परस्पर सहयोग की भावना फैलाने में, 26 प्रतिशत विचारों के प्रतिनिधित्व में, 23 प्रतिशत शिकायतों के समाधान में तथा 11 प्रतिशत सदस्यों के हितरक्षण में अपने संघों की प्रभाव क्षमता से नाराजगी जाहिर करते हैं संघों को अपनी छवि सुधारने के लिए इन विषयों पर अत्यधिक जोर देना चाहिए तथा अपनी क्षमता में अभिवृद्धि करनी चाहिए।

10. जहाँ तक नेतृत्व की छति का प्रश्न है अधिकाश सदस्यों ने अपने नेताओं को नेतृत्व के सर्वमान्य गुणों से आभूषित पाया है। फिर भी कुछ सदस्यों ने नेताओं के कुछ भागों में किसी न किसी मात्रा में इन गुणों का अभाव पाया है। नेतृम्व की छवि को और उज्जवन तथा आकर्षक बनाने के लिए यह आवश्यक है कि अल्संख्या में होने के बावजूद इन सदस्यों की भावनाओं की कद्र होनी चाहिए। आधे से अधिक सदस्यों ने अपने नेताओं के ऊपर यह आरोप लगाया है कि वे सदस्यों की चिन्ता से चिन्तित नहीं होते हैं

10. संघ की सदस्य संख्या :-

वर्ष	सदस्य-संख्या	वर्ष	सदस्य-संख्या
1970		1975	
1980		1981	
1982		1983	
1984		1985	
1986			

11. सदस्यता शुल्क (प्रति मास) :-

12. शुल्क संग्रह की अवधि-मासिक / त्रैमासिक / अर्द्ध वार्षिक / वार्षिकः-

13. शुल्क संग्रह की विधि एवं यंत्रः-

14. संघ की संरचना एवं प्रशासन :-

15. निर्वाचित मूख्य पदाधिकारियों के नाम :-

पद	नाम	उम्र	पेशा	मजदूर-गैर म0	राजनीतसंबंध
अध्यक्ष					
उपाध्यक्ष					
महामंत्री					
मंत्री					
कोषाध्यक्ष					

17. अध्यक्ष तथा महामंत्री कितने वर्षो सें इस पद पर आसीन हैं:

अध्यक्ष-

महामंत्री-

18. संघ में आय-व्यय का व्यौराः- 1985

आय का श्रोंत	आय	व्यय के मद	व्यय की रकम

24. संघ को मांग – पत्र तैयार करने तिथिः–

(आम सभा, कार्यकारिणी, महासंघ द्वारा प्रेष्ति, किसी नेता विशेष द्वारा)

25. क्या संघ का राजनीत कोष है। :– हाँ/नहीं

26. कदि हाँ तें उसका व्यय कैसे होता है, तथा किसके लिये (राजनीतिक दल या व्यक्ति) होता हैः–

27. संघ के लक्ष्य तथा उनकी प्राप्ति के तरीकेः–

28. क्या संघ कों प्रबंध से मान्यता मिली है। हाँ/नही, यदि हाँ तो कब से ।

यदि नहीं तो क्यों ?

(क) सेघ अल्पमंत में है।

(ख) प्रबन्ध मनमानी करता है।

(ग) सरकारी तंत्र का पक्षपात पूर्ण रवैया है।

29. मान्यता प्राप्त संघ का नाम तथ विवरण :–

संघ का नाम	संबद्धता	सदस्य संख्या	क्रम से मान्यता

प्रकाशित साहित्य

1. ऐतिहारिक पृष्ठभूम से संबंधित प्रकाशन
2. संविधान एवं नियमावली
3. वार्षिक प्रतिवेदन
4. महामंत्री की रिर्पोट
5. निबंधक, ट्रेड यूलियन को भेजा जाने वाला वार्षिक रिर्टन
6. संघर्ष के दरम्यान प्रकाशित पर्चे पोस्टर, बुक सेट
7. मांग–पत्र तथा समझौता
8. अन्य प्रकाशन

1.13 कुल मासिक वेतन –:

1.14 परिवार में सदस्यों की संख्या :–

(क) लिंग के आधार पर :– पुरूष / महिला

(ख) आर्थिक स्थिति के अनुसार :– उपार्जक / परावलंबी

(ग) शिक्षा के आधार पर :– निरक्षर / साक्षर

1.15 परिवार की कुल मासिक आय :–

2. <u>मजदूर संघ से सम्बंधित</u>

2.1 क्या आप किसी श्रमसंघ के सदस्य हैं हाँ/नहीं

2.2 यदि हाँ तो लिम्नांकित सूचनाएँ दें।

क) संघ का नाम :

ख) पंजीकृत है या नहीं ? हाँ/नहीं

ग) माहासंघ जिससे संबद्ध है :

2.3 आप कब से इस संघ केक सदस्य है ?

1 वर्ष से कम

1 वर्ष से 5 वर्ष

6 वर्ष से 10 वर्ष

11 वर्ष से 15 वर्ष

16 वर्ष से 20 वर्ष

20 वर्ष से उपर

2.4 आप ने इस संघ की सदस्यता किन कारणों से प्रभावित हो कर ग्रहण की ?

(क) भामस की विचार धरा

(ख) संघ के नेताओं के आचरण एवं व्यवहार

(ग) भारतीयता एवं भारतीय परंपरा में विश्वास

(घ) अन्य संघें से असंतोष

(ङ) सिर्फ इसी संघ की जानकारी –

(च) अधिक लाभ की आशा –

बैठक का स्तर	आयोजित बैटकों की संख्या	बैठकों की संख्या जिनमें आप उपस्थित हुए
शाखा स्तर		
क्षेत्रीय स्तर		
प्रान्तीय स्तर		
राष्ट्रीय स्तर		
अन्य		

3.3 क्या पदाधिकारियों का चुनाव निर्धारित समय पर होता है? – हाँ/नही

3.4 चुनाव में आप किस तरह से हिस्सा लेते है? ।

(क) मतदान किया –

(ख) अपने दोस्तों के लिए प्रचार किया 7

(ग) सामूहिक प्रचार में भाग लिया –

3.5 क्या आप संघ की कार्यकारिणी के किसी पद के लिए उम्मीदवार हुए? – हाँ/नही

3.6 यदि हाँ तों

(क) किस पद के लिए –

(ख) परिणाम क्या हुए?– जीते/हारे

(ग)यदि हारे, तों असफलता के कारण –

3.7 पदाधिकारियों का चुनाव किस हद तक उचित, एवं निष्पक्ष होता है?

(क) बहूत हद तक उचित –

(ग) सामानय हद तक अचित –

(घ) बिल्कुल ही अनूचित –

(ड़) कुछ हद तक अनुचित –

(ट) राजनीतिक चुनावों में अपने उम्मीदवार में पक्ष में मतदान करने को प्रेरित करने में

(ठ) संघ के स्तर पर सदस्यों के कल्याणार्थ सेवा प्रदान करने में

(ड) औद्योगिक विवादों को न्यायालय द्वारा अनुकुल सामाधान में

(ढ़) सदस्यों के सुख – दुःख में सहायक होने में

(ण) सामूहिक उत्सव तथा रचनात्मक कार्यक्रम आयोजित करने में

(त) राष्ट्रीय एकता की भावना मजबुत करने में

3.15 क्या संघ की नीतियों का निर्धारण सदस्यों से समुचित विचार– विनियम द्वारा होता है ? हाँ/नहीं

3.16 क्या सदस्यों को संध के निर्णयों में अंशदानकरने का पर्याप्त अवसर मिलता है ? हाँ/नहीं

3.17 क्या आप महसूस करते है कि संघ की गति – विधियों पर एक समूह या घठक हावी है ? हाँ/नही

3.18 क्या संघ का संचालन प्रजातांत्रीक ढ़ंग से होना चाहिए ? हाँ/नही

3.19 क्या संघ का संचालन प्रबनधकों के साथ बातचीत में संघ को प्रभावकारी नहीं रहने देगा ? हाँ/नहीं

3.20 क्या आप इस विचार से सहमत है कि संघ को सदस्यों के लिए कुछ प्राप्त करना चाहिए चाहे वह तरिका प्रजातांत्रिक या गैरप्रजातांत्रिक या अनुचित वैधनिक या *अवैधानिक क्यों न हो ? – हाँ/नही*

3.21 क्या आप के संघ में सीधी कार्रवाइ का आह्वान किया है ?

हड़ताल	हाँ/नही
नियमानुसार कार्य	हाँ/नही
घेराव	हाँ/नही
सत्याग्रह/ धरना	हाँ/नही
अन्य	

4. <u>संघ के नेताओं से सम्बन्धित</u>

4.1 आप अपने संघ के कितने प्रतिशत नेताओं को जानते-पहचानते है ?

100 प्रतिशत, 75 प्रतिशत,

50 प्रतिशत, 25 प्रतिशत से कम,

किसी को नहीं

4.2 इस जान-पहचान की सीमा क्या है ?

(क) अधिक जान - पहचान

(ख) साधारण जान - पहचान

(ग) औपचारिक जान - पहचान

4.3 आप अपने संघ के नेताओं का वर्गीकरण निम्नांकित विशेषताओं (गुण + दोष) के आधार पर करें।

विशेषताएँ	100 प्र0	75 प्र0	50 प्र0	25 प्र0	0 प्र0
(क) मित्रवत व्यवहार					
(ख) ईमानदार					
(ग) स्वार्थी					
(घ) पक्षपत पूर्ण व्यवहार					
(ङ) खुशमद पसंद					
(च) संघ संचालन में सक्षम					
(छ) सहायता करने के लिए					
(ज) सदस्यों की चिन्ता से चिंतित					
(झ) सदस्यों की समस्याओं को प्रबन्ध तक पहुँचाने में कोंई हिचक नहीं					
(ञ) प्रबंधकों के उचित निर्णय पर उनकी सराहना					

कथन	सही	गलत	मत नहीं
(झ) भमस के नेता नयी संघ के गठन के समय लम्बे चोड़े वायदों व आश्वासनों से नही आपतु विचारधरा व आचरण से श्रमिकों को आकर्षित करतें है।			
(ट) भामस के नेता वार्तालाप या पत्राचार में शिष्ट भाषा का प्रयोग करते है।			
(ठ) मांग–पत्र में वही मांगे सम्मिलित की जाती है जो न्यायोचित व तर्क संगत है।			
(ड) नेतागण वैसे मामने नही उठाते जिसमें भारी दुराचरण हुआ हो			
(ढ) वार्तालाप मे हमारे नता किसी भविष्य को प्रतिष्ठा का प्रश्न बताकर नही लड़तें।			
(ण) नेतागण जन सभा में गाली–गलौज अथवा आवेशयूक्त भाषा का प्रयोग नही करते।			
(त) हमारा संघ हड़ताल कों अन्तिम हथियार मानता है।			
(थ) नेतागण हिंसा– तोड़–फोड़, हिंसक घेराव कों प्रोत्साहित नही करतें ।			
(द) नेतागण संघ के कोष का व्यक्तिगत लाभ के लिए उसका दुरूपयोग करते है।			

परिशिष्ठ–3

भामस के श्रम संघो के नेताओं क परिचय तथा श्रम संघ की समस्याओंपर उनके विचार

प्रश्नावली

1.0 उत्तरदाता का नाम–

1.2 उम्र

1.3 लिंग

1.4 स्थायी निवास स्थान – ग्रामीण/अर्द्धशहरी/शहरी

1.5 वैवाहिक स्थिति – अविवाहित (विवाहित)/ तलाकशुदा परित्यक्त/विधूर–विधवा

1.6 धर्म –

1.7 जाति– ऊँची जाति / पिछड़ी जाति / अनुसूचित जाति / अनुसूचित जनजाति

1.8 शैक्षणिक योग्यता–

1.9 माता–पिता की शैक्षणिक योग्यता एवं पेशा –

	योग्यता	पेशा
माता		
पिता		

1.10 क्या आपने श्रमसंधवाद की या श्रमसंघ के नेतृत्व का कोंई प्रशिक्षण लिया हैं। हॉ/नही।

1.11 मातृ–भाषा तथा अन्य भाषाओं की जानकारी –

(क) मातृभाषा –

(ख) अन्य भाषाएँ –

1.12 यदि हॉं तो प्रशिक्षण का नाम तथा उस संस्थान का नाम जिसमें प्रशिक्षण प्रदान किया:–

प्रशिक्षण का नाम –

संस्थाण का नाम –

1.21 (4) क्या आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ता हैं – हॉ/नही

1.22 (5) यदि नहीं तों क्या आर. एस. एस. के विचारधरा के समर्थक हैं। हॉ/नही

1.23 (6) क्या आप किसी अन्य सामाजिक संस्था से जुड़े हैं। – हॉ/नही

1.24 (7) यदि हॉं तो ना बतायें:–

1.25 आपका पहनावा (पोशाक) क्या है? –

(क) कार्य–स्थल में

(ख) सार्वजनिक स्थल में

(ग) मजदूर सघं की बैठक में

(घ) प्रबन्धक के साथ वार्ता में

(ड़) घर में

(च) विदेश में

1.26 आपका भोजन क्या है? –

(क) शकाहारी

(ख) मांसाहारी

(ग) दोनों

1.27 आप निम्नांकित में से कौन सा नशा लेते है –

नियमित/अनियमित

(क) सिगरेट/बीड़ी –

(ख) खैनी/तम्बाकु

(ग) गांजा

(घ) भांग

(ड.) ताडी/(इंड़ियन)

(च) शराब (विदेशी)

(छ) शराब (देशी)

(ज) पान

(झ) अन्य कोई –

2.2 यदि हाँ तों निम्नलिखित विवरण दें।

संस्थान का नाम

आपका पद नाम

कुल मासिक वेतन

कब से कार्य कर रहे हैं –

कितनी पदोन्नति मिली है –

2.3 क्या आप अभी एक वेतनभोगी कर्मचारी या श्रमिक हैं। – हॉ/नही

2.4 आपके संस्थान में कितने मजदूर संघ है।

(क) पंजीकृत

(ख) गैर पंजीकृत

(ग) कूल

2.5 क्या आप के संस्थान में शिल्प संघ (क्राफ्ट यूनियन) भी हैं।

2.6 यदि हाँ तो कितने।

2.7 क्या शिल्प संघों का बनना मजदूर संघ आंदोलन के लिये धातक है। हॉ/नही

2.8 आपके संस्थान में अनेक मजदूर संध हैं। सदस्य संख्या के आधार पर पाँच संघों का स्थान नियत करें तथा उनकी अनूमानित सदस्य संख्या बतायें:

संघ कानाम	अनुमानित सदस्य संख्या
प्रथम	
द्वितीय	
तृतीय	
चतुर्थ	
पंचम	

2.9 आपके संघ कों कह स्थान प्राप्त करने में कितनें समय लगें तथा उपने क्या क्या प्रयास किये।

2.10 अन्य मजदूर संघें के होते हुये भी आपके संघ की स्थापना की क्या आवश्यकता हुई

2.24 संघ में घटक वाद कों रोकने के लिए आपके क्या सुझाव है।

3.1 श्रम संघ आन्दोलन में नेता के रूप में आपका पदार्पण किस वर्ष हुआ है।

3.2 श्रम संघ आन्दोलन के नेतृत्व में आने की प्रेरण आपकों किस व्यक्ति, संस्था घटना से मिली ।

3.3 निमनलिखित में से किन कारणों ने आपकी श्रमसंघ आन्दोलन में प्रवेश के लिए उत्प्रेरित किया।

(क) सेवा भावना (ख) राजनीतिक भावना

(ग) आर्थिक भावना (घ) सामाजिक प्रतिष्ठा की भावना

(ङ) श्रम संघ आन्दोलन को मजबुत करना

(च) अन्य भवनायें।

3.4 क्या आप वर्तमान संघ के संस्थापकों में एक है। - हॉ/नही।

3.5 किन कारणों से संघ की स्थापना की गयी :-

(क) (ख) (ग)

3.6 इस संघ के किस पद पर आप आसीन है।

3.7 इस संघ के किन पदों पर रहकर और कितने वर्षो तक आपने सेवा की है।

पद	सेवा अवधि
अध्यक्ष	
उपाध्यक्ष	
महामंत्री	
मंत्री	
कोषाध्यक्ष	
कार्य समिति के सदस्य	

3.8 आप कितने संघों कि सम्बन्धित है।

संघ का नाम	पद

3.12 आपके दृष्टिकोंण में श्रमित संघआन्दोलन के लेतृत्व में बाहरी व्यक्ति कौन है ?

(क) वह जो कभी भी श्रमिक नहीं रहा है। हॉ/नही

(ख) वह तो उस उद्योग विशेष में श्रमिक नहीं है जहाँ संघ कार्यरत हैं। हॉ/नही

(ग) वह जो अस इकाई में रमिक नहीं हे जहाँ कार्यरत हैं। हॉ/नही

(घ) क्या वैसे भूतपूर्व श्रमिकों को जो मजदूर संघ में नेतृत्व में हैं बाहरी व्यक्ति माना

(ङ) जिन्होंने स्वेच्छा से पद तयाग किया है। हॉ/नही

(च) जिनहें प्रबन्ध द्वारा बर्खास्त कर दिया गया है। हॉ/नही

(छ) जो अवकाश प्राप्त है। हॉ/नही

(ज) एक, वैसे व्यक्ति को जो कभी भी श्रमिकों नहीं रहा है लेकिन श्रम संघवाद को जिसने पेशा बनाया है, क्या बाहरी व्यक्ति है। हॉ/नही

3.13 श्रम संघ एक एच्छिक संघ है। क्या इसे अपने नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति को रखने का अधिकार होना चाहिए। हॉ/नही

3.14 एक विचार के अनुसार बाहरी व्यक्ति श्रमिक संघ आन्दोलन को कमजोर बना रहे है। क्या कानून के द्वारा श्रमिक संघ को बाहरी व्यक्तियां से मुक्त कर देना चाहिए।

3.15 श्रम संघों से नेतृतव में बाहरी व्यक्ति के बने रहने के क्या काम है।

(क)

(ख)

(ग)

3.16 क्या आप अपने कों श्रमसंघो के नेतृत्व में बाहरी व्यक्ति मानते है। हॉ/नही

3.17 यदि हाँ तों कि आधार पर–

3.18 क्या श्रम संघ आन्दोंलन के नेतृत्व में नवयूवको की कमी हैं। हॉ/नही

4.4 यदि लाभ होता है तो क्या।

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

4.5 यदि हानि होती है तो क्या।

(क)

(ख)

(ग)

(घ)

4.6 ऐसी मान्यता है कि मानस तथा इससे सम्बद्ध संघों की स्थापना में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा भारतीय जनता पार्टी (जनसंघ) ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। क्या आप सहमत है । हॉ/नही

4.7 यदि हॉ तों संघ राजनीतिक दल के नियंत्रण में है। नियंत्रण श्रमसंघ के किस क्षेत्र में है तथा कितना हैं।

4.8 क्या संघ/महासंघ हड़ताल से सम्बन्धित निर्णयों के लिये राजनीतिक दल की सहमति प्राप्त करता है। आपके संध के द्वारा मॉग पत्र कैसे तैयार किया जाता है।

पदाधिकारियों, कार्यसमिति, आमसभा की क्या भूमिका है।

4.9 क्या मांग पत्र का प्ररूप अनूमोदन हेतु राजनीतिक दल कि पास भी भेजा जाता है हॉ/नही

5.1 इनमें से कौन से नारे आपकी अनुमोंदन हेतु राजनीतिक दल के पास भी भेजा जाता है हॉ/नही

5.2 श्रम दिवस के रूप में आप किस दिन को मनाना चाहते है

(क) मई दिवस

(ख) विश्वकर्मा दिवस

(ग) दोनों

5.3 आपके दृष्टिकोंण में मजदूरों के हित में इन विकल्पों में से कौन अच्छा है ?

परिशिष्ठ –4

भारतीय मजदूर संघ
8वाँ राष्ट्रीय आधिवेशन – 1987
बंगलोर (कर्नाटक)

26,27 राष्ट्रीय अधिवेशन–1987 को बंगलोर में सम्पन्न 8 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर सर्वसम्मत चुने गयें। कार्य समिति के सदस्यों की सूचीः–

अध्यक्ष	– श्री मनहर भई मेंहता	– बम्बई
उपाध्यक्ष	– श्री एच. एन. विश्वास	– जालंधर (पंजाब)
उपध्यक्ष	– श्री अमलदार सिंह	– उत्तर प्रदेश
उपाध्यक्ष	– श्री अलपपल्ली बयंकटराम	– बंगलोर (कर्नाटक)
उपाध्यक्ष	– श्री रास बिहारी मैत्र	– कल्कत्ता (बंगाल)
माहासचिव	– श्री प्रभाकर घाटे	– बंगलोर (कर्नाटक)
सचिव	– श्री राज कृष्ण भक्त	– आवासीय सचिव
सचिव	– श्री राम प्रकाश मिश्र	– हरीयाना, राजस्थान
सचिव	– श्री आर. बेनुगोपाल	– केरल, तमिलनाडू
सचिव	– श्री टी. सी. जूमडे	– बिहार,बंगाल,आसाम
सचिव	– श्री डब्लू. एस. मिटकरी	–
सचिव	– श्री प्यारा लाल बेरी	– पंजाब,हिमाचल,जम्मू
सचिव	– श्री शरद देवधर	–
वित्त सचिव	– श्री रमण भाई साह	– बम्बई
कार्यालय मंत्री	– श्री प्रेम नाथ शर्मा	– दिल्ली
संगठन मंत्री	– श्री बाला साहव साठे	– गोवा, आन्ध्र महाराष्ट्र, विदर्भ
संगठन मंत्री	– श्री ओम प्रकाश आग्धी	– दिल्ली, उत्तर प्रदेश

– श्री मुकुन्द पाठक	– महाराष्ट्र
– श्री एस. डी. कुलकर्णी	– बम्बई
– श्री आर. बी सुवाराव	– आन्ध्र
– श्री समावाला सेड्डी	– आन्ध्र
– श्री सराशिव डी. के	– कर्नाटक
– श्री पी. टी. राव	– केरल
– श्री एन. एम. सुकुभारन	– तमिलनाडु
– श्री जगमोहन शर्मा	– दिल्ली
– श्री आर. बी. सूर्वे	– बम्बई
– श्री गोंविन्द राव आटवोल	– नागपुर
– श्री झाउ साहव चान्द्रायण	– नागपुर
– श्री वानारसी सिंह आजाद	– आसनसोल
– श्री शिववरण सिंह	– मध्यप्रदेश
– श्री जी. डी.सेनल	– मद्रास
– श्री अमरनाथ डोगरा	– दिल्ली
– श्री राम जी दास शर्मा	– कलकत्ता

कार्य समिति सदस्य

1. श्री आर. एस. चौधरी	बोकारो
2. श्री निर्मल कुमार	राँची
3. श्री कुमार अर्जुन सिंह	धनबाद
4. श्री गोपाल प्रसाद	धनबाद
5. श्री रामदेव मिश्र	सिन्दरी
6. श्री जयनारायण शर्मा	जमशेदपुर
7. श्री चदेश्वर सिंह	जमशेदपुर
8. श्री अभिमन्यु सिंह	जमशेदपुर
9. श्री रामदर्शन पाण्डेय	किरीबूरू
10. श्री एंस. पी. चौहान	सिनी
11. श्री कालीचरण सिंह	पटना (डाकतार)
12. श्री राविलास पाण्डेय	पटना (डाकतार)
13. श्री दकीचंद महतों	बिहार शरीफ
14. श्री रामदेव ना. सिंह	मुजफ्फरपुर
15. श्री रामकैलाश सिंह	डालमियानगर
16. श्री बालगोपाल प्रसाद	पटना
17. श्री भगीरथ राम	पटना
18. श्री अक्षय लाल प्रसाद	बर्रानी
19. श्री कालीचरण कठ	बनमनखी
20. श्री नवलकिशों मंदिलवार	गिरीडीह
21. श्री लक्ष्मी सिंह	सिंहभूमी
22. श्री चन्द्रशेखर चौधरी	राजरस्प्पा
23. श्री द्वारिका यादव	सरकारी प्रेस,गया

(छ) नियोजक और कर्मचारी के बीच के संबंध को सुधारने का प्रयत्न करना।

(ज) समान उद्देश्यो वाले कामगारों के अन्य संगठनों के साथ सहयोग करना और उनके साथ संबद्ध होना।

(झ) केन्द्रीय श्रमिक शिक्षण पर्षद के सहयोग से कामगारों के लिए शिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना।

(ञ) ऊपर उल्लिखित उद्देशयों की पूर्ति के लिए सामान्यतः ऐसे अन्य प्रयास करना, जों आवश्यक हों।

5. तरीकाः– संघ अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बराबर संवैधानिक और शान्तिपूर्ण तरीके आपनाएगा और हिंसात्मक कार्रवाई या ऐसी कार्रवाई नहीं करेगा, जा समाज और राष्ट्र के लिए हानिकारक हों।

6. साधारण सदस्यः– .... में नियोजित पन्द्रह वर्ष या उससे अधिक उम्र का कर्मचारी संघ के साधारण सदस्य के रूप में प्रवेश पाने का पात्र होगा, बशर्ते वह संध द्वारा बनाई या समय – समय पर बनायी जानेवाली लियमावनी और उप–विधियों का पालन करने के लिए सहमत हो। साधरण सदस्य को संघ के संदस्य बनने पर .... प्रवेश शुल्क तथा.................... रूपया मासिक/वार्षिक चन्दा के रूप में देना होगा। वार्षिक चन्दा वर्ष की प्रथम तिमाही के भीतर देना होगा। जो सदस्य वर्ष की द्वितीय तिमाही के समाप्त होने के पूर्व लगातार ती महीने तक अपना चन्दा नहीं चुकाएगा वा संघ का सदस्य नहीं रह जाएगा तथा वह सदस्य न रह जानें की तारीख से संघ की ओर से किसी भी लाभ का अपना दावा खो देगा। किन्तु कार्यकारिणी समिति ऐसे व्यक्ति कोफिर से सदस्य बना सकेगी जो अपने चन्दे का बकाया और प्रवेश शुल्क के बराबर पुनः प्रवेश शुल्क चुका देगा । संघ का कार्य वर्ष। जनवरी से 31 दिसम्बर होगा।

7. मान्यक (Honorary) सदस्यः– जो व्यक्ति उपर्युक्त नियम के अधीन साधारण सदस्य के रूप में प्रवेश पाने के पात्र न होंगे संघ की कार्यकारिणी समिति के लिए लिर्वाचित या सहयोजित (Co-

दी जाएगी, जों संघ के सूचना पट्ट पर नोटिस चिपका कर और संघ के सदस्यों के बीच छपी नोटिस बँटवाकर दी जायगी। जब अध्यक्ष संघ के सदस्यों की सामान्य बैठक बुलाना आवश्यक समझे तब वह कार्यकारिणी समिति की सम्मति से ऐसी बैठक बुला सकेगा। ऐसी बैठक वह संघ के सदस्यों की कुल संख्या की एक – तिहाई द्वारा हस्तक्षरित मांग पर भी, माँग किए जाने के 30 दिनों के भीतर ऐसी बैठक नहीं बुलाए तो मांग करने वाले सदस्यों को अधिकार होगा कि वे ऐसी बैठक सात दिनों की नोटिस देकर बुला लें, जिस नोटिस में यह उल्लिखित रहेगा कि किस निश्चित तारीख को बैठक बुलायी जा रही है। मांग करनेवाले सदस्यों को केवल उन्ही मदों, पर विचार–विमर्श करने का अधिकार होगा । जो मद प्रथम मांग नोटिस में शामिल होंगें।

11. कार्यकारिणी समिति का चुनावः– सदस्यो का सामान्य निकाय संघ के सभी मामलो पर नियंत्रण रहेगा तथा.............सदस्यो की कार्यकारिणी समिति जिसके अन्तर्गत अध्यक्ष...........उपाध्यक्ष महामंत्री............सहमंत्री और कोषाध्यक्ष भी हैं संघ का प्रशासन चलाएगी। कोई भी व्यक्ति, जिसकी उम्र 18 वर्ष से कम हैं समिति से निर्वाचित या नाम निदेशित नहीं क्रिया जाएगा। कार्यकारिणी समिति के सदस्य, जिसके अन्तर्गत पदधारी भी हैं प्रति वर्ष संघ की वार्षिक सामान्य बैठक में चुने जाएँगे और वे तबतक पदधारण किए रहेंगे जबतक की पदधारियो का अगला चुनाव नहीं हा जाता। सदस्यो की मृत्यु पदत्याग या निष्कासन के फलस्वरूप कार्यकारिणी समिति में होनेवाली रिक्तियाँ कार्यकारिणी समिति द्वारा भरी जाऐंगी और इस प्रकार नियुक्त सदस्य वार्षिक समान्य बैठक या इस प्रयोजनपर्थ विशेष रूप से बुलायी गई बैठक में पदाधारियो का अगला चुनाव होने तक पदधारण करते रहेंगे। कार्यकारिणी समिति के सदस्यों को, जिनके अन्तर्गत पदधारी भी है, कार्यकाल की समाप्ति के पूर्व ही संघ की सामान्य बैठक/ इसके निमित्त विशेष रुप में बुलायी गई बैठक में उनके विरुद्ध अलग–अलग या सामूहिक रुप में अविश्वास प्रस्ताव पास कर पद से हटाया जा सकता हे। इस तरह हटाये जाने के चलते हुई रिक्तियाँ संघ के सामान्य निकाय द्वारा भरी

(क) सामान्य निकाय, कार्यकारिणी समिति और उध्यक्ष के सभी अनुदेशों को कार्यानिवत करना ।

(ख) संघ की ओर पत्राचार करना।

(ग) सभी बैठकों को कार्यवृत अभिलिखित करना।

(घ) सदस्यता पंजी तथा अन्य बहियों और पंजियों (लेखा बहीयों और पेजियों को छोड़कर) रखना।

(ङ) अध्यक्ष या उसकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष के परामर्श से कार्यकारिणी समिति की बैठक तुलाना और उसके लिय सुचना एवं कार्या कार्यावली (Agenda) निर्गत करना।

(च) ऐसा विवरण और अन्य दस्तावेज उपस्थापित करना, जो ट्रेड यूनियन अधियलम के प्रावधानो के अन्तर्गत उपस्थापित की जाने के लिए उपेक्षित हों,

(छ) कार्यकारिणी समिति को मंजुरी के बिना प्रति मास.......... रू0 तक खर्च करना, किन्तु उसे अगली बैठक में उसका अनुमोदन करा लेना होगा,

(ज) कार्यकारिणी समिति की हरेक बैठक में खर्च की रिपोर्ट और लेखा अनुमोदनार्थ उपस्थापित करना,

(झ) सहमंत्री महामंत्री को उसके काम में सहायता करेगा और उसकी अनुपस्थिति में उसका काम करेगा।

(ट) कोषाघ्यक्ष संघ का लेखा रखेगा और देय की रकम वसूलेगा और उसके लिए रसीद देगा तथा उचित एवं प्राधिकृत विपत्र पर भुगतान करेगा।

13. संघ के लेखे का का निरिक्षण और अकेक्षण– संघ के पास समान्य निधि होगी जिनका संग्रह सदस्यो के चन्दे दान और अन्य विविध स्त्रोतों से किया जाएगा। महामंत्री बिहार ट्रेड यूनियन विनियमावली, 1928 के विनियम 15 के अनुसार कार्यकारिणी समिति के द्वारा नियुक्ति अंकेक्षण या अंकेक्षको के जरिए 31 दिसम्बर को समाप्त होने वाले हरेक वर्ष के संघ के लेखे के वार्षिक अकेक्षण के लिए यथोचित व्यवस्था करेगा। यदि संध का कोई पदधारी या सदस्य की लेखा बही का निरीक्षण

(ज) सदस्यो या उनके आश्रितो के लिए शैक्षणिक समाजिक या धार्मिक प्रसुविधाओ से संबंधित खर्च, जिसमे मृत सदस्यो के अंतिम संस्कार का धार्मिक संस्कार या धार्मिक अनुष्ठान का खर्च भी शामिल है,

(झ) मुख्यतः नियोजको या कर्मकारो पर उनकी उस हैसियत में प्रभाव डालने वाले प्रश्नोपर विवेचन करने के प्रयोजन के लिए सामयिकि को चालू रखना।

(ट) ऐसे किसी उद्‌दश्य की पूर्ति के लिए खर्च जिसके लिए श्रमिक संध की सामान्य निधि से खर्च किया जा सकता है अथवा समान्य कर्मकारा के फायदे के लिए अभिप्रेत किसी मद में अंशदान के संबंध में किया जाने वाला खर्च, उस वर्ष श्रमिक संध की सामान्य निधि में उस समय तक की हुई सकल आय और उस वक्त के आरंभ में उस निधि मे जमा अति वर्ष (बैलेंस) के कुल जोड़ की एक चौथाई रकम से अधिक नहीं होगा,

(ठ) अधिसूचना में अन्तर्विष्ट किन्ही शर्तो के अधिन रहते हुए कोई अन्य उदे्दश्य जो शासकीय गजट में समूचित सरकार द्वारा अधिसूचित किया गया हो।

15. संध की सामान्य निधि और और उसकी निरापद अभिरक्षा– संध की सामान्य निधि के अन्तर्गत निम्नलिखित रकमें होगी–

(1) प्रवेश शुल्क

(2) चुन्दा,

(3) संध के सामान्य या किसी खास प्रयोजन के लिए सदस्यो के संग्रह किया गया दान या अतिरिक्त चन्दा,

(4) मैचों, नाटकों सांस्कृतिक कार्यक्रमो या ऐसे अन्य मनोरंजनो के जरिए, जो खास कर कर्मकारो और समान्यतः समाज के लिए लाभदायक हो, संग्रह की गई रकम,

(5) संध नियोजको से दान स्वीकार नहीं करेगा।

उपर्युक्त श्रोतो से संग्रह की गई रकम कार्यकारिणी

कोई हड़ताल उस समय प्रवृति किसी समय विधि के प्रतिकुल होगी तो संध का ना तो आयोजन करेगा और ना ही उसे प्रोत्साहन देगा।

20. संध का विघटन– संध का तभी विघटन किया जायेगा जब कि इस संबंध में निर्णय इस प्रयोजन से बुलाई गई आम सभा में सदस्यो के बहुमत से लिया जाएगा, अन्यथा नहीं। ऐसी बैठक का कोरम संध के कुल सदस्यो के तीन–चौथाई सदस्यो से पूरा होगा। संध का विघटन हो जाने पर संध के महामंत्री और उसके 7 सदस्यो के हस्ताक्षर से एक नोटिस निबंधन प्रमाण पत्र के साथ, विघटन के 14 दिनो के भीतर निबंधक के पास विघटन के लिए भेज दी जाएगी तथा वह विघटन ऐसे निबंधन की तारीक से प्रभावी होगी। उपर्युक्त बैठक में ही यह भी निर्णय ले लिया जाएगा कि विघटन के बाद संध की निधि का खर्च किस प्रकार किया जाएगा।

21. शाखा गठनः–

दिनांक....................

संघ के अध्यक्ष या महामंत्री का हस्ताक्षर

20. भारतीय मजदूर संघ का छठा अखिल भारतीय अधिवेशन, कलकत्ता

21. भारतीय मजदूर संघ का सातवाँ अखिल भारतीय अधिवेशन, हैदराबाद

22. भारतीय मजदूर संघ का आठवाँ अखिल भारतीय अधिवेशन, बेंगलूर

23. भारतीय मजदूर संघ बिहार-प्रदेश श्रमिक स्मारिका, 1984

24. भारतीय मजदूर संघ बिहार-प्रदेश श्रमिक स्मारिका, 1985

25. भारतीय मजदूर संघ बिहार-प्रदेश श्रमिक स्मारिका, 1986

26. भारतीय मजदूर संघ बिहार-प्रदेश श्रमिक स्मारिका, 1987

27. भारतीय मजदूर संघ बिहार-प्रदेश, 10वाँ प्रादेशिक अधिवेशन

28. भारतीय मजदूर संघ बिहार-प्रदेश, 12वाँ प्रादेशिक अधिवेशन

29. भारतीय मजदूर संघ बिहार-प्रदेश, 13वाँ प्रादेशिक अधिवेशन

पत्र-पत्रिका

30. मजदूर उद्घोष पटना

31. जनसत्ता, दिल्ली

32. नवभारत टाइम्स, पटना

33. पाटलिपुत्रा टाइम्स, पटना

34. उदितवाणी, जमशेदपुर

35. आज, राँची

36. राँची एक्सप्रेस, राँची

37. आवाज, धनवाद

38. दिनमान, 1-7 फरवरी,1987

39. आर्गनाइजर, 11 अक्टूबर, 1947